

KARMAATE SAHABA (HINDI)

100 सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की करामात पर मुश्तमिल मदनी गुलदस्ता



# करामाते सहाबा ﷺ

-: मुअल्लिफ :-

शैखुल हदीष हज़रते अबल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ ज़मी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

مكتبة المدينة  
( دار البیت الاسلامی )  
SC 1286



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज: शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरि र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है:

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَذْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा: ऐ अब्बाह! عَزَّوَجَلَّ हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा! ऐ अज़मत और बुजूर्गी वाले।

(المُسْتَطَرَف ج ١ ص ٣٠ دار الفكر بيروت)

नोट: अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना

बकीअ

व मग़फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

## क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

## किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त्बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मुक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

## मजलिसे तशजिम (हिन्दी-गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तबलीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी की मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिय्या” ने येह किताब “कशमाते सहाबा” उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी-गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की राष्ट्रिय भाषा “हिन्दी” में रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब का हिन्दी रस्मुल ख़त करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआमलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

❶❶ कमो बेश दस<sup>(10)</sup> मराहिल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-

(1) कम्पोजिंग (2) सेटिंग (3) कम्प्यूटर तकाबुल (4) तकाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्प्यूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

❶❶ करीबुस्सौत (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क) को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़सूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतियाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये तशजिम चार्ट का बग़ौर मुतालआ फ़रमाइयें।

❶❶ हिन्दी पढ़ने वालों को सहीह उर्दू तलफ़फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में हासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़फ़ुज़ के ऐन मुताबिक़ ही हिन्दी-जोडणी रखी गई है और बतौर ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह (ज़बर वाले) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (जज़्म वाले) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के नीचे खोड़ा (؁) इस्ति'माल किया गया है। मषलन उ-लमा (عَلَمَاء) में “-ल” मफ़तूह और रहम (رَحْمَ) में “हू” साकिन है।

﴿4﴾ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं भी ऐन साकिन (ء) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : दा'वत (دَعْوَت)

﴿5﴾ अरबी-फ़ारसी मत्न के साथ साथ अरबी किताबों के हवालाजात भी अरबी ही रखे गए हैं जब कि “عَزَّوَجَلَّ”, “صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم” और “رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ” वगैरा को भी अरबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तशजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, e-mail या sms) मुत्तलअ़ फ़रमा कर षवाब कमाइये।

### उर्दू से हिन्दी (रश्मुल ख़त) का तशजिम चार्ट

त = ت	फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ٹ	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख = خ	ह = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ = ڈھ	ड़ = ڈھ	र = ر	ज़ = ذ
अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ = ف	ग़ = غ
य = ی	ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
و = و	و = و	ف = ف	ف = ف	ی = ی	و = و

-: राबिता :-

मजलिसे तशजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, कासिम हाला मस्जिद,  
सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे इमल मदीनतुल इस्लामिया (दा'वते इस्लामी)

100 सहाबए किराम  की करामात पर मुश्तमिल  
मदनी शुलदस्ता

# करामाते सहाबा

—: मोअल्लिफ़ :—

शैखुल हदीष हज़रते

अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ आ'जमी 

—: पेशकश :—

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)  
(शो'बए तखरीज)

—: नाशिर :—

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद,

देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560



وَعَلَىٰ إِلِكْ وَأَصْحِبِكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ  
الصلوة والسلام عليك يا رسول الله

नाम किताब : **करामाते सहाबा** (رضی اللہ تعالیٰ عنہم)  
मोअल्लिफ : शैखुल हदीष हजरते अल्लामा अब्दुल मुस्तफा आ जमी  
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए तखरीज)  
सिने त्बाअत : जमादिल आखिर, सि. 1435 हि.  
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

**-: मक्तबतुल मदीना की मुख्तलिफ शाखें :-**

✽...अहमदाबाद : फैजाने मदीना, तीकोनी बागीचे के सामने, मिरजापूर,  
अहमदाबाद, गुजरात -1, फोन : **9327168200**  
✽... मुम्बई : **19, 20**, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट  
ऑफिस के सामने, मुम्बई, फोन : **022-23454429**  
✽... नागपूर : सैफी नगर रोड, गरीब नवाज मस्जिद के सामने,  
मोमिन पूरा, नागपूर फोन : **09373110621**  
✽.... अजमेर : **19 / 216** फ़लाहे दारैन मस्जिद के करीब, नल्ला  
बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : **(0145) 2629385**  
✽....हुबली : **A.J** मुधल कोम्पलेक्स, **A.J** मुधल रोड,  
ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : **08363244860**  
✽... हैदराबाद : मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद,  
आन्ध्र प्रदेश, फ़ोन : **(040) 2 45 72 786**  
✽... कानपूर : मस्जिद मख़दूम सिमनानी, डिपटी का पडाव,  
गुर्बत पार्क, कानपूर, फ़ोन : **09335272252**  
✽... बनारस : मक्तबतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद,  
मदन पूरा, बनारस, फ़ोन : **09369023101**

**E.mail : [ilmiapak@dawateislami.net](mailto:ilmiapak@dawateislami.net)**

**[www.dawateislami.net](http://www.dawateislami.net)**

**मदनी इलतिजा : किसी और को यह (तखरीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं**

## फेहरिस

इनवान	सफ़ह	इनवान	सफ़ह
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	11	खामोशी व कलाम पर कुदरत	45
पेशे लफ़्ज़	15	दिलों को अपनी तरफ़ खींच लेना	45
तआरुफ़े मुसन्निफ़	20	ग़ैब की ख़बरें	45
शरफ़े इन्तिसाब	29	दाना पानी के बिगैर ज़िन्दा रहना	45
मन्क़बते सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ	30	निज़ामे आलम में तसरुफ़ात	46
तम्हीदी तजल्लियां	31	बहुत ज़ियादा मिक्दार में खा लेना	46
तहक्कीके करामात	36	हराम ग़िज़ाओं से महफूज़ रहना	46
करामत क्या है ?	36	दूर की चीज़ों को देख लेना	47
मो'जिज़ा और करामत	37	हैबत व दब-दबा	47
मो'जिज़ा ज़रूरी, करामत ज़रूरी नहीं	38	मुख़ालिफ़ सूरातों में जाहिर होना	47
करामत की किस्में ?	38	दुश्मनों के शर से बचना	49
मुर्दों को ज़िन्दा करना	39	ज़मीन के ख़ज़ानों को देख लेना	49
मुर्दों से कलाम करना	40	मुश्किलात का आसान हो जाना	49
दरयाओं पर तसरुफ़, इन्क़िलाबे माहिyyत	41	मोहलिकात का अषर न करना	50
ज़मीन का सिमट जाना	42	सहाबी	51
नबातात वगैरा से गुफ़्तगू	42	अफ़ज़लुल औलिया	52
शिफ़ाए अमराज़	43	अशरए मुबश्शरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ	53
जानवरों का फ़रमां बरदार हो जाना	43	करामाते सहाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ	55
ज़माने का मुख़सर हो जाना	43	﴿1﴾ हज़रते अबू बक्र सिद्दीकِ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ	55
ज़माने का तवील हो जाना	44	खाने में अज़ीम बरकत	56
मक्बूलिय्यते दुआ	44	शिकमे मादर में क्या है ?	57

जरूरी इन्तिबाह	59	क़ब्र में बदन सलामत	82
निगाहे करामत	59	तबसेरा	82
कलिमए तय्यिबा से क़ल्आ मिसमार	62	जो कह दिया वोह हो गया	83
खून में पेशाब करने वाला	62	लोगों की तक़दीर में क्या है ?	83
सलाम से दरवाज़ा खुल गया	63	तबसेरा	84
कशफ़े मुस्तक़बिल	63	दुआ की मक़बूलियत	85
मदफ़न के बारे में ग़ैबी आवाज़	66	﴿3﴾ हज़रते उषमाने ग़नी	88
दुश्मन खिन्ज़ीर व बन्दर बन गए	67	ज़िनाकार आंखें	89
दुश्मने शैख़ैन कुत्ता हो गया	69	तबसेरा	90
तबसेरा	70	हाथ में केन्सर	91
﴿2﴾ हज़रते उमर फ़ारूक	72	गुस्ताख़ी की सज़ा	93
क़ब्र वालों से गुफ़्तगू	74	तबसेरा	94
मदीने की आवाज़ निहावन्द तक	74	ख़्वाब में पानी पी कर सैराब	95
तबसेरा	75	अपने मदफ़न की ख़बर	96
दरया के नाम ख़त	76	तबसेरा	97
तबसेरा	77	जरूरी इन्तिबाह	97
चादर देख कर आग बुझ गई	78	शहादत के बा'द ग़ैबी आवाज़	98
तबसेरा	78	मदफ़न में फ़िरिश्तों का हुज़ूम	99
मार से ज़लज़ला ख़त्म	78	गुस्ताख़ दरिन्दे के मुंह में	99
तबसेरा	79	तबसेरा	100
दूर से पुकार का जवाब	79	﴿4﴾ हज़रते अली मुर्तज़ा	101
तबसेरा	80	क़ब्र वालों से सुवाल जवाब	102
दो ग़ैबी शेर	80	तबसेरा	103
तबसेरा	81	फ़ालिज ज़दा अच्छ हो गया	103



गिरती हुई दीवार थम गई	105	﴿7﴾ हज़रते अब्दुर्रहमान बिन औफ़	125
आप को झूठा कहने वाला अन्धा हो गया	106	हज़रते उषमान की खिलाफ़त	127
कौन कहां मरेगा ? कहां दफ़्न होगा ?	106	जन्नत में जाने वाला पहला मालदार	129
तबसेरा	107	मां के पेट ही से सईद	129
फ़िरिश्तों ने चक्की चलाई	107	﴿8﴾ हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास	130
तबसेरा	108	बद नसीब बुढ़ा	131
मैं कब वफ़ात पाऊंगा ?	108	दुश्मने सहाबा का अन्जाम	133
दरे ख़ैबर का वज़्ज	109	गुस्ताख़ की ज़बान कट गई	134
कटा हुवा हाथ जोड़ दिया	110	चेहरा पीठ की तरफ़ हो गया	135
शोहर, औरत का बेटा निकला	111	एक ख़ारिजी की हलाकत	135
तबसेरा	112	तबसेरा	136
ज़रा देर में कुरआने करीम ख़त्म कर लेते	112	साठ हज़ार का लश्कर दरया में	137
इशारे से दरया की तुग़यानी ख़त्म	113	तबसेरा	137
जासूस अन्धा हो गया	113	ना'रए तक्वीर से ज़लज़ला	138
तुम्हारी मौत किस तरह होगी ?	114	उम्र दराज़ हो गई	140
पथर उठाया तो चश्मा निकल पड़ा	114	तबसेरा	140
﴿5﴾ हज़रते तलहा बिन उबैदुल्लाह	116	﴿9﴾ हज़रते सईद बिन जैद	141
एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में	118	कुंवां क़ब्र बन गया	142
तबसेरा	119	तबसेरा	143
﴿6﴾ हज़रते जुबैर बिन अल अ्वाम	120	﴿10﴾ हज़रते अबू उबैदा बिन जर्हाह	143
करामत वाली बरछी	121	बे मिषाल मछली	144
तबसेरा	122	तबसेरा	145
फ़ट्टे फ़ुसतात	123	﴿11﴾ हज़रते हम्ज़ा	146
हज़रते जुबैर की शक़ल में हज़रते जिब्राईल	124	फ़िरिश्तों ने गुस्ल दिया	147

तबसेरा	147	﴿17﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र	168
क़ब्र के अन्दर से सलाम का जवाब	148	फ़िरिश्तों ने साया किया	168
तबसेरा	149	कफ़न सलामत, बदन तरोताज़ा	169
﴿12﴾ हज़रते अब्बास	150	क़ब्र में तिलावत	170
इन के तुफ़ैल बारिश हुई	151	तबसेरा	171
﴿13﴾ हज़रते जा'फ़र	153	﴿18﴾ हज़रते मुआज़ बिन जबल	171
जुल जनाहैन	154	मुंह से नूर निकलता था	172
तबसेरा	154	﴿19﴾ हज़रते उसैद बिन हुज़ैर	172
﴿14﴾ हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद	155	फ़िरिशते घर के ऊपर उतर पड़े	173
जुह्र ने अघर नहीं किया	156	﴿20﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन हिश्शाम	174
तबसेरा	157	तिजारत में बरकत	175
शराब की शहद	158	तबसेरा	175
शराब सिका बन गई	158	﴿21﴾ हज़रते ख़ुबैब बिन अदी	176
तबसेरा	158	बे मौसिम का फल	177
﴿15﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर	159	मक्का की आवाज़ मदीना पहुंची	178
शेर दुम हिलाता हुवा भागा	161	एक साल में तमाम क़ातिल हलाक	179
एक फ़िरिशते से मुलाकात	161	लाश को ज़मीन निगल गई	179
ज़ियाद कैसे हलाक हुवा ?	161	तबसेरा	180
तबसेरा	162	﴿22﴾ हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी	181
﴿16﴾ हज़रते सा'द बिन मुआज़	163	क़ब्र शिफ़ा ख़ाना बन गई	182
जनाजे में सत्तर हज़ार फ़िरिशते	166	﴿23﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन बसर	183
मिट्टी मुश्क बन गई	166	रिज़्क में कभी तंगी पैदा नहीं हुई	183
फ़िरिश्तों से ख़ैमा भर गया	166	﴿24﴾ हज़रते अम्र बिन अल हमिक्	184
तबसेरा	167	अस्सी बरस की उम्र में सब बाल काले	184

﴿25﴾ हज़रते आसिम बिन षाबित ﴿﴾ शहद की मख़िख़यों का पहरा समन्दर में क़ब्र तबसेरा	185 185 186 187	﴿32﴾ हज़रते ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैषी ﴿﴾ खुश्क नाले में नागहां सैलाब ﴿33﴾ हज़रते अबू मूसा अश्शरी ﴿﴾ ग़ैबी आवाज़ सुनते थे	204 205 206 207
﴿26﴾ हज़रते उबैदा बिन अल हारिष ﴿﴾ क़ब्र की खुशबू दूर तक ﴿27﴾ हज़रते सा'द बिन अरबीअ ﴿﴾ दुन्या में ज़न्नत की खुशबू तबसेरा	188 189 190 191	लहने दावूदी ﴿34﴾ हज़रते तमीम दारी ﴿﴾ चादर दिखा कर आग बुझा दी ﴿35﴾ हज़रते इमरान बिन हसीन ﴿﴾	208 208 209 210
﴿28﴾ हज़रते अनस बिन मालिक ﴿﴾ साल में दो मरतबा फ़लने वाला बाग़ खजूरों में मुश्क की खुशबू दुआ से बारिश तबसेरा	192 193 194 195	फ़िरिशतों से सलाम व मुसाफ़हा ﴿36﴾ हज़रते सफ़ीना ﴿﴾ शेर ने रास्ता दिखाया ﴿37﴾ हज़रते अबू उमामा बाहिली ﴿﴾	211 211 212 212
﴿29﴾ हज़रते अनस बिन नज़र ﴿﴾ खुदा ﷻ ने क़सम पूरी फ़रमा दी तबसेरा	195 196 197	फ़िरिशते ने दूध पिलाया इमदादे ग़ैबी की अशरफ़ियां ﴿38﴾ हज़रते दहिह्या बिन ख़लीफ़ा ﴿﴾	213 214 215
﴿30﴾ हज़रते हन्ज़ला बिन अबी आमिर ﴿﴾ ग़सीलुल मलाइका तबसेरा	198 199 200	हज़रते जिब्रील ﷻ इन की सूरत में ﴿39﴾ हज़रते साइब बिन यज़ीद ﴿﴾ चौरानवे बरस का जवान	216 216 217
﴿31﴾ हज़रते आमिर बिन फुहैरा ﴿﴾ लाश आस्मान तक बुलन्द हुई तबसेरा	201 202 203	﴿40﴾ हज़रते सलमान फ़ारसी ﴿﴾ मलकुल मौत ने सलाम किया ख़्वाब में अपने अन्जाम की ख़बर देना	217 220 220
	204	चरन्दो परन्द ताबेए फ़रमान ﴿41﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र ﴿﴾	222 223

सजदागाह से चश्मा उबल पड़ा	224	﴿50﴾ हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी	239
क़ब्र पर अश्रार	225	जंगल में कफ़न	240
तबसेरा	225	फ़क़त ज़म ज़म पर ज़िन्दगी	241
﴿42﴾ हज़रते जुऐब बिन कलीब	226	﴿51﴾ हज़रते इमामे हसन	242
आग जला नहीं सकी	226	खुश्क दरख़ पर ताज़ा ख़जूरे	243
तबसेरा	227	फ़रज़न्द पैदा होने की बिशारत	244
﴿43﴾ हज़रते हम्ज़ा बिन अम्र अस्लमी	228	﴿52﴾ हज़रते इमामे हुसैन	244
उंगलियां रोशन हो गईं	228	कुंवे में से पानी उबल पड़ा	245
﴿44﴾ हज़रते या'ला बिन मुरा	229	बे अदबी करने वाला आग में	245
अज़ाबे क़ब्र की आवाज़ सुन ली	229	नेज़े पर सर की तिलावत	246
﴿45﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास	229	तबसेरा	247
कफ़न में परन्द	231	﴿53﴾ हज़रते अमीरे मुआविय्या	247
ग़ैबी आवाज़	231	कभी जंग में मग़लूब नहीं हुवे	249
हज़रते जिब्राईल	232	दुआ मांगते ही बारिश	249
﴿46﴾ हज़रते षाबित बिन कैस	232	शैतान ने नमाज़ के लिये जगाया	250
मौत के बा'द वसिय्यत	232	तबसेरा	251
﴿47﴾ हज़रते अ़ला बिन अल हज़रमी	233	﴿54﴾ हज़रते हारिषा बिन नो'मान	252
पियादा और सुवार दरया के पार	234	हज़रते जिब्राईल	252
चमकती ज़मीन से पानी नुमूदार हो गया	235	﴿55﴾ हज़रते हकीम बिन हिज़ाम	254
लाश क़ब्र से गा़इब	236	तिजारत में कभी घाटा नहीं हुवा	254
﴿48﴾ हज़रते बिलाल	236	﴿56﴾ हज़रते अम्मार बिन यासिर	255
ख़्वाब में हुज़ूर	237	कभी इन की क़सम नहीं टूटी	256
﴿49﴾ हज़रते इन्ज़ला बिन हुज़ैम	238	तीन मरतबा शैतान को पछाड़ा	257
सर लागते ही मरज़ गा़इब	238	﴿57﴾ हज़रते शुरहबील बिन हसना	258

क़ल्आ ज़मीन में धंस गया	258	﴿68﴾ हज़रते मिक्दाद बिन अल अस्वद	275
﴿58﴾ हज़रते अम्र बिन जमूह	259	चूहे ने सत्तरह अशरफ़ियां नज़्म कीं	277
लाश मैदाने जंग से बाहर नहीं गई	260	तबसेरा	278
तबसेरा	261	﴿69﴾ हज़रते उर्वा बिन अल जा'द	279
﴿59﴾ हज़रते अबू पा'लबा खुशनी	261	मिट्टी भी ख़रीदते तो नफ़अ उठाते	280
अपनी पसन्द की मौत	262	﴿70﴾ हज़रते अबू तल्हा बिन ज़ैद	280
﴿60﴾ हज़रते कैस बिन ख़रशा	263	लाश ख़राब नहीं हुई	281
जान गई मगर आन नहीं गई	263	﴿71﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन जहूश	282
﴿61﴾ हज़रते उबय्य बिन का'ब अन्सारी	264	अनोखी शहादत	283
हज़रते जिब्राईल की आवाज़ सुनी	265	﴿72﴾ हज़रते बरा बिन मालिक	284
बदली का रुख़ फ़ैर दिया	266	फ़तह व शहादत एक साथ	286
बुख़ार में सदा बहार	267	﴿73﴾ हज़रते अबू हुरैरा	287
﴿62﴾ हज़रते अबूहरदा	268	करामत वाली थेली	288
हांडी और पियाले की तस्बीह	268	﴿74﴾ हज़रते उबाद बिन बिशर	289
﴿63﴾ हज़रते अम्र बिन अबसा	269	लाठी रोशन हो गई	289
अब्र ने इन पर साया किया	270	करामत वाला ख़्वाब	290
﴿64﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन क़िर्त	270	﴿75﴾ हज़रते उसैद बिन अबी अयास	291
मुस्तजाबुद्दा'वात	271	चेहरे से घर रोशन	292
﴿65﴾ हज़रते साइब बिन अक़रअ	271	﴿76﴾ हज़रते बिशर बिन मुआविय्या	293
तस्वीर ने ख़ुजाना बताया	272	हर मरज़ की दवा हाथ	293
﴿66﴾ हज़रते अरबाज़ बिन सारियह	272	﴿77﴾ हज़रते उसामा बिन ज़ैद	294
फ़िरिश्ते से मुलाक़ात और गुफ़्तगू	273	बे अदबी करने वाले काफ़िर हो गए	295
﴿67﴾ हज़रते ख़ब्बाब बिन अल अरत	274	﴿78﴾ हज़रते नाबगा	296
ख़ुश्क़ थन दूध से भर गया	274	सो बरस तक दांत सलामत	296



﴿79﴾ हज़रते अम्र बिन तुफैल दोसी ﷺ	297	﴿91﴾ हज़रते ज़ैद बिन हारिषा ﷺ	321
नूरानी कोड़ा	297	सातवें आस्मान का फ़िरिस्ता ज़मीन पर	321
﴿80﴾ हज़रते अम्र बिन मुरा जुहनी ﷺ	298	﴿92﴾ हज़रते उक्बा बिन नाफ़ेअ फ़हरी ﷺ	323
दुश्मन बलाओं में गिरिफ़्तार	298	एक पुकार से दरिन्दे फ़ार	324
﴿81﴾ हज़रते ज़ैद बिन ख़ारिजा अन्सारी ﷺ	299	घोड़े की टाप से चश्मा जारी	325
मौत के बा'द गुफ़्तू	299	﴿93﴾ हज़रते अबू ज़ैद अन्सारी ﷺ	326
﴿82﴾ हज़रते राफ़ेअ बिन ख़दीज ﷺ	301	सो बरस का जवान	326
बरसों हल्क़ में तीर चुभा रहा	302	﴿94﴾ हज़रते औफ़ बिन मालिक ﷺ	326
﴿83﴾ हज़रते मुहम्मद बिन षाबित ﷺ	302	पुकार पर मवेशी दौड़ पड़े	327
बच्चे को दूध कैसे मिला ?	303	﴿95﴾ हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा ﷺ	328
﴿84﴾ हज़रते क़तादा बिन मलहान ﷺ	304	बरकत वाली सीनी	329
चेहरा आईना बन गया	304	शाही दा'वत	330
﴿85﴾ हज़रते मुआविय्या बिन मुक़रिन ﷺ	305	﴿96﴾ हज़रते आइशा सिद्दीका ﷺ	333
दो हज़ार फ़िरिस्ते नमाज़े जनाज़ा में	305	हज़रते जिब्रील इन को सलाम करते थे	333
﴿86﴾ हज़रते अहबान बिन सफ़ी ﷺ	306	इन के लिहाफ़ में वृह्य उतरी	334
क़ब्र से कफ़न वापस	307	आप ﷺ के तवस्सुल से बारिश	334
﴿87﴾ हज़रते नज़ला बिन मुआविय्या ﷺ	307	﴿97﴾ हज़रते उम्मे ऐमन ﷺ	335
हज़रते ईसा عليه السلام के सहाबी	307	कभी पियास नहीं लगी	335
﴿88﴾ हज़रते उमैर बिन सा'द अन्सारी ﷺ	309	﴿98﴾ हज़रते उम्मे शरीक दोसिय्या ﷺ	336
जाहिदाना जिन्दगी	310	गैबी डोल	336
﴿89﴾ हज़रते अबू क़र साफ़ा ﷺ	316	ख़ाली कुप्पा घी से भर गया	337
सैंकड़ों मील दूर आवाज़ पहुंचती थी	318	﴿99﴾ हज़रते उम्मे साइब ﷺ	337
﴿90﴾ हज़रते हस्सान बिन षाबित ﷺ	318	दुआ से मुर्दा जिन्दा हो गया	338
हज़रते जिब्राईल عليه السلام मददगार	319	﴿100﴾ हज़रते जुनैरा ﷺ	339
कुव्वते शाम्मा	320	अन्धी आंखें रोशन हो गईं	339

أَلْحَدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةَ وَالسَّلَامَ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“हर सहाबी से हमें तो प्यार है” के एककीस हुरफ़ की निश्चत से इश किताब को पढ़ने की “21 की निय्यतें”

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : “अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।” (الجامع الصغير، ص ५५५، الحديث १३२१، دار الكتب العلمية بيروت)

दो मदनी फूल :-

- 1) बिगैर अच्छी निय्यत के किसी भी अमले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।
- 2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।
- 1) हर बार हम्द व 2) सलात और 3) तअव्वुज़ व 4) तस्मिय्या से आगाज़ करूंगा। (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अमल हो जाएगा)
- 5) **اَللّٰهُ** की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुतालआ करूंगा। 6) हत्तल इमकान इस का बा वुज़ू और 7) किब्ला रू मुतालआ करूंगा 8) कुरआनी आयात और 9) अहादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा 10) जहां जहां “**اَللّٰهُ**” का नामे पाक आएगा वहां **عَزَّوَجَلَّ** और 11) जहां जहां “सरकार” का इस्मे मुबारक आएगा वहां ﷺ पढ़ूंगा। 12) (अपने ज़ाती नुस्खे पर) याद दाश्त वाले सफ़हा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा 13) (अपने ज़ाती नुस्खे पर) इन्दज़ज़रूरत (या’नी ज़रूरतन) खास खास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। 14) किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इल्मे दीन



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## अल मदीनतुल इल्मिया

अज़ : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अज़ार कादिरि रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَّسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक

“दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, इह्याए सुन्नत और इशाअते

इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अज़मे मुसम्मम रखती

है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो खूबी सर अन्जाम देने के लिये

मुतअद्द मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन में से

एक मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिया” भी है जो दा'वते

इस्लामी के उ-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर

मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम

का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत      ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब

﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब      ﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब

﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब      ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज

“अल मदीनतुल इल्मिया” की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, अलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइषे खैरो बरकत हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल कारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की गिरां मायह तसानीफ़ को अंसरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा’वते इस्लामी” की तमाम मजलिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मिया” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अमले खैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم



रमज़ानुल मुबारक 1425



## पेशे लफज़

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ آمَنَّا بَعْدًا!

فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सय्यिदुल मुरसलीन, सरवरे मा'सूमीन, रहमतुल्लिल अलमीन उम्मेते रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के तमाम सहाबा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्लिमा में अफ़ज़ल और बरतर हैं, **अल्लाह** तआला ने इन को अपने रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबत और नुस्तर व इआनत के लिये पसन्दीदा और बरगुज़ीदा फ़रमाया, इन नुफ़ूसे कुदसिय्या की फ़ज़ीलत व मदह में कुरआने पाक में जा बजा आयाते मुबारका वारिद हैं जिन में इन के हुस्ने अमल, हुस्ने अख़लाक़ और हुस्ने ईमान का तज़क़िरा है और इन्हें दुन्या ही में मग़फ़िरत और इन्आमाते उख़रवी का मुज़दा सुना दिया गया। जिन के अवसाफ़े हमीदा की खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ता'रीफ़ फ़रमाए उन की अज़मत और रिफ़अत का अन्दाज़ा कौन लगा सकता है? इन पाक हस्तियों के बारे में कुरआने पाक की कुछ आयात दर्जे ज़ैल हैं :

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (प १०१, الانفال: २)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येही सच्चे मुसलमान हैं इन के लिये दरजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इज़ज़त की रोज़ी।

सूरए तौबा में इरशाद होता है :

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (प १०१, التوبة: १००)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें येही बड़ी कामयाबी है।

सूरतुल फ़तह की आयत नम्बर 29 का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान में यूँ है :

मुहम्मद (ﷺ) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल हैं, और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल तू इन्हें देखेगा रुकूअ करते, सजदे में गिरते, **अल्लाह** का फ़ज़ल व रिज़ा चाहते, इन की अलामत इन के चेहरों में हैं सजदों के निशान से।

(प २१, الفتح: २९)

आयाते कुरआनिय्या के इलावा कुतुबे अहदीष भी फ़ज़ाइले सहाबा के ज़िक्र से माला माल हैं चुनान्चे, हज़रते उमर फ़ारूक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि रसूलुल्लाह **ﷺ** ने फ़रमाया : मेरे सहाबा की इज़्ज़त करो कि वोह तुम्हारे नेक तरीन लोग हैं। (مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب الصحابة الحديث: १०१२، ج २، ص १३)

एक हदीषे पाक में है : मेरे सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ** सितारों की मानिन्द हैं तुम इन में से जिस की भी इक्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे। (مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب الصحابة الحديث: १०१८، ج २، ص १३)

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इस की शर्ह में फ़रमाते हैं : **سُبْحَنَ اللَّهُ** कैसी नफ़ीस तशबीह है ! हुज़ूर **ﷺ** ने अपने सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** को हिदायत के तारे फ़रमाया और दूसरी हदीष में अपने अहले बैत **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** को कश्तिये नूह फ़रमाया, समन्दर का मुसाफ़िर कश्ती का भी हाज़त मन्द होता है और तारों की रहबरी का भी कि जहाज़ सितारों की रहनुमाई पर ही समन्दर में चलते हैं। इस तरह उम्मत मुस्लिमा अपनी ईमानी ज़िन्दगी में अहले बैते अतहार **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के भी मोहताज हैं और सहाबए किबार **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के भी हाज़त मन्द, उम्मत के लिये सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** की इक्तिदा में ही इहतिदा या'नी हिदायत है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. ८ स. ३४५)

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह  
इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार, अस्हाबे हुज़ूर  
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

(हदाइके बख़्शिश, हिस्सा अव्वल, स. 111)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम इन्सानों में  
सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ सब से ज़ियादा ता'ज़ीम व तौकीर के  
लाइक़ हैं। येह वोह मुक़द्दस व मुबारक हस्तियां हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दा'वत पर लब्बैक कहा, दाइराए इस्लाम में  
दाख़िल हुवे और तन मन धन से इस्लाम के आफ़ाक़ी और अबदी  
पैग़ाम को दुनिया के एक एक गोशे में पहुंचाने के लिये कमर बस्ता  
हो गए। तारीख़ गवाह है कि इन मुबारक हस्तियों ने कुरआनो हदीष  
की ता'लीमात को आ़म करने और परचमे इस्लाम की सरबुलन्दी  
के लिये ऐसी बे मिषाल कुरबानियां दी हैं कि आज के दौर में जिन  
का तसव्वुर भी मुश्किल है। रसूले अकरम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रुए  
जैबा की ज़ियारत वोह अज़ीम सआदत है कि दुनिया जहां की कोई  
ने'मत इस के बराबर नहीं हो सकती और सहाबए किराम तो वोह  
हैं कि शबो रोज़ आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत और आप की  
सोहबते फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ होते रहे। कुरआन व दीन को हुज़ूर  
صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की मुबारक ज़बान से सुना और बे वासिता **अल्लाह**  
तआला के अवामिर व नवाही के मुखातब रहे।

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जो फ़ुक़हा सहाबा  
में एक मुमताज़ मक़ाम रखते हैं आप एक मौक़अ पर सहाबए किराम  
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की अज़मत व फ़ज़ीलत पर रोशनी डालते हुवे इरशाद  
फ़रमाते हैं : जो शख़्स राहे रास्त पर चलना चाहे उसे चाहिये कि इन  
लोगों के रास्ते पर चले और उन की इक़्तदा व पैरवी करे जो इस

जहां से गुज़र गए कि ज़िन्दों के बारे में येह अन्देशा मौजूद है कि वोह दीन में किसी फ़ितने और इब्तिला में मुब्तला हो जाएं और येह लोग रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबाए किराम हैं येह हज़रात उम्मत में सब से ज़ियादा अफ़ज़ल हैं सारी उम्मत में सब से ज़ियादा इन के दिल नेकोकार, इन का इल्म सब से ज़ियादा गहरा, इन के आ'माल तकल्लुफ़ से ख़ाली, येह वोह लोग हैं जिन को **अल्लाह** तआला ने अपने नबी की रफ़ाक़त व सोहबत और इक़ामत व ख़िदमते दीन के लिये चुना तो इन का फ़ज़लो कमाल पहचानो और इन के आधार व तरीकों की पैरवी करो और हत्तल वस्अ इन के अख़्लाक़ और इन की सीरत व रविश इख़्तियार करो कि बेशक येह लोग हिदायते मुस्तकीम पर काइम थे। (مشكاة المصابيح، كتاب الاعتصام بالكتاب والسنة، الحديث: ۱۹۳، ج ۱، ص ۵۷)

इन सब आयात व रिवायात पर नज़र करते हुवे येह जज़्म व यकीन हासिल होता है कि इन हज़रात की शान बहुत आ'ला व अरफ़अ है, इन मुक़द्दस हस्तियों पर **अल्लाह** عزّوجلّ का बेहद फ़ज़लो करम है लिहाज़ा हमें चाहिये कि इन पाकीज़ा नुफ़ूस की महबूबत दिल में बसाते हुवे इन के हालात व वाकिआत का गहराई के साथ मुतालआ करें और दोनों जहां में कामयाबी के लिये इन के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ज़िन्दगी बसर करने की कोशिश करें।

इस सिलसिले में शैख़ुल हदीष हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عليه رَحْمَةُ اللهِ الْعَنِي ने सहाबाए किराम के वाकिआत व हालात को इन्तिहाई इख़्तिसार के साथ करामात के ज़िम्न में तहरीर फ़रमाया और इस मजमूए का नाम “**करामाते सहाबा**” रखा। इस किताब में उन्होंने ने इन हज़रात की इबादात व रियाज़ात, इख़लास व तक्वा, अद्ल व सिद्क़, हुस्ने अख़्लाक़ और दीगर सिफ़ात का तज़क़िरा फ़रमाया है, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इस किताब को पढ़ते वक़्त आप अपनी दिली कैफ़िय्यात में तब्दीली महसूस फ़रमाएंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा'वते इस्लामी” की मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिय्या” ने अकाबिरीन व बुजुगाने अहले सुन्नत की माया नाज़ कुतुब को हत्तल मक़दूर जदीद अन्दाज़ में शाएअ करने का अज़्म किया है लिहाज़ा इस मदनी गुलदस्ते को भी दौरे जदीद के तकाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुवे पेश करने की सआदत हासिल कर रही है, जिस में मदनी उ-लमाए किराम كَثَرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने दर्जे जैल काम करने की कोशिश की है :

- ❶ किताब पर काम शुरूअ करने से पहले इस किताब के मुख़्तलिफ़ नुस्खों में हत्तल मक़दूर सहीह तरीन नुस्खे का इन्तिखाब
- ❷ जदीद तकाज़ों के मुताबिक़ कम्प्यूटर कम्पोजिंग जिस में रुमूजे अवकाफ़ (फुल स्टोप, कौमाज़, कौलन्ज़ वगैरा) का मक़दूर भर एहतियाम
- ❸ कम्पोजिंग शुदा मवाद का अस्ल से तकाबुल ताकि महज़ूफ़ात व मकरूहात वगैरा जैसी अग़लात न रहें
- ❹ अरबी इबारात, सिने वाकिआत और अस्माए मक़ामात व मज़क़रात का अस्ल माख़ज़ से तकाबुल व तस्हीह
- ❺ आयाते कुरआनिया, अहादीषे मुबारका, रिवायात व फ़िक़ही मसाइल वगैरहा की अस्ल माख़ज़ से हत्तल मक़दूर तख़रीज व ततबीक़
- ❻ हवाला जात की तफ़्तीश ताकि अग़लात का इमकान कम से कम हो
- ❼ इरतिबाते मतन व हवाशी या'नी हवालाजात वगैरा को मतन से जुदा रखते हुवे उसी सफ़हा पर नीचे हाशिये में तहरीर किया गया है, नीज़ मुअल्लिफ़ के हाशिये के साथ बतौरै इम्तियाज़ 12 मिन्ह लिख दिया है ।

اَللّٰهُمَّ عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बे कस पनाह में इस्तिदआ है कि इस किताब को पेश करने में उ-लमाए किराम ने जो मेहनत व कोशिश की उसे क़बूल फ़रमा कर इन्हें बेहतरीन जज़ा दे और इन के इल्म व अमल में बरक़तें अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिय्या” और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए

اٰمِيْنَ بِحَا۟لِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم  
शो 'बए तख़रीज मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)



## तझारुफे मुसन्निक

हजरते अलहाज मौलाना अब्दुल मुस्तफा अल आ'जमी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ज़िलका'दा सि. 1333 हि. को अपने आबाई वतन घोसी ज़िलअ आ'जमगढ़ में पैदा हुवे ।

### शाजरु नसब येह है

मुहम्मद अब्दुल मुस्तफा बिन शैख़ हाफ़िज़ अब्दुरहीम बिन शैख़ हाजी अब्दुल वहाब बिन शैख़ चमन बिन शैख़ नूर मुहम्मद बिन शैख़ मिठू बाबा **(رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى)**

आप के वालिदे गिरामी हजरते हाफ़िज़ अब्दुरहीम साहिब हाफ़िज़े कुरआन, उर्दू ख़्वां, वाकिफ़े मसाइले दीनिय्या, मुत्तकी और परहेज़गार थे । गाउं के मशहूर बुजुर्ग हाफ़िज़ अब्दुस्सत्तार साहिब से शरफ़े तलम्मुज़ हासिल था जो हजरते अशरफ़ी मियां किछौछवी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के बड़े भाई हजरते शाह सय्यिद अशरफ़ हुसैन साहिब किब्ला किछौछवी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के मुरीद थे चन्द साल हुवे इन्तिकाल फ़रमा गए ।

### ता'लीम

अल्लामा आ'जमी साहिब कुरआने मजीद और उर्दू की इब्तिदाई ता'लीम अपने वालिदे माजिद से हासिल कर के मद्रसा इस्लामिय्या घोसी में दाख़िल हुवे और उर्दू फ़ारसी की मजीद ता'लीम पाई । चन्द माह मद्रसा नासिरुल उलूम घोसी में भी ता'लीम हासिल की । इस के बा'द मद्रसा मा'रूफ़िय्या मा'रूफ़ पूरा में मीज़ान से शर्हे जामी तक पढ़ा । फिर सि. 1351 हि. में मद्रसा मुहम्मदिय्या हनफ़िय्या अमरोहिय्या ज़िलअ मुरादाबाद (यूपी) का रुख़ किया और वहां शैख़ुल उ-लमा हजरते मौलाना शाह उवैस हसन उर्फ़ गुलाम जीलानी आ'जमी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** (शैख़ुल हदीष दारुल उलूम फैजुरसूल बराऊं शरीफ़ मुतवफ़फ़ा सि. 1397 हि.)

और हज़रते मौलाना हिक्मतुल्लाह साहिब किब्ला अमरोही और हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद खलील साहिब चिश्ती काज़िमी अमरोही की ख़िदमत में एक साल रह कर इक़तिसाबे फैज़ किया ।

इस के बा'द सि. 1352 हि. में हज़रते सदरुशशरीआ मौलाना हकीम मुहम्मद अमजद अली साहिब आ'ज़मी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के हमराह बैरैली शरीफ़ तशरीफ़ ले गए और मद्रसा मन्ज़रे इस्लाम महल्ला सौदागरान बैरैली में दाख़िल हो कर ता'लीमी सिलसिला शुरूअ फ़रमाया । मुल्ला हसन, मैबज़ी वग़ैरा चन्द किताबें हज़रते मुहद्दिषे आ'ज़म पाकिस्तान मौलाना मुहम्मद सरदार अहमद साहिब चिश्ती गुरदासपुरी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से पढ़ीं बाकी किताबें हज़रते सदरुशशरीआ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से पढ़ीं ।

इस दौरान हुज्जतुल इस्लाम हज़रते मौलाना शाह हामिद रज़ा ख़ान साहिब **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** (ख़लफ़े अक़्बर सरकारे आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा **قُدَسَ سِرُّهُ**) की ख़िदमत में हाज़िरी दी और शरफ़याब हुवे । मौसूफ़ आप पर बड़ा करम फ़रमाया करते थे । आ'ला हज़रत **قُدَسَ سِرُّهُ** के बरादरे खुर्द हज़रते मौलाना मुहम्मद रज़ा ख़ान साहिब उर्फ़ नन्हे मियां **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से फ़राइज़ की मश्क़ की और हुजूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना शाह मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान नूरी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** (जैब सज्जादा अलिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या बैरैली शरीफ़, ख़लफ़े असगर हुजूर आ'ला हज़रत **قُدَسَ سِرُّهُ**) के दारुल इफ़ता में भी हाज़िरी दी ।

बैरैली शरीफ़ में दौराने त़ालिबे इल्मी आप की इक़तिसादी हालत अच्छी नहीं थी । मस्जिद की इमामत और ट्यूशन से अख़राजात पूरे करते थे । जब हज़रते सदरुशशरीआ मौलाना अमजद अली साहिब **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** बैरैली से रुख़्सत हो कर मद्रसा हाफ़िज़िय्या सईदिय्या दादू ज़िल्अ अलीगढ़ में मन्सदे तदरीस पर जल्वा फ़रमा हुवे तो मौलाना आ'ज़मी साहिब भी बैरैली शरीफ़ न रह सके और 10 शव्वाल सि. 1355 हि. को अलीगढ़ हज़रते सदरुशशरीआ की

ख़िदमत में हाज़िर हुवे और मद्रसा हाफ़िज़िय्या सईदिय्या में दाख़िला लिया और इम्तिहानात में अच्छी पोज़ीशन से कामयाब हो कर इन्आमात भी हासिल किये ।

अलीगढ़ के दौराने कियाम हज़रते मौलाना सय्यिद सुलैमान अशरफ़ बिहारी प्रोफ़ेसर दीनिय्यात मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ़ (ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत قُدّس سرّة) की ख़िदमत में भी हाज़िरी देते और इल्मी इक्तिसाब फ़रमाते रहे ।

सि. 1356 हि. में मद्रसा हाफ़िज़िय्या सईदिय्या दादू से सनदे फ़राग़ हासिल किया । हज़रते मौलाना सय्यिद शाह मिस्बाहुल हसन साहिब चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सर पर दस्तारे फ़ज़ीलत बांधी ।

**बैअत**

17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1353 हि. में हज़रते काज़ी इब्ने अब्बास साहिब अब्बासी नक्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पहले उर्स में हज़रते अलहाज़ हाफ़िज़ शाह अबरार हसन ख़ान साहिब नक्शबन्दी शाह जहांपूरी (जो काज़ी साहिब मौसूफ़ के पीर भाई थे) से मुरीद हुवे ।

2 जीका'दा सि. 1370 हि. को हज़रते शाह अबरार हसन साहिब नक्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का इन्तिकाल हो गया तो इस के बा'द आप के ख़लीफ़ए बरहक़ अलहाज़ काज़ी महबूब अहमद साहिब अब्बासी नक्शबन्दी से भी इक्तिसाबे फ़ैज़ किया ।

चूँकि शुरूअ ही से मौसूफ़ का रुजहान सिलसिलए नक्शबन्दिय्या की तरफ़ ज़ियादा था इसी लिये इस सिलसिले में मुरीद हुवे मगर दीगर सलासिल के बुजुर्गों से भी इक्तिसाबे फ़ैज़ो बरकात का सिलसिला जारी रखा ।

25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1358 हि. में उर्से रज़वी के मुबारक व मसऊद मौक़अ पर हज़रते हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ान साहिब (सि. 1363 हि.) ने सिलसिलए आलिय्या कादिरिय्या रज़विय्या की ख़िलाफ़त व इजाज़त से सरफ़राज़ फ़रमाया ।

## सिलसिलए तदरीस

फ़ारिगुत्तहसील होने के बा'द सब से पहले मद्रसा इस्हाक़िय्या जोधपूर (राजस्थान) में मुदर्रिस हुवे । दर्से निज़ामी का इफ़िताह फ़रमाया और मद्रसा तरक्की की राह पर चल निकला था कि अचानक जोधपूर में हिन्दू मुस्लिम फ़साद होने की वजह से बहुत से बैरूनी उ-लमा के साथ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى को गिरिफ़्तार किया गया और बा'द में इश्तिआल अंगेज़ तक्ररीर करने का इलज़ाम लगा कर हुकूमत ने शहर बदर कर दिया जिस से मद्रसे को भी नुक़सान हुवा और मौलाना मौसूफ़ को भी वहां से आना पड़ा ।

सितम्बर सि. 1939 ई. में हज़रते काज़ी महबूब अहमद साहिब की दा'वत पर अमरोहा तशरीफ़ ले गए और वहां मद्रसए मुहम्मदिय्या हनफ़िया में तदरीसी ख़िदमात अन्जाम दीं जिस का सिलसिला तीन साल तक रहा । उस वक़्त वहां पर मौलाना सय्यद मुहम्मद ख़लील साहिब काज़िमी अमरोही सदर मुदर्रिस थे इस दौरान भी मौसूफ़ से इस्तिफ़ादा किया । इस के बा'द सि. 1942 ई. में दारुल उलूम अशरफ़िय्या मुबारकपूर में तदरीसी ख़िदमात का आगाज़ फ़रमाया और ग्यारह साल तक यहां भी दर्स देते रहे और इस की ता'मीर व तरक्की में भरपूर हिस्सा लिया ।

सि. 1952 ई. में आप का अहमदाबाद गुजरात ब सिलसिलए तक्ररीर दौरा हुवा । मुतअद्द तक्रारीर के सबब लोग गिरवीदा हुवे और जब वहां पर एक दारुल उलूम का क़ियाम अमल में आया तो अहमदाबाद के अमाइदे अहले सुन्नत ने ब इसरार मुबारक पूर से बुलवा कर दारुल उलूम शाहे आलम में मुदर्रिस रखा । इस सिलसिले में हज़रते मौलाना इब्राहीम रज़ा खां साहिब नबीरए आ'ला हज़रत और हुज़ूर मुफ़्तये आ'ज़मे हिन्द مَدِظْلَةُ الْعَالِي ने दारुल उलूम के क़ियाम और तरक्की में भरपूर हिस्सा लिया ।

मौलाना ने इस दारुल उलूम की तरक्की और बका में भरपूर और जान तोड़ कर कोशिश की और इस को उरूज तक पहुंचा कर दम लिया ।

बा'ज नागुफ़ता बेह हालात और अरकान में से बा'ज के दरपे आज़ार होने की वजह से इस्ति'फ़ा दे कर 17 शा'बान सि. 1378 हि. को वहां से वतन आ गए । इस के बा'द हज़्जे बैतुल्लाह को रवाना हुवे । वापसी पर दारुल उलूम समदिय्या भीवन्डी (महाराष्ट्र) की तलबी पर मार्च सि. 1960 ई. को तलबा की एक जमाअत के साथ मद्रसए मजकूर में तशरीफ़ ले गए और चार बरस तक जम कर वहां तदरीसी ख़िदमात को अन्जाम दिया और मद्रसए मजकूर की ता'मीर में भी भरपूर कोशिश फ़रमाई, जिन के तुफ़ैल एक शानदार इमारत आज भी मौजूद व शाहिद है ।

मगर जब वहां के भी बा'ज हज़रात से तअल्लुकात मा'मूल पर न रहे तो ख़ातिर बरदाश्ता हो कर सि. 1964 ई. में मुस्ता'फी हो गए । इस के बा'द फ़ौरन दारुल उलूम मिस्कीनिय्या धोराजी गुजरात से तलबी आ गई और मौलाना हकीम अली मुहम्मद साहिब अशरफी के और दूसरे लोगों के इसरार पर वहां मअ जमइय्यते तलबा तशरीफ़ ले गए मगर वहां भी ज़ियादा दिनों क़ियाम न कर सके और बिल आख़िर दारुल उलूम मन्ज़रे हक़ टान्डा फैज़ाबाद (यूपी) में ब ओहदए सदर मुदर्रिसीन व शैख़ुल हदीष तशरीफ़ ले गए जहां तकरीबन दस साल से उलूम व मआरुफ़ के गोहर लुटा रहे हैं । खुदा ने तफ़हीम की ख़ूब ख़ूब सलाहिय्यत बख़्शी है । तमाम मुतदावल किताबों पर यक्सां कुदरत रखते हैं और पूरी महारत से दर्स देते हैं और तलबा ख़ूब मानूस होते हैं । तदरीस की इस तवील मुद्त में तलबा की एक ता'दाद तय्यार हो गई और आज मुल्क व बैरूने मुल्क आप के तलामिज़ा तदरीस व तकरीर और मुनाज़िरा व तस्नीफ़ की ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं ।



## इफ़ता

तदरीस के साथ साथ फ़तवा नवेसी का काम भी करते रहे हैं। तहरीर कर्दा फ़तवों की नक़लें कम महफ़ूज़ हैं फिर भी छे सो से ज़ियादा फ़तावे मन्कूल हैं जो कभी शाएअ किये जा सकते हैं।

## वा'ज

मौला तआला ने वा'ज व नसीहत की भी ख़ूब सलाहियत बख़्शी है। मुल्क के गोशे गोशे में आप के मवाइजे हसना की धूम मची हुई है और बहुत से मवाइज तो मतबूआ भी हैं जिन से अ़वाम हमेशा फ़ाइदा हासिल करते रहेंगे।

## जौके सुख़न

जमानए तालिबे इल्मी ही से शे'र व शाइरी का जौक है। ना'त शरीफ़, कौमी नज़्में और ग़ज़ल में भी तब्ज़ आज़माई फ़रमाई है। कोई मजमूअए कलाम मतबूआ नहीं है।

## तस्नीफ़ व तालीफ़

तदरीस, इफ़ता, वा'ज वगैरा के साथ आप ने तस्नीफ़ व तालीफ़ का भी बहुत अच्छा और ख़ूब जौक पाया है। और इस की तरफ़ खास्सी तवज्जोह मबज़ूल फ़रमाई है। मुख़्तलिफ़ मौजूआत पर आप की मतबूआ उर्दू तसानीफ़ मुन्दरिजए जैल हैं :

- ﴿1﴾ मौसिमे रहमत (सब से पहली तस्नीफ़ जो मुतबर्क रातों और मुबारक अय्याम के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल है)
- ﴿2﴾ मा'मूलातुल अबरार ब मआना अल आषार (तसव्वुफ़ के बयान में)
- ﴿3﴾ औलियाए रिजालुल हदीष (औलियाए मुहद्दिषीन की सवानेह)

﴿4﴾ मशाइखे नक्शबन्दिय्या (नक्शबन्दी बुजुर्गों का सिलसिला वार तज्किरा)

﴿5﴾ रूहानी हिक्कायात (दो हिस्से)

﴿6﴾ ईमानी तकरीरें

﴿7﴾ नूरानी तकरीरें

﴿8﴾ हक्कानी तकरीरें

﴿9﴾ इरफ़ानी तकरीरें

﴿10﴾ कुरआनी तकरीरें

﴿11﴾ सीरतुल मुस्तफ़ा

﴿12﴾ नवादिरुल हदीष (चालीस हदीषों की उम्दा और मुफ़ीद शर्ह)

﴿13﴾ करामाते सहाबा

﴿14﴾ जन्नती ज़ेवर

﴿15﴾ क़ियामत कब आएगी ?

तमाम किताबें मुतअद्द बार तबअ हो कर अहले जौक के लिये तस्कीन का सामान बन चुकी हैं और ख़ास बात येह है कि इस वक्त भी आप की तमाम किताबें ब आसानी मिल जाती हैं। कोई भी किताब नायाब और मुश्किलुल हुसूल नहीं, खुद ही अपने एहतिमाम से तबअ कराते और शाएअ फ़रमाते हैं। किताबत व तबाअत का मे'यार भी अ़ाम किताबों से बेहतर है जो कि मक्बूलिय्यत की एक ख़ास वजह है। आप की तकरीर व तस्नीफ़ में मुफ़ीद लताइफ़ की ख़ास्सी आमेज़िश होती है जो अ़वामी दिलचस्पी का बाइष है।

## हज व ज़ियारत

सि. 1378 हि. ब मुताबिक़ सि. 1959 ई. में हज्जे का'बा व ज़ियारते मदीनए तय्यिबा का अज़्म किया और शाद काम हुवे और पूरी सिद्दहत व तवानाई के साथ तमाम अरकान की अदाएगी से सरफ़राज़ हुवे। जिद्दा में आप के बरादरे तरीक़त अलहाज अब्दुल हमीद के मकान पर महफ़िले वा'ज़ का इनइक़ाद हुवा जिस में आप ने निहायत ही रिक्कत अंगेज़ तकरीर फ़रमाई।

दोनों मक़ामाते मुतबर्का में कषीर उ-लमा व मशाइख़ से मुलाक़ात फ़रमाई और बोहतों ने आप को अपने सलासिले तरीक़त, दलाइलुल ख़ैरात, हज़्बुल बहूर और अवरादो वज़ाइफ़ नीज़ हदीष की सनदें व इजाज़तें मर्हमत फ़रमाई। हज़रते शैख़ मुफ़्ती मुहम्मद सा'दुल्लाह अल मक्की ने बा वुजूदे जो'फ़ पीरी के आप को खुद लिख कर सनदें अता कीं और दीगर तबर्क़ात व आषार से भी नवाज़ा मौलाना अशशैख़ अस्सय्यिद अलवी अब्बास अल मक्की मुफ़्ती अल मालिकिय्या व मुदर्रिसुल हदीष बिल हरम शरीफ़ से भी मुलाक़ात का शरफ़ हासिल किया।

हज को जाते वक़्त मौलाना मौसूफ़ ने हुज़ूर मुफ़्तिये आ'जमे हिन्द **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से शैख़ मज़कूर के नाम एक तअरुफ़ी ख़त लिखवा लिया था जिस से तवज्जोहाते अलिय्या को मुनअतिफ़ कराने में मदद मिली। शैख़ की बारगाह में पहुंच कर जब आप ने ख़त पेश किया और शैख़ इस जुम्ले पर पहुंचे तो फ़रमाया : **هَذَا تَلْمِيزٌ تَلْمِيزُ الشَّيْخِ مَوْلَانَا أَحْمَدُ رِضَا خَانَ الْهِنْدِي** : अब्दुल मुस्तफ़ा आप ही हैं? आप ने अर्ज किया : हां मैं ही हूं! फिर तो बड़ी ही गर्म जोशी से मुआनका फ़रमाया और दुआएं दीं और कुछ देर तक सरकार मुर्शिदी हुज़ूर मुफ़्तिये आ'जमे हिन्द **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का ज़िक्र करते रहे और सरकारे आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का तज़क़िरा फ़रमाया फिर अपने घर बुलाया।

जब आप उन के घर पहुंचे तो वोह आप के साथ बहुत ही तवज्जोह और मेहरबानी से पेश आए और अपनी तमाम तसानीफ़ की एक एक जिल्द इनायत फ़रमा कर सिहाहे सित्ता की सनदे हदीष अता फ़रमाई।

मौलाना अशशैख़ मुहम्मद बिन अल अरबी अल जज़ाईरी के नाम भी सरकारे मुफ़्तये आ'ज़मे हिन्द **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का ख़त ले कर हज़िर हुवे तो आप की मसरत की इन्तिहा न रही, बड़ी तपाक से मिले और सहीह बुख़ारी शरीफ़ और मुअत्ता की सनदे हदीष अता फ़रमाई और हज़रते इमाम अहमद रज़ा खां फ़ाज़िले बरैलवी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का तज़क़िए जमील इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाया :

“हिन्दुस्तान का जब कोई अलिम हम से मिलता है तो हम उस से मौलाना शैख़ अहमद रज़ा खां हिन्दी के बारे में सुवाल करते हैं अगर उस ने ता'रीफ़ की तो हम समझ लेते हैं कि येह **सुन्नी** है और अगर उस ने मज़म्मत की तो हम को यकीन हो जाता है कि येह शख्स **गुमराह** और **बिदअती** है हमारे नज़दीक येही कसोटी है ।”

मौलाना अशशैख़ ज़ियाउद्दीन मुहाजिर मदनी ख़लीफ़े आ'ला हज़रत से भी मुलाक़ात का शरफ़ हासिल किया और आप की सोहबत से फ़ैज़याब हुवे । आप ही ने दीगर हज़रत से भी मुलाक़ात कराई जिन में शैख़ुद्दलाइल हज़रते सय्यिद यूसुफ़ बिन मुहम्मद अल मदनी भी हैं ।

इन मुतअद्दिद शुयूख़ की असनाद की नक़लें हज़रते अल्लामा आ'ज़मी साहिब ने अपनी किताब “**मा'मूलातुल अबरार**” में नक़ल फ़रमाई हैं जो कई सफ़हात पर फैली हुई हैं ।<sup>(1)</sup>

मुहम्मद अब्दुल मुबीन नो'मानी मिस्बाही

<sup>1</sup> .....मज़कूरा बाला मज़मून मैं ने “मा'मूलातुल अबरार” के हिस्सेए सवानेह और ज़ाती मा'लूमात की बुन्याद पर क़लम बन्द किया है । 12

# शरफे इन्तिशाब

हज़राते सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के दरबारे फ़ज़ीलत में  
 एक नियाज़ मन्द मुसलमान का  
 नज़रानए महब्बत

मेरे आका के जितने भी अस्हाब हैं  
 उस मुबारक जमाअत पे लाखों सलाम

खाक पाए सहाबा  
 अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी عَفِيَ عَنْهُ  
 करीमुद्दीन पूर, पोस्ट घोसी  
 ज़िलअ आ'जमगढ़

## मन्क़बते सहाबउ किराम (رضي الله تعالى عنهم)

दो आलम न क्यूं हो निषारे सहाबा

कि है अर्श मन्ज़िले वक़ारे सहाबा

अमीं हैं येह कुरआनो दीने खुदा के      मदारे हुदा ए'तिबारे सहाबा  
 रिसालत की मन्ज़िल में हर हर क़दम पर      नबी को रहा इन्तिज़ारे सहाबा  
 ख़िलाफ़त, इमामत, विलायत, करामत      हर एक फ़ज़ल पर इक़्ितदारे सहाबा  
 नुमायां है इस्लाम के गुलिस्तां में      हर एक गुल पे रंगे बहारे सहाबा  
 कमाले सहाबा, नबी की तमन्ना      जमाले नबी है करारे सहाबा  
 येह मेहरें हैं फ़रमान ख़तमुर्रसूल की      है दीने खुदा शाहकारे सहाबा  
 सहाबा हैं ताजे रिसालत के लश्कर      रसूले ख़ुदा ताजदारे सहाबा  
 इन्हीं में हैं सिद्दीक़ व फ़ारूक़ो उषमां      इन्हीं में अली शहसुवारे सहाबा  
 इन्हीं में है बद्र व उहुद के मुजाहिद      लक़ब जिन का है जां निषारे सहाबा  
 इन्हीं में है अस्हाबे शजरह नुमायां      जिन्हें कहते हैं राज़दारे सहाबा  
 इन्हीं में हुसैनो हसन, फ़ातिमा हैं      नबी के जो हैं गुल अज़ारे सहाबा

पसे मर्ग ऐ **आ'जमी** येह दुआ है

बनूं मैं गुबारे मज़ारे सहाबा



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## तम्हीदी तजल्लियां

پندھا وادیم حاصل شد فراغ

ما علینا یا انحی الا البلاغ

बुजुर्गाने दीन की करामतों का नूरानी तज्किरा यूं तो हर दौर में हमेशा होता रहा है और इस उन्वान पर तकरीबन हर ज़बान में किताबें भी लिखी जाती रहीं मगर इस ज़माने में इस का चर्चा बहुत ज़ियादा बढ़ गया है, चुनान्चे, तजरिबा है कि अकषर वाइज़ीने किराम अपने मवाइज़ की महफ़िलों में और बेशतर पीराने किबार अपने मुरीदीन की मजलिसों में बुजुर्गाने दीन के कश्फ़ व करामात ही के वलवला अंगेज़ जिक्रे जमील से गर्मिये मजालिस का सामान फ़राहम किया करते हैं और सामेईन एक ख़ास जज़्बए तअष्पुर के साथ सुनते और सर धुनते रहते हैं और बा'ज़ मुसन्निफ़ीन और मजमून निगार भी इस उन्वान पर अपनी क़लम कारियों के जोहर दिखा कर अ़वाम से ख़िराजे तहसीन हासिल करते रहते हैं और इस में ज़रा भी शक नहीं कि बुजुर्गाने दीन की करामतों का तज्किरा एक ऐसा मुअष्विर और दिलकश मजमून है कि इस से रूढ़ की बालीदगी, क़ल्ब में नूरे ईमान और दिलो दिमाग़ के गोशे गोशे में ईमानी तजल्लियों का सामान पैदा हो जाता है। जिस से अहले ईमान की इस्लामी रगों में एक तूफ़ानी लहर और बदन की बोटी बोटी में जोशे आ'माल का एक इरफ़ानी जज़्बा उभरता महसूस होता है। इस लिये मेरा नज़रिय्या है कि दौरे हाज़िर में बुजुर्गाने दीन की इबादतों, रियाज़तों और इन की करामतों का ज़ियादा से ज़ियादा ज़िक्र व तज्किरा और इन का चर्चा मुसलमानों में जोशे ईमान और जज़्बए अमल पैदा करने का बहुत ही मुअष्विर ज़रिअ़ा और निहायत ही बेहतरीन तरीका है।

लेकिन तज़किए करामात के सिलसिले में मेरे नज़दीक एक सानेहा बहुत ही हैरत नाक बल्कि इन्तिहाई अलमनाक है कि मुतअख़िबरीन औलियाए किराम बिल खुसूस मजज़ूबों और बाबाओं के कश्फ़ व करामात और खास कर दौरे हाज़िर के पीरों की करामतों का तो इस क़दर चर्चा है कि हर कूचे व बाज़ार बल्कि हर मकान व दुकान, होटलों और चाए ख़ानों में, किताबों और रिसालों के अवराक़ में हर जगह इस का डंका बज रहा है और हर तरफ़ इस की धूम मची हुई है, मगर अफ़सोस सद हज़ार अफ़सोस कि उम्मत मुस्लिमा का वोह तबक़ए उलया जो यकीनन तमाम उम्मत में “अफ़ज़लुल औलिया” है या’नी “सहाबए किराम” । इन की विलायत व करामत कहीं भी कोई तज़क़िरा और चर्चा न कोई सुनाता है न कहीं सुनने में आता है, न किताबों और रिसालों के अवराक़ में मिलता है, हालांकि इन बुजुर्गों की विलायत व करामत अज़ीम दरजा इस क़दर बुलन्दो बाला है कि अगर तमाम दुन्या के अगले और पिछले औलिया को इन के नक़्शे क़दम चूम लेने की सअ़ादत नसीब हो जाए तो इन की विलायत व करामत को मे’राजे कमाल हासिल हो जाए । क्यूंकि दर हक़ीक़त तो येही हज़रात मदारे विलायत व करामत हैं कि इन के नक़्शे पा की पैरवी के बिग़ैर विलायत व करामत तो कुजा ? किसी को ईमान भी नसीब नहीं हो सकता । येह लोग बिला वासिता आप़ताबे रिसालत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से नूरे मा’रिफ़त हासिल कर के आस्माने विलायत में सितारों की तरह चमकते और गुलिस्ताने करामत में गुलाब के फूलों की तरह महकते हैं और तमाम दुन्या के औलिया इन की विलायत के शाही महल्लात की चोखट पर भिकारी बन कर नूरे मा’रिफ़त की भीक मांगते रहते हैं ।

**अल्लाहु अकबर !** येह वोह फज़ीलत मआब और मुक़द्दस हस्तियां हैं जो हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के जलाल व जमाले नबुव्वत को अपनी ईमानी नज़रों से देख कर और हबीबे खुदा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के शरफ़े सोहबत से सरफ़राज़ हो कर खुश बख़्ती और नेक नसीबी के बादशाह बल्कि शहनशाह बन गए और सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के मुअज़्ज़ज़ लक़ब से सर बुलन्द हो कर तमाम औलियाए उम्मत में उसी तरह नज़र आ रहे हैं जिस तरह टिमटिमाते हुवे चरागों की महफ़िल में हज़ारों पावर का जगमगाता हुवा बिजली का बल्ब या सितारों की बरात में चमकता हुवा चांद ।

अफ़्सोस कि न तो हमारे वाइज़ीने किराम ने अपनी तक़रीरों में सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** की करामतों को बयान किया न हमारे मशाइख़े इज़ाम ने अपने मुरीदों को इस से आगाह किया, न हमारे उलमाए अहले सुन्नत ने इस उन्वान पर कभी क़लम उठाने की ज़हमत गवारा की, हालांकि राफ़ज़ियों के मुक़ाबले में ज़ियादा से ज़ियादा इस उन्वान पर लिखने और इस का तज़क़िरा और चर्चा करने की ज़रूरत थी और आज भी है क्यूंकि हमारी ग़फ़लतों का येह नतीजा हुवा कि हमारे अ़वाम जानते ही नहीं कि सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** भी औलिया हैं और इन बुजुर्गों से भी करामतों का सुदूर व जुहूर हुवा है ।

दर हक़ीक़त एक अरसए दराज़ से मेरा येह तअष्पूर मेरे दिल का कांटा बना हुवा था चुनान्वे, येही वोह जज़्बा है जिस से मुतअष्षिर हो कर मैं अपनी कोताह दस्ती और इल्मी कम माईगी के बावुजूद फ़िल हाल एक सो सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के मुक़द्दस हालात और इन के कमालात व करामात का एक मजमूआ ब सूरते गुलदस्ता नाज़िरीने किराम की ख़िदमत में नज़्र करने की सआदत हासिल कर रहा हूं । जो **“करामाते सहाबा ﷺ”** के सीधे साधे नाम से मौसूम है ।

گر قبول افتد زهے عز و شرف

सच पूछिये तो दर हकीकत मेरी नज़र में येह किताब इस काबिल ही नहीं थी कि इस को मन्ज़रे आम पर लाऊं क्योंकि इतने अहम उन्वान पर इतनी छोटी सी किताब हरगिज़ हरगिज़ अज़मते सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के शायाने शान नहीं है, मगर फिर येह सोच कर कि हज़राते सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के दरबारे अज़मत में फूल न सही तो कम से कम फूल की एक पंखड़ी ही नज़्र करने की सआदत हासिल कर लूं, इस किताब को छापने की हिम्मत कर ली है। फिर येह भी खयाल आया कि शायद मुझ कम इल्म की इस काविशे क़लम को देख कर दूसरे अहले इल्म मैदाने तसनीफ़ की जौलान गाह में अपनी क़लम कारी के जोहर दिखाएं तो **(1)** **الدَّالُّ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِهِ** की सआदत मुझे नसीब हो जाएगी।

मैं ने इस किताब में हज़राते खुलफ़ाए राशिदीन व हज़राते अशरए मुबशशरा **رَضُواْ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** के सिवा दूसरे सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के नामों और तज़क़िरों में क़सदन किसी खास तरतीब का इल्तिज़ाम नहीं किया है, बल्कि दौराने मुतालाआ जिन जिन सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** की करामतों पर नज़र पड़ती रही, उन को नोट करता रहा। यहां तक कि मेरी नोटबुक बढ़ते बढ़ते एक किताब बन गई क्योंकि मेरा अस्ल मक़सूद तो सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** की करामतों का तज़क़िरा था। ख़्वाह सग़ारे सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** का ज़िक्र पहले हो या किबारे सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** का इस से अस्ल मक़सद में कुछ फ़र्क नहीं पड़ता।

तदवीने किताब के बारे में अज़ीजे मोहतरम मौलाना कुदरतुल्लाह साहिब मुदर्रिस दारुल उलूम फैज़ुर्रसूल बराऊं शरीफ़ का ममनून हो कर उन के लिये दुआ गो हूं कि उन्होंने ने इस किताब के चन्द अजज़ा के मुसव्वदों की तबयीज़ कर के मेरे बारे क़लम को कुछ हलका कर दिया।

**(1)** ....भलाई की तरफ़ रहनुमाई करने वाला भलाई करने वाले की तरह है।

इसी तरह अपने दूसरे मुख़लिस तलामज़ा खुसूसन असदुल  
उलमा मौलाना अलहाज़ मुफ़्ती सय्यिद अहमद शाह बुख़ारी मुबल्लिगे  
अफ़्रिका साकिन व नजहान ज़िल्अ कच्छ और मौलाना सय्यिद मुहम्मद  
यूसुफ़ शाह ख़तीबे जामेअ मस्जिद चोक भूज ज़िल्अ कच्छ और  
मौलाना अब्दुरहमान साहिब मुदर्रिस मद्रसा अहले सुन्नत कोठारा  
ज़िल्अ कच्छ का भी बहुत बहुत शुक्र गुज़ार हूं कि इन मुख़लिस  
अजीजों ने हमेंशा मेरी तसानीफ़ को क़द्र की निगाहों से देखा और  
मेरी किताबों की इशाअत में काफ़ी हिस्सा लिया ।

فَجَزَاهُمُ اللَّهُ تَعَالَى أَحْسَنَ الْجَزَاءِ.

आख़िर में दुआगो हूं कि खुदावन्दे करीम अपने हबीब  
ﷺ के तुफ़ैल में मेरी इस हकीर इल्मी व क़लमी  
ख़िदमत को अपने फ़ज़लो करम से शरफ़े क़बूलिय्यत अता  
फ़रमाए और इस को मेरे लिये और मेरे वालिदैन व असातिज़ा  
व तलामिज़ा व अहबाब सब के लिये सामाने आख़िरत व  
ज़रीअए मग़फ़िरत बनाए ।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ الصَّلٰوَةُ وَالتَّسْلِيْمُ

اٰمِيْنَ يٰرَبَّ الْعٰلَمِيْنَ

तालिबे दुआ

अब्दुल मुस्तफ़ा अल आ'ज़मी

दारुल उलूम अहले सुन्नत फैजुरसूल

बराऊं शरीफ़ ज़िल्अ बस्ती यू.पी

25 शव्वाल सि. 1398 हि.

786/92

## तहक्कीके करामात

जमाने नबुव्वत से आज तक कभी भी इस मस्अले में अहले हक के दरमियान इख़िलाफ़ नहीं हुआ कि औलियाए किराम की करामतें हक़ हैं और हर जमाने में **अल्लाह** वालों की करामतों का सुदूर व जुहूर होता रहा और **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** क़ियामत तक कभी भी इस का सिलसिला मुन्क़तअ नहीं होगा, बल्कि हमेशा औलियाए किराम से करामात सादिर व ज़ाहिर होती ही रहेंगी।

और इस मस्अले के दलाइल में कुरआने मजीद की मुक़द्दस आयतें और अह़ादीषे करीमा नीज़ अक्वाले सहाबा व ताबेईन का इतना बड़ा ख़ज़ाना अवराके कुतुब में महफूज़ है कि अगर इन सब परागन्दा मोतियों को एक लड़ी में पिरो दिया जाए तो एक ऐसा गिरां क़द्र व बेश कीमत हार बन सकता है जो ता'लीम व तअल्लुम के बाज़ार में निहायत ही अनमोल होगा और अगर इन मुन्तशिर अवराक़ को सफ़हाते क़िरतास पर जम्अ कर दिया जाए तो एक जख़ीम व अज़ीम दफ़्तर तय्यार हो सकता है।

## करामत क्या है ?

मोमिने मुत्तकी से अगर कोई ऐसी नादिरुल वुजूद व तअज्जुब ख़ैज़ चीज़ सादिर व ज़ाहिर हो जाए जो अ़ाम तौर पर अ़ादतन नहीं हुवा करती तो इस को “करामत” कहते हैं। इसी क़िस्म की चीज़ें अगर अम्बिया **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** से ए'लाने नबुव्वत करने से पहले ज़ाहिर हों तो “इरहास” और ए'लाने नबुव्वत के बा'द हों तो “मो'जिज़ा” कहलाती हैं और अगर अ़ाम मोअमिनीन से इस क़िस्म की चीज़ों का जुहूर हो तो इस को “मऊनत” कहते हैं और



किसी काफ़िर से कभी इस की ख़्वाहिश के मुताबिक़ इस किस्म की चीज़ जाहिर हो जाए तो इस को “इस्तिदराज” कहा जाता है।<sup>(1)</sup>

## मो'जिज़ा और करामत

ऊपर ज़िक्र की हुई तफ़्सील से मा'लूम हो गया कि मो'जिज़ा और करामत दोनों की हकीक़त एक ही है। बस दोनों में फ़र्क सिर्फ़ इस क़दर है कि ख़िलाफ़े आदत व तअज्जुब ख़ैज़ चीज़ें अगर किसी नबी की तरफ़ से जुहूर पज़ीर हों तो येह “मो'जिज़ा” कहलाएंगी और अगर इन चीज़ों का जुहूर किसी वली की जानिब से हो तो इस को “करामत” कहा जाएगा। चुनान्चे, हज़रते इमाम याफ़ेई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी किताब “नशरुल मुहासिनुल ग़ालिय्या” में तहरीर फ़रमाया है कि इमामुल हरमैन व अबू बक्र बाक़लानी व अबू बक्र बिन फ़ौरुक व हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली व इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी व नासिरुद्दीन बैज़ावी व मुहम्मद बिन अब्दुल मलिक सुलमी व नासिरुद्दीन तूसी व हाफ़िज़ुद्दीन नस्फ़ी व अबुल कासिम कुशैरी इन तमाम अकाबिर उ-लमाए अहले सुन्नत व मुहक्किकीने मिल्लत ने मुत्तफ़िक्ता तौर पर येही तहरीर फ़रमाया कि मो'जिज़ा और करामत में येही फ़र्क है कि ख़वारिके आदात का सुदूर व जुहूर किसी नबी की तरफ़ से हो तो इस को “मो'जिज़ा” कहा जाएगा और अगर किसी वली की तरफ़ से हो तो इस को “करामत” के नाम से याद किया जाएगा हज़रते इमाम याफ़ेई ने इन दस इमामों के नाम और इन की किताबों की इबारतें नक्ल फ़रमाने के बा'द येह इरशाद फ़रमाया कि इन इमामों के इलावा दूसरे बुजुर्गाने मिल्लत ने भी येही फ़रमाया है, लेकिन इल्मो फ़ज़्ल और तहकीक़ व तदकीक़ के इन पहाड़ों के नाम ज़िक्र कर देने के बा'द मज़ीद मुहक्किकीन के नामों के ज़िक्र की कोई ज़रूरत नहीं।<sup>(2)</sup>

(حجة التّكلى العالمين ج ۲، ص ۸۳۹)

①.....التبراس شرح شرح العقائد، اقسام الخوارق سبعة، ص ۲۷۲ ملخصاً

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطب الاول في تجويز

الكرامة للاولياء... الخ، ص ۶۰۴

## मो'जिज़ा ज़रूरी, करामत ज़रूरी नहीं

मो'जिज़ा और करामत में एक फ़र्क़ ये है कि हर वली के लिये करामत का होना ज़रूरी नहीं है, मगर हर नबी के लिये मो'जिज़े का होना ज़रूरी है, क्योंकि वली के लिये येह लाज़िम नहीं है कि वोह अपनी विलायत का ए'लान करे या अपनी विलायत का पुबूत दे, बल्कि वली के लिये तो येह भी ज़रूरी नहीं है कि वोह खुद भी जाने कि मैं वली हूँ। चुनान्चे, येही वजह है कि बहुत से औलियाउल्लाह ऐसे भी हुवे कि उन को अपने बारे में येह मा'लूम ही नहीं हुवा कि वोह वली हैं। बल्कि दूसरे औलियाए किराम ने अपने कशफ़ व करामत से उन की विलायत को जाना पहचाना और उन के वली होने का चर्चा किया, मगर नबी के लिये अपनी नबुव्वत का इषबात ज़रूरी है और चूंकि इन्सानों के सामने नबुव्वत का इषबात बिगैर मो'जिज़ा दिखाए हो नहीं सकता, इस लिये हर नबी के लिये मो'जिज़े का होना ज़रूरी और लाज़िमी है।

## करामत की क़िस्मे

औलियाए किराम से सादिर व ज़ाहिर होने वाली करामतें कितनी अक्साम की हैं और इन की ता'दाद कितनी है? इस बारे में अल्लामा ताजुद्दीन सुब्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने अपनी किताब “तबक़ात” में तहरीर फ़रमाया कि मेरे ख़याल में औलियाए किराम से जितनी क़िस्मों की करामतें सादिर हुई हैं इन क़िस्मों की ता'दाद एक सो से भी ज़ा़द है। इस के बा'द अल्लामा मौसूफ़ अस्सदर ने क़दरे तफ़्सील के साथ करामत की पच्चीस क़िस्मों का बयान फ़रमाया है जिन को हम नाज़िरीन की ख़िदमत में कुछ मज़ीद तफ़्सील के साथ पेश करते हैं।

## ﴿1﴾ मुर्दों को ज़िन्दा करना

येह वोह करामत है कि बहुत से औलियाए किराम से इस का सुदूर हो चुका है चुनान्वे, रिवायाते सहीहा से षाबित है कि अबू उबैद बसरी जो अपने दौर के मुशाहीर औलिया में से हैं एक मरतबा जिहाद में तशरीफ़ ले गए। जब उन्होंने ने वतन की तरफ़ वापसी का इरादा फ़रमाया तो नागहां उन का घोड़ा मर गया, मगर उन की दुआ से अचानक उन का मरा हुवा घोड़ा ज़िन्दा हो कर खड़ा हो गया और वोह उस पर सुवार हो कर अपने वतन “बसरा” पहुंच गए और खादिम को हुक्म दिया कि इस की ज़ीन और लगाम उतार ले। खादिम ने जूं ही ज़ीन और लगाम को घोड़े से जुदा किया फ़ौरन ही घोड़ा मर कर गिर पड़ा।<sup>(1)</sup>

इसी तरह हज़रते शैख़ मफ़रज जो अलाका मिस्र में “सईद” के बाशिन्दे थे, उन के दस्तरख़्वान पर एक परन्दे का बच्चा भुना हुवा रखा गया तो आप ने फ़रमाया कि “तू खुदा तअाला के हुक्म से उड़ कर चला जा।” इन अल्फ़ाज़ का उन की ज़बान से निकलना था कि एक लम्हे में वोह परन्दे का बच्चा ज़िन्दा हो गया और उड़ कर चला गया।<sup>(2)</sup>

इसी तरह हज़रते शैख़ अहदल **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपनी मरी हुई बिल्ली को पुकारा तो वोह दौड़ती हुई शैख़ के सामने हाज़िर हो गई।<sup>(3)</sup>

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص ٦٠٨

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص ٦٠٨ ملخصاً

③.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص ٦٠٨ ملخصاً



शैख अली बिन अबी नस्स हैती का बयान है कि मैं शैख अब्दुल कादिर जीलानी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के हमराह हजरते मा'रुफ करखी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के मज़ारे मुबारक पर गया और उन्होंने ने सलाम किया तो क़ब्रे अन्वर से आवाज़ आई कि **وَعَلَيْكَ السَّلَام يَا سَيِّدَ أَهْلِ الزَّمَانِ** (1)

(बहजतुल असरार)

शैख अली बिन अबी नस्स हैती और बका बिन बतू, येह दोनों बुजुर्ग हजरते गौषे आ'ज़म शैख अब्दुल कादिर जीलानी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के साथ हजरते इमाम अहमद बिन हम्बल **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हुवे तो नागहां हजरते इमाम अहमद बिन हम्बल क़ब्र शरीफ़ से बाहर निकल आए और फ़रमाया कि ऐ अब्दुल कादिर जीलानी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** मैं इल्मे शरीअत व तरीक़त और इल्मे क़ाल व हाल में तुम्हारा मोहताज हूं। (2) (बहजतुल असरार)

### ﴿3﴾ दरयाओं पर तसरुफ़

दरया का फट जाना, दरया का खुश्क हो जाना और दरया पर चलना बहुत से औलियाए किराम से इन करामतों का जुहूर हुवा, बिल खुसूस सय्यिदुल मुतअख़िख़रीन हजरते तकिय्युद्दीन बिन दकीकुल ईद **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के लिये तो इन करामतों का बार बार जुहूर आम तौर पर मशहूरे ख़लाइक़ है। (3) (حجة الوداع २, ص १५६)

### ﴿4﴾ इन्क़लाबे माहिyyत

किसी चीज़ की हक़ीक़त का नागहां बदल जाना येह करामत भी अकषर औलियाए किराम से मन्कूल है। चुनान्चे, शैख़ ईसा हतार यमनी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के पास बतौर मज़ाक़ के किसी बद बात़िन ने शराब से भरी हुई दो मशकें तोहफ़े में भेज दीं। आप ने दोनों मशकों का

①..... بهجة الاسرار، ذکر کلمات اخبر بها عن نفسه محدثاً... الخ، ص ۵۳

②..... بهجة الاسرار، ذکر علمه وتسمیة بعض... الخ، ص ۲۲۶ ملخصاً

③..... حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص ۹۰۹ ملخصاً

मुंह खोल कर एक की शराब को दूसरी में उंडेल दिया। फिर हाज़िरीन से फ़रमाया कि आप लोग इस को तनावुल फ़रमाएं। हाज़िरीन ने खाया तो इतना नफ़ीस और इस क़दर उम़्दा घी था कि उम्र भर लोगों ने इतना उम़्दा घी नहीं खाया।<sup>(1)</sup> (हिजे अल्लह २, १५१)

### 5) ज़मीन का सिमट जाना

सैंकड़ों हज़ारों मील की मसाफ़त का चन्द लम्हों में तै होना येह करामत भी इस क़दर ज़ियादा **अल्लाह** वालों से मन्कूल है कि इस की रिवायात हद्दे तवातुर तक पहुंची हुई हैं। चुनान्वे, तरसूस की जामेअ मस्जिद में एक वली तशरीफ़ फ़रमा थे। अचानक उन्होंने ने अपना सर गिरेबान में डाला और फिर चन्द लम्हों में गिरेबान से सर निकाला तो वोह एक दम हरमे का'बा में पहुंच गए।<sup>(2)</sup>

(हिजे अल्लह २, १५१)

### 6) नबातात से गुफ़्तगू

बहुत से हैवानात व नबातात और जमादात ने औलियाए किराम से गुफ़्तगू की जिन की हिकायात ब कषरत किताबों में मज़कूर हैं चुनान्वे, हज़रते इब्राहीम बिन अदहम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** बैतुल मुक़द्दस के रास्ते में एक छोटे से अनार के दरख़्त के साए में उतर पड़े तो उस दरख़्त ने ब आवाज़े बुलन्द कहा कि ऐ अबू इस्हाक़ ! आप मुझे येह शरफ़ अता फ़रमाइये कि मेरा एक फल खा लीजिये, उस दरख़्त का फल खट्टा था, मगर दरख़्त की तमन्ना पूरी करने के लिये आप ने उस का एक फल तोड़ कर खाया तो वोह निहायत ही मीठा हो गया। और आप की बरकत से वोह साल में दो बार फलने लगा

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص ६०९ ملخصاً

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص ६०९ ملخصاً



और वोह दरख्त इस क़दर मशहूर हो गया कि लोग इस को रुम्मानतुल आबिदीन (आबिदों का अनार) कहने लगे।<sup>(1)</sup> (हिज्रतुल्लाह, ज २, पृ १५१)

### 7) शिफाए अमराज

औलियाए किराम के लिये इस करामत का षुबूत भी ब कषरत किताबों में मरकूम है, चुनान्वे, हज़रते सरी सक्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का बयान है कि एक पहाड़ पर मैं ने एक ऐसे बुजुर्ग से मुलाकात की जो अपाहजों, अन्धों और दूसरे किस्म किस्म के मरीजों को खुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से शिफायाब फ़रमाते थे।<sup>(2)</sup> (हिज्रतुल्लाह, ज २, पृ १५५)

### 8) जानवरों का फ़रमां बरदार हो जाना

बहुत से बुजुर्गों ने अपनी करामत से ख़तरनाक दरिन्दों को अपना फ़रमा बरदार बना लिया था। चुनान्वे, हज़रते अबू सईद बिन अबिल खैर मयहिनी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने शेरों को अपना इताअत गुज़ार बना रखा था और दूसरे बहुत से औलिया शेरों पर सुवारी फ़रमाते थे जिन की हिकायात मशहूर हैं।<sup>(3)</sup> (हिज्रतुल्लाह, ज २, पृ १५५)

### 9) ज़माने का मुख़्तशर हो जाना

येह करामत बहुत से बुजुर्गों से मन्कूल है कि उन की सोहबत में लोगों को ऐसा महसूस हुवा कि पूरा दिन इस क़दर जल्दी गुज़र गया कि गोया घन्टे दो घन्टे का वक़्त गुज़रा है।<sup>(4)</sup> (हिज्रतुल्लाह, ज २, पृ १५५)

1.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص १०९ ملخصاً

2.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص १०९ ملخصاً

3.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص १०९ ملخصاً 4.....المرجع السابق، ص ११० ملخصاً

## ﴿10﴾ ज़माने का तवील हो जाना

इस करामत का जुहूर सेंकड़ों उ-लमा व मशाइख़ से इस तरह हुवा कि इन बुजुर्गों ने मुख़्तसर से मुख़्तसर वक्तों में इस क़दर ज़ियादा काम कर लिया कि दुन्या वाले इतना काम महीनों बल्कि बरसों में भी नहीं कर सकते। चुनान्चे, इमाम शाफ़ेई व हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली व अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती व इमामुल हरमैन शैख़ मुह्युद्दीन नववी वग़ैरहा।<sup>(1)</sup> उ-लमाए दीन ने इस क़दर कषीर ता'दाद में किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई हैं कि अगर इन की उम्रों का हिसाब लगाया जाए तो रोज़ाना इतने ज़ियादा अवराक़ इन बुजुर्गों ने तस्नीफ़ फ़रमाए हैं कि कोई इतने ज़ियादा अवराक़ को इतनी क़लील मुद्दत में नक़ल भी नहीं कर सकता, हालांकि येह अल्लाह वाले तस्नीफ़ के इलावा दूसरे मशाग़िल भी रखते थे और नफ़्ती इबादतें भी ब क़षरत करते रहते थे। इसी तरह मन्कूल है कि बा'ज़ बुजुर्गों ने दिन रात में आठ आठ ख़त्मे कुरआने मजीद की तिलावत कर ली है। ज़ाहिर है कि इन बुजुर्गों के अवका़त में इस क़दर और इतनी ज़ियादा बरक़त हुई है कि जिस को करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है?<sup>(2)</sup> (तज़्जिद, ज २, स ८५५)

## ﴿11﴾ मक्बूलिय्यते दुआ

येह करामत भी बहुत ज़ियादा बुजुर्गों से मन्कूल है।<sup>(3)</sup>

①...और चौदहवीं सदी हिजरी के इमाम अहमद रज़ा फ़ज़िले बैरलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जिन्होंने ने तक्रीबन एक हज़ार कुतुब पचास इलूम में तस्नीफ़ फ़रमाई। 12 मिन्ह

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثاني في انواع الكرامات، ص ६१० ملخصاً

③.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثاني في انواع

الكرامات، ص ६०९

## ﴿12﴾ ख़ामोशी व कलाम पर कुदरत

बा'ज बुजुर्गों ने बरसों तक किसी इन्सान से कलाम नहीं किया और बा'ज बुजुर्गों ने नमाजों और ज़रूरियात के इलावा कई कई दिनों तक मुसलसल वा'ज फ़रमाया और दर्स दिया है।<sup>(1)</sup>

## ﴿13﴾ दिलों को अपनी तरफ़ खींच लेना

सैंकड़ों औलियाए किराम से येह करामत सादिर हुई कि जिन बस्तियों या मजलिसों में लोग इन से अ़दावत व नफ़रत रखते थे। जब इन हज़रात ने वहां क़दम रखा तो इन की तवज्जोहात से नागहां सब के दिल इन की महब्बत से लबरैज़ हो गए और सब के सब परवानों की तरह इन के क़दमों पर निषार होने लगे।<sup>(2)</sup> (حجة الله، ج ۲، ص ۸۵۷)

## ﴿14﴾ ग़ैब की ख़बरें

इस की बे शुमार मिषालें मौजूद हैं कि औलियाए किराम ने दिलों में छुपे हुवे ख़यालात व ख़तरात को जान लिया और लोगों को ग़ैब की ख़बरें देते रहे और इन की पेश गोइयां सो फ़ीसदी सहीह होती रहीं।<sup>(3)</sup>

## ﴿15﴾ खाए पिये बिगैर ज़िन्दा रहना

ऐसे बुजुर्गों की फ़ेहरिस्त बहुत ही तवील है जो एक मुद्दते दराज़ तक बिगैर कुछ खाए पिये ज़िन्दा रह कर इबादतों में मसरूफ़

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص ۶۰۹

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص ۶۰۹ ملخصاً

③.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص ۶۰۹ ملخصاً

रहे और इन्हें खाना या पानी छोड़ देने से ज़रा बराबर कोई जो'फ़ भी लाहिक् नहीं हुवा ।<sup>(1)</sup>

### ﴿16﴾ निज़ामे आलम में तशरूफ़त

मन्कूल है कि बहुत से बुजुर्गों ने शदीद क़हूत के ज़माने में आस्मान की तरफ़ उंगली उठा कर इशारा फ़रमाया तो नागहां आस्मान से मुसलाधार बारिश होने लगी और मशहूर है कि हज़रते शैख़ अबुल अब्बास शातिर **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** तो दरिहमों के बदले बारिश फ़रोख़्त किया करते थे ।<sup>(2)</sup> (حجة الله، ج २، ص १५८)

### ﴿17﴾ बहुत ज़ियादा मिक्दार में खा लेना

बा'ज बुजुर्गों ने जब चाहा बिसयों आदमियों की ख़ूराक अकेले खा गए और उन्हें कोई तकलीफ़ भी नहीं हुई ।

### ﴿18﴾ हराम ग़िज़ाओं से महफूज़

बहुत से औलियाए किराम की येह करामत मशहूर है कि हराम ग़िज़ाओं से वोह एक ख़ास किस्म की बद बू महसूस करते थे । चुनान्वे, हज़रते शैख़ हारिष मुहासबी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के सामने जब भी कोई हराम ग़िज़ा लाई जाती थी तो उन्हें उस ग़िज़ा से ऐसी ना गवार बदबू महसूस होती थी कि वोह उस को हाथ नहीं लगा सकते थे और येह भी मन्कूल है कि हराम ग़िज़ा को देखते ही उन की एक रग फड़कने लगती थी ।

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص १०९

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثاني

في انواع الكرامات، ص १०९ ملقطاً

चुनान्वे, मन्कूल है कि हज़रते शैख़ अबुल अब्बास मरसी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सामने लोगों ने इम्तिहान के तौर पर हराम खाना रख दिया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : अगर हराम ग़िज़ा को देख कर हारिष मुहासबी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की एक रग फड़कने लगती थी तो मेरा येह हाल है कि हराम ग़िज़ा के सामने मेरी सत्तर रंगें फड़कने लगती हैं । <sup>(1)</sup> (हिज्रतुल्लाह, ज २, पृ १५८)

### ﴿19﴾ दूर की चीज़ों को देख लेना

चुनान्वे, शैख़ अबू इस्हाक़ शीराज़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की येह मशहूर करामत है कि वोह बग़दाद शरीफ़ में बैठे हुवे का'बए मुकर्रमा को देखा करते थे । (हिज्रतुल्लाह, ज २, पृ १५८)

### ﴿20﴾ हैबत ब दब-दबा

बा'ज औलियाए किराम से इस करामत का सुदूर इस तौर से हुवा कि इन की सूत देख कर बा'ज लोगों पर इस क़दर खौफ़ व हिरास त़ारी हुवा कि उन का दम निकल गया, चुनान्वे, हज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की हैबत से उन की मजलिस में एक शख्स मर गया । <sup>(2)</sup> (हिज्रतुल्लाह, ज २, पृ १५८)

### ﴿21﴾ मुख़्तलिफ़ शूरतों में ज़ाहि़र होना

इस करामत को सूफ़ियाए किराम की इस्ति़लाह में “खुलअ व लिबस” कहते हैं, या'नी एक शक़ल को छोड़ कर दूसरी शक़ल में ज़ाहि़र हो जाना । हज़रते सूफ़िया का क़ौल है कि अ़लमे अरवाह और अ़लमे अजसाम के दरमियान एक तीसरा अ़लम भी है जिस को अ़लमे मिषाल कहते हैं । इस अ़लमे मिषाल में एक ही शख्स की

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثاني في انواع

الكرامات، ص ११०

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثاني في انواع

الكرامات، ص ११०

रूह मुख़लिफ़ जिस्मों में ज़ाहिर हो जाया करती है। चुनान्वे, इन लोगों ने कुरआने मजीद की आयते करीमा (1) **فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا** से इस्तिदलाल किया है कि हज़रते जिब्राईल **عَلَيْهِ السَّلَام** हज़रते बीबी मरयम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** के सामने एक तन्दुरुस्त जवान आदमी की सूरत में ज़ाहिर हो गए थे। यह वाकिआ आलमे मिषाल में हुवा था।

येह करामत बहुत से औलिया ने दिखाई है, चुनान्वे, हज़रते कज़ीबुल्लबान मौसिली **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** जिन का औलिया के तबक़ए अब्दाल में शुमार होता है, किसी ने आप पर येह तोहमत लगाई कि आप नमाज़ नहीं पढ़ते। येह सुन कर आप जलाल में आ गए और फ़ौरन ही अपने आप को उस के सामने चन्द सूरतों में ज़ाहिर किया और पूछा कि बता तू ने किस सूरत में मुझ को तर्कें नमाज़ करते हुवे देखा। (2) **(حجة الله ج २: ४५८)**

इसी तरह मन्कूल है कि हज़रते मौलाना या'कूब चरख़ी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** जो मशाइख़े नक्शबन्दिय्या में बहुत ही मुमताज़ बुजुर्ग हैं। जब हज़रते ख़्वाजा उबैदुल्लाह अहरार **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इन की ख़िदमत में बैअत के लिये हाज़िर हुवे तो हज़रते ख़्वाजा मौलाना या'कूब चरख़ी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के चेहरए अक़दस पर उन को दाग़ धब्बे नज़र आए जिस से उन के दिल में कुछ कराहत पैदा हुई तो अचानक आप उन के सामने एक ऐसी नूरानी शक्ल में ज़ाहिर हो गए कि बे इख़्तियार हज़रते ख़्वाजा उबैदुल्लाह अहरार **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का दिल इन की तरफ़ माइल हो गया और वोह फ़ौरन ही बैअत हो गए। (3) **(रिशहातुल उयून)**

**1) .... तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह उस के सामने एक तन्दुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुवा। (प १६, रिम १७)

**2) ....** حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثاني في انواع الكرامات، ص ६१० ملخصاً

**3) ....** نفحات الانس (مترجم)، ص २७



## ﴿22﴾ दुश्मनों के शर से बचना

खुदावन्दे कुदूस ने बा'ज औलियाए किराम को येह करामत भी अता फरमाई है कि ज़ालिम उमरा व सलातीन ने जब इन के क़त्ल या ईज़ा रसानी का इरादा किया तो ग़ैब से ऐसे अस्बाब पैदा हो गए कि वोह उन के शर से महफूज़ रहे। जैसा कि हज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को ख़लीफ़ा बग़दाद हारून रशीद ने ईज़ा रसानी के ख़याल से दरबार में तलब किया मगर जब वोह सामने गए तो ख़लीफ़ा खुद ऐसी परेशानियों में मुब्तला हो गया कि उन का कुछ न बिगाड़ सका। <sup>(1)</sup> (हिज्रतुल्लाह २, ४, १५८)

## ﴿23﴾ ज़मीन के ख़ज़ानों को देख लेना

बा'ज औलियाए किराम को येह करामत मिली है कि वोह ज़मीन के अन्दर छुपे हुवे ख़ज़ानों को देख लिया करते थे और इस को अपनी करामत से बाहर निकाल लेते थे। चुनान्चे, शैख़ अबू तुराब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक ऐसे मक़ाम पर जहां पानी नायाब था ज़मीन पर एक ठोकर मार कर पानी का चश्मा जारी कर दिया। <sup>(2)</sup> (हिज्रतुल्लाह २, ४, १५८)

## ﴿24﴾ मुश्किलात का आशान हो जाना

येह करामत बुजुर्गाने दीन से बार बार और बेशुमार मरतबा ज़ाहिर हो चुकी है जिस की सेंकड़ों मिषालें “तज़किरतुल औलिया” <sup>(3)</sup> वग़ैरा मुस्तनद किताबों में मज़कूर हैं।

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثاني في انواع الكرامات، ص ११० ملخصاً

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثاني في انواع الكرامات، ص ११० ملخصاً

③.....كشف المحجوب، رساله قشيريّه، الابريز وغيره १- १२ منه

## 25) मोहलिकत का अषर न करना

चुनान्चे, मशहूर है कि एक बद बातिन बादशाह ने किसी खुदा रसीदा बुजुर्ग को गिरफ्तार किया और उन्हें मजबूर कर दिया कि वोह कोई तअज्जुब खैज़ करामत दिखाएं वरना उन्हें और उन के साथियों को क़त्ल कर दिया जाएगा ।

आप ने ऊंट की मैंगनियों की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि उन को उठा लाओ और देखो कि वोह क्या हैं ? जब लोगों ने उन को उठा कर देखा तो वोह ख़ालिस सोने के टुकड़े थे । फिर आप ने एक ख़ाली प्याले को उठा कर घुमाया और औंधा कर के बादशाह को दिया तो वोह पानी से भरा हुवा था और औंधा होने के बा वुजूद उस में से एक क़तरा भी पानी नहीं गिरा ।

येह दो करामतें देख कर येह बद अकीदा बादशाह कहने लगा कि येह सब नज़र बन्दी के जादू का करिश्मा है । फिर बादशाह ने आग जलाने का हुक्म दिया । जब आग के शो'ले बुलन्द हुवे तो बादशाह ने मजलिसे समाअ मुन्अकिद कराई जब इन दुरवेशों को समाअ सुन कर जोशे वज्द में हाल आ गया तो येह सब लोग जलती हुई आग में दाख़िल हो कर रक्स करने लगे । फिर एक दुरवेश बादशाह के बच्चे को गोद में ले कर आग में कूद पड़ा और थोड़ी देर तक बादशाह की नज़रों से गाइब हो गया बादशाह अपने बच्चे के फ़िराक़ में बेचैन हो गया मगर फिर चन्द मिनटों में दुरवेश ने बादशाह के बच्चे को इस हाल में बादशाह की गोद में डाल दिया कि बच्चे के एक हाथ में सेब और दूसरे हाथ में अनार था । बादशाह ने पूछा कि बेटा ! तुम कहा चले गए थे ? तो उस ने कहा कि मैं एक बाग़ में था जहां से मैं येह फल लाया हूं ।

येह देख कर भी ज़ालिम व बद अकीदा बादशाह का दिल नहीं पसीजा और उस ने उस बुजुर्ग को बार बार ज़हर का प्याला पिलाया

मगर हर मरतबा ज़हर के अषर से उस बुजुर्ग के कपड़े फटते रहे और उन की ज़ात पर ज़हर का कोई अषर नहीं हुवा।<sup>(१)</sup> (हिज्रत २: १५८)

करामत की येह वोह पच्चीस किस्में हैं और इन की चन्द मिषालें हैं जिन को हज़रते अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने अपनी किताब “तबकात” में तहरीर फ़रमाया है, वरना इस के इलावा करामत की बहुत सी किस्में हैं और इन की मिषालें इस क़दर ज़ियादा ता’दाद में हैं कि अगर इन को जम्अ किया जाए तो हज़ारों अवराक़ का एक ज़ख़ीम दफ़्तर तय्यार हो सकता है, मगर बतौर मिषाल जिस क़दर हम ने यहां तहरीर कर दिया वोह तालिबे हक़ की तस्कीने रूह व इतमीनाने क़ल्ब के लिये बहुत काफ़ी है। रह गए बंद अक़ीदा मुन्किरीन तो इन की हिदायत के लिये दलाइल तो क्या ? दौरै रिसालत में इन के लिये मो’जिज़ए “शक्कुल क़मर” भी सूदमन्द नहीं हुवा। मषल मशहूर है कि।

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर  
मर्दे नादां पर कलामे नमों नाज़ुक बे अषर

### सहाबी

जो मुसलमान ब हालते ईमान हुजुरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात से सरफ़राज़ हुवे और ईमान ही पर उन का खातिमा हुवा उन खुश नसीब मुसलमानों को “सहाबी” कहते हैं। इन सहाबियों की ता’दाद एक लाख से ज़ियादा है। चुनान्चे, इमाम बैहक़ी की रिवायत है कि हुज्जतुल वदाअ में एक लाख चौदह हज़ार सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ हुजूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ हज़ के लिये मक्कए मुकर्रमा में जम्अ हुवे और बा’ज दूसरी रिवायात से पता चलता है कि हुज्जतुल वदाअ में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ की ता’दाद एक लाख चोबीस हज़ार थी। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ<sup>(२)</sup>

(ज़रफ़ानि ज ३, १०६ व ३, ३८८)

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ،المطلب الثاني في انواع

الكرامات، ص ११०-१११ ملخصاً

②.....مدارج النبوت، ذكر حجة الوداع، ج २، ص ३८७

## अफ़ज़लुल औलिया

तमाम उ-लमाए उम्मत व अकाबिरे उम्मत का इस मस्अले पर इत्तिफ़ाक़ है कि सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** “अफ़ज़लुल औलिया” हैं। या’नी क़ियामत तक के तमाम औलिया अगर्चे वोह दरजए विलायत की बुलन्द तरीन मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाएं मगर हरगिज़ हरगिज़ कभी भी वोह किसी सहाबी के क़मालाते विलायत तक नहीं पहुंच सकते। खुदावन्दे कुद्दूस ने अपने हबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की शम्ए नबुव्वत के परवानों को मरतबए विलायत का वोह बुलन्दो बाला मक़ाम अता फ़रमाया है और इन मुक़द्दस हस्तियों को ऐसी ऐसी अज़ीमुशशान करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाया है कि दूसरे तमाम औलिया के लिये इस मे’राजे क़माल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। इस में शक नहीं कि हज़राते सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** से इस क़दर ज़ियादा करामतों का सुदूर नहीं हुवा जिस क़दर कि दूसरे औलियाए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** से करामतें मन्कूल हैं लेकिन वाजेह रहे कि कषरते करामत अफ़ज़लिय्यते विलायत की दलील नहीं क्यूंकि विलायत दर हकीक़त कुर्बे इलाही का नाम है। येह कुर्बे इलाही जिस को जिस क़दर ज़ियादा हासिल होगा उसी क़दर उस की विलायत का दरजा बुलन्द से बुलन्द तर होगा। सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** चूँकि निगाहे नबुव्वत के अन्वार और फैज़ाने रिसालत के फुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ हैं इस लिये बारगाहे खुदावन्दी में इन बुजुर्गों को जो कुर्ब व तक़्रूब हासिल है वोह दूसरे औलियाउल्लाह को हासिल नहीं। इस लिये अगर्चे सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** से बहुत कम करामतें सादिर हुईं लेकिन फिर भी सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** का दरजए विलायत दूसरे औलियाए किराम से बहुत ज़ियादा अफ़ज़ल व आ’ला और बुलन्दो बाला है।

बहर हाल अगर्चे ता'दाद में कम सही लेकिन फिर भी बहुत से सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ से करामतों का सुदूर व जुहूर हुवा है। चुनान्चे, हम अपनी इस मुख्तसरसी किताब में बा'ज सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की चन्द करामत का तज्किरा तहरीर करने की सआदत हासिल करते हैं ताकि अहले ईमान प्यारे हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शम्ए नबुव्वत के इन परवानों की विलायत व करामत के ईमान अफ़ोज़ तज्किरों से अपनी दुन्याए दिल को महब्वत व अकीदत के शजरातुल खुल्द की जन्नत बनाएं और दुश्मनाने सहाबा या तो आफ़ताबे रिसालत के नूर से चमकने वाले इन रोशन सितारों से हिदायत की रोशनी हासिल करें या फिर अपनी आतशे बुग्जो इनाद में जल भुन कर जहन्नम का ईधन बन जाएं।

### अशरए मुबशशरा

यूं तो हुज़ूर रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने बहुत से सहाबियों رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को मुख्तलिफ़ अवकात में जन्नत की बिशारत दी और दुन्या ही में उन के जन्नती होने का ए'लान फ़रमा दिया मगर दस ऐसे जलीलुल क़द्र और खुश नसीब सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ हैं जिन को आप ने मस्जिदे नबवी के मिम्बर शरीफ़ पर खड़े हो कर एक साथ इन का नाम ले कर जन्नती होने की खुश ख़बरी सुनाई। तारीख़ में इन खुश नसीबों का लक़ब “अशरए मुबशशरा” है जिन की मुबारक फ़ेहरिस्त येह है :

- ﴿1﴾ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक    ﴿2﴾ हज़रते उमर फ़ारूक  
 ﴿3﴾ हज़रते उषमाने ग़नी    ﴿4﴾ हज़रते अली मुर्तज़ा  
 ﴿5﴾ हज़रते त़लहा बिन उबैदुल्लाह    ﴿6﴾ हज़रते जुबैर बिन अल अक्वाम  
 ﴿7﴾ हज़रते अब्दुरहमान बिन औफ़    ﴿8﴾ हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास  
 ﴿9﴾ हज़रते सईद बिन जैद    ﴿10﴾ हज़रते अबू उबैदा बिन अल  
 ज़रह (1) (رَضَوْنَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ) (ترمذی ج ۲، ص ۲۱۶، مناقب عبد الرحمن بن عوف)

हम सब से पहले इन दस जन्नती सहाबियों رَضَوْنَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ की चन्द करामतों का तज़क़िरा तहरीर करते हैं। इस के बा'द दूसरे सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की करामतें भी तहरीर की जाएंगी और अस्हाबे किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की करामतों के साथ साथ उन चन्द मुक़द्दस ख़वातीने इस्लाम की करामात भी पेश की जाएंगी जो शरफ़े सहाबिय्यत से सरफ़राज़ हो कर सारी दुन्या की मोमिनाते सालिहात में “सहाबिय्यात” رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के मुअज़्ज़ज़ ख़िताब के साथ मुमताज़ हैं ताकि अहले ईमान पर इस हकीक़त का आप़ताबे अ़लमे ताब तुलूअ हो जाए कि फ़ैज़ाने नबुव्वत के अन्वार व बरकात और आप़ताबे रिसालत की तजल्लिय्यात से सिर्फ़ मर्दों ही का तबका मुस्तफ़ीज़ व मुस्तनीर नहीं हुवा बल्कि सनफ़े नाज़ुक की पर्दा नशीन ख़वातीन पर भी आप़ताबे नबुव्वत की नूरानी शुआएं इस तरह जलवा रेज़ हुई कि वोह भी मर्दों के दोश ब दोश मज़हरे कमालात व साहिबे करामात हो गई। **अल्लाहु अक़बर !** सच है कि

**ज़ुल्मत को उन के नूर ने काफ़ूर कर दिया**

**जिस पर निगाह डाली उसे नूर कर दिया**

①.....سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبد الرحمن بن عوف بن عبد عوف

الزهري رضي الله عنه، الحديث: ۳۷۶۸، ج ۵، ص ۴۱۶



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ ط

### करामाते सहाबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ

सरकारे दो आलम से मुलाक़ात का आलम  
आलम में है मे'राज कमालात का आलम  
येह राजी खुदा से हैं, खुदा इन से है राजी  
क्या कहिये ? सहाबा की करामात का आलम

### ﴿1﴾ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

खलीफ़ा अव्वल जा नशीने पैग़म्बर अमीरुल मोअमिनीन  
हज़रते सिद्दीके अक़्बर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नामे नामी  
“अब्दुल्लाह” और “अबू बक्र” आप की कुन्यत और “सिद्दीक  
व अतीक” आप का लक़ब है। आप कुरैशी हैं और सातवीं पुश्त  
में आप का शजरए नसब रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के  
ख़ानदानी शजरे से मिल जाता है। आमुल फ़ील के ढाई बरस बा'द  
मक्काए मुकर्रमा में पैदा हुवे। आप इस क़दर जामेज़ल कमालात और  
मजमज़ल फ़ज़ाइल हैं कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम  
अगले और पिछले इन्सानों में सब से अफ़ज़लो आ'ला हैं। आज़ाद  
मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया और सफ़र व वतन के  
तमाम मुशाहिद व इस्लामी जिहादों में मुजाहिदाना कारनामों के साथ  
शामिल हुवे और सुल्ह व जंग के तमाम फ़ैसलों में आप शहनशाहे  
मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के वज़ीर व मुशीर बन कर मराहिले  
नबुव्वत के हर हर मोड़ पर आप के रफ़ीक़ व जां निषार रहे। दो  
बरस तीन माह ग्यारह दिन मसनदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ रह  
कर 22 जुमादल उख़रा सि. 13 हि. मंगल की रात वफ़ात पाई। हज़रते

उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रौज़ए मुनव्वरा में हुज़ूर रहमते आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पहलूए मुक़द्दस में दफ़न हुवे।<sup>(1)</sup>  
(अकाल वतारिख़ الخلفاء)

## कशमात

### खाने में अज़ीम बरक़्त

हज़रते अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का बयान है कि एक मरतबा हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बारगाहे रिसालत के तीन मेहमानों को अपने घर लाए और खुद हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हो गए और गुफ़्तगू में मसरूफ़ रहे यहां तक कि रात का खाना आप ने दस्तरख़्वाने नबुव्वत पर खा लिया और बहुत ज़ियादा रात गुज़र जाने के बा'द मकान पर वापस तशरीफ़ लाए। इन की बीवी ने अर्ज़ किया कि आप अपने घर पर मेहमानों को बुला कर कहा गाइब रहे ? हज़रते सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि क्या अब तक तुम ने मेहमानों को खाना नहीं खिलाया ? बीवी साहिबा ने कहा कि मैं ने खाना पेश किया मगर उन लोगों ने साहिबे ख़ाना की ग़ैर मौजूदगी में खाना खाने से इन्कार कर दिया। येह सुन कर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने साहिब जादे हज़रते अब्दुर्रहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पर बहुत ज़ियादा ख़फ़ा हुवे और वोह ख़ौफ़ व दहशत की वजह से छुप गए और आप के सामने नहीं आए फिर जब आप का गुस्सा फुरू हो गया तो आप मेहमानों के साथ खाने के लिये बैठ गए और सब मेहमानों ने ख़ूब शिकम सैर हो कर खाना खा लिया। उन मेहमानों

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الباء، فصل فی الصحابة، ص ۵۸۷ ملتنقطاً

و تاريخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، ابو بكر الصديق، فصل فی انه افضل...الخ، ص ۳۴

وفصل فی مرضه...الخ، ص ۶۲

का बयान है कि जब हम खाने के बरतन में से लुक़्मा उठाते थे तो जितना खाना हाथ में आता था उस से कहीं ज़ियादा खाना बरतन में नीचे से उभर कर बढ़ जाता था और जब हम खाने से फ़ारिग़ हुवे तो खाना बजाए कम होने के बरतन में पहले से ज़ियादा हो गया। हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुतअज़्जिब हो कर अपनी बीवी साहिबा से फ़रमाया कि येह क्या मुआमला है कि बरतन में खाना पहले से कुछ ज़ाइद नज़र आता है। बीवी साहिबा ने क़सम खा कर कहा : वाक़ेई येह खाना तो पहले से तीन गुना बढ़ गया है ! फिर आप इस खाने को उठा कर बारगाहे रिसालत में ले गए। जब सुब्ह हुई तो नागहां मेहमानों का एक काफ़िला दरबारे रिसालत में उतरा जिस में बारह क़बीलों के बारह सरदार थे और हर सरदार के साथ बहुत से दूसरे शुतर सुवार भी थे। इन सब लोगों ने येही खाना खाया और काफ़िले के तमाम सरदार और तमाम मेहमानों का गुरौह इस खाने को शिकम सैर खा कर आसूदा हो गया लेकिन फिर भी इस बरतन में खाना ख़त्म नहीं हुवा।<sup>(1)</sup> (بخاری شریف ج ۱، ص ۵۰۹ مختصراً)

### शिकमे मादर में क्या है ?

हज़रते उर्वा बिन जुबैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا रावी हैं कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने मरजे वफ़ात में अपनी साहिब ज़ादी उम्मुल मोअमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को वसिय्यत फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि मेरी प्यारी बेटी ! आज तक मेरे पास जो मेरा माल था वोह आज वारिषों का माल हो चुका है और मेरी अवलाद में तुम्हारे दोनों भाई

1.....صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة فی الاسلام، الحدیث: ۳۵۸۱،

ج ۲، ص ۴۹۵ باختصار وحجة الله على العالمين، الخاتمة فی اثبات کرامات

الاولياء ... الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملة جميلة... الخ، ص ۶۱۱

अब्दुर्रहमान व मुहम्मद और तुम्हारी दोनों बहनें हैं लिहाजा तुम लोग मेरे माल को कुरआने मजीद के हुक्म के मुताबिक तक्सीम कर के अपना अपना हिस्सा ले लेना। यह सुन कर हज़रते आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज किया कि अब्बाजान ! मेरी तो एक ही बहन “बीबी अस्मा” हैं। यह मेरी दूसरी बहन कौन है ? आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि मेरी बीबी “बिन्ते खारिजा” जो हामिला है उस के शिकम में लड़की है वोह तुम्हारी दूसरी बहन है। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि लड़की पैदा हुई जिन का नाम “उम्मे कुलषूम” रखा गया। <sup>(1)</sup> (तاريخ الخلفاء، ص ५६)

इस हदीष के बारे में हज़रते अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तहरीर फ़रमाया कि इस हदीष से अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की दो करामतें साबित होती हैं।

**अव्वल :** यह कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को क़बले वफ़ात यह इल्म हो गया था कि मैं इसी मरज़ में दुन्या से रिहलत करूंगा इस लिये ब वक्ते वसियत आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने यह फ़रमाया कि “मेरा माल आज मेरे वारिषों का माल हो चुका है।”

**दुवुम :** यह कि हामिला के शिकम में लड़का है या लड़की और ज़ाहिर है कि इन दोनों बातों का इल्म यकीनन ग़ैब का इल्म है जो बिला शुबा व बिल यकीन पैग़म्बर के जानशीन हज़रते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की दो अज़ीमुश्शान करामतें हैं। <sup>(2)</sup> (अزالة الخفاء مقصد २، ص २१ و حجة اللذ २، ص १२०)

①..... تاريخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، ابو بكر الصديق، فصل في مرضه... الخ، ص ६३

و حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة... الخ، ص ११

②..... حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة... الخ، ص ११२

## ज२री इन्तिबाह

हदीषे मजकूरा बाला और अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की तकरीर से मा'लूम हुवा कि **مَا فِي الْأَرْحَامِ** (जो कुछ मां के पेट में है उस) का इल्म हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को हासिल हो गया था। लिहाज़ा येह बात ज़ेहन नशीन कर लेनी चाहिये कि कुरआने मजीद की सूरए लुक्मान में जो **يَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ (1)** आया है या'नी खुदा के सिवा कोई इस बात को नहीं जानता कि मां के पेट में क्या है? इस आयत का येह मतलब है कि बिगैर खुदा के बताए हुवे कोई अपनी अक्लो फ़हम से नहीं जान सकता कि मां के पेट में क्या है? लेकिन खुदावन्दे तआला के बता देने से दूसरों को भी इस का इल्म हो जाता है। चुनान्वे, हज़रते अम्बिया **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** व्हय के ज़रीए और औलियाए उम्मत कश्फ व करामत के तौर पर खुदावन्दे कुहूस के बता देने से येह जान लेते हैं कि मां के शिकम में लड़का है या लड़की? मगर **अल्लाह** तआला का इल्म ज़ाती, अज़ली व अबदी और क़दीम है और अम्बिया **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** व औलिया **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِم** का इल्म अताई व फ़ानी और हादिष है। **अल्लाहु अवबर !** कहां खुदावन्दे कुहूस का इल्म और कहां बन्दों का इल्म? दोनों में बे इन्तिहा फ़र्क है।

## निगाहे कशमत

हुजूरे अक़्दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की वफ़ाते हसरत आयात के बा'द जो क़बाइले अरब मुर्तद हो कर इस्लाम से फिर गए थे उन में क़बीलए कन्दा भी था। चुनान्वे, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इस क़बीले वालों से भी जिहाद फ़रमाया और मुजाहिदीने इस्लाम ने इस क़बीले के सरदार आ'ज़म या'नी अशअष बिन कैस को गिरिफ़्तार कर लिया और लोहे की ज़न्जीरों में जकड़ कर इस को दरबारे ख़िलाफ़त में पेश किया।

① ...तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जानता है जो कुछ माओं के पेट में है। (प २१, मक़न: ३६)

अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के सामने आते ही अशअष बिन कैस ने ब आवाजे बुलन्द अपने जुमें इर्तिदाद का इकरार कर लिया और फिर फौरन ही तौबा कर के सिद्क दिल से इस्लाम कबूल कर लिया । अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने खुश हो कर इस का कुसूर मुआफ़ कर दिया और अपनी बहन हज़रते “उम्मे फ़रूह” **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से इस का निकाह कर के इस को अपनी किस्म किस्म की इनायतों और नवाज़िशों से सरफ़राज़ कर दिया । तमाम हाज़िरीने दरबार हैरान रह गए कि मुर्तदीन का सरदार जिस ने मुर्तद हो कर अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से बगावत और जंग की और बहुत से मुजाहिदीने इस्लाम का खूने नाहक़ किया । ऐसे खून्-ख़वार बागी और इतने बड़े ख़तरनाक मुजरिम को अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इस क़दर क्यूं नवाज़ा ? लेकिन जब हज़रते अशअष बिन कैस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने सादिकुल इस्लाम हो कर इराक़ के जिहादों में अपना सर हथेली पर रख कर ऐसे ऐसे मुजाहिदाना कारनामे अन्जाम दिये कि इराक़ की फ़तह का सहारा इन्हीं के सर रहा और फिर हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के दौरे ख़िलाफ़त में जंगे क़ादिसिय्या और क़लअए मदाइन व जलूला व नहावन्द की लड़ाइयों में इन्हों ने सरफ़रोशी व जांबाज़ी के जो हैरतनाक़ मनाज़िर पेश किये उन्हें देख कर सब को येह ए’तिराफ़ करना पड़ा कि वाक़ेई अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सिद्दीक़े अक्बर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की निगाहे करामत ने हज़रते अशअष बिन कैस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ज़ात में छुपे हुवे कमालात के जिन अनमोल जोहरो को बरसों पहले देख लिया था वोह किसी और को नज़र नहीं आए थे । यकीनन येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की एक बहुत बड़ी करामत है । (1)

(अज़ाले الخفاء، مقصد २، ص ३९)

1.....(अज़ाले الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما مآثر جميلة صدیق اکبر، ج ३، ص १६०)



इसी लिये मशहूर सहाबी हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله تعالى عنه आम तौर पर येह फ़रमाया करते थे कि मेरे इल्म में तीन हस्तियां ऐसी गुज़री हैं जो फ़िरासत के बुलन्द तरीन मक़ाम पर पहुंची हुई थीं ।

**अव्वल :** अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضي الله تعالى عنه कि इन की निगाहे करामत की नूरी फ़िरासत ने हज़रते उमर رضي الله تعالى عنه के कमालात को ताड़ लिया और आप ने हज़रते उमर رضي الله تعالى عنه को अपने बा'द ख़िलाफ़त के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया जिस को तमाम दुन्या के मुअर्रिख़ीन और दानिश्वरों ने बेहतरीन क़रार दिया ।

**दुवुम :** हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام की बीवी हज़रते सफ़ूरा رضي الله تعالى عنها कि इन्हों ने हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام के रोशन मुस्तक़बल को अपनी फ़िरासत से भांप लिया और अपने वालिद हज़रते शोऐब عليه الصلوة والسلام से अर्ज़ किया कि आप इस जवान को बतौर अजीर के अपने घर पर रख लें । जब कि इन्तिहाई कस्म पुर्सी के आलम में फ़िरऔन के जुल्म से बचने के लिये हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام के लिये हिज्रत कर के मिस्र से “मदयन” पहुंच गए थे । चुनान्चे, हज़रते शोऐब عليه الصلوة والسلام ने इन को अपने घर पर रख लिया और इन की खूबियों को देख कर और इन के कमालात से मुतअष्भिर हो कर अपनी साहिबज़ादी हज़रते बीबी सफ़ूरा رضي الله تعالى عنها का इन से निकाह कर दिया और इस के बा'द खुदावन्दे कुहूस ने हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام को नबुव्वत व रिसालत के शरफ़ से सरफ़राज़ फ़रमा दिया ।

**सिवुम :** अज़ीज़े मिस्र कि इन्हों ने अपनी बीवी हज़रते जुलैखा को हुक्म दिया कि अगर्चे हज़रते यूसुफ़ عليه الصلوة والسلام हमारे ज़र ख़रीद गुलाम बन कर हमारे घर में आए हैं मगर ख़बरदार ! तुम इन के ए'ज़ाज़ व इकराम का ख़ास तौर पर एहतिमाम व इन्तिज़ाम

रखना क्योंकि अजीजे मिस्र ने अपनी निगाहे फ़िरासत से हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ के शानदार मुस्तक़िबल को समझ लिया था कि गोया आज गुलाम हैं मगर येह एक दिन मिस्र के बादशाह होंगे। (1)

(तारीख़ الخلفاء، ص ५६ وازالة الخفاء مقصد २، ص ३३)

## कलमए तय्यिबा से कलआ मिसमार

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में कैसरे रूम से जंग के लिये मुजाहिदीने इस्लाम की एक फ़ौज रवाना फ़रमाई और हज़रते अबू उबैदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को इस फ़ौज का सिपह सालार मुक़र्रर फ़रमाया। येह इस्लामी फ़ौज कैसरे रूम की लश्करी ताक़त के मुक़ाबले में सफ़र के बराबर थी मगर जब इस फ़ौज ने रूमी क़ल्ए का मुहासरा किया और لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ का ना'रा मारा तो कलमए तय्यिबा की आवाज़ से कैसरे रूम के कल्ए में ऐसा ज़लजला आ गया कि पूरा कलआ मिसमार हो कर इस की ईंट से ईंट बज गई और दम ज़दन में कलआ फ़त्ह हो गया। बिला शुबा येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बहुत ही शानदार करामत है क्योंकि आप ने अपने दस्ते मुबारक से झन्डा बांध कर और फ़त्ह की बिशारत दे कर इस फ़ौज को जिहाद के लिये रवाना फ़रमाया था। (2)

(ازالة الخفاء، مقصد २، ص ३०)

## खून में पेशाब करने वाला

एक शख्स ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अर्ज किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मैं ने येह ख़्वाब देखा है कि मैं खून में पेशाब कर रहा हूं। आप ने इन्तिहाई गैजो ग़ज़ब और जलाल में तड़प कर फ़रमाया कि तू अपनी बीवी से हैज़ की हालत में सोहबत करता है लिहाज़ा इस गुनाह से तौबा कर और ख़बरदार ! आइन्दा हरगिज़ हरगिज़ कभी भी ऐसा मत

1.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما متأثر جميلة صديق اكبر، ج ३، ص १२१

2.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما متأثر جميلة صديق اكبر، ج ३، ص १४८

करना। वोह शख्स इस अपने छुपे हुवे गुनाह पर नादिम व शर्मिन्दा हो कर हमेशा हमेशा के लिये ताइब हो गया।<sup>(1)</sup> (تاريخ الخلفاء، ص ८२)

### सलाम से दरवाजा खुल गया

जब हज़रते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का मुकद्दस जनाज़ा ले कर लोग हुजरए मुनव्वरा के पास पहुंचे तो लोगों ने अर्ज़ किया कि يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا أَبُو بَكْرٍ येह अर्ज़ करते ही रौज़ए मुनव्वरा का बन्द दरवाज़ा यक दम खुद ब खुद खुल गया और तमाम हाज़िरीन ने क़ब्रे अन्वर से येह ग़ैबी आवाज़ सुनी : أَدْخِلُوا الْحَبِيبَ إِلَى الْحَبِيبِ (या'नी हबीब को हबीब के दरबार में दाखिल कर दो)<sup>(2)</sup> (तफ़सीरे कबीर, जि. 5 स. 478)

### कश्फ़े मुस्तविबल

हुजुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी वफ़ाते अक़दस से सिर्फ़ चन्द दिन पहले रूमियों से जंग के लिये एक लश्कर की रवानगी का हुक्म फ़रमाया और अपनी अलालत ही के दौरान अपने दस्ते मुबारक से जंग का झन्डा बांधा और हज़रते उसामा बिन जैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के हाथ में येह निशाने इस्लाम दे कर उन्हें इस लश्कर का सिपह सालार बनाया। अभी येह लश्कर मक़ामे “जरफ़” में ख़ैमा ज़न था और असाकिरे इस्लामिय्या का इजतिमाअ हो ही रहा था कि विसाल की ख़बर फैल गई और येह लश्कर मक़ामे “जरफ़” से मदीनए मुनव्वरा वापस आ गया। विसाल के बा'द ही बहुत से क़बाइले अरब मुर्तद और इस्लाम से मुन्हरिफ़ हो कर काफ़िर हो गए नीज़ मुसैलिमतुल क़ज़ाब ने अपनी नबुव्वत का दा'वा कर के क़बाइले अरब में इर्तिदाद की आग भड़का दी और बहुत से क़बाइल मुर्तद हो गए।

इस इन्तिशार के दौर में अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर क़दम रखते ही सब से

①.....تاريخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، أبو بكر الصديق، فصل فيما ورد... الخ، ص 83

②.....التفسير الكبير للرازي، سورة الكهف، تحت الآية: 9-12، ج 7، ص 433

पहले येह हुक्म फ़रमाया कि “जैशे उसामा” या’नी इस्लाम का वोह लश्कर जिस को हुजुरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते उसामा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ज़ेरे क़ियादत रवाना फ़रमाया और वोह वापस आ गया है दोबारा इस को जिहाद के लिये रवाना किया जाए। हज़रते सहाबए किराम बारगाहे ख़िलाफ़त के इस ए’लान से इन्तिहाई मुतवह्हिश हो गए और किसी तरह भी येह मुआमला इन की समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी ख़तरनाक सूरते हाल में जब कि बहुत से क़बाइल इस्लाम से मुन्हरिफ़ हो कर मदीनए मुनव्वरा पर हम्लों की तय्यारियां कर रहे हैं और झूठे मुद्दइय्याने नबुव्वत ने जज़ीरतुल अरब में लूटमार और बगावत की आग भड़का रखी है। इतनी बड़ी इस्लामी फ़ौज का जिस में बड़े बड़े नामवर और जंग आजमा सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ मौजूद हैं मुल्क से बाहर भेज देना और मदीनए मुनव्वरा को बिलकुल असाकिरे इस्लामिय्या से ख़ाली छोड़ कर ख़तरात मोल लेना किसी तरह भी अक्ले सलीम के नज़दीक क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकता। चुनान्वे, सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ की एक मुन्तख़ब जमाअत जिस के एक फ़र्द हज़रते उमर बिन अल ख़त्ताब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी हैं, बारगाहे ख़िलाफ़त में हाज़िर हुई और अर्ज किया कि ऐ जानशीने पैग़म्बर ! ऐसे मख़्दूश और पुर ख़तर माहोल में जब कि मदीनए मुनव्वरा के चारों तरफ़ मुर्तदीन ने शोरिश फैला रखी है यहां तक कि मदीनए मुनव्वरा पर हम्ले के ख़तरात दरपेश हैं। आप हज़रते उसामा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के लश्कर को रवानगी से रोक दें ताकि इस फ़ौज की मदद से मुर्तदीन का मुक़ाबला किया जाए और इन का क़ल्अ कम्अ कर दिया जाए।

येह सुन कर आप ने जोशे ग़ज़ब में तड़प कर फ़रमाया कि खुदा की क़सम ! मुझे परन्दे उचक ले जाएं येह मुझे ग़वारा है लेकिन मैं उस फ़ौज को रवानगी से रोक दूँ जिस को अपने दस्ते मुबारक से झन्डा बांध कर हुजुरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रवाना फ़रमाया

था येह हरगिज़ हरगिज़ किसी हाल में भी मेरे नज़दीक क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकता मैं इस लश्कर को ज़रूर रवाना करूंगा और इस में एक दिन की भी ताखीर बरदाश्त नहीं करूंगा। चुनान्वे, आप ने तमाम सहाबाए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के मन्अ करने के बा वुजूद इस लश्कर को रवाना कर दिया। खुदा की शान कि जब जोशे जिहाद में भरा हुवा असाकिरे इस्लामिय्या का समन्दर मौजें मारता हुवा रवाना हुवा तो अतराफ़ व जवानिब के तमाम क़बाइल में शौकते इस्लाम का सिक्का बैठ गया और मुर्तद हो जाने वाले क़बाइल या वोह क़बीले जो मुर्तद होने का इरादा रखते थे, मुसलमानों का येह दल बादल लश्कर देख कर ख़ौफ़ व दहशत से लरज़ा बर अन्दाम हो गए और कहने लगे कि अगर ख़लीफ़ए वक़्त के पास बहुत बड़ी फ़ौज रेज़ रू मौजूद न होती तो वोह भला इतना बड़ा लश्कर मुल्क के बाहर किस तरह भेज सकते थे ? इस ख़याल के आते ही उन जंग जू क़बाइल ने जिन्हों ने मुर्तद हो कर मदीनए मुनव्वरा पर हम्ला करने का प्लान बनाया था ख़ौफ़ व दहशत से सहम कर अपना प्रोग्राम ख़त्म कर दिया बल्कि बहुत से फिर ताइब हो कर आगोशे इस्लाम में आ गए और मदीनए मुनव्वरा मुर्तदीन के हम्लों से महफूज़ रहा और हज़रते उसामा बिन जैद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का लश्कर मक़ामे “उबनी” में पहुंच कर रूमियों के लश्कर से मसरूफ़े पैकार हो गया और वहां बहुत ही खूँ रैज़ जंग के बा’द लश्करे इस्लाम फ़तह्याब हो गया और हज़रते उसामा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** बे शुमार माले ग़नीमत ले कर चालीस दिन के बा’द फ़ातिहाना शानो शौकत के साथ मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ़ लाए और अब तमाम सहाबाए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** अन्सार व मुहाजिरीन पर इस राज़ का इन्किशाफ़ हो गया कि हज़रते उसामा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के लश्कर को रवाना करना ऐन मस्लेहत के मुताबिक़ था क्यूंकि इस लश्कर ने एक तरफ़ तो



(تاريخ الخلفاء، ص ٥١ ومدارج النبوة، ج ٢، ص ٢٠٩ تا ٢١١ وغيره)

हज़रते आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** फ़रमाती हैं कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के विसाल के बा'द सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** में इख़िलाफ़ पैदा हो गया कि आप को कहां दफ़्न किया जाए? बा'जू लोगों ने कहा कि इन को शुहदाए किराम के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना चाहिये और बा'जू हज़रात चाहते थे कि आप की क़ब्र शरीफ़ जन्नतुल बक़ीअ में बनाई जाए, लेकिन मेरी दिली ख़्वाहिश येही थी की आप मेरे इसी हुज़रे में सिपुर्दे ख़ाक किये जाएं जिस में हुज़ुरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की क़ब्रे मुनव्वर है येह गुफ़्तगू हो रही थी कि अचानक मुझ पर नौद का ग़लबा हो गया और ख़्वाब में येह आवाज़ मैं ने सुनी कि कोई कहने वाला येह कह रहा है कि **ضُمُّوا الْحَبِيبَ إِلَى الْحَبِيبِ** (या'नी हबीब को हबीब से मिला दो) ख़्वाब से बेदार हो कर मैं ने लोगों से इस आवाज़ का ज़िक्र किया तो बहुत से लोगों ने कहा कि येह आवाज़ तो हम लोगों ने भी सुनी है और मस्जिदे नबवी **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के अन्दर बहुत से लोगों के कानों में येह आवाज़ आई है। इस के बा'द तमाम सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** का

١.....مدارج النبوت ، قسم سوم ، باب يا زدهم وقصة مرض و وفات آنحضرت صلى الله عليه وسلم ، ج ٢، ص ٤٠٩ ، ٤١٠ ملخصاً



इस बात पर इत्तिफ़ाक़ हो गया कि आप की क़ब्रे अतहर रौज़ए मुनव्वरा के अन्दर बनाई जाए। इस तरह आप हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलूए अक्दस में मदफून हो कर अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कुर्बे खास से सरफ़राज़ हो गए।<sup>(1)</sup> (शुआबुल न्बू०, स० १५०)

### दुश्मन ख़िन्नजीर व बन्दर बन गए

हज़रते इमाम मुस्तग़फ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہٗ ने षकात से नक्ल किया है कि हम लोग तीन आदमी एक साथ यमन जा रहे थे। हमारा एक साथी जो कूफी था वोह हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की शान में बद ज़बानी कर रहा था, हम लोग उस को बार बार मन्अ करते थे मगर वोह अपनी इस हरकत से बाज़ नहीं आता था, जब हम लोग यमन के क़रीब पहुंच गए और हम ने उस को नमाज़े फ़ज़्र के लिये जगाया, तो वोह कहने लगा कि मैं ने अभी अभी येह ख़्वाब देखा है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा हुवे और मुझे फ़रमाया कि “ऐ फ़ासिक़ ! खुदावन्दे तआला ने तुझ को ज़लीलो ख़्वार फ़रमा दिया और तू इसी मन्ज़िल में मस्ख़ हो जाएगा।” इस के बा’द फ़ौरन ही उस के दोनों पाउं बन्दर जैसे हो गए और थोड़ी देर में उस की सूरत बिल्कुल ही बन्दर जैसी हो गई। हम लोगों ने नमाज़े फ़ज़्र के बा’द उस को पकड़ कर ऊंट के पालान के ऊपर रस्सियों से जकड़ कर बांध दिया और वहां से रवाना हुवे। गुरुबे आफ़ताब के वक़्त जब हम एक जंगल में पहुंचे तो चन्द बन्दर वहां जम्अ थे। जब इस ने बन्दरों के गोल को देखा तो रस्सी तोड़ कर येह ऊंट के पालान से कूद पड़ा और बन्दरों के गोल में शामिल हो गया। हम लोग हैरान हो कर थोड़ी देर वहां ठहर गए ताकि हम येह देख सकें कि बन्दरों का गोल इस के साथ किस तरह पेश आता है तो हम ने येह देखा कि येह बन्दरों के पास बैठा हुवा हम लोगों की तरफ़ बड़ी हसरत से देखता था और इस की आंखों से आंसू

①.....शुआहद النبوة، رکن سادس در بیان شواهد ودلایلی...الخ، ص ۲۰۰

जारी थे। घड़ी भर के बा'द जब सब बन्दर वहां से दूसरी तरफ़ जाने लगे तो येह भी उन बन्दरों के साथ चला गया।<sup>(1)</sup> (शुआहल न्बुः १५३)

इसी तरह हज़रते इमाम मुस्तग़फ़री رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने एक मर्दे सालेह से नक़ल किया है कि कूफ़ा का एक शख़्स जो हज़रते अबू बक्र व उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को बुरा भला कहा करता था हर चन्द हम लोगों ने उस को मन्ज़ किया मगर वोह अपनी ज़िद पर अड़ा रहा, तंग आ कर हम लोगों ने उस को कह दिया कि तुम हमारे काफ़िले से अलग हो कर सफ़र करो। चुनान्वे, वोह हम लोगों से अलग हो गया जब हम लोग मन्ज़िले मक़सूद पर पहुंच गए और काम पूरा कर के वतन की वापसी का क़स्द किया तो उस शख़्स का गुलाम हम लोगों से मिला, जब हम ने उस से कहा कि क्या तुम और तुम्हारा मौला हमारे काफ़िले के साथ वतन जाने का इरादा रखते हो? येह सुन कर गुलाम ने कहा कि मेरे मौला का हाल तो बहुत ही बुरा है, ज़रा आप लोग मेरे साथ चल कर उस का हाल देख लीजिये!

गुलाम हम लोगों को साथ ले कर एक मकान में पहुंचा वोह शख़्स उदास हो कर हम लोगों से कहने लगा कि मुझ पर तो बहुत बड़ी इफ़ताद पड़ गई। फिर उस ने अपनी आस्तीन से दोनों हाथों को निकाल कर दिखाया तो हम लोग येह देख कर हैरान रह गए कि उस के दोनों हाथ खिन्ज़ीर के हाथों की तरह हो गए थे। आखिर हम लोगों ने उस पर तरस खा कर अपने काफ़िले में शामिल कर लिया लेकिन दौराने सफ़र एक जगह चन्द खिन्ज़ीरों का एक झुंड नज़र आया और येह शख़्स बिल्कुल ही नागहां मस्ख़ हो कर आदमी से खिन्ज़ीर बन गया और खिन्ज़ीरों के साथ मिल कर दौड़ने भागने लगा मजबूरन हम लोग उस के गुलाम और सामान को अपने साथ कूफ़ा तक लाए।<sup>(2)</sup> (शुआहल न्बुः १५३)

1.....शुआहल न्बुः, रकन सद्स दरियान शुआहल वदलाली...ख, व २०३

2.....शुआहल न्बुः, रकन सद्स दरियान शुआहल वदलाली...ख, व २०४

## शैखैन का दुश्मन कुत्ता बन गया

इसी तरह हज़रते इमाम मुस्तग़फ़री رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ एक बुजुर्ग से नाकिल है कि मैं ने मुल्के शाम में एक ऐसे इमाम के पीछे नमाज़ अदा की जिस ने नमाज़ के बा'द हज़राते अबू बक्र व उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के हक़ में बद दुआ की। जब दूसरे साल मैं ने उसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ के बा'द इमाम ने हज़राते अबू बक्र व उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के हक़ में बेहतरीन दुआ मांगी, मैं ने मुसल्लियों से पूछा कि तुम्हारा पुराना इमाम का क्या हुवा ? तो लोगों ने कहा कि आप हमारे साथ चल कर उस को देख लीजिये ! मैं जब इन लोगों के साथ एक मकान में पहुंचा तो येह देख कर मुझ को बड़ी इब्रत हुई कि एक कुत्ता बैठा हुवा है और उस के दोनों आंखों से आंसू जारी हैं। मैं ने उस से कहा कि तुम वोही इमाम हो जो हज़राते शैखैन के लिये बद दुआ किया करता था ? तो उस ने सर हिला कर जवाब दिया कि हां ! (1) (शुआहद النبوة، ص 151)

**अल्लाहु अकबर !** سُبْحَنَ اللَّهُ क्या अजीमुश्शान है शान सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की ! बिल खुसूस यारे गारे रसूल हज़रते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की। क्या ख़ूब कहा है किसी मद्दाहे सहाबा ने

बीच में शम्अ थी और चारों तरफ़ परवाने  
हर कोई इस के लिये जान जलाने वाला  
दा'वए उल्फ़ते अहमद तो सभी करते हैं  
कोई निकले तो ज़रा रंज उठाने वाला  
काम उल्फ़त के थे वोह जिन को सहाबा ने किया  
क्या नहीं याद तुम्हें "गार" में जाने वाला

1.....शुआहद النبوة، ركن سادس در بيان شواهد ودلايلي...الخ، 206

## तबशेश

किसी काम के अन्जाम और मुस्तक़बल के हालात को जान लेना, हर शख्स जानता है कि यकीनन येह ग़ैब का इल्म है। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की मज़कूरा बाला करामात से रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर हो जाता है कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को **अल्लाह** तआला ने कश्फ़ व इल्हाम के तौर पर इन ग़ैबों का इल्म अता फ़रमा दिया था।

**लिल्लाह !** इन्साफ़ कीजिये कि जब ख़लीफ़ा पैग़म्बर को **अल्लाह** तआला ने इल्हाम व कश्फ़ के ज़रीए इल्मे ग़ैब की करामत अता फ़रमाई तो क्या उस ने अपने पैग़म्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अपनी मुक़द्दस वहुय के ज़रीए इल्मे ग़ैब का मो'जिज़ा न अता फ़रमाया होगा ? क्या **अल्लाह** तआला को इल्मे ग़ैब बताने की कुदरत नहीं ? या نَعُوذُ بِاللّٰهِ नबी عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में इल्मे ग़ैब हासिल करने की सलाहिyyत नहीं ? बताइये दुन्या में कौन ऐसा अहमक है जो खुदा عَزَّوَجَلَّ की कुदरत और उस के नबी عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सलाहिyyत से इन्कार कर सकता है ? जब खुदा عَزَّوَجَلَّ की कुदरत मुसल्लम और नबी عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सलाहिyyत तस्लीम है तो फिर भला नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इल्मे ग़ैब का इन्कार किस तरह मुमकिन हो सकता है ?

मगर अफ़्सोस ! सद हज़ार अफ़्सोस ! कि वहाबी उ-लमा जो अज़मते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को घटाने के लिये लंगुर लंगोट कस कर बल्कि बरहना हो कर मैदान में उतर पड़े हैं येह सब कुछ जानते हुवे और सेंकड़ों आयाते बय्यिनात और दलाइल व शवाहिद को देखते हुवे भी आंख मीच कर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के इल्मे ग़ैब का चिल्ला चिल्ला कर इन्कार करते रहते हैं और अपने पैरुओं और हवा ख़्वाहों को इस दरजे गुमराह कर चुके हैं कि इन के

अवाम गुमराही की भूल भुलव्यों से निकल कर सिराते मुस्तकीम की शाहराह पर आने के लिये किसी तरह तय्यार ही नहीं होते और मषल मशहूर है कि सोते को जगाना बहुत आसान है मगर जागते को जगाना इन्तिहाई मुश्किल है। इस लिये अब हम इन लोगों की हिदायत से तकरीबन मायूस हो चुके हैं क्योंकि ये लोग जाहिल नहीं बल्कि मुतजाहिल हैं या'नी सब कुछ जानते हुवे भी जाहिल बने हुवे हैं और ये लोग तालिबे हक नहीं हैं बल्कि मअनिद हैं, या'नी हक के ज़ाहिर होने के बा'द भी हक को कबूल करने के लिये तय्यार नहीं हैं।

इस लिये हम अपने सुन्नी हनफी भाइयों को येही मुख़्लिसाना मश्वरा बल्कि हुक्म देते हैं कि वोह नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के ग़ैब दां होने के अक़ीदे पर खुद पहाड़ की तरह मज़बूती के साथ काइम रहें और इन गुमराहों की तकरीरों, तहरीरों और सोहबतों से बिल्कुल क़तई तौर पर परहेज़ करें क्योंकि गुमराही के जराषीम बहुत जल्द अषर कर जाते हैं और हिदायत का नूर बड़ी मुश्किल और बेहद ज़िद्दो जहद के बा'द मिलता है। खुदावन्दे करीम हमारे बरादराने अहले सुन्नत के ईमान व अक़ाइद की हिफ़ज़त फ़रमाए और तमाम गुमराहों, बद दीनों और बे दीनों के शर से बचाए रखे। (आमीन)

आख़िरुज्जिक़्र मज़क़ूरा बाला तीन रिवायतों से ज़ाहिर है कि हज़रते अबू बक्र व उमर **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا** की मुक़द्दस शान में बद गोई और बद ज़बानी का अन्जाम कितना ख़तरनाक व इब्रतनाक है ! ज़मानए हाल के तबराई रवाफ़िज़ के लिये येह रिवायात ताज़ियानए इब्रत हैं कि वोह लोग अपनी तबरा बाज़ियों से बाज़ आ जाएं वरना हलाकतों और बरबादियों का सिग्नल डाऊन हो चुका है और क़रीब है कि अज़ाबे इलाही की रेल गाड़ी इन ज़ालिमों को रौंद कर चूर चूर

कर डालेगी और **ان شاء الله تعالى** येह खुबषा भी दोनों जहान की ला'नतों में गिरिफ्तार हो कर दुन्या में मस्ख हो कर खिन्जीर व बन्दर और कुत्ते बना दिये जाएंगे और आखिरत में क़हरे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ्तार हो कर अज़ाबे नार पा कर ज़लीलो ख़्बार हो जाएंगे ।

हज़राते अहले सुन्नत को लाज़िम है कि तमाम गुमराह फ़िर्की की तरह रवाफ़िज़ व ख़वारिज से भी इसी तरह मुकातआ रखें और इन से अलग थलग रहें क्योंकि येह सब फ़िर्के जो शाने रिसालत व दरबारे सहाबिय्यत व बारगाहे अहले बैत में गुस्ताखियां करते हैं यकीनन बिला शुबा येह सब के सब जहन्नमी हैं और येह लोग जहां भी और जिस मजलिस में भी रहेंगे इन पर खुदा की फिटकार पड़ती रहेगी और ज़ाहिर है कि जो इन के पास बैठेगा और इन से मेल जोल रखेगा इन पर उतरने वाली फिटकार से उस को भी ज़रूर कुछ न कुछ हिस्सा मिल जाएगा । लिहाज़ा खैरिय्यत इसी में है कि आग से दूर ही रहिये वरना अगर जलने से बचेंगे तो कम अज़ कम इस की आंच से तो न बच सकेंगे । खुदावन्दे करीम हज़राते अहले सुन्नत के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए । (आमीन)

## ﴿2﴾ हज़रते उमर फ़ारूक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

ख़लीफ़े दुवुम जा नशीने पैग़म्बर हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की कुन्यत “अबू हफ़्स” और लक़ब “फ़ारूके आ'ज़म” है । आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** अशराफ़े कुरैश में अपनी ज़ाती व ख़ानदानी वजाहत के लिहाज़ से बहुत ही मुमताज़ हैं । आठवीं पुश्त में आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का ख़ानदानी शजरा रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के शजरए नसब से मिलता है । आप वाकिअए फ़ील के तेरह बरस बा'द मक्कए मुक़र्रमा में पैदा हुवे और ए'लाने



नबुव्वत के छठे साल सत्ताईस बरस की उम्र में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे, जब कि एक रिवायत में आप से पहले कुल उन्तालीस आदमी इस्लाम कबूल कर चुके थे। आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के मुसलमान हो जाने से मुसलमानों को बेहद खुशी हुई और उन को एक बहुत बड़ा सहारा मिल गया यहां तक कि हुजूर रहमते अलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने मुसलमानों की जमाअत के साथ खानए का'बा की मस्जिद में ए'लानिया नमाज़ अदा फ़रमाई।

आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** तमाम इस्लामी जंगो में मुजाहिदाना शान के साथ कुफ़्फ़र से लड़ते रहे और पैग़म्बरे इस्लाम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की तमाम इस्लामी तहरीकात और सुल्ह व जंग वगैरा तमाम मन्सूबा बन्दियों में हुजूर सुल्ताने मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के वज़ीर व मुशीर की हैषियत से वफ़ादार व रफ़ीके कार रहे।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अपने बा'द आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाया और दस बरस छे माह चार दिन आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक अफ़रोज़ हो कर जा नशीनिये रसूल की तमाम ज़िम्मेदारियों को ब हुस्ने वुजूह अन्जाम दिया। 26 ज़िल हिज्जा सि. 23 हि. चहार शम्बा के दिन नमाज़े फ़त्र में अबू लूअलूह फ़ीरोज़ मजूसी काफ़िर ने आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को शिकम में ख़न्जर मारा और आप येह ज़ख़्म खा कर तीसरे दिन शरफ़े शहादत से सरफ़राज़ हो गए। ब वक्ते वफ़ात आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की उम्र शरीफ़ तिरसठ बरस की थी। हज़रते सुहैब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रौज़ए मुबारका के अन्दर हज़रते सिद्दीके अक्बर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के पहलूए अन्वर में मदफून हुवे।<sup>(1)</sup>

## कशमात

## कब्र वालों से शुफ्तू

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ एक मरतबा एक नौजवान सालेह की कब्र पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि ऐ फुलां ! **अब्बाह** तअ़ाला ने वा'दा फ़रमाया है कि

या'नी जो शख्स अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डर गया उस के लिये दो जन्नतें हैं وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتٌ ۝ (1)

ऐ नौजवान ! बता तेरा कब्र में क्या हाल है ? उस नौजवाने सालेह ने कब्र के अन्दर से आप का नाम ले कर पुकारा और ब आवाज़े बुलन्द दो मरतबा जवाब दिया कि मेरे रब ने येह दोनों जन्नतें मुझे अता फ़रमा दी हैं । <sup>(2)</sup> (حجة الله على العالمين ج ۲ ص ۸۱۰ بحواله حاکم)

## मदीने की आवाज़ निहावन्द तक

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सारियह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को एक लश्कर का सिपह सालार बना कर निहावन्द की सरज़मीन में जिहाद के लिये रवाना फ़रमा दिया । आप जिहाद में मसरूफ़ थे कि एक दिन हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मस्जिदे नबवी के मिम्बर पर खुतबा पढ़ते हुवे नागहां येह इरशाद फ़रमाया कि **يَا سَارِيَّةُ الْجَبَلِ** (या'नी ऐ सारियह ! पहाड़ की तरफ़ अपनी पीठ कर लो) हाज़िरीने मस्जिद हैरान रह गए कि हज़रते सारियह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तो सर ज़मीने निहावन्द में मसरूफ़े जिहाद हैं और मदीने मुनव्वरा से सेंकड़ों मील की दूरी पर हैं । आज अमीरुल मोअमिनीन ने इन्हें क्यूं कर और कैसे पुकारा ? लेकिन निहावन्द से जब हज़रते सारियह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का कासिद आया तो उस ने येह ख़बर दी कि मैदाने जंग में जब कुफ़फ़ार से मुकाबला हुवा तो हम को शिकस्त होने लगी इतने में नागहां एक चीख़ने वाले की आवाज़ आई जो चिल्ला चिल्ला कर येह कह रहा था कि ऐ

①.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं । (پ ۲۷، الرحمن: ۴۶)

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

فی ذکر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۲

सारियह ! तुम पहाड़ की तरफ अपनी पीठ कर लो । हज़रते सारियह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि येह तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते फ़रूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की आवाज़ है, येह कहा और फ़ौरन ही उन्होंने ने अपने लश्कर को पहाड़ की तरफ़ पुश्त कर के सफ़बन्दी का हुक्म दिया और इस के बा'द जो हमारे लश्कर की कुफ़फ़ार से टक्कर हुई तो एक दम अचानक जंग का पांसा ही पलट गया और दम ज़दन में इस्लामी लश्कर ने कुफ़फ़ार की फ़ौजों को रौंद डाला और असाकिरे इस्लामिय्या के काहिराना हम्लों की ताब न ला कर कुफ़फ़ार का लश्कर मैदाने जंग छोड़ कर भाग निकला और अफ़वाजे इस्लाम ने फ़त्हे मुबीन का परचम लहरा दिया ।<sup>(1)</sup> (مكتوبة باب الكرامات، ص ۵۳۶ و جزء الدرر، ص ۲، ۸۶۰ و تاريخ الخلفاء، ص ۸۵)

## तबशेर

हज़रते अमीरुल मोअमिनीन फ़रूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की इस हदीषे क़रामत से चन्द बातें मा'लूम हुई जो तालिबे हक़ के लिये रोशनी का मनारा हैं ।

﴿1﴾ येह कि हज़रते अमीरुल मोअमिनीन फ़रूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और आप के सिपह सालार दोनों साहिबे क़रामत हैं क्यूंकि मदीनए मुनव्वरा से सेंकड़ों मील की दूरी पर आवाज़ को पहुंचा देना येह अमीरुल मोअमिनीन की क़रामत है और सेंकड़ों मील की दूरी से किसी आवाज़ को सुन लेना येह हज़रते सारियह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की क़रामत है ।

﴿2﴾ येह कि अमीरुल मोअमिनीन ने मदीनए तय्यिबा से सेंकड़ों मील की दूरी पर निहावन्द के मेदाने जंग और इस के अहवाल व कैफ़िय्यात को देख लिया और फिर असाकिरे इस्लामिय्या की मुश्किलात का हल भी मिम्बर पर खड़े खड़े लश्कर के सिपह सालार को बता दिया ।

इस से मा'लूम हुवा कि औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ के कान और आंख और उन की सम्अ व बसर की ताक़तों को आम इन्सानों के कान व आंख और उन की कुव्वतों पर हरगिज़ हरगिज़ क़ियास

①.....تاريخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، عمر الفاروق، فصل في كراماته، ص ۹۹ ملقطاً  
وحجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث  
في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۲ ملخصاً

नहीं करना चाहिये बल्कि येह ईमान रखना चाहिये कि **अल्लाह** तअाला ने अपने महबूब बन्दों के कान और आंख को आम इन्सानों से बहुत ही ज़ियादा ताक़त अता फ़रमाई है और इन की आंखों, कानों और दूसरे आ'ज़ा की ताक़त इस क़दर बे मिष्ल और बे मिषाल है और उन से ऐसे ऐसे कारहाए नुमायां अन्जाम पाते हैं कि जिन को देख कर करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता ।

﴿3﴾ हदीषे मज़कूरए बाला से येह भी षाबित होता है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते फ़रूके आ'ज़म **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की हुकूमत हवा पर भी थी और हवा भी इन के कन्ट्रोल में थी इस लिये कि आवाज़ों को दूसरों के कानों तक पहुंचाना दर हकीक़त हवा का काम है कि हवा के तमूज ही से आवाज़ें लोगों के कानों के पर्दों से टकरा कर सुनाई दिया करती हैं । हज़रते फ़रूके आ'ज़म **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने जब चाहा अपने क़रीब वालों को अपनी आवाज़ सुना दी और जब चाहा तो सेंकड़ों मील दूर वालों को भी सुना दी, इस लिये कि हवा आप के ज़ेरे फ़रमान थी, जहां तक आप ने चाहा हवा से आवाज़ पहुंचाने का काम ले लिया ।

سُبْحَنَ اللَّهِ सच फ़रमाया हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने कि **مَنْ كَانَ لِلَّهِ كَمَانَ اللَّهُ لَهُ (1)** (या'नी जो खुदा का बन्दा फ़रमां बरदार बन जाता है तो खुदा उस का कारसाज़ व मददगार बन जाता है) इसी मज़मून की तरफ़ इशारा करते हुवे हज़रते शैख़ सा'दी **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने क्या ख़ूब फ़रमाया है

توهم گردن از حکم داور مپیچ که گردن نه پیچد ز حکم توهیچ  
(या'नी तू खुदा के हुक़म से सरताबी न कर, ताकि तेरे हुक़म से दुनिया की कोई चीज़ रू गर्दानी न करे)

## दरया के नाम ख़त

रिवायत है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर फ़रूक **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के दौरे ख़िलाफ़त में एक मरतबा मिस्र का दरयाए नील खुशक हो गया । मिस्री बाशिन्दों ने मिस्र के गवर्नर अम्र बिन आस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से फ़रयाद की और येह कहा कि मिस्र की तमाम तर पैदावार का दारोमदार इसी दरयाए नील के पानी पर है । ऐ अमीर !

अब तक हमारा येह दस्तूर रहा है कि जब कभी भी येह दरया सूख जाता था तो हम लोग एक खूब सूरत कंवारी लड़की को इस दरया में ज़िन्दा दफ़न कर के दरया की भेंट चढ़ाया करते थे तो येह दरया जारी हो जाया करता था अब हम क्या करें ? गवर्नर ने जवाब दिया कि अरहमर्राहिमीन और रहमतुल्लिल आलमीन का रहमत भरा दीन हमारा इस्लाम हरगिज़ हरगिज़ कभी भी इस बे रह्मी और ज़ालिमाना फ़ैल की इजाज़त नहीं दे सकता लिहाज़ा तुम लोग इन्तिज़ार करो मैं दरबारे ख़िलाफ़त में ख़त लिख कर दरयाफ़त करता हूँ वहां से जो हुक्म मिलेगा हम उस पर अमल करेंगे चुनान्वे, एक कासिद गवर्नर का ख़त ले कर मदीनए मुनव्वरा दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर हुवा अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने गवर्नर का ख़त पढ़ कर दरयाए नील के नाम एक ख़त तहरीर फ़रमाया जिस का मज़मून येह था कि “ऐ दरयाए नील ! अगर तू खुद ब खुद जारी हुवा करता था तो हम को तेरी कोई ज़रूरत नहीं है और अगर तू **اَبْلَاهُ** तआला के हुक्म से जारी होता था तो फिर **اَبْلَاهُ** तआला के हुक्म से जारी हो जा ।”

अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इस ख़त को कासिद के हवाले फ़रमाया और हुक्म दिया कि मेरे इस ख़त को दरयाए नील में दफ़न कर दिया जाए । चुनान्वे, आप के फ़रमान के मुताबिक़ गवर्नर मिस्र ने इस ख़त को दरयाए नील की खुश्क रैत में दफ़न कर दिया, खुदा की शान कि जैसे ही अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का ख़त दरया में दफ़न किया गया फ़ौरन ही दरया जारी हो गया और इस के बा'द फिर कभी खुश्क नहीं हुवा ।<sup>(1)</sup>

## तबसेरा

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि जिस तरह हवा पर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की हुक्मत थी इसी तरह दरयाओं के पानियों पर भी आप की हुक्मरानी का परचम लहरा रहा था और दरयाओं की रवानी भी आप की फ़रमां बरदार व ख़िदमत गुज़ार थी ।

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب

الثالث في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ٦١٢ ملخصاً



## चादर देख कर आग बुझ गई

रिवायत में है आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की खिलाफत के दौर में एक मरतबा नागहां एक पहाड़ के गार से एक बहुत ही खतरनाक आग नुमूदार हुई जिस ने आस-पास की तमाम चीजों को जला कर राख का ढेर बना दिया, जब लोगों ने दरबारे खिलाफत में फरयाद की तो अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते तमीम दारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपनी चादर मुबारक अता फरमाई और इरशाद फरमाया कि तुम मेरी येह चादर ले कर आग के पास चले जाओ। चुनान्चे, हज़रते तमीम दारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उस मुकद्दस चादर को ले कर रवाना हो गए और जैसे ही आग के करीब पहुंचे यका-यक वोह आग बुझने और पीछे हटने लगी यहां तक कि वोह गार के अन्दर चली गई और जब येह चादर ले कर गार के अन्दर दाखिल हो गए तो वोह आग बिल्कुल ही बुझ गई और फिर कभी भी ज़ाहिर नहीं हुई।<sup>(1)</sup> (अزالة الخفاء، مقصد २، ص १८२)

## तबसेरा

इस रिवायत से पता चलता है कि हवा और पानी की तरह आग पर भी अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की हुक्मरानी थी और आग भी आप के ताबेए फरमान थी।

## मार से जलजला ख़त्म

इमामुल हरमैन ने अपनी किताब “अश्शामिल” में तहरीर फरमाया है कि एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा में जलजला आ गया और ज़मीन ज़ोरों के साथ कांपने और हिलने लगी। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जलाल में भर कर ज़मीन पर एक दुरा मारा और बुलन्द आवाज़ से तड़प कर फरमाया قَرَرْتُ أَلَمْ أَعِدْ عَلَيْكَ (ऐ ज़मीन ! साकिन हो जा क्या मैं ने तेरे ऊपर अदल नहीं किया है ?) आप का फरमाने जलालत निशान सुनते ही ज़मीन साकिन हो गई और जलजला ख़त्म हो गया।<sup>(2)</sup> (حجة اللہ ج २، ص ८११ وازالة الخفاء، مقصد २، ص १८२)

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص १८१ وازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم،

الفصل الرابع، ج ४، ص १०९

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ११२



## तबशेश

इस रिवायत से येह षाबित होता है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की हुकूमत जिस तरह हवा, पानी और आग पर थी इसी तरह ज़मीन पर भी आप के फ़रमाने शाही का सिक्का चलता था। मज़क़ूरा बाला चारों करामतों से मा'लूम हुवा कि औलियाउल्लाह की हुकूमत हवा, आग, पानी और मिट्टी (ज़मीन) सभी पर है और चूँकि येह चारों अरबए अनासिर कहलाते हैं या'नी इन्हीं चारों से तमाम काइनाते आलम के मुर्वक़बात बनाए गए हैं, तो जब इन चारों अनासिर पर औलियाए किराम की हुकूमत षाबित हो गई तो जो जो चीज़ें इन चारों अनासिर से मुर्वक़ब हुई हैं ज़ाहिर है कि इन पर बतरीके ऊला औलियाए किराम की हुकूमत होगी।

## दूर से पुकार का जवाब

हज़रते अमीरुल मोअमिनीन फ़ारूके आ'ज़म रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सर ज़मीने रूम में मुजाहिदीने इस्लाम का एक लश्कर भेजा। फिर कुछ दिनों के बा'द बिल्कुल ही अचानक मदीनए मुनव्वरा में निहायत ही बुलन्द आवाज़ से आप ने दो मरतबा येह फ़रमाया : **يَا لَيْكَاہُ! يَا لَيْكَاہُ!** (या'नी ऐ शख़्स ! मैं तेरी पुकार पर हाज़िर हूँ) अहले मदीना हैरान रह गए और इन की समझ में कुछ भी न आया कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ किस फ़रयाद करने वाले की पुकार का जवाब दे रहे हैं ? लेकिन जब कुछ दिनों के बा'द वोह लश्कर मदीनए मुनव्वरा वापस आया और उस लश्कर का सिपह सालार अपनी फ़तूहात और अपने जंगी कारनामों का ज़िक्र करने लगा तो अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि इन बातों को छोड़ दो ! पहले येह बताओ कि जिस मुजाहिद को तुम ने ज़बरदस्ती दरया में उतारा था और उस ने **يَا عُمَرَاہُ! يَا عُمَرَاہُ!** (ऐ मेरे उमर ! मेरी ख़बर लीजिये) पुकारा था उस का क्या वाकिआ था।

सिपह सालार ने फ़रूकी जलाल से सहम कर कांपते हुवे अज़ किया कि अमीरुल मोअमिनीन ! رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मुझे अपनी फ़ौज को

दरया के पार उतारना था इस लिये मैं ने पानी की गहराई का अन्दाज़ करने के लिये उस को दरया में उतरने का हुक्म दिया, चूंकि मोसिम बहुत ही सर्द था और जोरदार हवाएं चल रही थीं इस लिये उस को सर्दी लग गई और उस ने दो मरतबा जोर जोर से **يَا عَمْرَأُ! يَا عَمْرَأُ** कह कर आप को पुकारा, फिर यका-यक उस की रूढ़ परवाज़ कर गई। खुदा गवाह है कि मैं ने हरगिज़ हरगिज़ उस को हलाक करने के इरादे से दरया में उतरने का हुक्म नहीं दिया था। जब अहले मदीना ने सिपह सालार की ज़बानी येह किस्सा सुना तो इन लोगों की समझ में आ गया कि अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने एक दिन जो दो मरतबा **يَا لَيْكَاہُ! يَا لَيْكَاہُ** फ़रमाया था दर हकीकत येह उसी मज़लूम मुजाहिद की फ़रयाद व पुकार का जवाब था। अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** सिपह सालार का बयान सुन कर गैज़ो ग़ज़ब में भर गए और फ़रमाया कि सर्द मोसिम और ठन्डी हवाओं के झोंकों में उस मुजाहिद को दरया की गहराई में उतारना येह क़त्ले ख़ता के हुक्म में है, लिहाज़ा तुम अपने माल में से इस के वारिषों को इस का खून बहा अदा करो और ख़बरदार ! ख़बरदार ! आइन्दा किसी सिपाही से हरगिज़ हरगिज़ कभी कोई ऐसा काम न लेना जिस में उस की हलाकत का अन्देशा हो क्योंकि मेरे नज़दीक एक मुसलमान का हलाक हो जाना बड़ी से बड़ी हलाकतों से भी कहीं बढ़ चढ़ कर हलाकत है।<sup>(1)</sup> (अज़ाले الخفاء، مقصد ۲، ص ۱۷۲)

## तबसेरा

अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस वफ़त पाने वाले सिपाही की फ़रयाद और पुकार को सेंकड़ों मील की दूरी से सुन लिया और उस का जवाब भी दिया। इस रिवायत से ज़ाहिर होता है कि औलियाए किराम दूर की आवाज़ों को सुन लेते हैं और उन का जवाब भी देते हैं।

## दो गैबी शेर

रिवायत है कि बादशाहे रूम का भेजा हुवा एक अज़मी काफ़िर मदीनाए मुनव्वरा आया और लोगों से हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

1.....अज़ाले الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج ۴، ص ۱۰۹

का पता पूछ, लोगों ने बता दिया कि वोह दोपहर को खजूर के बागों में शहर से कुछ दूर कैलूला फ़रमाते हुवे तुम को मिलेंगे। येह अज़मी काफ़िर ढूँडते ढूँडते आप के पास पहुंच गया और येह देखा कि आप अपना चमड़े का दुर्गा अपने सर के नीचे रख कर ज़मीन पर गहरी नींद सो रहे हैं। अज़मी काफ़िर इस इरादे से तल्वार को नियाम से निकाल कर आगे बढ़ा कि अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को क़त्ल कर के भाग जाए मगर वोह जैसे ही आगे बढ़ा बिल्कुल ही अचानक उस ने येह देखा कि दो शेर मुंह फाड़े हुवे उस पर हम्ला करने वाले हैं। येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख कर वोह ख़ौफ़ व दहशत से बिलबिला कर चीख पड़ा और उस की चीख की आवाज़ से अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** बेदार हो गए और येह देखा कि अज़मी काफ़िर गंगी तल्वार हाथ में लिये हुवे थर थर कांप रहा है। आप ने उस की चीख और दहशत का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने सच मुच सारा वाक़िआ बयान कर दिया और फिर बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया और अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस के साथ निहायत ही मुशफ़िक़ाना बरताव फ़रमा कर उस के कुसूर को मुआफ़ कर दिया।<sup>(1)</sup> (ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۵۲ او تفسیر کبیر ج ۵، ص ۴۸)

## तबसेरा

येह रिवायत बता रही है कि **अल्लाह** तआला अपने ख़ास बन्दों की हिफ़ज़त के लिये ग़ैब से ऐसा सामान फ़राहम फ़रमा देता है कि जो किसी के वहम व गुमान में भी नहीं आ सकता और येही ग़ैबी सामान औलियाउल्लाह की करामत कहलाते हैं। हज़रते शैख़ सा'दी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने इसी मज़मून की तरफ़ इशारा फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया :

محال است چوں دوست دارد ترا که در دست دشمن گزارد ترا

या'नी **अल्लाह** तआला जब तुम को अपना महबूब बन्दा बना ले तो फिर येह मुहाल है कि वोह तुम को तुम्हारे दुश्मन के हाथ में कस्म पुर्सी के अलाम में छोड़ दे बल्कि उस की किब्रियाई ज़रूर

1.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج ۴، ص ۱۰۹

दुश्मनों से हिफाजत के लिये अपने महबूब बन्दों की गैबी तौर पर इमदाद व नुसरत का सामान पैदा फ़रमा देती है और येही नुसरते ईमानी फज़ले रब्बानी बन कर इस तरह महबूबाने इलाही की दुश्मनों से हिफाजत करती है जिस को देख कर बे इख़्तियार येह कहना पड़ता है कि "دشمن اگر قوی است نگهبان قوی تر است"

### क़ब्र में बदन सलामत

वलीद बिन अब्दुल मलिक उमवी के दौरें हुकूमत में जब रौज़ए मुनव्वरा की दीवार गिर पड़ी और बादशाह के हुक्म से ता'मीरे जदीद के लिये बुन्याद खोदी गई तो नागहां बुन्याद में एक पाउं नज़र आया, लोग घबरा गए और सब ने येही ख़याल किया कि येह हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पाए अक़दस है लेकिन जब उर्वा बिन जुबैर सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने देखा और पहचाना फिर क़सम खा कर येह फ़रमाया कि येह हुज़ूर अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मुक़द्दस पाउं नहीं है बल्कि येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का क़दम शरीफ़ है तो लोगों की घबराहट और बे चैनी में क़दरे सुकून हुवा।<sup>(1)</sup> (بخاری شریف ج ۱، ص ۱۸۶)

### तबशेश

बुख़ारी शरीफ़ की येह रिवायत इस बात की ज़बरदस्त शहादत है कि बा'ज औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ के मुक़द्दस जिस्मों को क़ब्र की मिट्टी बरसों गुज़र जाने के बा'द भी नहीं खा सकती। बदन तो बदन इन के कफ़न को भी मिट्टी मैला नहीं करती। जब औलियाए किराम का येह हाल है तो भला हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का क्या हाल होगा। फिर हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया ख़ातिमुन्नबिय्यीन, शफीज़ल मुज़निबीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

①.....صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی قبر النبی صلی الله علیه وسلم وای

بکرو و عمر رضى الله عنهما، الحديث: ۱۳۹۰، ج ۱، ص ۶۶۹

के जिस्मे अतहर का क्या कहना ? जब कि वोह अपनी कब्रे मुनव्वर में जिस्मानी लवाजिमे हयात के साथ जिन्दा हैं जैसा की हदीष शरीफ में आया है : (1) **فَنَبِيُّ اللَّهِ حَيٌّ يُرْزَقُ** (या'नी **अल्लाह** तआला के नबी जिन्दा हैं और उन को रोजी भी दी जाती है)

### जो कह दिया वोह हो गया

रबीआ बिन उमय्या बिन ख़लफ़ ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से अपना येह ख़्वाब बयान किया कि मैं ने येह ख़्वाब देखा है कि मैं एक हरे भरे मैदान में हूं फिर मैं उस से निकल कर एक ऐसे चटियल मैदान में आ गया जिस में कहीं दूर दूर तक घास या दरख़्त का नामो निशान भी नहीं था और जब मैं नींद से बेदार हुवा तो वाक़ेई मैं एक बन्जर मैदान में था । आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि तू ईमान लाएगा, फिर इस के बा'द काफ़िर हो जाएगा और कुफ़्र ही की हालत में मरेगा । अपने ख़्वाब की ता'बीर सुन कर वोह कहने लगा कि मैं ने कोई ख़्वाब नहीं देखा है, मैं ने तो यूं ही झूट मूट आप से येह कह दिया है ! आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने येह फ़रमाया कि तू ने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो मगर मैं ने जो ता'बीर दी है वोह अब पूरी हो कर रहेगी । चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि मुसलमान होने के बा'द उस ने शराब पी और अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस को दुरा मार कर सज़ा दी और उस को शहर बदर कर के ख़ैबर भेज दिया । वोह ज़ालिम वहां से भाग कर रूम की सर ज़मीन में चला गया और वहां जा कर वोह मर्दूद नस्रानी हो गया और मुर्तद हो कर कुफ़्र ही की हालत में मर गया । (2) (ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۱۷۰)

### लोगों की तक़दीर में क्या है ?

अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा कहते हैं कि हमारे क़बीले का एक वफ़द अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की बारगाहे

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته... الخ، الحديث: ۱۶۳۷، ج ۲، ص ۲۹۱

②.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج ۴، ص ۱۰۱



ख़िलाफ़त में आया तो उस जमाअत में इश्तर नाम का एक शख्स भी था। अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उस को सर से पैर तक बार बार गर्म गर्म निगाहों से देखते रहे फिर मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या येह शख्स तुम्हारे ही कबीले का है ? मैं ने कहा की “जी हां” उस वक़्त आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि खुदा عَزَّ وَجَلَّ इस को ग़ारत करे और इस के शर व फ़साद से इस उम्मत को महफूज़ रखे। अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की इस दुआ के बीस बरस बा’द जब बाग़ियों ने हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को शहीद किया तो येही “इश्तर” उस बागी गुरौह का एक बहुत बड़ा लीडर था।

इसी तरह एक मरतबा हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मुल्के शाम के कुफ़्फ़ार से जिहाद करने के लिये लश्कर भरती फ़रमा रहे थे। नागहां एक टोली आप के सामने आई तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन्तिहाई कराहत के साथ उन लोगों की तरफ़ से मुंह फेर लिया। फिर दोबारा येह लोग आप के रू बरू आए तो आप ने मुंह फेर कर उन लोगों को इस्लामी फ़ौज़ में भरती करने से इन्कार फ़रमा दिया। लोग आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के इस तर्जे अमल से इन्तिहाई हैरान थे लेकिन आख़िर में येह राज़ खुला कि उस टोली में “असूद तजीबी” भी था जिस ने इस वाक़िए से बीस बरस बा’द हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपनी तल्वार से शहीद किया और उस टोली में अब्दुरहमान बिन मुलजिम मुरादी भी था जिस ने इस वाक़िए से तक़रीबन छब्बीस बरस के बा’द हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपनी तल्वार से शहीद कर डाला।<sup>(1)</sup> (ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۱۶۹، ۱۷۰)

## तबशेश

मज़कूरा बाला करामतों में आप ने रबीआ बिन उमय्या बिन ख़लफ़ के ख़ातिमे के बारे में बरसों पहले येह ख़बर दे दी कि वोह काफ़िर हो कर मरेगा और बीस बरस पहले आप ने “इश्तर” के शरो

1.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج ۴، ص ۱۰۹، ۹۷



फ़साद से उम्मत के मुहफूज़ रहने की दुआ मांगी और “असूद तजीबी” से इस बिना पर मुंह फेर लिया और इस्लामी लश्कर में इस को भरती करने से इन्कार कर दिया कि येह दोनों हज़रते उ़माने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के कातिलों में से थे और छब्बीस बरस पहले आप ने अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम मुरादी को ब नज़रे करामत देखा और इस्लामी लश्कर में इस बिना पर भरती नहीं फ़रमाया कि वोह हज़रते अली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का कातिल था ।

इन मुस्तनद रिवायतों से येह षाबित होता है कि औलियाए किराम को खुदावन्दे कुहूस के बता देने से आदमियों की तक़दीरों का हाल मा'लूम हो जाता है । इसी लिये हज़रते मौलाना जलालुद्दीन रूमी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपनी मषनवी शरीफ़ में फ़रमाया

لوح محفوظ است پیش اولیاء از چه محفوظ است محفوظ از خطاء

या'नी लोहे महफूज़ औलियाए किराम के पेशे नज़र रहती है जिस को देख कर वोह इन्सानों की तक़दीरों में क्या लिखा है ? इस को जान लेते हैं । लौहे महफूज़ को इस लिये लोहे महफूज़ कहते हैं कि वोह ग़लतियों और ख़ताओं से महफूज़ है ।

### दुआ की मक़बूलियत

अबू हदबा हमसी का बयान है कि जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़मर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को येह ख़बर मिली कि इराक़ के लोगों ने आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के गवर्नर को उस के मुंह पर कंकरियां मार कर और ज़लीलो रुस्वा कर के शहर से बाहर निकाल दिया है तो आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को इस ख़बर से इन्तिहाई रंजो क़लक़ हुवा और आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** में **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** तशरीफ़ ले गए और इसी ग़ैज़ो ग़ज़ब की हालत में आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने नमाज़ शुरू कर दी लेकिन चूंकि आप फ़र्ते ग़ज़ब से मुज़तरिब थे इस लिये आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को नमाज़ में सहव हो गया और आप इस रंजो ग़म से और भी ज़ियादा बे ताब हो गए और इन्तिहाई रंजो

ग़म की हालत में आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने येह दुआ मांगी कि या **اَبُو اَحْمَد** कबीला षक़ीफ़ के लौंडे (हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी) को उन लोगों पर मुसल्लत फ़रमा दे जो ज़मानए जाहिलिय्यत का हुक्म चला कर इन इराक़ियों के नेक व बद किसी को भी न बख़्शे। चुनान्वे आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की येह दुआ क़बूल हो गई और अब्दुल मलिक बिन मरवान उमवी के दौरे हुकूमत में हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी इराक़ का गवर्नर बना और इस ने इराक़ के बाशिन्दों पर जुल्मो सितम का ऐसा पहाड़ तोड़ा कि इराक़ की ज़मीन बिलबिला उठी। हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी इतना बड़ा ज़ालिम था कि इस ने जिन लोगों को रस्सी में बांध कर अपनी तल्वार से क़त्ल किया उन मक्तूलों की ता'दाद एक लाख या इस से कुछ ज़ाइद ही है और जो लोग इस के हुक्म से क़त्ल किये गए उन की गिनती का तो शुमार ही नहीं हो सकता।

हज़रते इब्ने लहीआ मुहद्दिष ने फ़रमाया है कि जिस वक़्त अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने येह दुआ मांगी थी उस वक़्त हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी पैदा भी नहीं हुवा था।<sup>(1)</sup> (ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۱۷۲)

## तबसेरा

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि **اَبُو اَحْمَد** तअ़ाला अपने औलियाए किराम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِم** को ग़ैब की बातों का भी इल्म अता फ़रमाता है। चुनान्वे, रिवायते मज़कूरए बाला में आप ने मुलाहज़ा फ़रमा लिया कि अभी हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी पैदा भी नहीं हुवा था लेकिन अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को येह मा'लूम हो गया था कि हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी नामी एक बच्चा पैदा होगा जो बड़ा हो कर गवर्नर बनेगा और इन्तिहाई ज़ालिम होगा।

1.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج ۴، ص ۱۰۸

जाहिर है कि क़ब्ल अज़ वक़्त इन बातों का मा'लूम हो जाना यकीनन ग़ैब का इल्म है। अब येह मस्अला आफ़तावे आलम ताब से भी ज़ियादा रोशन हो गया कि जब **अल्लाह** तआला अपने औलिया को ग़ैब का इल्म अता फ़रमाता है तो फिर अम्बियाए किराम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** खुसूसन हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया **عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام**

को भी **अल्लाह** तआला ने यकीनन उलूमे ग़ैबिया का ख़ज़ाना अता फ़रमाया है और येह हज़रात बे शुमार ग़ैब की बातों को खुदा तआला के बता देने से जानते हैं और दूसरों को भी बताते हैं। चुनान्चे, अहले हक़ हज़रात (उ-लमाए अहले सुन्नत) का येही अक़ीदा है कि **अल्लाह** तआला ने अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** बिल खुसूस हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को बेशुमार उलूमे ग़ैबिया के ख़ज़ाने अता फ़रमाए हैं और येही अक़ीदा हज़राते ताबेईन व हज़राते सहाबए किराम **رَضَوْنَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ** का भी था। चुनान्चे, मवाहिबुल्लहुन्या शरीफ़ में है कि

(1) **قَدْ اُسْتَشْهَرُوا وَانْتَشَرُ اَمْرُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ اَصْحَابِهٖ بِالْاِطْلَاعِ عَلَى الْغُيُوبِ**  
(जनाबे रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** गुयूब पर मुत्तलअ हैं येह बात सहाबए किराम **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ** में आम तौर पर मशहूर और ज़बाने ज़द खासो आम थी )

इसी तरह मवाहिबुल्लहुन्या की शर्ह में अल्लामा मुहम्मद अब्दुल बाकी जुरक़ानी **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه** ने तहरीर फ़रमाया है :

(2) **وَأَصْحَابُهُ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَازِمُونَ بِإِطْلَاعِهِ عَلَى الْغُيُوبِ**  
(या'नी सहाबए किराम **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ** का येह पुख़्ता अक़ीदा था कि हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** ग़ैब की बातों पर मुत्तलअ हैं)

1.....المواهب اللدنية بالمنح المحمدية، المقصد الثامن في طبه...الخ، الفصل الثالث في

انبيائه بالانبياء المغيبات، ج 3، ص 91

2.....شرح الزرقاني على المواهب اللدنية، النوع الثالث في طبه...الخ، الفصل الثالث في

انبيائه...الخ، ج 1، ص 113

इन दो बुजुर्गों के इलावा दूसरे बहुत से अइम्माए किराम ने भी अपनी अपनी किताबों में इस तसरीह को बयान फ़रमाया है। तफ़्सील के लिये देखो हमारी किताब “कुरआनी तक़रीरें” और “क़ियामत कब आएगी?”

### ﴿3﴾ हज़रते उषमाने ग़नी رضي الله تعالى عنه

ख़लीफ़ए सिवुम अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमान बिन अफ़फ़ान رضي الله تعالى عنه की कुन्यत “अबू अम्र” और लक़ब “जुन्नूरैन” (दो नूर वाले) है। आप कुरैशी हैं और आप का नसब नामा येह है : उषमान बिन अफ़फ़ान बिन अबिल आस बिन उमय्या बिन अब्दे शम्स बिन अब्दे मनाफ़। आप का ख़ानदानी शजरा “अब्दे मनाफ़” पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नसब नामे से मिल जाता है। आप ने आगाजे इस्लाम ही में इस्लाम क़बूल कर लिया था और आप को आप के चचा और और दूसरे ख़ानदानी काफ़िरों ने मुसलमान हो जाने की वजह से बेहूद सताया। आप ने पहले हबशा की तरफ़ हिजरत फ़रमाई फिर मदीनए मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत फ़रमाई इस लिये आप “साहिबुल हिजरतैन” (दो हिजरतों वाले) कहलाते हैं और चूँकि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दो साहिब ज़ादियां यके बा’द दीगरे आप के निकाह में आई इस लिये आप का लक़ब “जुन्नूरैन” है। आप जंगे बद्र के इलावा दूसरे तमाम इस्लामी जिहादों में कुफ़्फ़ार से जंग फ़रमाते रहे। चूँकि जंगे बद्र के मौक़अ पर आप की ज़ौजए मोहतरमा जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की साहिबज़ादी थीं, सख़्त अलील हो गई थीं इस लिये हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने आप को जंगे बद्र में जाने से मन्अ फ़रमा दिया लेकिन आप को मुजाहिदीन बद्र में शुमार फ़रमा कर माले ग़नीमत में से मुजाहिदीन के बराबर हिस्सा दिया और अज़्रो षवाब की बिशारत भी दी। हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उमर फ़रूके आ’ज़म رضي الله تعالى عنه की शहादत के बा’द आप ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हुवे और बारह बरस तक तख़्ते ख़िलाफ़त को सरफ़राज़ फ़रमाते रहे।

आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के दौरे ख़िलाफ़त में इस्लामी हुकूमत की हुदूद में बहुत ज़ियादा तौसीअ हुई और अफ़्रीका वगैरा बहुत से मुमालिक मफ़तूह हो कर ख़िलाफ़ते राशिदा के ज़ैरे नर्गी हुवे। बयासी बरस की उम्र में मिस्र के बाग़ियों ने आप के मकान का मुहासरा कर लिया और बारह ज़िल हिज्जा या अठ्ठारह ज़िल हिज्जा सि. 35 हि. जुमुअ के दिन इन बाग़ियों में से एक बद नसीब ने आप को रात के वक़्त इस हाल में शहीद कर दिया कि आप कुरआने पाक की तिलावत फ़रमा रहे थे और आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के ख़ून के चन्द क़तरात कुरआन शरीफ़ की आयत **(1) فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ** पर पड़े। आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अक़दस हुजूरे अक़दस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के जनाजे की नमाज़ हुजूरे अक़दस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के फूफी ज़ाद भाई हज़रते जुबैर बिन अ़वाम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने पढ़ाई और आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़ून हैं **(2)** (تاريخ الخلفاء وازالة الخفاء وغيره)

## कशामात

### जिनाकार आंखें

अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपनी किताब “तबक़ात” में तहरीर फ़रमाया है कि एक शख्स ने रास्ता चलते हुवे एक अजनबी औरत को घूर घूर कर ग़लत निगाहों से देखा। इस के बा’द ये शख्स अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुवा। उस शख्स को देख कर हज़रते

**1.....तर्जमए कन्ज़ूल ईमान :** तो ऐ महबूब अ़न क़रीब **اَللّٰهُ** उन की तरफ़ से तुम्हें क़िफ़ायत करेगा। (प १, البقرة: ३७)

**2.....तاريخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، عثمان بن عفان رضى الله عنه، ص १८، १९، فصل فى خلافته، ص १२२، १२६- १२९، ملئقطاً والاكمال فى اسماء الرجال، حرف العين، فصل فى الصحابة، ص २०२ وازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما مآثر**

امير المؤمنين عثمان بن عفان، ج ४، ص ३६८

अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने निहायत ही पुर जलाल लहजे में फ़रमाया कि तुम लोग ऐसी हालत में मेरे सामने आते हो कि तुम्हारी आंखों में ज़िना के अषरात होते हैं। शख़्से मज़कूर ने (जल भुन कर) कहा कि क्या रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के बा'द आप पर वह्य उतरने लगी है? आप को येह कैसे मा'लूम हो गया कि मेरी आंखों में ज़िना के अषरात हैं।

अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे ऊपर वह्य तो नहीं नाज़िल होती लेकिन मैं ने जो कुछ कहा है येह बिल्कुल ही कौले हक़ और सच्ची बात है और खुदावन्दे कुहूस ने मुझे एक ऐसी फ़िरासत (नूरानी बसीरत) अता फ़रमाई है जिस से मैं लोगों के दिलों के हालात व खयालात को मा'लूम कर लिया करता हूँ।<sup>(1)</sup> (حجة الله على العالمين ج ۲، ص ۸۶۲ وازالة الخفاء، مقصود ۲، ص ۲۲۷)

## तबसेश

कुरआने मजीद में खुदावन्दे कुहूस का इरशाद है कि **كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ**<sup>(2)</sup> या'नी आदमी जब कोई गुनाह करता है तो उस का येह अषर होता है कि उस के क़ल्ब पर एक सियाह दाग़ और बद नुमा धब्बा पड़ जाता है और चूँकि क़ल्ब पूरे जिस्म का बादशाह है इस लिये क़ल्ब पर जब कोई अषर पड़ता है तो पूरा बदन उस से मुतअष्विर हो जाता है तो ख़ासाने खुदा जिन की आंखों में नूरे बसारत के साथ साथ नूरे बसीरत भी हुवा करता है वोह बदन के हर हर हिस्से में इन अषरात को अपने नूरे फ़िरासत और निगाहे करामत से देख लिया करते हैं। अमीरुल मोअमिनीन

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۳

②...तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर जंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने। (پ ۳۰، المطففين: ۱۴)



हज़रते उषमाने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ चूँकि अहले बसीरत और साहिबे बातिन थे इस लिये इन्हों ने अपनी निगाहे करामत से शख्से मज़कूर की आंखों में उस के गुनाह के अषरात को देख लिया और उस की आंखों को इस लिये जिनाकार कहा कि हदीष शरीफ़ में आया है कि “زنا العينين النظر” (1) या'नी किसी अजनबी औरत को बुरी निय्यत से देखना येह आंखों का जिना है । وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

## हाथ में केक्सर

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا रावी हैं कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमाने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मिम्बरे अक़दस पर खुतबा पढ़ रहे थे कि बिलकुल ही अचानक एक बद नसीब और ख़बीषुन्नफ़्स इन्सान जिस का नाम “जहजाह गिफ़ारी” (2) था खड़ा हो गया और आप के दस्ते मुबारक से असा छीन कर उस को तोड़ डाला । आप ने अपने हिल्म व हया की वजह से उस से कोई मुआख़ज़ा नहीं फ़रमाया लेकिन खुदा तआला की क़हहारी व जब्बारी ने

①.....المستدرک علی الصحیحین، کتاب التفسیر، تفسیر سورة النجم، باب توضیح معنی

الا اللهم، الحديث: ٣٨٠٣، ج ٣، ص ٢٤٤

②.....तम्बीह : हमारी तहकीक़ के मुताबिक़ हज़रते सय्यिदुना जहजाह बिन सईद गिफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सहाबिये रसूल हैं और हमें किसी का भी कोई कौल ऐसा नहीं मिला जिस में इन के सहाबी होने की नफ़ी हो, लिहाज़ा इन के लिये ऐसे अलफ़ाज़ हरगिज़ इस्ति'माल न किये जाएं ।

**मुसन्निफ़ की तरफ़ से उज़्र :** किसी अ़ाम मुसलमान से भी येह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता कि वोह किसी सहाबी के बारे में जान बूझ कर कोई ना ज़ैबा कलिमा इस्ति'माल करे । यकीनन हज़रते मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ के इल्म में न होगा कि येह सहाबी हैं क्यूं कि यहां जो मुआमला था वोह सय्यिदुना उषमाने गनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के असा के तोड़ने का था जिस की वजह से शायद मुसन्निफ़ से तसामेह हो गया वरना वोह हरगिज़ ऐसी बात सहाबिये रसूल के लिये न लिखते क्यूं कि मुसन्निफ़ ने खुद अपनी कुतुब में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए हैं जो कि इन के रासिख़ सुन्नी सहीहुल अक़ीदा और आशिके सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان होने की दलील है ।

उस बे अदबी और गुस्ताखी पर उस मर्दूद को येह सज़ा दी कि उस के हाथ में केन्सर का मरज़ हो गया और उस का हाथ गल

**सहाबए किराम** (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के बारे में इस्लामी अक़ीदा : सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के मुतअल्लिक अहले सुन्नत का मौकिफ है कि

(1) सहाबए किराम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) के बाहम जो वाकिआत हुवे, उन में पड़ना ह़राम, ह़राम, सख़्त ह़राम है, मुसलमानों को तो येह देखना चाहिये कि वोह सब हज़रात आकाए दो आलम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ وَآلِهِمْ وَسَلَّمَ) के जां निषार और सच्चे गुलाम हैं।

(2) सहाबए किराम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) अम्बिया न थे, फ़िरिश्ते न थे कि मासूम हों। इन में बा'ज के लिये लगज़िशें हुई मगर इन की किसी बात पर गिरिफ़्त **अब्बाह** रसूल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ وَآلِهِمْ وَسَلَّمَ) के खिलाफ़ है।

(बहारे शरीअत, जि. 1/ स. 254 मतबूआ मक्तबतुल मदीना)

**तफ़सील :** मज़कूरा वाकिआ की तफ़तीश करते हुवे हम ने मुतअद्द अरबी कुतुबे सियर व तारीख़ वग़ैरा देखीं लेकिन इन में “बद नसीब और खबीयुन्नफ़स” या इस की मिष्ल कलिमात नहीं मिले। चुनान्वे “अल इस्तीआब” में है :

وروى أنّ جهجاه هذا هو الذى تناول العصا من يد عثمان وهو يخطب فكسرها يومئذ , فأخذته الأكلة فى ركبته وكانت عصا رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم. (الاستيعاب فى معرفة الأصحاب 1/ 334) وفى "الإصابة" بلفظ: فوضعها على ركبته فكسرها.... حتى

مات. (الإصابة فى تمييز الصحابة 1/ 622)

**तर्जमा :** और मरवी है कि येह वोही जहजाह (बिन सईद गिफ़ारी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) हैं जिन्हों ने ब हालते खुतबा उषमाने ग़नी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) के दस्ते मुबारक से असा (छड़ी) छीन कर अपने घुटने पर रख कर तोड़ दिया था तो (सय्यिदुना) जहजाह (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) को घुटने में ज़ख़म हो गया यहां तक कि वोह रिहूलत फ़रमा गए। वोह असा मुबारक रसूले अकरम (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ وَآلِهِمْ وَسَلَّمَ) का था।

**इन की सहाबियत के दलाइल :** कुतुबे तराजिम में इन के मुतअल्लिक बयान किया गया है कि “वोह बैअते रिज़वान में हाज़िर थे”

شَهِدَ بَيْعَةَ الرِّضْوَانِ بِالْحَدِيثِيَّةِ - (الإصابة فى تمييز الصحابة 1/ 621)

और मुतअद्द कुतुब में असा तोड़ने वाला वाकिआ इन्ही का लिखा है, जिस की ताईद “इस्तीआब” से बिल खुसूस होती है कि उन्हों ने पहले इन के ईमान लाने का वाकिआ बयान किया और फिर “هذا هو الذى تناول العَصَا” के अल्फ़ाज़ के ज़रीए येह वाज़ेह कर दिया कि असा तोड़ने वाला वाकिआ इन्ही का है।

(الاستيعاب فى معرفة الأصحاب, 1/ 334)

सड़ कर गिर पड़ा और वोह येह सज़ा पा कर एक साल के अन्दर ही मर गया।<sup>(१)</sup> (हिजे अल्लुमीन २: २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००)

## गुस्ताखी की सज़ा

हज़रते अबू क़िलाबा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि मैं मुल्के शाम की सर ज़मीन में था तो मैं ने एक शख्स को बार बार येह सदा लगाते हुवे सुना कि “हाए अफ़सोस ! मेरे लिये जहन्नम है।” मैं उठ कर उस के पास गया तो येह देख कर हैरान रह गया कि उस शख्स के दोनों हाथ और पाउं कटे हुवे हैं और वोह दोनों आंखों से अन्धा है और अपने चेहरे के बल ज़मीन पर औंधा पड़ा हुवा बार बार लगातार येही कह रहा है कि “हाए अफ़सोस ! मेरे लिये जहन्नम है।” येह मन्ज़र देख कर मुझे से रहा न गया और मैं ने उस से पूछा कि ऐ शख्स ! तेरा क्या हाल है ? और क्यूं और किस बिना पर तुझे अपने जहन्नमी होने का यकीन है ? येह सुन कर उस ने येह कहा : ऐ शख्स ! मेरा हाल न पूछ, मैं उन बद नसीब लोगों में से हूं जो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमाने ग़नी रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को क़त्ल करने के लिये उन के मकान में घुस पड़े थे। मैं जब तल्वार ले कर उन के करीब पहुंचा तो उन की बीवी साहिबा ने मुझे डांट कर शोर

(१) (التهميد لما في المواطن من المعاني والأسانيد) فلما أسلمت دعاني رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى منزله فحلب لي عذراء (230/7). (٢) (الثقات لابن حبان) وكان جهجاه من فقراء المهاجرين وهو الذي أكل عند النبي صلى الله عليه وسلم وهو كافر فأكثر ثم أسلم فأكل فقال له النبي صلى الله عليه وسلم المؤمن يأكل في معي واحد والكافر يأكل في سبعة أمعاء (280/1) (٣) (أسد الغاية) ثم أسلم فلم يستتم حلاب شاة واحدة (451/1) (٤) (شرح مشكل الآثار للطحاوي) ثم إنه أصبح فأسلم (280/1) (حصه دوم) (٥) (شرح الزرقاني على المؤطا. ثم أصبح فأسلم. (393/4)

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث في

ذكر جملة جميلة...الخ، ص ११३

मचाना शुरू कर दिया तो मैं ने उन की बीवी साहिबा को एक थप्पड़ मार दिया यह देख कर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने यह दुआ मांगी कि “**अल्लाह** तआला तेरे दोनों हाथों और दोनों पाउं को काट डाले और तेरी दोनों आंखों को अन्धी कर दे और तुझ को जहन्नम में झोंक दे ।” ऐ शख्स ! मैं अमीरुल मोमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पुर जलाल चेहरे को देख कर और उन की इस क़ाहिराना दुआ को सुन कर कांप उठा और मेरे बदन का एक एक रौंगटा खड़ा हो गया और मैं खौफ़ व दहशत से कांपते हुवे वहां से भाग निकला ।

अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की चार दुआओं में से तीन दुआओं की ज़द में तो आ चुका हूं, तुम देख रहे हो कि मेरे दोनों हाथ और दोनों पाउं कट चुके और दोनों आंखें अन्धी हो चुकीं अब सिर्फ़ चौथी दुआ या'नी मेरा जहन्नम में दाख़िल होना बाकी रह गया है और मुझे यकीन है कि यह मुआमला भी यकीनन हो कर रहेगा चुनान्चे, अब मैं इसी का इन्तिज़ार कर रहा हूं और अपने जुर्म को बार बार याद कर के नादिम व शर्मसार हो रहा हूं और अपने जहन्नमी होने का इक़रार करता हूं ।<sup>(1)</sup> (अज़ाले الخفاء، مقصد २، ص २२८)

## तबसेरा

मज़क़ूरा बाला दोनों रिवायतों और करामतों से यह सबक़ मिलता है कि **अल्लाह** तआला अगर्चे बहुत बड़ा सत्तार व ग़फ़ार और ग़फ़ूरो रहीम है, लेकिन अगर कोई बद नसीब उस के महबूब बन्दों की शान में कोई गुस्ताख़ी व बे अदबी करता है तो खुदावन्दे कुहूस की क़हहारी व जब्बारी उस मर्दूद को हरगिज़ हरगिज़ मुआफ़ नहीं फ़रमाती बल्कि ज़रूर बिज़्ज़रूर दुन्या व आख़िरत के बड़े बड़े अज़ाबों में गिरिफ़्तार कर देती है और वोह दोनों जहान में क़हरे क़हहार व ग़ज़बे जब्बार का इस तरह सज़ावार हो जाता है कि दुन्या में ला'नतों

①.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما متأثر امير المؤمنين عثمان بن عفان

رضی اللہ تعالیٰ عنہ، ج ۴، ص ۳۱۵

की बार और फिटकार और आखिरत में अज़ाबे नार के सिवा उस को कुछ नहीं मिलता। राफ़िज़ी और वहाबी जिन के दीनो मज़हब की बुन्याद ही महबूबाने खुदा की बे अदबी पर है हम ने इन गुस्ताखों और बे अदबों में से कई एक को अपनी आंखों से देखा है कि इन लोगों पर कहरे इलाही की ऐसी मार पड़ी है कि तौबा तौबा, अल अमान। और मरते वक़्त इन लोगों का इतना बुरा हाल हुवा है कि तौबा तौबा। **نَعُوْزُ بِاللّٰهِ**

**अब्बाह** तअ़ाला हर मुसलमान को **अब्बाह** वालों की बे अदबी व गुस्ताखी की ला'नत से महफूज़ रखे और अपने महबूबों की ता'ज़ीम व तौकीर और इन के अदबो एहतिराम की तौफ़ीक़ बख़्शे। (आमीन)

### ख़्वाब में पानी पी कर सैराब

हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि जिन दिनों बाग़ियों ने हज़रते उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के मकान का मुहासरा कर लिया और इन के घर में पानी की एक बूंद तक का जाना बन्द कर दिया था और हज़रते उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** प्यास की शिद्दत से तड़पते रहते थे मैं आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की मुलाक़ात के लिये हाज़िर हुवा तो आप उस दिन रोज़ादार थे। मुझ को देख कर आप ने फ़रमाया कि ऐ अब्दुल्लाह बिन सलाम ! आज मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के दीदारे पुर अन्वार से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुवा तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इन्तिहाई मुशफ़िक़ाना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि ऐ उषमान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ज़ालिमों ने पानी बन्द कर के तुम्हें प्यास से बे क़रार कर दिया है ? मैं ने अर्ज किया कि जी हां ! तो फ़ौरन ही आप ने दरेची में से एक डोल मेरी तरफ़ लटका दिया जो निहायत शीरीं और ठण्डे पानी से भरा हुवा था, मैं उस को पी कर सैराब हो गया और अब इस वक़्त बेदारी की हालत में भी उस पानी की ठण्डक मैं अपनी दोनों छातियों और दोनों कंधों के दरमियान महसूस करता हूं। फिर हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने मुझ से फ़रमाया कि ऐ उषमान !



अगर तुम्हारी ख्वाहिश हो तो इन बागियों के मुकाबले में तुम्हारी इमदाद व नुस्तर करूँ। और अगर तुम चाहो तो हमारे पास आ कर रोज़ा इफ़तार करो। ऐ अब्दुल्लाह बिन सलाम ! मैं ने खुश हो कर येह अर्ज कर दिया कि या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** आप के दरबारे पुर अन्वार में हाज़िर हो कर रोज़ा इफ़तार करना येह ज़िन्दगी से हज़ारों लाखों दरजे ज़ियादा मुझे अज़ीज़ है। हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि मैं इस के बा'द रुख़्सत हो कर चला आया और उसी दिन रात में बागियों ने आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को शहीद कर दिया। <sup>(1)</sup> (البدایة والنہایہ، ج ۷، ص ۱۸۲)

### अपने मदफ़न की ख़बर

हज़रत इमामे मालिक **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ के उस हिस्से में तशरीफ़ ले गए जो “हश कोकब” कहलाता है तो आप ने वहां खड़े हो कर एक जगह पर येह फ़रमाया कि अंन क़रीब यहां एक मर्दे सालेह दफ़न किया जाएगा। चुनान्चे, इस के बा'द ही आप की शहादत हो गई और बागियों ने आप के जनाज़ए मुबारका के साथ इस क़दर हुल्लड़ बाज़ी की, कि आप को न रौज़ए मुनव्वरा के क़रीब दफ़न किया जा सका न जन्नतुल बक़ीअ के उस हिस्से में मदफ़न किये जा सके जो किबारे सहाबा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** का क़ब्रिस्तान था बल्कि सब से दूर अलग थलग “हश कोकब” में आप सिपुर्दे खाक किये गए जहां कोई सोच भी नहीं सकता था कि यहां अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की क़ब्र मुबारक बनेगी क्योंकि इस वक़्त तक वहां कोई क़ब्र थी ही नहीं। <sup>(2)</sup> (ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۲۲۷)

①.....البداية والنهاية، ذكر مجي الاحزاب الى عثمان... الخ، ذكر حصر امير المؤمنين

عثمان بن عفان رضى الله تعالى عنه، ج ۵، ص ۲۶۹

②.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما مآثر امير المؤمنين عثمان بن عفان

رضى الله تعالى عنه، ج ۴، ص ۳۱۵



## तबसेरा

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तअ़ाला अपने औलिया को इन बातों का भी इल्म अ़ता फ़रमा देता है कि वोह कब और कहां वफ़ात पाएंगे और किस जगह उन की क़ब्र बनेगी। चुनान्वे, सेंकड़ों औलियाए किराम के तज़क़िरो में लिखा हुवा है कि उन **अल्लाह** वालों ने क़बल अज़ वक़्त लोगों को येह बता दिया है कि वोह कब ? और कहां ? और किस जगह वफ़ात पा कर मदफून होंगे।

## ज़रूरी इन्तिबाह

इस मौक़अ पर बा'ज़ कज़ फ़हम और बद अक़ीदा लोग अ़वाम को बहकाते रहते हैं कि कुरआने मजीद में **अल्लाह** तअ़ाला ने येह फ़रमाया है : (1) وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ या'नी **अल्लाह** तअ़ाला के सिवा कोई इस को नहीं जानता कि वोह कौन सी ज़मीन में मरेगा। लिहाज़ा औलियाए किराम के सब क़िस्से ग़लत हैं। (مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ) इस का जवाब येह है कि कुरआने मजीद की येह आयत हक़ और बर हक़ है और हर मोमिन का इस पर ईमान है मगर इस आयत का मतलब येह है कि बिग़ैर **अल्लाह** तअ़ाला के बताए हुवे कोई शख़्स अपने अक़्लो फ़हम से इस बात को नहीं जान सकता कि वोह कब और कहां मरेगा। लेकिन अगर **अल्लाह** तअ़ाला अपने ख़ास बन्दों हज़रते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को ब ज़रीअए वहुय और औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ को बतरीक़े कशफ़ो करामत इन चीज़ों का इल्म अ़ता फ़रमा दे तो वोह भी येह जान लेते हैं कि कब और कहां इन का इन्तिक़ाल होगा ?

खुलासए कलाम येह है कि **अल्लाह** तअ़ाला तो इस बात को जानता ही है कि कौन कहां मरेगा लेकिन **अल्लाह** तअ़ाला के बता देने से ख़ासाने खुदा भी इस बात को जान लेते हैं कि कौन कहां मरेगा। मगर कहां **अल्लाह** तअ़ाला का इल्म और कहां बन्दों का इल्म, **अल्लाह** तअ़ाला का इल्म अज़ली, ज़ाती और क़दीम है और बन्दों का इल्म अ़ताई और हादिष है। **अल्लाह** तअ़ाला का इल्म अज़ली, अबदी और ग़ैर महदूद है और बन्दों का इल्म फ़ानी और महदूद है।

① .....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में मरेगी (प २१, लफ्ज़: ३६)

अब येह मस्अला निहायत ही सफ़ाई के साथ वाजेह हो गया कि कुरआनी इरशाद का मफ़ाद कि **अल्लाह** तआला के सिवा कोई नहीं जानता कि कौन कब और कहां मरेगा ? और अहले हक़ का येह अक्कीदा कि औलियाए किराम भी जानते हैं कि कौन कब और कहा मरेगा ? येह दोनों बातें अपनी अपनी जगह पर सहीह हैं और इन दोनों बातों में हरगिज़ हरगिज़ कोई तअरुज़ (टकराव) नहीं । क्यूंकि जहां येह कहा गया कि **अल्लाह** तआला के सिवा कोई नहीं जानता कि कौन कब और कहां मरेगा । इस का मतलब येह है कि बिगैर खुदा के बताए कोई नहीं जानता और जहां येह कहा गया कि हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام व औलिया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِم जानते हैं कि कौन कब और कहां मरेगा तो इस का मतलब येह है कि हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام व औलिया رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِم खुदा **عَزَّوَجَلَّ** के बता देने से जान लेते हैं । अब नाज़िरीने किराम इन्साफ़ फ़रमाएं कि इन दोनों बातों में कौन सा तअरुज़ और टकराव है ? दोनों ही बातें अपनी अपनी जगह पर सो फ़ीसदी सहीह और दुरुस्त हैं । وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَم

### शहादत के बा'द ग़ैबी आवाज़

हज़रते अदी बिन हातिम सहाबी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का बयान है कि हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की शहादत के दिन मैं ने अपने कानों से सुना कि कोई शख्स बुलन्द आवाज़ से येह कह रहा था :

أَبَشِّرْ ابْنَ عَفَّانَ بِرُوحٍ وَرَيْحَانٍ وَبِرَبِّ غَيْرِ غَضْبَانَ أَبَشِّرْ ابْنَ عَفَّانَ بِغُفْرَانٍ وَرِضْوَانٍ

(या'नी हज़रते उषमान बिन अफ़फ़ान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को राहत और खुशबू की बिशारत दो और न नाराज़ होने वाले रब की मुलाकात की खुश ख़बरी सुनाओ और खुदा के गुफ़रान व रिज़वान की भी बिशारत दे दो) हज़रते अदी बिन हातिम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : मैं इस आवाज़ को सुन कर इधर उधर नज़र दौड़ाने लगा और पीछे मुड़ कर भी देखा मगर कोई शख्स नज़र नहीं आया ।<sup>(1)</sup> (शुआहदुल नुबुवा १/१५८)

1.....शुआहदुल नुबुवा, रकन सदास दरियान शुआहदुल नुबुवा...الخ, ص २०९

## मदफ़न में फ़िरिश्तों का हुजूम

रिवायत है कि बाग़ियों की हुल्लड़ बाज़ियों के सबब तीन दिन तक आप की मुक़द्दस लाश बे गोरो कफ़न पड़ी रही। फिर चन्द जां निषारों ने रात की तारीकी में आप के जनाज़ा मुबारका को उठा कर जन्नतुल बक़ीअ में पहुंचा दिया और आप की मुक़द्दस कब्र खोदने लगे। उन लोगों ने देखा कि सुवारियों की एक बहुत बड़ी जमाअत उन के पीछे पीछे जन्नतुल बक़ीअ में दाख़िल हुई उन को देख कर लोगों पर ऐसा ख़ौफ़ तारी हुवा कि कुछ लोगों ने जनाज़ा मुबारका को छोड़ कर भाग जाने का इरादा कर लिया। यह देख कर सुवारों ने बा आवाज़ बुलन्द कहा कि आप लोग ठहरे रहें और बिल्कुल न डरें, हम लोग भी इन की तदफ़ीन में शिर्कत के लिये यहां हाज़िर हुवे हैं। यह आवाज़ सुन कर लोगों का ख़ौफ़ दूर हो गया और इतमीनान व सुकून के साथ लोगों ने आप को दफ़न किया। क़ब्रिस्तान से लौट कर इन सहाबियों **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** ने क़सम खा कर लोगों से कहा कि यकीनन यह फ़िरिश्तों की जमाअत थी। <sup>(1)</sup> (شواهد النبوة، ص ۱۵۸)

## गुस्ताख़ दरिन्दे के मुंह में

मन्कूल है कि हिजाज का एक काफ़िला मदीनए मुनव्वरा पहुंचा। तमाम अहले काफ़िला हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के मज़ारे मुबारक पर ज़ियारत करने और फ़ातिहा ख़वानी के लिये गए लेकिन एक शख़्स जो आप से बुग़ज़ो इनाद रखता था तौहीन व इहानत के तौर पर आप की ज़ियारत के लिये नहीं गया और लोगों से कहने लगा कि वोह बहुत दूर है इस लिये मैं नहीं जाऊंगा।

यह काफ़िला जब अपने वतन को वापस आने लगा तो काफ़िले के तमाम अफ़राद ख़ैरो आफ़िय्यत और सलामती के साथ अपने अपने वतन पहुंच गए लेकिन वोह शख़्स जो आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

①.....شواهد النبوة، ركن سادس در بيان شواهد ودلايلى...الخ، ص ۲۰۹

की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत के लिये नहीं गया था उस का येह अन्जाम हुवा कि दरमियाने राह में बीच काफ़िले के अन्दर एक दरिन्दा जानवर दर्दाता और गुर्दाता हुवा आया और उस शख्स को अपने दांतों से दबोच कर और पंजों से फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला ।

येह मन्ज़र देख कर तमाम अहले काफ़िला ने यक ज़बान हो कर येह कहा कि येह हज़रते उ़षमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की बे अदबी व बे हुर्मती का अन्जाम है । <sup>(1)</sup> (شواهد النبوة، ص ۱۵۸)

## तबसेरा

मज़कूरा बाला तीनों रिवायतों से अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़षमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की जलालते शान और दरबारे खुदावन्दी में इन की मक़बूलिय्यत और विलायत व करामत का ऐसा अज़ीमुश्शान निशान ज़ाहिर होता है कि इन के मरातिब की बुलन्दियों का कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता और आखिरी रिवायत तो उन गुस्ताखों के लिये बहुत ही इब्रत खैज़ और ख़ौफ़नाक निशान है जो हज़रते उ़षमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की शान में बद ज़बान हो कर खुलफ़ाए षलाषा पर तबर्बाज़ी किया करते हैं । जैसा कि हमारे दौर के शीओं का मज़मूम व नापाक तरीका है ।

अहले सुन्नत हज़रात पर लाज़िम है कि इन की मजालिस में हरगिज़ हरगिज़ क़दम न रखें वरना क़हरे इलाही में मुब्तला होने का ख़तरनाक अन्देशा है । खुदावन्दे करीम हर मुसलमान को अपने क़हरो ग़ज़ब से बचाए रखे और हज़रते खुलफ़ाए किराम और तमाम सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** की महब्बत व अक़ीदत की दौलत अता फ़रमाए । आमीन !

1.....शواهد النبوة، ركن سادس در بيان شواهد ودلايلي...الخ، ص ۲۱۰

#### ﴿4﴾ हज़रते अली मूर्तजा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

खलीफ़ा चहारुम जानशीने रसूल व जौजे बतूल हज़रते अली बिन अबी तालिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की कुन्यत “अबुल हसन” और “अबू तुराब” है। आप हुजुरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चचा अबू तालिब के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं। आमुल फ़ील के तीस बरस बा’द जब कि हुजुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्र शरीफ़ तीस बरस की थी। 13 रजब को जुमुआ के दिन हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़ानए का’बा के अन्दर पैदा हुवे। आप की वालिदए माजिदा का नाम हज़रते फ़ातिमा बिन्ते असद (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) है आप ने अपने बचपन ही में इस्लाम क़बूल कर लिया था और हुजुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़ेरे तर्बियत हर वक़्त आप की इमदाद व नुस्सत में लगे रहते थे। आप मुहाजिरीने अक्वलीन और अशराए मुबशशरा में अपने बा’ज़ खुसूसी दरजात के लिहाज़ से बहुत ज़ियादा मुमताज़ हैं। जंगे बद्र, जंगे उहुद, जंगे ख़न्दक़ वग़ैरा तमाम इस्लामी लड़ाइयों में अपनी बे पनाह शुजाअत के साथ जंग फ़रमाते रहे और कुफ़ारे अरब के बड़े बड़े नामवर बहादुर और सूरमा आप की मुक़द्दस तल्वारे जुल फ़िक्कार की मार से मक़तूल हुवे। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की शहादत के बा’द अन्सार व मुहाजिरीन ने आप के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत कर के आप को अमीरुल मोअमिनीन मुन्तख़ब किया और चार बरस आठ माह नव दिन तक आप मस्नदे ख़िलाफ़त को सरफ़राज़ फ़रमाते रहे। 17 रमज़ान सि. 40 हि. को अब्दुर्रहमान बिन मुलजम मुरादी ख़ारिजी मुर्दूद ने नमाज़े फ़त्र को जाते हुवे आप की मुक़द्दस पेशानी और नूरानी चेहरे पर ऐसी तल्वार मारी जिस से आप शदीद तौर पर ज़ख़मी हो गए और दो दिन ज़िन्दा रह कर जामे शहादत से सैराब हो गए और बा’ज़ किताबों में लिखा है कि 19 रमज़ान जुमुआ की रात में आप ज़ख़मी हुवे और 21 रमज़ान शबे यक़ शम्बा आप की शहादत हुई। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ

आप के बड़े फ़रज़न्दे अरजुमन्द हज़रते इमाम हसन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप को दफ़न फ़रमाया ।<sup>(1)</sup> (تاريخ الخلفاء، وازالة الخفاء وغيره)

## कशमात

### क़ब्र वालों से सुवाल व जवाब

हज़रते सईद बिन मुसय्यब रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कहते हैं कि हम लोग अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बकीअ में गए तो आप ने क़ब्रों के सामने खड़े हो कर बा आवाज़े बुलन्द फ़रमाया कि ऐ क़ब्र वालो ! السلام عليكم ورحمة الله क्या तुम लोग अपनी ख़बरें हमें सुनाओगे या हम तुम लोगों को तुम्हारी ख़बरें सुनाएं ? इस के जवाब में क़ब्रों के अन्दर से आवाज़ आई : عليك السلام ورحمة الله وبركاته ऐ अमीरल मोअमिनीन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आप ही हमें येह सुनाइये कि हमारी मौत के बा'द हमारे घरों में क्या क्या मुआमलात हुवे ? हज़रते अमीरुल मोअमिनीन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि ऐ क़ब्र वालो ! तुम्हारे बा'द तुम्हारे घरों की ख़बर येह है कि तुम्हारी बीवियों ने दूसरे लोगों से निकाह कर लिया और तुम्हारे माल व दौलत को तुम्हारे वारिषों ने आपस में तक्सीम कर लिया और तुम्हारे छोटे छोटे बच्चे यतीम हो कर दर बदर फिर रहे हैं और तुम्हारे मज़बूत और ऊंचे ऊंचे महलों में तुम्हारे दुश्मन आराम और चैन के साथ ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं । इस के जवाब में क़ब्रों में से एक मुर्दे की येह दर्दनाक आवाज़ आई कि ऐ अमीरल मोअमिनीन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हमारी ख़बर येह है कि हमारे कफ़न

1...تاريخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، على بن ابى طالب رضى الله عنه، ص ۳۲ واسد الغابة،

على بن ابى طالب، ج ۴، ص ۱۲۸-۱۳۲ ملقطاً وازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد

دوم، امامات امير المؤمنين و امام اشجعین اسد الله... الخ، ج ۴، ص ۴۰۵ ملقطاً و معرفة

الصحابة، على بن ابى طالب، الحديث: ۳۲۱، ۳۲۳، ۳۲۵، ج ۱، ص ۱۰۰ ملقطاً وغيرهما



पुराने हो कर फट चुके हैं और जो कुछ हम ने दुनिया में खर्च किया था उस को हम ने यहां पा लिया है और जो कुछ हम दुनिया में छोड़ आए थे उस में हमें घाटा ही घाटा उठाना पड़ा है।<sup>(1)</sup> (حجة الله على العالمين ج २، ص ८१३)

## तबसेरा

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि **अब्बाह** तबारक व तअाला अपने महबूब बन्दों को येह ताक़त व कुदरत अता फ़रमाता है कि क़ब्र वाले इन को सुवालों का बा आवाज़े बुलन्द इस तरह जवाब देते हैं कि दूसरे हाज़िरीन भी सुन लेते हैं। येह कुदरत व ताक़त अ़म इन्सानों को हासिल नहीं है। लोग अपनी आवाज़ें तो मुर्दों को सुना सकते हैं और मुर्दे इन की आवाज़ों को सुन भी लेते हैं मगर क़ब्र के अन्दर से मुर्दों की आवाज़ों को सुन लेना येह अ़म इन्सानों के बस की बात नहीं है, बल्कि येह ख़ासाने खुदा का ख़ास हिस्सा और ख़ास्सा है जिस को इन की करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता और इस रिवायत से येह भी पता चला कि क़ब्र वालों का येह इक्बाली बयान है कि मरने वाले दुनिया में जो मालो दौलत छोड़ कर मर जाते हैं उस में मरने वालों के लिये सरासर घाटा ही घाटा है और जिस मालो दौलत को वोह मरने से पहले खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की राह में खर्च करते हैं वोही उन के काम आने वाला है।

## फ़ालिज ज़दा अच्छा हो गया

अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपनी किताब “तबकात” में ज़िक्र फ़रमाया है कि एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अ़ली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** अपने दोनों शाहज़ादगान हज़रते इमामे हसन व इमामे हुसैन **(رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا)** के साथ हरमे का'बा में हाज़िर

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ११३

थे कि दरमियानी रात में नागहां येह सुना कि एक शख्स बहुत ही गिड़ गिड़ा कर अपनी हाजत के लिये दुआ मांग रहा है और ज़ार ज़ार रो रहा है। आप ने हुक्म दिया कि उस शख्स को मेरे पास लाओ। वोह शख्स इस हाल में हाज़िरे ख़िदमत हुवा कि उस के बदन की एक करवट फ़ालिज ज़दा थी और वोह ज़मीन पर घिसटता हुवा आप के सामने आया। आप ने उस का किस्सा दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन ! رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मैं बहुत ही बे बाकी के साथ किस्म किस्म के गुनाहों में दिन रात मुन्हमिक रहता था और मेरा बाप जो बहुत ही सालेह और पाबन्दे शरीअत मुसलमान था, बार बार मुझ को टोकता और गुनाहों से मन्अ करता रहता था मैं ने एक दिन अपने बाप की नसीहत से नाराज़ हो कर उस को मार दिया और मेरी मार खा कर मेरा बाप रन्जो ग़म में डूबा हुवा हरमे का'बा आया और मेरे लिये बद दुआ करने लगा। अभी उस की दुआ ख़त्म भी नहीं हुई थी कि बिल्कुल ही अचानक मेरी एक करवट पर फ़ालिज का अषर हो गया और मैं ज़मीन पर घिसट कर चलने लगा। इस ग़ैबी सज़ा से मुझे बड़ी इब्रत हासिल हुई और मैं ने रो रो कर अपने बाप से अपने जुर्म की मुआफ़ी तलब की और मेरे बाप ने अपनी शफ़क़ते पिदरी से मजबूर हो कर मुझ पर रहम खाया और मुझे मुआफ़ कर दिया और कहा कि बेटा चल ! जहां मैं ने तेरे लिये बद दुआ की थी उसी जगह अब मैं तेरे लिये सिद्दहत व सलामती की दुआ मांगूंगा। चुनान्वे, मैं अपने बाप को ऊंटनी पर सुवार कर के मक्कए मुअज़्जमा ला रहा था कि रास्ते में बिल्कुल नागहां ऊंटनी एक मक़ाम पर बिदक कर भागने लगी और मेरा बाप उस की पीठ पर से गिर कर दो चट्टानों के दरमियान हलाक हो गया और अब मैं अकेला ही हरमे का'बा में आ कर दिन रात रो रो कर खुदा तआला से अपनी तन्दुरुस्ती के लिये दुआएं मांगता रहता हूं। अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सारी सर

गुज़श्त सुन कर फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! अगर वाक़ेई तेरा बाप तुझ से खुश हो गया था तो इतमीनान रख कि खुदा करीम भी तुझ से खुश हो गया है। उस ने कहा कि ऐ अमीरल मोअमिनीन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** में ब हलफ़े शरई क़सम खा कर कहता हूं कि मेरा बाप मुझ से खुश हो गया था। अमीरल मोअमिनीन हज़रते अली **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस शख़्स की हालते ज़ार पर रहूम खा कर उस को तसल्ली दी और चन्द रक्अत नमाज़ पढ़ कर उस की तन्दुरुस्ती के लिये दुआ मांगी। फिर फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! उठ खड़ा हो जा ! येह सुनते ही वोह बिला तकल्लुफ़ उठ कर खड़ा हो गया और चलने लगा। आप ने फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! अगर तू ने क़सम खा कर येह न कहा होता कि तेरा बाप तुझ से खुश हो गया था तो मैं हरगिज़ तेरे लिये दुआ न करता। <sup>(1)</sup> (حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۶۳)

### गिरती हुई दीवार थम गई

हज़रते इमाम जा'फ़र सादिक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** रावी हैं कि एक मरतबा अमीरल मोअमिनीन हज़रते अली **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** एक दीवार के साए में एक मुक़द्दमे का फैसला फ़रमाने के लिये बैठ गए। दरमियाने मुक़द्दमा में लोगों ने शोर मचाया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** यहां से उठ जाइये येह दीवार गिर रही है। आप ने निहायत सुकून व इतमीनान के साथ फ़रमाया कि मुक़द्दमे की कार रवाई जारी रखो। **اَللّٰهُ** तअ़ाला बेहतरीन हाफ़िज़ व नासिर व निगेहबान है। चुनान्वे, इतमीनान के साथ आप उस मुक़द्दमे का फैसला फ़रमा कर जब वहां से चल दिये तो फ़ौरन ही वोह दीवार गिर गई। <sup>(2)</sup> (ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۲۷۳)

1.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۴

2.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اماماً ثرامير المؤمنين وامام اشجعین اسد

الله...الخ، ومن كراماته، ج ۴، ص ۴۹۴

## तबशेश

येह रिवायत इस बात की दलील है कि खुदावन्दे कुहूस अपने औलियाए किराम को ऐसी ऐसी रूहानी ताकतें अता फ़रमाता है कि इन के इशारों से गिरती हुई दीवारें तो क्या चीज़ें हैं? बहते हुवे दरयाओं की रवानी भी ठहर जाती है। सच है

**कोई अन्दाज़ा कर सकता है इस के ज़ोरे बाज़ू का ?**

**निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक्रदीरें**

**आप को झूटा कहने वाला अन्धा हो गया**

अली बिन जाज़ान का बयान है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक मरतबा कोई बात इरशाद फ़रमाई तो एक बद नसीब ने निहायत ही बे बाकी के साथ येह कह दिया कि ऐ अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ आप झूटे हैं। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि ऐ शख्स ! अगर मैं सच्चा हूं तो ज़रूर तू क़हरे इलाही में गिरिफ़्तार हो जाएगा। उस गुस्ताख़ ने कह दिया कि आप मेरे लिये बद दुआ कर दीजिये, मुझे इस की परवाह नहीं है। उस के मुंह से इन अल्फ़ाज़ का निकलना था कि बिल्कुल ही अचानक वोह शख्स दोनों आंखों से अन्धा हो गया और इधर उधर हाथ पाउं मारने लगा। <sup>(1)</sup> (ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۲۷۳)

**कौन कहां मरेगा ? कहां दफ़न होगा ?**

हज़रते अस्वग़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कहते हैं कि हम लोग एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ सफ़र में मैदाने करबला के अन्दर ठीक उस जगह पहुंचे जहां आज

①.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما مآثر امير المؤمنين وامام اشجعین

اسد اللہ... الخ، ومن کراماته، ج ۴، ص ۴۹۵

हज़रते इमामे हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की कब्रे अन्वर बनी हुई है, तो आप ने फ़रमाया कि इस जगह आइन्दा ज़माने में एक आले रसूल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) का काफ़िला ठहरेगा और इस जगह उन के ऊंट बन्धे हुवे होंगे और इसी मैदान में जवानाने अहले बैत की शहादत होगी और इसी जगह उन शहीदों का मदफ़न बनेगा और इन लोगों पर आस्मान व ज़मीन रोएंगे। <sup>(1)</sup> (ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۲۷۳ بحواله الرياض النضرة)

## तबसेरा

रिवायते बाला से पता चलता है कि औलियाउल्लाह को ब ज़रीअए कश्फ़ बरसों बा'द होने वाले वाकिआत और लोगों के हालात यहां तक कि लोगों की मौत और मदफ़न की कैफ़िय्यात का इल्म हासिल हो जाता है और येह दर हकीकत इल्मे ग़ैब है जो **अल्लाह** तआला के अता फ़रमाने से औलियाए किराम को हासिल हुवा करता है और येह औलियाए किराम की करामत हुवा करती है।

## फ़िरिश्तों ने चक्की चलाई !

हज़रते अबू ज़र ग़िफ़री رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बुलाने के लिये उन के मकान पर भेजा तो मैं ने वहां येह देखा कि उन के घर में चक्की बिगैर किसी चलाने वाले के खुद ब खुद चल रही है। जब मैं ने बारगाहे रिसालत में इस अजीब करामत का तज़क़िरा किया तो हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अबू ज़र (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) **अल्लाह** तआला के कुछ फ़िरिश्ते ऐसे भी हैं जो ज़मीन में सैर करते रहते हैं, **अल्लाह** तआला ने उन फ़िरिश्तों

①.....الرياض النضرة في مناقب العشرة، الباب الرابع في مناقب امير المؤمنين على بن ابي

طالب، الفصل التاسع في ذكر نبيذ من فضائله، ذكر كراماته، ج ۲، ص ۲۰۱

की येह भी जिम्मेदारी (ड्यूटी) लगा दी है कि वोह मेरी आल की इमदाद व इआनत करते रहें।<sup>(1)</sup> (ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۲۷۳)

## तबसेरा

इस रिवायत से येह सबक मिलता है कि हुजुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आले पाक को बारगाहे खुदावन्दी में इस क़दर कुर्ब और मक़बूलियत हासिल है कि **अल्लाह** तआला ने कुछ फ़िरिशतों को इन की इमदाद व नुसरत और हाज़त बर आरी के लिये खास तौर पर मुक़रर फ़रमा दिया है। येह शरफ़ हज़रते अहले बैत को हुजुरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की निस्बते खास्सा की वजह से हासिल हुवा है। (سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ) सुल्ताने मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इज़ज़त व अज़मत और इन के वक़ार व इक़्तिदार का क्या कहना ? कि आप के घर वालों की चक्की फ़िरिशते चलाया करते थे।

## मैं कब वफ़ात पाऊँगा ?

हज़रते फुज़ाला बिन अबी फुज़ाला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरशाद फ़रमाते हैं कि एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मक़ामे “यम्बअ” में बहुत सख़्त बीमार हो गए तो मैं अपने वालिद के हमराह उन की इयादत के लिये गया। दौराने गुफ़्तगू मेरे वालिद ने अर्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ आप इस वक़्त ऐसी जगह अलालत की हालत में मुक़ीम हैं अगर इस जगह आप की वफ़ात हो गई तो “क़बीलए जुहैना” के गंवारों के सिवा और कौन आप की तजहीज़ व तक्फ़ीन करेगा ? इस लिये मेरी गुज़ारिश है कि आप मदीनाए मुनव्वरा तशरीफ़ ले चलें क्यूंकि वहां अगर येह हादिषा रू नुमा हुवा तो वहां आप के जां निषार मुहाजिरीन व अन्सार और दूसरे मुक़द्दस सहाबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ आप की नमाज़े

①.....الرياض النضرة في مناقب العشرة، الباب الرابع في مناقب امير المؤمنين على بن ابي

طالب، الفصل التاسع في ذكر نبذ من فضائله، ذكر كراماته، ج ۲، ص ۲۰۲ ملقطاً



जनाज़ा पढ़ेंगे और येह मुक़द्दस हस्तियां आप के कफ़न व दफ़न का इन्तिज़ाम करेंगी। येह सुन कर आप ने फ़रमाया कि ऐ अबू फुज़ाला ! तुम इतमीनान रखो कि मैं अपनी बीमारी में हरगिज़ हरगिज़ वफ़ात नहीं पाऊंगा। सुन लो उस वक़्त तक हरगिज़ हरगिज़ मेरी मौत नहीं आ सकती जब तक कि मुझे तल्वार मार कर मेरी पेशानी और दाढ़ी को खून से रंगीन न कर दिया जाए।<sup>(1)</sup> (अزالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۲۷۳)

## तबशेश

चुनान्वे, ऐसा ही हुवा कि बद बख़्त अब्दुरहमान बिन मुलजिम मुरादी ख़ारिजी ने आप की मुक़द्दस पेशानी पर तल्वार चला दी, जो आप की पेशानी को काटती हुई जबड़े तक पैवस्त हो गई। उस वक़्त आप की ज़बाने मुबारक से येह जुम्ला अदा हुवा :  
 فُزْتُ بِرَبِّ الْكُعبَةِ (या'नी का'बा के रब की क़सम ! कि मैं कामयाब हो गया) इस ज़ख़्म में आप शहादत के शरफ़ से सरफ़राज़ हो गए और आप ने हज़रते अबू फुज़ाला رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मक़ामे यम्बअ में जो फ़रमाया था वोह हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह हो कर रहा।

## दरे ख़ैबर का वज़्न

जंगे ख़ैबर में जब घमसान की जंग होने लगी तो हज़रते अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ढाल कट कर गिर पड़ी तो आप ने जोशे जिहाद में आगे बढ़ कर क़लअए ख़ैबर का फ़ाटक उखाड़ डाला और उस के एक कवाड़ को ढाल बना कर उस पर दुश्मनों की तल्वारों को रोकते थे। येह किवाड़ इतना भारी और वज़नी था कि जंग के ख़ातिमे के बा'द चालीस आदमी मिल कर भी उस को न उठा सके।<sup>(2)</sup> (زرقانی ج ۲، ص ۲۳۰)

1.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اما متأثر امير المؤمنين وامام اشجعین

اسد اللہ... الخ، ومن کراماته، ج ۴، ص ۴۹۶

2.....شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیة، غزوة خیبر، ج ۳، ص ۲۶۷ ملقطاً

## तबसेरा

क्या फ़ातिहे ख़ैबर के इस कारनामे को इन्सानी ताक़त की कार गुज़ारी कहा जा सकता है ? हरगिज़ हरगिज़ नहीं । येह इन्सानी ताक़त का कारनामा नहीं है बल्कि येह रूहानी ताक़त का एक शाहकार है जो फ़क़त **अल्लाह** वालों ही का हिस्सा है जिस को उर्फ़े आम्मा में **करामत** कहा जाता है ।

## कटा हुवा हाथ जोड़ दिया !

रिवायत है कि एक हबशी गुलाम जो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का इन्तिहाई मुख़्तस मुहिब्ब था, शामते आ'माल से उस ने एक मरतबा चोरी कर ली, लोगों ने उस को पकड़ कर दरबारे ख़िलाफ़त में पेश कर दिया और गुलाम ने अपने जुर्म का इक़रार भी कर लिया । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस का हाथ काट दिया । जब वोह अपने घर को रवाना हुवा तो रास्ते में हज़रते सलमान फ़ारसी **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** और इब्नुल कुर्रा से उस की मुलाक़ात हो गई । इब्नुल कुर्रा ने पूछा कि तुम्हारा हाथ किस ने काटा ? तो गुलाम ने कहा : अमीरुल मोअमिनीन व या'सूबुल मुस्लिमीन, दामादे रसूल व जौजे बतूल ने । इब्नुल कुर्रा ने कहा कि हज़रते अली **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने तुम्हारा हाथ काट डाला फिर भी तुम इस क़दर ए'जाज़ व इकराम और मदहो षना के साथ उन का नाम लेते हो ? गुलाम ने कहा कि क्या हुवा ? उन्होंने ने हक़ पर मेरा हाथ काटा और मुझे अज़ाबे जहन्नम से बचा लिया । हज़रते सलमान फ़ारसी **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने दोनों की गुफ़्तगू सुनी और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से इस का तज़क़िरा किया तो अमीरुल मोअमिनीन **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस गुलाम को बुलवा कर उस का कटा हुवा हाथ उस की कलाई पर रख कर रूमाल से छुपा दिया फिर कुछ पढ़ना शुरूअ कर दिया । इतने में एक ग़ैबी आवाज़ आई कि रूमाल हटाओ ! जब लोगों ने रूमाल हटाया तो गुलाम का कटा हुवा हाथ इस तरह कलाई से जुड़ गया था कि कहीं कटने का निशान तक भी नहीं था ।<sup>(1)</sup>

1.....التفسير الكبير، سورة الكهف، تحت الآية: ٩-١٢، ج ٧، الجزء ٢١، ص ٤٣٤

## शोहर, औरत का बेटा निकला !

अमीरुल मोअमिनीन हजरते अली रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के काशानए ख़िलाफ़त से कुछ दूर एक मस्जिद के पहलू में दो मियां बीबी रात भर झगड़ा करते रहे, सुबह को अमीरुल मोअमिनीन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दोनों को बुला कर झगड़े का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया, शोहर ने अर्ज़ किया : ऐ अमीरल मोअमिनीन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मैं क्या करूं ? निकाह के बा'द मुझे इस औरत से बे इन्तिहा नफ़रत हो गई, येह देख कर बीबी मुझ से जगड़ा करने लगी, फिर बात बढ़ गई और रात भर लड़ाई होती रही। आप ने तमाम हाज़िरीने दरबार को बाहर निकाल दिया और औरत से फ़रमाया कि देख मैं तुझ से जो सुवाल करूं उस का सच सच जवाब देना। फिर आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : ऐ औरत ! तेरा नाम येह है ? तेरे बाप का नाम येह है ? औरत ने कहा कि बिल्कुल ठीक ठीक आप ने बताया। फिर आप ने फ़रमाया कि ऐ औरत तू याद कर कि तू ज़िनाकारी से हामिला हो गई थी और एक मुद्दत तक तू और तेरी मां इस हम्ल को छुपाती रही। जब दर्दे ज़ेह शुरूअ हुवा तो तेरी मां तुझे उस घर से बाहर ले गई और जब बच्चा पैदा हुवा तो उस को एक कपड़े में लपेट कर तू ने मैदान में डाल दिया। इत्तिफ़ाक़ से एक कुत्ता उस बच्चे के पास आया। तेरी मां ने उस कुत्ते को पथर मारा लेकिन वोह पथर बच्चे को लगा और उस का सर फट गया तेरी मां को बच्चे पर रहम आ गया और उस ने बच्चे के ज़ख़्म पर पट्टी बांध दी। फिर तुम दोनों वहां से भाग खड़ी हुई। इस के बाद उस बच्चे की तुम दोनों को कुछ भी ख़बर नहीं मिली। क्या येह वाकिआ सच है ? औरत ने कहा : कि हां ! ऐ अमीरल मोअमिनीन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ येह पूरा वाकिआ हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह है। फिर आप ने फ़रमाया कि ऐ मर्द ! तू अपना सर खोल कर इस को दिखा दे। मर्द ने सर खोला तो उस ज़ख़्म का निशान मौजूद था। इस के बा'द अमीरुल मोअमिनीन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

ने फ़रमाया कि ऐ औरत ! येह मर्द तेरा शोहर नहीं बल्कि तेरा बेटा है, तुम दोनों **अल्लाह** तआला का शुक्र अदा करो कि उस ने तुम दोनों को हराम कारी से बचा लिया, अब तू अपने इस बेटे को ले कर अपने घर चली जा ।<sup>(1)</sup> (शुआहद النبوة، ص १५१)

### तबशेश

मज़कूरा बाला दोनों मुस्तनद करामतों को बग़ौर पढ़िये और ईमान रखिये कि खुदावन्दे कुदूस के औलियाए किराम अम इन्सानों की तरह नहीं हुवा करते बल्कि **अल्लाह** तआला अपने इन महबूब बन्दों को ऐसी ऐसी रूहानी ताक़तों का बादशाह बल्कि शहनशाह बना देता है कि इन बुजुर्गों के तसरूफ़ात और इन की रूहानी ताक़तों और कुदरतों की मन्ज़िले बुलन्द तक किसी बड़े से बड़े फ़लसफ़ी की अक्ल व फ़हम की भी रसाई नहीं हो सकती ।

खुदा की क़सम ! मैं हैरान हूँ कि कितने बड़े जाहिल या मुतजाहिल हैं वोह लोग जो औलियाए किराम को बिल्कुल अपने ही जैसा मुल्ला समझ कर इन के साथ बराबरी का दा'वा करते हैं और औलियाए किराम के तसरूफ़ात का चिल्ला चिल्ला कर इन्कार करते फिरते हैं । तअज्जुब है कि ऐसे ऐसे वाकिआत जो नूरे हिदायत के चांद तारे हैं इन मुन्किरों की निगाह से आज तक ओझल ही हैं मगर इस में कोई तअज्जुब की बात नहीं, जो दोनों हाथों से अपनी आंखों को बन्द कर ले उस को चांद सितारे तो क्या सूरज की रोशनी भी नज़र नहीं आ सकती । दर हकीक़त औलियाए किराम के मुन्किरीन का येही हाल है ।

### जश देर में कुरआने करीम ख़त्म कर लेते

येह करामत रिवायाते सहीहा से षाबित है कि आप घोड़े पर सुवार होते वक़्त एक पाउं रिकाब में रखते और कुरआने मजीद शुरू करते और दूसरा पाउं रिकाब में रख कर

घोड़े की जिन पर बैठने तक इतनी देर में एक कुरआने मजीद ख़त्म कर लिया करते थे।<sup>(1)</sup> (शुआहद النبوة: ص १२०)

## इशारे से दरया की तुगयानी ख़त्म

एक मरतबा नहरे फुरात में ऐसी ख़ौफ़नाक तुगयानी आ गई कि सैलाब में तमाम खेतियां गर्क आब हो गई लोगों ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरबारे गोहरबार में फ़रयाद की। आप फौरन ही उठ खड़े हुवे और रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का जुब्बा मुबारका व इमामए मुकद्दसा व चादरे मुबारका जैबे तन फ़रमा कर घोड़े पर सुवार हुवे और आदमियों की एक जमाअत जिस में हज़रते इमामे हसन व इमाम हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا भी थे, आप के साथ चल पड़े। आप ने पुल पर पहुंच कर अपने असा से नहरे फुरात की तरफ़ इशारा किया तो नहर का पानी एक गज़ कम हो गया। फिर दूसरी मरतबा इशारा फ़रमाया तो मजीद एक गज़ कम हो गया जब तीसरी बार इशारा किया तो तीन गज़ पानी उतर गया और सैलाब ख़त्म हो गया। लोगों ने शोर मचाया कि अमीरल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बस कीजिये येही काफी है।<sup>(2)</sup> (शुआहद النبوة: ص १२२)

## जासूस अन्धा हो गया !

एक शख़्स आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास रह कर जासूसी किया करता था और आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़ुफ़्या ख़बरें आप के मुख़ालिफ़ीन को पहुंचाया करता था। आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जब उस से दरयाफ़्त फ़रमाया तो वोह शख़्स क़समें खाने लगा और अपनी बराअत ज़ाहिर करने लगा। आप ने जलाल में आ कर फ़रमाया कि

1.....शुआहद النبوة، ركن سادس در بيان شواهد ودلايلي...الخ، ص ११२

2.....शुआहद النبوة، ركن سادس در بيان شواهد ودلايلي...الخ، ص ११६

अगर तू झूठा है तो **अल्लाह** तअला तेरी आंखों की रोशनी छीन ले। एक हफ़्ता भी नहीं गुज़रा था कि येह शख़्स अन्धा हो गया और लोग इस को लाठी पकड़ा कर चलाने लगे।<sup>(1)</sup> (शुआबुल न्बुّة: ص १८८)

### तुम्हारी मौत किस तरह होगी ?

एक शख़्स आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की खिदमत में अक्दस में हाज़िर हुवा तो आप ने उस को उस के हालात बता कर येह बताया कि तुम को फुलां खजूर के दरख़्त पर फांसी दी जाएगी। चुनान्चे, उस शख़्स के बारे में जो कुछ आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया था वोह हर्फ़ ब हर्फ़ दुरुस्त निकला और आप की पेशगोई पूरी हो कर रही।<sup>(2)</sup>

(शुआबुल न्बुّة: ص १८८)

### पथर उठाया तो चश्मा उबल पड़ा !

मक़ामे सिफ़्फ़ीन को जाते हुवे आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का लश्कर एक ऐसे मैदान से गुज़रा जहां पानी नायाब था, पूरा लश्कर प्यास की शिद्दत से बे ताब हो गया। वहां के गिर्जा घर में एक राहिब रहता था। उस ने बताया कि यहां से दो कोस के फ़ासिले पर पानी मिल सकेगा। कुछ लोगों ने इजाज़त त़लब की ताकि वहां से जा कर पानी पियें, येह सुन कर आप अपने खच्चर पर सुवार हो गए और एक जगह की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि उस जगह तुम लोग ज़मीन को खोदो। चुनान्चे, लोगों ने ज़मीन की खुदाई शुरू कर दी तो एक पथर ज़ाहिर हुवा। लोगों ने उस पथर को निकालने की इन्तिहाई कोशिश की लेकिन तमाम आलात बेकार हो गए और वोह पथर न निकल सका। येह देख कर आप को जलाल आ गया और आप ने अपनी सुवारी से उतर कर आस्तीन चढ़ाई और दोनों हाथों की उंगलियों को उस पथर की दराज़ में डाल कर ज़ोर लगाया तो वोह

①.....शुआबुल न्बुّة، ركن سادس در بيان شواهد ودلائلی...الخ، ص २२१

②.....शुआबुल न्बुّة، ركن سادس در بيان شواهد ودلائلی...الخ، ص २१०



पथर निकल पड़ा और उस के नीचे से एक निहायत ही साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और शीरीं पानी का चश्मा ज़ाहिर हो गया और तमाम लश्कर उस पानी से सैराब हो गया। लोगों ने अपने जानवरों को भी पिलाया और लश्कर की तमाम मशकों को भी भर लिया, फिर आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस पथर को उस की जगह पर रख दिया। गिर्जा घर का ईसाई राहिब आप की येह करामत देख कर सामने आया और आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से दरयाफ़्त किया कि क्या आप फ़िरिश्ते हैं ? आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : नहीं। उस ने पूछा : क्या आप नबी हैं ? आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : नहीं। उस ने कहा : फिर आप कौन हैं ? आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : मैं पैग़म्बरे मुर्सल हज़रते मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह खातिमुन्नबिय्यीन **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का सहाबी हूँ और मुझ को हुजूरे अक्दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने चन्द बातों की वसिय्यत भी फ़रमाई है। येह सुन कर वोह ईसाई राहिब कलिमा शरीफ़ पढ़ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया।

आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : तुम ने इतनी मुद्दत तक इस्लाम क्यूं क़बूल नहीं किया था ? राहिब ने कहा कि हमारी किताबों में येह लिखा हुवा है कि इस गिर्जाघर के क़रीब जो एक चश्मा पोशीदा है और इस चश्मे को वोही शख्स ज़ाहिर करेगा जो या तो नबी होगा या नबी का सहाबी होगा। चुनान्वे, मैं और मुझ से पहले बहुत से राहिब इस गिर्जाघर में इसी इन्तिज़ार में मुक़ीम रहे। अब आज आप ने येह चश्मा ज़ाहिर कर दिया तो मेरी मुराद बर आई। इस लिये मैं ने आप के दीन को क़बूल कर लिया। राहिब की तक़रीर सुन कर आप रो पड़े और इस क़दर रोए कि आप की रीश मुबारक आंसूओं से तर हो गई और फिर आप ने इरशाद फ़रमाया : **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** कि इन लोगों की किताबों में भी मेरा ज़िक्र है। येह राबिह मुसलमान हो कर आप के खादिमों में शामिल हो गया और

आप के लश्कर में दाखिल हो कर शामियों से जंग करत हुवे शहीद हो गया और आप ने इस को अपने दस्ते मुबारक से दफन किया और इस के लिये मगफिरत की दुआ भी फरमाई।<sup>(1)</sup> (शुआहद النبوة: ४४, ص १२५)

﴿5﴾ **हज़रते तलहा बिन अब्दुल्लाह** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

आप का नामे नामी भी अशरए मुबशशरा की फ़ेहरिस्ते गिरामी में है। मक्काए मुकर्रमा के अन्दर खानदाने कुरैश में आप की पैदाइश हुई। मां बाप ने “तलहा” नाम रखा, मगर दरबारे नबुव्वत से इन को “फय्याज़” व “जूद” व “ख़ैर” के मुअज़्ज़ज़ अलकाब अता हुवे। येह जमाअते सहाबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ में साबिकीने अव्वलीन के जुमरे में हैं।<sup>(2)</sup> इन के इस्लाम लाने का वाकिआ येह है कि येह ब सिलसिलए तिजारत बसरा गए तो वहां के ईसाई पादरी ने इन से दरयाफ्त किया कि क्या मक्का में “अहमद नबी” पैदा हो चुके हैं? इन्होंने हैरान हो कर पूछा : कौन “अहमद नबी?” पादरी ने कहा : “अहमद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब। वो नबिय्ये आखिरुज़्ज़मां हैं और उन की नबुव्वत के जुहूर का येही ज़माना है और उन की पहचान का निशान येह है कि वोह मक्काए मुकर्रमा में पैदा होंगे और खजूरों वाले शहर (मदीनए मुनव्वरा) की तरफ़ हिजरत करेंगे।”

चूँकि उस वक़्त तक हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी नबुव्वत का ए'लान नहीं फरमाया था इस लिये हज़रते तलहा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पादरी को नबिय्ये आखिरुज़्ज़मां ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बारे में कोई जवाब न दे सके, लेकिन बसरा

①.....शुआहद النبوة، ركن سادس در بيان شواهد ودلائلی...الخ، ص ११६

②.....الرياض النضرة فى مناقب العشرة، الباب الخامس فى مناقب ابى محمد طلحة بن

عبید الله، الفصل الثانى فى اسمه وكنيته، ج २، ص २६०

से मक्काए मुअज्जमा आने के बा'द जब इन को पता चला कि हुजुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी नबुव्वत का ए'लान फ़रमा दिया है तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ बारगाहे नबुव्वत में हाज़िर हो कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे।<sup>(1)</sup>

कुफ़ारे मक्का ने इन को बेहद सताया और रस्सी बांध बांध कर इन को मारते रहे मगर येह पहाड़ की तरह दीने इस्लाम पर षाबित क़दम रहे। फिर हिजरत कर के मदीनाए मुनव्वरा चले गए और जंगे बद्र के सिवा तमाम इस्लामी जंगों में कुफ़ार से लड़ते रहे। जंगे बद्र में इन की ग़ैर हाज़िरी का येह सबब हुवा कि हुजुरे अक्दस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन को और हज़रते सईद बिन जैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को अबू सुफ़्यान के काफ़िले की तलाश में भेज दिया था। अबू सुफ़्यान का काफ़िला साहिले समन्दर के रास्तों से मक्काए मुकर्रमा चला गया और येह दोनों हज़रात जब लौट कर मैदाने बद्र में पहुंचे तो जंग ख़त्म हो चुकी थी।

जंगे उहुद में इन्हों ने बड़ी ही जां बाजी और सरफ़रोशी का मुजाहरा किया। हुजुरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को कुफ़ार के हम्लों से बचाने में चूँकि येह तल्वार और नेजों की बोछाड़ को अपने हाथ पर रोकते रहे इस लिये आप की उंगली कट गई और हाथ बिल्कुल शल हो गया था और इन के बदन पर तीर, तल्वार और नेजों के पछत्तर ज़ख़्म लगे।<sup>(2)</sup>

इन के फ़ज़ाइल व मनाकिब में चन्द हदीषें भी वारिद हुई हैं। जंगे उहुद के दिन जब जंग रुक जाने के बा'द हुजुरे अकरम

①.....الرياض النضرة في مناقب العشرة، الباب الخامس في مناقب ابى محمد طلحة بن

عبيد الله، الفصل الرابع في اسلامه، ج ٢، ص ٢٥٠

②.....اسد الغابة، طلحة بن عبيد الله القرشى التيمى، ج ٣، ص ٨٣، ٨٤

والاكمال في اسماء الرجال، حرف الطاء، فصل في الصحابة، ص ٦٠١

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चट्टान पर चढ़ने लगे तो लोहे की ज़िर्ह के बोझ की वजह से चट्टान पर चढ़ना दुश्वार हो गया। उस वक़्त हज़रते त़लहा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बैठ गए और इन के बदन के ऊपर से गुज़र कर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चट्टान पर चढ़े और खुश हो कर फ़रमाया : “اَوْحَبَ طَلْحَةُ” (या'नी त़लहा ने अपने लिये जन्नत वाजिब कर ली।) <sup>(1)</sup> (مشکوٰۃ، ص ۵۶۶)

इसी तरह हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ये भी फ़रमाया : ज़मीन पर चलता फिरता शहीद “त़लहा” है। <sup>(2)</sup> (کنز العمال، ج ۱۲، ص ۲۷۵ مطبوعه حیدرآباد)

20 जुमादिल उख़रा सि. 36 ही. में जंगे जमल के दौरान आप को एक तीर लगा और आप चौंसठ बरस की उम्र में शहादत से सरफ़राज़ हुवे। <sup>(3)</sup> (اکمال ص ۶۰۱ و عشره مبشره ص ۲۴۵)

## कशमात

### एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में

शहादत के बा'द आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बसरा के क़रीब दफ़न कर दिया गया मगर जिस मक़ाम पर आप की क़ब्र शरीफ़ बनी वोह नुशैब में था इस लिये क़ब्र मुबारक कभी कभी पानी में डूब जाती थी। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक शख़्स को बार बार मुतवातिर ख़्वाब में आ कर अपनी क़ब्र बदलने का हुक्म दिया। चुनान्वे, उस

①.....مشكاة المصابيح، کتاب المناقب، باب مناقب العشرة رضى الله عنهم، الحديث: ۶۱۲۱،

ج ۲، ص ۴۳۳

②.....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، تَمَّة العشرة رضى الله عنهم اجمعين طلحة

بن عبید اللہ، الحديث: ۳۶۵۹۲، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۸۶

③.....الاستيعاب فی معرفة الاصحاب، طلحة بن عبید اللہ التیمی، ج ۲، ص ۳۲۰ ملقطاً

शख्स ने हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से अपना ख़ाब बयान किया तो आप ने दस हज़ार दिरहम में एक सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का मकान ख़रीद कर उस में क़ब्र खोदी और हज़रते त़लहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की मुक़द्दस लाश को पुरानी क़ब्र में से निकाल कर उस क़ब्र में दफ़न कर दिया। काफ़ी मुद्दत गुज़र जाने के बा वुजूद आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का मुक़द्दस जिस्म सलामत और बिल्कुल ही तरोताज़ा था।<sup>(1)</sup> (अकाल स १०१ और एशरे मशरूह स २३५)

## तबसेरा

ग़ौर फ़रमाइये कि कच्ची क़ब्र जो पानी में डूबी रहती थी एक मुद्दत गुज़र जाने के बा वुजूद एक वली और शहीद की लाश ख़राब नहीं हुई तो हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام खुसूसन हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुक़द्दस जिस्म को क़ब्र की मिट्टी भला किस तरह ख़राब कर सकती है ? येही वजह है कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

(121. स. मिश्क़ात) إِنْ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ جُثَاةَ الْأَنْبِيَاءِ (2)

या'नी **अल्लाह** तअ़ाला ने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को ज़मीन पर हराम फ़रमा दिया है कि ज़मीन इन को कभी खा नहीं सकती।

इसी तरह इस रिवायत से इस मस्अले पर भी रोशनी पड़ती है कि शुहदाए किराम अपने लवाज़िमे हयात के साथ अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं, क्यूंकि अगर वोह ज़िन्दा न होते तो क़ब्र में पानी भर जाने से उन को क्या तक्लीफ़ होती ? इसी तरह इस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि शुहदाए किराम ख़ाब में आ कर ज़िन्दों को अपने अहवाल व कैफ़िय्यात से मुत्तलअ करते रहते हैं क्यूंकि खुदा

1..... اسد الغابة، طلحة بن عبيد الله القرشي التيمي، ج 3، ص 87

2..... سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته ودفنه صلى الله عليه وسلم، الحديث:

तअला ने उन को येह कुदरत अता फरमाई है कि वोह ख़ाब या बेदारी में अपनी क़ब्रों से निकल कर ज़िन्दों से मुलाकात और गुफ़्तगू कर सकते हैं। अब ग़ौर फ़रमाइये कि जब शहीदों का येह हाल है और इन की जिस्मानी हयात की येह शान है तो फिर हज़रते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام खास कर हुजूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जिस्मानी हयात और इन के तसरुफ़ात और इन के इख़्तियार व इक्तिदार का क्या आलम होगा।

ग़ौर फ़रमाइये कि वहाबियों के पेशवा मौलवी इमाईल देहलवी ने अपनी किताब तक्विय्युतल ईमान में येह मज़मून लिख कर कि “हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मर कर मिट्टी में मिल गए।” **(نَعُوذُ بِاللَّهِ)** कितना बड़ा जुर्म और जुल्मे अज़ीम किया है।

**अल्लाहु अक्बर** इन बे अदबों और गुस्ताखों ने अपने नोके क़लम से मुहिब्बीने रसूल के कुलूब को किस तरह मज़रूह व ज़ख़मी किया है, इस को बयान करने के लिये हमारे पास अल्फ़ाज़ नहीं हैं।

فَاللّٰهُ الْمُسْتَكْبِي وَهُوَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ

﴿6﴾ **हज़रते जुबैर बिन अल अक्वाम** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की फूफी हज़रते सफ़िया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के फ़रज़न्द हैं। इस लिये येह रिश्ते में शहनशाहे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के फूफीज़ाद भाई और हज़रते सय्यिदा ख़दीजा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के भतीजे और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दामाद हैं। येह भी अ़शरए मुबशशरा या'नी उन दस खुश नसीब सहाबाए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ में से हैं जिन को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जन्नती होने की खुश ख़बरी सुनाई।

बहुत ही बुलन्द कामत, गोरे और छरीरे बदन के आदमी थे और अपनी वालिदए माजिदा की बेहतरीन तर्बिय्यत की बदौलत बचपन ही से निडर, जफ़ाकश, बुलन्द हौसला और निहायत ही



ऊलुल अज़्म और बहादुर थे। सोलह बरस की उम्र में उस वक्त इस्लाम क़बूल किया जब कि अभी छे या सात आदमी ही हल्का बग़ोशे इस्लाम हुवे थे। तमाम इस्लामी लड़ाइयों में दिलावराने अरब के मुकाबले में आप ने जिस मुजाहिदाना बहादुरी का मुज़ाहरा किया तवारीख़े जंग में इस की मिषाल मिलनी मुश्किल है। आप जिस तरफ़ भी तल्वार ले कर बढ़ते कुफ़ार के परे के परे काट कर रख देते।

आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को हुजुरे अक़दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने जंगे ख़न्दक़ के दिन “हवारी” (मुख़्तस व जां निषार दोस्त) का ख़िताब अता फ़रमाया। आप जंगे जमल से बेज़ार हो कर वापस तशरीफ़ ले जा रहे थे कि अम्र बिन ज़रमूज़ ने आप को धोका दे कर शहीद कर दिया। वक्ते शहादत आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की उम्र शरीफ़ चौंसठ बरस की थी। सि. 36 ही. में ब मक़ामे सफ़वान आप की शहादत हुई।

पहले येह “वादियुल सबाअ” में दफ़न किये गए मगर फिर लोगों ने इन की मुक़द्दस लाश को क़ब्र से निकाला और पूरे ए’ज़ाज़ व एहतिराम के साथ ला कर आप को शहरे बसरा में सिपुर्दे खाक किया जहां आप की क़ब्र शरीफ़ मशहूर ज़ियारत गाह है।<sup>(1)</sup> (अक़ाल स ५९५ और ५९६)

## कशमात

### बा कशमत बरछी

जंगे बद्र में सईद बिन अल आस का बेटा “उबैदा” सर से पाउं तक लोहे का लिबास पहने हुवे कुफ़ार की सफ़ में से निकला और निहायत ही घमन्ड और गुरूर से येह बोला कि ऐ मुसलमानो ! सुन लो कि मैं “अबू कर्श” हूं। उस की येह मगरूराना ललकार सुन

①.....(الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الزای، فصل فی الصحابة، ص ५९५ و اسد الغابة،

الزیرین العوام، ج ۲، ص ۲۹۵-۲۹۸ ملقطاً والریاض النضرة فی مناقب العشرة، الباب

السادس فی مناقب الزیرین العوام، الفصل السادس فی خصائصه، ذکر اختصاصه... الخ،

कर हज़रते जुबैर बिन अल अ़वाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जोशे जिहाद में भरे हुवे मुकाबले के लिये अपनी सफ़ से निकले मगर येह देखा कि उस की दोनों आंखों के सिवा उस के बदन का कोई हिस्सा ऐसा नहीं है जो लोहे में छुपा हुवा न हो। आप ने ताक कर उस की आंख में इस ज़ोर से बरछी मारी कि बरछी उस की आंख को छेदती हुई खोपड़ी की हड्डी में चुभ गई और वोह लड़ खड़ा कर ज़मीन पर गिरा और फ़ौरन ही मर गया। हज़रते जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जब उस की लाश पर पाउं रख कर पूरी ताक़त से बरछी को खींचा तो बड़ी मुश्किल से बरछी निकली लेकिन बरछी का सिरा मुड़ कर ख़म हो गया था। येह बरछी एक बा क़रामत यादगार बन कर बरसों तक तबर्क़ बनी रही। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से येह बरछी त़लब फ़रमा ली और इस को अपने पास रखा। फिर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के बा'द खुलफ़ाए राशिदीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के पास यके बा'द दीगरे मुन्तक़िल होती रही और येह हज़रात ए'ज़ाज़ व एहतिराम के साथ इस बरछी की ख़ास हिफ़ाज़त फ़रमाते रहे। फिर जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के फ़रज़न्द हज़रते अब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के पास आ गई यहां तक कि सि. 73 हि. में जब बनू उमय्या के ज़ालिम गवर्नर हज़्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी ने इन को शहीद कर दिया तो येह बरछी बनू उमय्या के क़ब्जे में चली गई। फिर इस के बा'द ला पता हो गई।<sup>(1)</sup> (بخاری شریف ج ۲، ص ۵۷۰، غزوہ بدر)

## तबशेश

बुख़ारी शरीफ़ की येह हदीषे पाक हर मुसलमान दीनदार को झन्झोड़ झन्झोड़ कर मुतनब्बेह कर रही है कि बुज़र्ग़ाने दीन व

①..... صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ۱۲، الحدیث: ۳۹۹۸، ج ۳، ص ۱۸ وحاشیة

البخاری، کتاب المغازی، ج ۲، ص ۵۷۰ و اسد الغابة، عبد الله بن الزبير بن العوام،

ج ۳، ص ۲۴۵-۲۴۸

उ-लमाए सालिहीन के असा, कलम, तल्वार, तस्बीह, लिबास, बरतन वगैरा सामानों को यादगार के तौर पर बतौर तबरक अपने पास रखना हुजुरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और खुलफ़ाए राशिदीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की मुक़द्दस सुन्नत है। ग़ौर फ़रमाइये कि हज़रते जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बरछी को तबरक बना कर रखने में हुजुरे अक़रम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और आप के खुलफ़ाए राशिदीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ने किस क़दर एहतिमाम किया और किस किस तरह इस बरछी का ए'जाज़ व इकराम किया !

बद अक़ीदा लोग जो बुजुग़ानि दीन के तबरक़ात और इन की ज़ियारतों का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं और अहले सुन्नत को ता'ना दिया करते हैं कि येह लोग बुजुर्गों की लाठियों, तल्वारों, क़लमों का इकराम व एहतिराम करते हैं। येह हदीष उन की आंखें खोल देने के लिये सुरमए हिदायत से कम नहीं बशर्ते कि उन की आंखें फूट न गई हों।

### फ़त्हे फ़सतात

मिस्र की जंग में हज़रते अम्र बिन अल आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने लश्कर के साथ फ़सतात के क़ल्ए का कई माह से मुहासरा किये हुवे थे लेकिन इस मज़बूत क़ल्ए को फ़त्ह करने की कोई सबील नज़र नहीं आ रही थी। आप ने दरबारे ख़िलाफ़त में मज़ीद फ़ौजों से इमदाद के लिये दरख़्वासत भेजी। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दस हज़ार मुजाहिदीन और चार अफ़सरों को भेज कर येह तहरीर फ़रमाया कि इन चार अफ़सरों में हर अफ़सर दस हज़ार सिपाह के बराबर है। इन चार अफ़सरों में हज़रते जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भी थे।

हज़रे अम्र बिन अल आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को हम्ला आवर मुहासिरीन की फ़ौज का सिपह सालार बना दिया। हज़रते जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने क़ल्ए का चक्कर लगा कर अन्दाज़ा फ़रमा लिया कि इस क़ल्ए को फ़त्ह करना

निहायत ही दुश्वार है लेकिन आप ने अपने फौजी दस्ते को मुखातब कर के फ़रमाया कि ऐ बहादुराने इस्लाम ! देखो मैं आज अपनी हस्ती को इस्लाम पर फ़िदा और कुरबान करता हूं। येह कह कर आप ने बिल्कुल अकेले क़लए की दीवार पर सीढ़ी लगाई और तन्हा क़लए की फ़सील पर चढ़ कर “**अल्लाहु अकबर**” का ना’रा मारा और एक दम फ़सील के नीचे क़लए के अन्दर कूद कर अकेले ही क़लए की अन्दरूनी फ़ौज से लड़ते हुवे क़लए का फ़ाटक खोल दिया और इस्लामी फ़ौज ना’रए तकबीर बुलन्द करते हुवे क़लए के अन्दर दाख़िल हो गई और दम ज़दन में क़लआ फ़त्ह हो गया।

इस मजबूत व मुस्तहक़म क़लए को जिस बे मिषाल जुरअत और बहादुरी से मिनटों में फ़त्ह कर लिया। इस को तारीख़े जंग में करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अमीरे लश्कर हज़रते अम्र बिन अल आस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** भी इस करामत को देख कर दंग रह गए क्यूंकि वोह कई माह से इस क़लए का मुहासरा किये हुवे थे मगर बा वुजूद अपनी जंगी महारत और आ’ला दरजे की कोशिशों के वोह इस क़लए को फ़त्ह नहीं कर सके थे।

(کتاب عشرہ مشرہ، ص ۲۲۲)

**हज़रते जुबैर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की शक्ल में हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام****

हुजुरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि जंगे बद्र के दिन हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** पीले रंग का इमामा बांधे हुवे हज़रते जुबैर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की शक्लो सूरत में फ़िरिश्तों की फ़ौज ले कर उतरे थे।<sup>(1)</sup> (کنز العمال، ج ۲، ص ۱۲۷، مطبوعہ حیدرآباد)

①.....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الزبير بن العوام... الخ، الحديث:

۳۶۶۲۲، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۹۰

## ﴿7﴾ हज़रते अब्दुरहमान बिन औफ़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह भी अशरए मुबशशरा या'नी दस जन्मती सहाबा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** की फ़ेहरिस्त में हैं। हुजुरे अक़दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की विलादते मुबारका से दस साल बा'द ख़ानदाने कुरैश में पैदा हुवे।<sup>(1)</sup> इब्तिदाई ता'लीम व तर्बियत उसी तरह हुई जिस तरह सरदाराने कुरैश के बच्चों की हुवा करती थी। इन के इस्लाम लाने का सबब येह हुवा कि यमन के एक बुढ़े ईसाई राहिब ने इन को नबिय्ये आखिरुज़्ज़मान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के जुहूर की ख़बर दी और येह बताया कि वोह मक्का में पैदा होंगे और मदीनए मुनव्वरा को हिजरत करेंगे। जब येह यमन से लौट कर मक्कए मुकर्रमा आए तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इन को इस्लाम की तरगीब दी। चुनान्चे, एक दिन इन्हों ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया। जब कि आप से पहले चन्द ही आदमी आगोशे इस्लाम में आए थे चूँकि मुसलमान होते ही आप के घर वालों ने आप पर जुल्मो सितम का पहाड़ तोड़ना शुरू कर दिया इस लिये हिजरत कर के हबशा चले गए। फिर हबशा से मक्कए मुकर्रमा वापस आए और अपना सारा माल व अस्बाब छोड़ कर बिल्कुल ख़ाली हाथ हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चले गए। मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर आप ने बाज़ार का रुख़ किया और चन्द ही दिनों में आप की तिजारत में इस क़दर ख़ैरो बरकत हुई कि आप का शुमार दौलत मन्दों में होने लगा और आप ने क़बीलए अन्सार की एक ख़ातून से शादी भी कर ली।<sup>(2)</sup>

तमाम इस्लामी लड़ाइयों में आप ने जानो माल के साथ शिर्कत की। जंगे उहुद में येह ऐसी जां बाज़ी और सरफ़रोशी के साथ

1.....الطبقات الكبرى لابن سعد، عبدالرحمن بن عوف، ج 3، ص 92

2.....الطبقات الكبرى لابن سعد، عبدالرحمن بن عوف، ج 3، ص 92-93 ملخصاً

कुफ़्फ़ार से लड़े कि इन के बदन पर इक्कीस ज़ख़्म लगे थे और इन के पाउं में भी एक गहरा ज़ख़्म लग गया था जिस की वजह से येह लंगड़ा कर चलते थे।<sup>(1)</sup> आप की सखावत का येह आलम था कि एक मरतबा आप का तिजारती काफ़िला जो सात सो ऊंटों पर मुश्तमिल था। आप ने अपना येह पूरा काफ़िला मअ़ ऊंटों और इन पर लदे हुवे सामानों के खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की राह में ख़ैरात कर दिया।

एक मरतबा हुजूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अपने सहाबा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** को सदका देने की तरगीब दी तो आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने चार हजार दिरहम पेश कर दिये। दूसरी मरतबा चालीस हजार दिरहम और तीसरी मरतबा पांच सो घोड़े, पांच सो ऊंट पेश कर दिये<sup>(2)</sup> ब वक्ते वफ़ात एक हजार घोड़े और पचास हजार दीनारों का सदका किया और जंगे बद्र में शरीक होने वाले सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के लिये चार चार सो दीनार की वसिय्यत फ़रमाई<sup>(3)</sup> और उम्मुल मोअमिनीन हज़रते बीबी आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** और दूसरी अज़वाजे मुतहहरात के लिये एक बाग़ की वसिय्यत की जो चालीस हजार दिरहम की मालिय्यत का था।<sup>(4)</sup>

सि. 32 हि. में कुछ दिनों बीमार रह कर बहत्तर साल की उम्र में विसाल फ़रमाया और मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न हुवे और हमेशा के लिये सखावत व शुजाअत का येह आप्ताब गुरूब हो गया।<sup>(5)</sup>

①..... اسد الغابة، عبد الرحمن بن عوف، ج 3، ص 496

②..... اسد الغابة، عبد الرحمن بن عوف، ج 3، ص 498

③..... اسد الغابة، عبد الرحمن بن عوف، ج 3، ص 499-500

④..... مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب العشرة... الخ، الحديث 6130، ج 2،

⑤..... الاكمال في اسماء الرجال، حرف العين، فصل في الصحابة، ص 303



## करामात

यूं तो आप **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की मुक़द्दस ज़िन्दगी सरापा करामत ही करामत थी मगर हज़रते उ़षमाने ग़नी **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िलाफ़त का मस्अला आप ने जिस तरह तै फ़रमाया वोह आप की बातिनी फ़िरासत और खुदादाद करामत का एक बड़ा ही अनमोल नुमूना है।

### हज़रते उ़षमान **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िलाफ़त

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़मर **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने ब वक्ते वफ़ात छे जन्नती सहाबा हज़रते उ़षमान व हज़रते अली व हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास व हज़रते जुबैर बिन अल अ़वाम व हज़रते अ़ब्दुरहमान बिन औफ़ व हज़रते त़लहा बिन उ़बैदुल्लाह **(رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ)** का नाम ले कर येह वसिय्यत फ़रमाई कि मेरे बा'द इन छे शख़्सों में से जिस पर इत्तिफ़ाके राए हो जाए उस को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया जाए और तीन दिन के अन्दर ख़िलाफ़त का मस्अला ज़रूर तै कर लिया जाए और इन तीन दिनों तक हज़रते सुहैब **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** मस्जिदे नबवी **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** में इमामत करते रहेंगे। इस वसिय्यत के मुताबिक़ येह छे हज़रात एक मकान में जम्अ हो कर दो रोज़ तक मश्वरा करते रहे मगर येह मजलिसे शुरा किसी नतीजे पर न पहुंची। तीसरे दिन हज़रते अ़ब्दुरहमान बिन औफ़ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि तुम लोग जानते हो कि आज तक़रीर ख़िलाफ़त का तीसरा दिन है लिहाज़ा तुम लोग आज अपने में से किसी को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लो। हाज़िरीन ने कहा : ऐ अ़ब्दुरहमान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** हम लोग तो इस मस्अले को हल नहीं कर सके। अगर आप के ज़ेहन में कोई तजवीज़ हो तो पेश कीजिये। आप ने फ़रमाया कि छे आदमियों की येह जमाअत ईषार से काम ले और तीन आदमियों के हक़ में अपने अपने हक़ से दस्त बरदार हो जाए। येह सुन कर हज़रते जुबैर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने ए'लान फ़रमा दिया कि मैं हज़रते अली **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के हक़ में अपने हक़ से दस्त

बरदार होता हूं। फिर हज़रते तलहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते उ़षमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हक़ में अपने हक़ से कनारा कश हो गए। आख़िर में हज़रते सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि मैं ने हज़रते अब्दुरहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपना हक़ दे दिया। अब ख़िलाफ़त के हक़दार हज़रते उ़षमान व हज़रते अली व हज़रते अब्दुरहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ रह गए। फिर हज़रते अब्दुरहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि ऐ उ़षमान व अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا मैं तुम दोनों को यकीन दिलाता हूं कि मैं हरगिज़ हरगिज़ ख़लीफ़ा नहीं बनूंगा, अब तुम दो ही उम्मीद वार रह गए हो इस लिये तुम दोनों ख़लीफ़ा के इन्तिखाब का हक़ मुझे दे दो। हज़रते उ़षमान व हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने इन्तिखाबे ख़लीफ़ा का मस्अला खुशी खुशी हज़रते अब्दुरहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सिपुर्द कर दिया। इस गुफ़्तगू के मुकम्मल हो जाने के बा'द हज़रते अब्दुरहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मकान से बाहर निकल आए और पूरे शहरे मदीना में खुफ़या तौर पर ग़श्त कर के इन दोनों उम्मीद वारों के बारे में राए आम्मा मा'लूम करते रहे। फिर दोनों उम्मीद वारों से अलग अलग तन्हाई में येह अहद ले लिया कि अगर मैं तुम को ख़लीफ़ा बना दूं तो तुम अदल करोगे और अगर दूसरे को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूं तो तुम उस की इताअत करोगे। जब दोनों उम्मीद वारों से येह अहद ले लिया तो फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मस्जिदे नबवी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में आ कर येह ए'लान फ़रमाया कि ऐ लोगो ! मैं ने ख़िलाफ़त के मुआमले में खुद भी काफ़ी ग़ौरो ख़ौज़ किया और इस मुआमले में अन्सार व मुहाजिरीन की राए आम्मा भी मा'लूम कर ली है। चूंकि राए आम्मा हज़रते उ़षमान (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) के हक़ में ज़ियादा है इस लिये मैं हज़रते उ़षमान (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करता हूं। येह कह कर सब से पहले खुद आप ने हज़रते उ़षमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बैअत की और आप के बा'द हज़रते अली

और दूसरे सब सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** ने बैअत कर ली। इस तरह ख़िलाफ़त का मस्अला बिगैर किसी इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार के तै हो गया जो बिला शुबा हज़रते अब्दुरहमान बिन औफ़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की एक बहुत बड़ी करामत है।<sup>(1)</sup>

(عشره مبشره، ص २३१ تا २३२ و بخاری، ج ۱، ص ۵۲۲ مناقب عثمان)

## जन्नत में जाने वाला पहला मालदार

हज़रे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया :

أَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أَغْنِيَاءِ أُمَّتِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ

(या'नी मेरी उम्मत के मालदारों में सब से पहले अब्दुरहमान बिन औफ़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** जन्नत में दाख़िल होंगे।)<sup>(2)</sup> (کنز العمال، ج ۱۲، ص ۲۹۳)

## मां के पेट ही से सईद

हज़रते इब्राहीम बिन अब्दुरहमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** का बयान है कि हज़रते अब्दुरहमान बिन औफ़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** एक मरतबा बेहोश हो गए और कुछ देर बा'द जब वोह होश में आए तो फ़रमाया कि अभी अभी मेरे पास दो बहुत ही ख़ौफ़नाक फ़िरिश्ते आए और मुझ से कहा कि तुम उस खुदा के दरबार में चलो जो अज़ीज़ व अमीन है। इतने में एक दूसरा फ़िरिश्ता आ गया और उस ने कहा कि इन को छोड़ दो येह तो जब अपनी मां के शिकम में थे उसी वक़्त से सआदत आगे बढ़ कर इन से वाबस्ता हो चुकी है।<sup>(3)</sup> (کنز العمال، ج ۱۵، ص ۲۰۳ مطبوعه حیدرآباد)

①.....الرياض النضرة في مناقب العشرة، الباب الثالث في مناقب امير المؤمنين عثمان بن

عفان، الفصل العاشر في خلافته و ما يتعلق بها، ذكر حديث الشورى، ج ۲، ص ۵۳ -

ملقطاً

②.....کنز العمال، کتاب الفضائل، ذکر الصحابة وفضلهم، عبدالرحمن بن عوف، الحديث:

۳۳۴۹۵، ج ۶، الجزء ۱۱، ص ۳۲۸

③.....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ۳۶۶۸۵، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۹۹

### ﴿8﴾ हज़रते सा'द बिन अबी वक्क़ास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन की कुन्यत अबू इस्हाक़ है और खानदाने कुरैश के एक बहुत ही नामवर शख्स हैं जो मक्काए मुकर्रमा के रहने वाले हैं। यह उन खुश नसीबों में से एक हैं जिन को नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जन्नत की बिशारत दी। यह इब्तिदाए इस्लाम ही में जब कि अभी इन की उम्र सतरह बरस की थी दामने इस्लाम में आ गए और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ साथ तमाम मा'रिकों में हाज़िर रहे। यह खुद फ़रमाया करते थे : मैं वोह पहला शख्स हूं जिस ने **अल्लाह** तआला की राह में कुफ़ार पर तीर चलाया और हम लोगों ने हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ रह कर इस हाल में जिहाद किया कि हम लोगों के पास सिवाए बबूल के पत्तों और बबूल की फलियों के कोई खाने की चीज़ न थी।<sup>(1)</sup> (مشکوٰۃ، ج ۲، ص ۵۶۷)

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खास तौर पर इन के लिये यह दुआ फ़रमाई : **﴿اللَّهُمَّ سَدِّدْ سَهْمَهُ وَاجِبْ دَعْوَتَهُ﴾**<sup>(2)</sup> (ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इन के तीर के निशाने को दुरुस्त फ़रमा दे और इन की दुआ मक्बूल फ़रमा )

ख़िलाफ़ते राशिदा के ज़माने में भी यह फ़ारस और रूम के जिहादों में सिपह सालार रहे। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में इन को कूफ़ा का गवर्नर मुक्क़रर फ़रमाया फिर इस ओहदे से मा'जूल कर दिया और यह बराबर जिहादों में कुफ़ार से कभी सिपाही बन कर और कभी इस्लामी लश्कर के सिपह सालार बन कर लड़ते रहे। जब हज़रते

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۶ ملقطاً

ومعرفة الصحابة، معرفة سعد بن ابی وقاص...الخ، الحديث: ۵۲۵، ج ۱، ص ۱۴۵

②.....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، سعد بن ابی وقاص...الخ، الحديث:

उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** अमीरुल मोअमिनीन हुवे तो उन्होंने ने दोबारा इन्हें कूफ़ा का गवर्नर बना दिया। येह मदीनए मुनव्वरा के करीब मक़ामे “अक़ीक़” में अपना एक घर बना कर उस में रहते थे और सि. 55 हि. में जब कि इन की उम्र शरीफ़ पछत्तर बरस की थी उसी मकान के अन्दर विसाल फ़रमाया। आप ने वफ़ात से पहले येह वसियत फ़रमाई थी कि मेरे कफ़न में मेरा ऊन का वोह पुराना जुब्बा ज़रूर पहनाया जाए जिस को पहन कर मैं ने जंगे बद्र में कुफ़फ़ार से जिहाद किया था चुनान्चे, वोह जुब्बा आप के कफ़न में शामिल किया गया। लोग फ़र्ते अक़ीदत से आप के जनाजे को कन्धों पर उठा कर मक़ामे “अक़ीक़” से मदीनए मुनव्वरा लाए और हाकिमे मदीना मरवान बिन अल हक़म ने आप की नमाजे जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बक़ीअ में आप की क़ब्रे मुनव्वर बनाई।

“अशरए मुबशशरा” या’नी जन्नत की खुश ख़बरी पाने वाले दस सहाबियों में से येही सब से आख़िर में दुन्या से तशरीफ़ ले गए और इन के बा’द दुन्या अशरए मुबशशरा के ज़ाहिरी वुजूद से ख़ाली हो गई मगर ज़माना इन की बरकात से हमेशा हमेशा मुस्तफ़ीज़ होता रहेगा।<sup>(1)</sup> (अक़ाल फ़ी अस्मा’र रज़ाल व त़्ज़क़रे अल्हाफ़, ज. १, स. २२, वग़ैरे)

### करामात

आप की करामतों में से चन्द करामात मुन्दरजए ज़ैल हैं :

#### बद नसीब बुझ

हज़रते जाबिर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि कूफ़ा के कुछ लोग हज़रते सा’द बिन अबी वक्कास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की शिकायात

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۶

واسد الغابة، سعد بن مالك القرشي، ج ۲، ص ۴۳۴، ۴۳۷، ملخصاً و ملخصاً

ले कर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरबारे ख़िलाफ़त मदीनए मुनव्वरा में पहुंचे। हज़रते अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन शिकायात की तहक़ीकात के लिये चन्द मो'तबर सहाबियों رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ कूफ़ा भेजा और येह हुक्म फ़रमाया कि कूफ़ा शहर की हर मस्जिद के नमाज़ियों से नमाज़ के बा'द येह पूछा जाए कि हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कैसे आदमी हैं? चुनान्वे, तहक़ीकात करने वालों की इस जमाअत ने जिन जिन मस्जिदों में नमाज़ियों को क़सम दे कर हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के बारे में दरयाफ़्त किया तो तमाम मस्जिदों के नमाज़ियों ने इन के बारे में कलिमए ख़ैर कहा और मद्ह व षना की मगर एक मस्जिद में फ़क़त एक आदमी जिस का नाम “अबू सो'दा” था उस ने हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तीन शिकायात पेश कीं और कहा :

لَا يَفْضِلُ السَّوِيَّةَ وَلَا يَسِيرُ بِالسَّرِيَّةِ وَلَا يَعْدِلُ فِي الْقَضِيَّةِ

(या'नी येह माले ग़नीमत बराबरी के साथ तक्सीम नहीं करते और खुद लश्करों के साथ जिहाद में नहीं जाते और मुक़द्दमात के फैसलों में अदल नहीं करते)

येह सुन कर हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़ौरन ही येह दुआ मांगी : “ऐ **اَللّٰهُ** ! अगर येह शख़्स झूटा है तो इस की उम्र लम्बी कर दे और इस की मोहताजी को दराज़ कर दे और इस को फ़ितनों में मुबतला कर दे।” अब्दुल मलिक बिन उमैर ताबेई का बयान है कि इस दुआ का मैं ने येह अषर देखा कि “अबू सो'दा” इस क़दर बुढ़ा हो चुका था कि बुढ़ापे की वजह से इस की दोनों भवें उस की दोनों आंखों पर लटक पड़ी थीं और वोह दरबदर भीक मांग मांग कर इन्तिहाई फ़कीरी और मोहताजी की ज़िन्दगी बसर करता था और इस बुढ़ापे में भी वोह राह चलती हुई जवान जवान लड़कियों को छेड़ता था और इन के बदन में चुटकियां



भरता रहता था और जब कोई उस से इस का हाल पूछता था तो वोह कहा करता था कि मैं क्या बताऊँ? मैं एक बुढ़ा हूँ जो फ़ितनों में मुब्तला हूँ क्योंकि मुझ को हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رضي الله تعالى عنه की बद दुआ लग गई है।<sup>(1)</sup> (حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۶۵ بحوالہ بخاری و مسلم و بیہقی)

### दुश्मने सहाबा का अन्जाम

एक शख्स हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رضي الله تعالى عنه के सामने सहाबाए किराम رضي الله تعالى عنهم की शान में गुस्ताखी व बे अदबी के अल्फ़ाज़ बकने लगा। आप رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया कि तुम अपनी इस ख़बीष हरकत से बाज़ रहो वरना मैं तुम्हारे लिये बद दुआ कर दूंगा। उस गुस्ताख़ व बे बाक ने कह दिया कि मुझे आप की बद दुआ की कोई परवाह नहीं। आप की बद दुआ से मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ सकता। येह सुन कर आप को जलाल आ गया और आप ने उस वक़्त येह दुआ मांगी कि या **اَللّٰهُمَّ** अगर इस शख्स ने तेरे प्यारे नबी के प्यारे सहाबियों की तौहीन की है तो आज ही इस को अपने क़हरो ग़ज़ब की निशानी दिखा दे ताकि दूसरों को इस से इब्रत हासिल हो। इस दुआ के बा'द जैसे ही वोह शख्स मस्जिद से बाहर निकला तो बिल्कुल ही अचानक एक पागल ऊंट कहीं से दौड़ता हुवा आया और उस को दांतों से पछाड़ दिया और उस के ऊपर बैठ कर उस को इस क़दर जोर से दबाया कि उस की पस्लियों की हड्डियां चूर चूर हो गई और वोह फ़ौरन ही मर गया। येह मन्ज़र देख कर लोग दौड़ दौड़ कर हज़रते सा'द رضي الله تعالى عنه को मुबारक बाद देने लगे की आप की दुआ मक्बूल हो गई और सहाबाए किराम رضي الله تعالى عنهم का दुश्मन हलाक हो गया।<sup>(2)</sup> (دلائل النبوة، ج ۳، ص ۲۰۷ و حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۶۶)

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۵

②.....دلائل النبوة للبيهقي، باب ماجاء في دعاء رسول الله صلى الله عليه وسلم لسعد بن

ابی وقاص...الخ، ج ۶، ص ۱۹۰

## गुस्ताख़ की ज़बान कट गई

जंगे कादिसिय्या में हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رضي الله تعالى عنه इस्लामी लश्करो के सिपह सालार थे लेकिन आप ज़ख्मों से निढ़ाल थे इस लिये मैदाने जंग में निकल कर जंग नहीं कर सके बल्कि सीने के नीचे एक तकया रख कर और पेट के बल लैट कर फ़ौजों की कमान करते रहे। बड़ी खूँ रैज़ और घमसान की जंग के बा'द जब मुसलमानों की फ़त्हे मुबीन हो गई तो एक मुसलमान सिपाही ने येह गुस्ताख़ी और बे अदबी की, कि हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رضي الله تعالى عنه पर नुक्ता चीनी करते हुवे इन की शान में हिजू और बे अदबी के अशआर लिख डाले जो येह हैं।

نَقَاتِلُ حَتَّى يُنْزَلَ اللَّهُ نَصْرَهُ

وَسَعْدُ بِيَابِ الْقَادِسيَّةِ مُعْصَمٌ

(हम लोग जंग करते हैं यहां तक कि **अल्लाह** तअ़ाला अपनी मदद नाज़िल फ़रमा देता है और हज़रते सा'द رضي الله تعالى عنه का येह हाल है कि वोह कादिसिय्या के फाटक पर महफूज़ हो कर बैठे ही रहते हैं।)

فَأَبْنَا وَقَدْ اِمْتُ نِسَاءً كَثِيرَةً

وَنِسْوَةٌ سَعْدٍ لَيْسَ فِيْهِنَّ اَيِّمٌ

(हम जब जंग से वापस आए तो बहुत सी औरतें बेवा हो चुकी थीं लेकिन सा'द की कोई बीवी भी बेवा नहीं हुई।)

इस दिल ख़राश हिजू से हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رضي الله تعالى عنه के क़ल्बे नाजुक पर बड़ी ज़बरदस्त चोट लगी और आप ने इस तरह दुआ मांगी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस शख्स की ज़बान और हाथ को मेरी हिजू करने से रोक दे। आप की ज़बान से इन कलिमात का निकलना था कि यकायक किसी ने उस गुस्ताख़

सिपाही को इस तरह तीर मारा कि उस की ज़बान कट कर गिर पड़ी और उस का हाथ भी कट गया और वोह शख्स एक लफ़्ज़ भी न बोल सका उस का दम निकल गया ।<sup>(1)</sup>

(دلائل النبوة، ج ۳، ص ۲۰۷ والبداية والنهاية، ج ۷، ص ۲۵)

## चेहरा पीठ की तरफ़ हो गया

एक औरत की येह आदते बद थी कि वोह हमेशा हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के मकान में झांक झांक कर आप के घरेलू हालात की जुस्तजू व तलाश किया करती थी । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बार बार उस को समझाया और मन्ज़ किया मगर वोह किसी तरह बाज़ नहीं आई । यहां तक कि एक दिन निहायत जलाल में आप की ज़बान मुबारक से येह अल्फ़ाज़ निकल पड़े कि “तेरा चेहरा बिगड़ जाए” इन लफ़्ज़ों का येह अषर हुवा कि उस औरत की गर्दन घूम गई और उस का चेहरा पीठ की तरफ़ हो गया ।<sup>(2)</sup>

(حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۶۶ بحواله ابن عساکر)

## एक ख़ारिजी की हलाकत

एक गुस्ताख़ ने हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को गाली दी । हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ येह सुन कर रन्जो ग़म में डूब गए और जोश में आ कर येह दुआ कर दी कि “या **اَبَا بَا** عَزَّوَجَلَّ अगर येह तेरे औलिया में से एक वली को गालियां दे रहा है तो इस मजलिस के बरखास्त होने से क़ब्ल ही इस शख्स को अपना कहरो ग़ज़ब दिखा दे ।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ज़बाने

①.....البداية والنهاية، سنة اربع عشرة من الهجرة، غزوة القادسية، ج ۵، ص ۱۱۳ ملتقطاً  
و ثم دخلت سنة اربع وخمسين، ذكر توفى فيها...الخ، ج ۵، ص ۵۷۲-۵۷۳ ملتقطاً

و دلائل النبوة لابی نعیم، احابة الدعوة، اللهم كف لسانه...الخ، ج ۲، ص ۱۲۱  
②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۶

अक़दस से इस दुआ का निकलना था कि उस मर्दूद का घोड़ा बिदक गया और वोह पथ्थरों के ढेर में मुंह के बल गिर पड़ा और उस का सर पाश पाश हो गया जिस से वोह हलाक हो गया।<sup>(1)</sup>

(حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۶۶ بحواله حاکم)

## तबसेरा

हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की मज़कूरए बाला इन पांच करामतों से हम को दो सबक मिलते हैं :

**अव्वल** : येह कि महबूबाने बारगाहे इलाही या'नी अम्बिया **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** व सिद्दीकीन और शुहदाए किराम व सालिहीन **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِم** की शान में अदना दर्जे की बद दुआएं बहुत ही ख़तरनाक और हलाकत आफ़रीं बलाएं हैं। इन बुजुर्गों की बद दुआ और फिटकार और इन की शान में गुस्ताखी और बे अदबी येह क़हरे इलाही का सिग्नल है। इन खुदा के मुक़दस और महबूब बन्दों की ज़रा सी भी बे अदबी को खुदावन्दे कुद्दूस की शाने क़हहारी व जब्बारी मुआफ़ नहीं फ़रमाती बल्कि ज़रूर उन गुस्ताखों को दोनों जहान के अज़ाब में गिरफ़्तार कर देती है।

**दुवम** : येह कि **اَللّٰهُ** तआला के महबूब बन्दों उ-लमा, औलिया और तमाम सालिहीन की बददुआएं बहुत ही ख़तरनाक और हलाकत आफ़रीं बलाएं हैं। इन बुजुर्गों की बद दुआ और फिटकार वोह तलवार है जिस की कोई ढाल नहीं और येह तबाही व बरबादी का वोह ज़हर आलूद तीर है जिस का निशाना कभी ख़ता नहीं करता लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि ज़िन्दगी भर हर हर क़दम पर येह ध्यान रखे कि कभी भी **اَللّٰهُ** तआला के नेक बन्दों की शान में ज़रा भर भी बे अदबी न होने पाए और बुजुर्गाने

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۶

दीन में से किसी की भी बद दुआ न ले बल्कि हमेशा इस कोशिश में लगा रहे कि खुदा **عَزَّوَجَلَّ** के नेक बन्दों की दुआएं मिलती रहें क्योंकि नेक बन्दों की बद दुआएं बरबादी का खौफनाक सिग्नल और इन की दुआएं आबादी का शीरीं फल हैं।

### साठ हजार का लश्कर दरया में

जंगे फारस में हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** इस्लामी लश्कर के सिपह सालार थे। दौराने सफ़र रास्ते में दरयाए दिजला को पार करने की ज़रूरत पेश आ गई और कश्तियां मौजूद नहीं थीं। आप ने लश्कर को दरया में चल देने का हुक्म दे दिया और खुद सब से आगे आगे आप येह दुआ पढ़ते हुवे दरया पर चलने लगे

“نَسْتَعِينُ بِاللّٰهِ وَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ”

लोग आपस में बिला झिजक एक दूसरे से बातें करते हुवे घोड़ों वाले घोड़ों पर सुवार, ऊंटों वाले ऊंटों पर सुवार, पैदल चलने वाले पा पियादा अपने अपने सामानों के साथ दरया पर इस तरह चलने लगे जिस तरह मैदानों में काफ़िले गुज़रते रहते हैं। उषमान नेहदी ताबेई का बयान है कि इस मौक़अ पर एक सहाबी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का प्याला दरया में गिर पड़ा तो दरया की मौजों ने उस प्याले को किनारे पर पहुंचा दिया और उन को उन का प्याला मिल गया। इस लश्कर की ता'दाद साठ हजार (पा पियादा और सुवार) की थी।<sup>(1)</sup>

(दालल النبوة، ج ३، ص २०९ و طبری، ج ४، ص १८)

### तबसेरा

येह रिवायत इस बात की दलील है कि दरया भी औलियाउल्लाह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ** के अहकाम का फ़रमां बरदार है और इन **अल्लाह** वालों की हुकूमत खुदावन्दे कुहूस की अता से जिस

①.....دلائل النبوة لابی نعیم، الفصل التاسع والعشرون، عبور سعد بن ابی وقاص بعسكره...الخ،

ج २، ص १३२-१३ॴ ملخصاً

तरह खुशकी पर है इसी तरह दरयाओं पर भी इन की हुकूमत का सिक्का चलता है। काश ! वोह बद अक्कीदा लोग जो औलियाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ के अदबो एहतिराम से महरूम और इन बुजुर्गों की खुदादाद ताकतों और इन के तसरुफात की कुदरतों के मुन्किर हैं इन रिवायात को बगौर पढ़ते और इन रौशनी के मनारों से हिदायत का नूर हासिल करते।

डॉक्टर मुहम्मद इक़्बाल ने हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की इसी करामत की तरफ़ इशारा करते हुवे अपनी नज़्म में येह शे'र लिखा है :

दशत तो दशत हैं दरया भी न छोड़े हम ने  
बहरे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हम ने

**ना' २९ तक्बीर से ज़लज़ला**

जंगे कादिसिय्या में फ़त्हे हासिल हो जाने के बा'द हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने “हम्स” पर चढ़ाई की। येह रूमियों का बहुत ही मज़बूत क़ल्आ था। बादशाहे रूम ने इस शहर की हिफ़ाज़त के लिये बहुत ही ज़बरदस्त फ़ौज भेजी थी मगर जब हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस शहर के करीब पहुंचे तो आप ने अपने लश्कर को हुक्म फ़रमाया : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ का बुलन्द आवाज़ से ना'रा मारें। चुनान्चे, जब पूरी फ़ौज ने एक साथ ना'रा मारा तो इस शहर में इस ज़ोर का ज़लज़ला आ गया कि तमाम इमारतें हिलने लगीं। फिर दूसरी मरतबा ना'रा मारा तो क़ल्आ और शहर की दीवारें गिरने लगीं और रूमी फ़ौज पर ऐसी दहशत सुवार हो गई कि वोह हथियार भी न उठा सकी बल्कि एक गिरां क़दर रक़म बतौरै जिज़्या के दे कर रूमियों ने मुसलमानों से सुल्ह कर ली। (१) (अزالة الخفاء، مقصد २، ص ५९)

..... 1..... ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، اماماً ترفاروق اعظم، ج ३، ص २१३



## तबशेश

कलिमए तय्यिबा और तक्बीर का ना'रा हर शख्स लगा सकता है मगर तजरिबा येह है कि अगर इस ज़माने के लाखों मुसलमान भी एक साथ मिल कर येह ना'रा मारें तो घास का एक पत्ता और भुस का एक तिन्का भी नहीं हिल सकता मगर सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के इस ना'रे से पथ्थरों की चट्टानों से बने हुवे महल्लात और कल्ए चकना चूर हो कर ज़मीन पर बिखर गए। इस से मा'लूम हुवा कि अगरचें कलिमए तक्बीर के अल्फ़ाज़ व मअ़ानी में तो ज़रा बराबर भी फ़र्क़ नहीं है लेकिन अल्लाह वालों की ज़बानों, आवाज़ों और लहजों में और हमारी ज़बानों, आवाज़ों और लहजों में ज़मीनो आस्मान का फ़र्क़ है। कहां वोह **عَزَّ وَجَلَّ** के नेक और पाकबाज़ बन्दे ? और कहां हम दिलों के मैल और ज़बानों के गन्दे। इस से पता चलता है कि एक ही आयत, एक ही दुआ, एक अल्लाह वाला पढ़ दे तो इस की ताषीर कुछ और होती है और एक गुनाहों वाला पढ़ दे तो इस की ताषीर कुछ और होती है।

डॉक्टर इक्बाल ने इसी मज़मून की तरफ़ इशारा करते हुवे ख़ूब कहा :

परवाज़ है दोनों की इसी एक फ़ज़ा में  
कुरगस का जहां और है शाहीं का जहां और  
अल्फ़ाज़ व मअ़ानी में तफ़ावुत नहीं लेकिन  
मुल्ला की अज़ां और मुजाहिद की अज़ां और

(बाबे जिब्रील)

बहर हाल इस नुक्ते से हरगिज़ हरगिज़ गाफ़िल नहीं रहना चाहिये कि औलियाए किराम और आ़म इन्सानों में बहुत बड़ा फ़र्क़ है जो लोग सिर्फ़ पांच वक़्त नमाज़ पढ़ कर औलियाए किराम के

साथ बराबरी का दा'वा करते फिरते हैं। खुदा की क़सम ! येह लोग गुमराही के इतने गहरे और इस क़दर अन्धेरे ग़ार में गिर पड़े हैं कि इन्हें न तौफ़ीके इलाही की सीढ़ी मिल सकती है न वहां तक आप्ताबे हिदायत की रोशनी पहुंच सकती है। खुदावन्दे करीम इन गुमराहों के कुर्ब और इन के मक्रो फ़रैब के काले जादू से हर मुसलमान को महफूज़ रखे। (आमीन)

### उम्र दराज़ हो गई

एक शख्स निहायत ही ख़तरनाक और जान लेवा बीमारी में मुब्तला हो कर अपनी ज़िन्दगी से नाउम्मीद हो चुका था। वोह हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत अक्दस में हाज़िर हो गया और रो रो कर फ़रयाद करने लगा : ऐ सहाबिये रसूल ! मेरे बच्चे अभी बहुत ही छोटे छोटे हैं मेरे मरने के बा'द इन की परवरिश करने वाला मुझे कोई नज़र नहीं आता लिहाज़ा आप येह दुआ कर दीजिये कि इन बच्चों के बालिग़ होने तक ज़िन्दा रहूं। आप को उस मरीज़ के हाले ज़ार पर रहम आ गया और आप ने उस की तन्दुरुस्ती और सलामती के लिये दुआ कर दी तो वोह शख्स शिफ़ायाब हो गया और बीस बरस तक ज़िन्दा रहा हालांकि किसी को भी उम्मीद तक नहीं थी कि वोह इस बीमारी से बच कर ज़िन्दा रह सकेगा। <sup>(1)</sup> (حجة الله على العالمين ج ٢، ص ٨٢٦ بحواله يميني)

### तबसेरा

हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की इन करामतों में आप ने इन की बद दुआओं का घमरा भी देख लिया और इन की दुआओं का जल्वा भी देख लिया इस लिये इस से

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ٦١٦

सबक़ हासिल कीजिये और हमेशा **अब्बाह** वालों की बद दुआओं से बचते रहिये और इन बुजुर्गों से हमेशा नेक दुआओं की भीक मांगते रहिये अगर आप का येह तर्जें अमल रहा तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** ज़िन्दगी भर आप सआदत और खुश बख़्त के बादशाह बने रहेंगे। **وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ**

### ﴿9﴾ हज़रते सईद बिन जैद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

येह भी अशरए मुबशशरा या'नी उन दस सहाबियों **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** में से हैं जिन को रसूले अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने जन्नती होने की खुश ख़बरी सुनाई है। येह ख़ानदाने कुरैश में से हैं और ज़मानए जाहिलिय्यत के मशहूर मुवहिहद जैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल के फ़रज़न्द और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के बहनोई हैं। येह जब मुसलमान हुवे तो इन को हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने रस्सी से बांध कर मारा और इन के घर में जा कर इन को और अपनी बहन फ़ातिमा बन्ते अल ख़त्ताब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** को भी मारा मगर येह दोनों इस्तिफ़ामत का पहाड़ बन कर इस्लाम पर षाबित क़दम रहे। जंगे बद्र में इन को और हज़रते तल्हा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** को हुज़ुरे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अबू सुफ़यान के क़ाफ़िले का पता लगाने के लिये भेज दिया था इस लिये येह जंगे बद्र के मा'रिके में हिस्सा न ले सके मगर इस के बा'द की तमाम लड़ाइयों में येह शमशीर बक़फ़ हो कर कुफ़ार से हमेशा जंग करते रहे। गन्दुमी रंग, बहुत ही दराज़ क़द, ख़ूब सूरत और बहादुर जवान थे। तक्रीबन सि. 50 हि. में सत्तर बरस की उम्र पा कर मक़ामे "अक़ीक़" में विसाल फ़रमाया और लोगों ने आप के जनाज़ए मुबारका को मदीनए मुनव्वरा ला कर आप को जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न किया। <sup>(1)</sup>

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص ۹۶

و الاستيعاب، باب حرف السین، سعید بن زید بن عمرو، ج ۲، ص ۱۷۸

و اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۵۸-۱۵۹

## कशमात

## कुंवां कब्र बन गया

एक औरत जिस का नाम अरवा बिनते उवैस था इस ने उन के ऊपर हाकिमे मदीना मरवान बिन अल हकम की कचहेरी में येह दा'वा दाइर कर दिया कि इन्हों ने मेरी एक ज़मीन ले ली है। मरवान ने जब इन से जवाब तलब किया तो आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि मैं ने जब रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को येह फ़रमाते हुवे सुना कि जो शख्स किसी की बालिशत बराबर भी ज़मीन ले लेगा तो क़ियामत के दिन उस को सातों ज़मीनों का तौक पहनाया जाएगा तो इस हदीष को सुन लेने के बा'द भला येह क्यूंकर मुमकिन है कि मैं किसी की ज़मीन ले लूंगा। आप का जवाब सुन कर मरवान ने कहा : ऐ औरत ! अब मैं तुझ से कोई गवाह तलब नहीं करूंगा, जा तू उस ज़मीन को ले ले। हज़रते सईद बिन जैद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने येह फैसला सुन कर येह दुआ मांगी : या **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** अगर येह औरत झूटी है तो अन्धी हो जाए और उसी ज़मीन पर मरे। चुनान्वे, इस के बा'द येह औरत अन्धी हो गई। मुहम्मद बिन जैद बिन अब्दुल्लाह बिन उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का बयान है कि मैं ने उस औरत को देखा है कि वोह अन्धी हो गई थी और दीवारें पकड़ कर इधर उधर चलती फिरती थी यहां तक कि वोह एक दिन उसी ज़मीन के एक कुंवे में गिर कर मर गई और किसी ने उस को निकाला भी नहीं इस लिये वोही कुंवां उस की कब्र बन गया और एक अल्लाह वाले की दुआ की मक़बूलियत का जल्वा नज़र आ गया।<sup>(1)</sup>

(مشکوٰۃ، ج ۲، ص ۵۳۶ وحیۃ اللہ ج ۲، ص ۸۶۶ بحوالہ بخاری و مسلم)

①.....مشکوٰۃ المصابیح، کتاب احوال القیامة و بدء الخلق، الحدیث: ۵۹۵۳، ج ۲، ص ۴۱

وحجة الله على العالمين، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء... الخ، المطلب الثالث

فی ذکر جملة جمیلة... الخ، ص ۶۱۶

## तबशेश

अल्लाह वालों की येह करामत है कि इन की दुआएं बहुत ज़ियादा और बहुत जल्द मक्बूल हुवा करती हैं और इन की ज़बान से निकले अल्फ़ाज़ का षमरा खुदावन्दे करीम ज़रूर आलमे वुजूद में लाता है। सच है

जो जज़्ब के आलम में निकले लबे मोमिन से  
वोह बात हकीकत में तक्दीरे इलाही है

﴿10﴾ हज़रते अबू उबैदा बिन अल जर्ह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह खानदाने कुरैश के बहुत ही नामवर और मुअज़्ज़ज़ शख्स है। फ़हर बिन मालिक पर इन का खानदानी शजरा रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के खानदान से मिल जाता है। येह भी “अशराए मुबशशरा” में से हैं। इन का अस्ली नाम “आमिर” है। अबू उबैदा इन की कुन्यत है और इन को बारगाहे रिसालत से अमीनुल उम्मत का लक़ब मिला है। इब्तिदाए इस्लाम ही में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन के सामने इस्लाम पेश किया तो आप फ़ौरन ही इस्लाम क़बूल कर के जानिषारी के लिये बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो गए। पहले आप ने हबशा हिजरत की। फिर हबशा से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चले गए। जंगे बद्र वगैरा तमाम इस्लामी जंगों में इन्तिहाई जां बाज़ी के साथ कुफ़ार से मा'रिका आराई करते रहे। जंगे उहुद में लोहे की टोपी की दो कड़ियां हुजूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रुख़्सारे मुनव्वर में चूभ गई थीं। आप ने अपने दांतों से पकड़ कर इन कड़ियों को खींच कर निकाला। इसी मैं आप के अगले दो दांत टूट गए थे। बहुत ही शेर दिल, बहादुर, बुलन्द कामत और बा रो'ब चेहरे वाले पहलवान थे। सि. 18 हि. में ब मक़ामे

उरदन ताऊने उमवास में वफ़ात पा गए। हज़रते मुआज़ बिन जबल **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और मक़ामे बीसान में दफ़न हुवे। ब वक्ते वफ़ात उम्र शरीफ़ अठ्ठवन बरस थी।<sup>(1)</sup> (अक़ाल فی اسماء الرجال، ص १०८)

### करामत

आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की करामतों में से एक बहुत ही मशहूर और अजीब करामत दर्जे ज़ैल है :

### बे मिषाल मछली

आप तीन सो मुजाहिदीने इस्लाम के लश्कर पर सिपह सालार बन कर “सैफुल बहर” में जिहाद के लिये तशरीफ़ ले गए। वहां फ़ौज का राशन ख़त्म हो गया यहां तक कि येह चोबीस चोबीस घन्टे में एक एक खजूर बतौरै राशन के मुजाहिदीन को देने लगे। फिर वोह खजूरें भी ख़त्म हो गईं। अब भुकमरी के सिवा कोई चारए कार नहीं था। इस मौक़अ पर आप की येह करामत ज़ाहिर हुई कि अचानक समन्दर की तूफ़ानी मौजों ने साहिल पर एक बहुत बड़ी मछली को फैंक दिया और इस मछली को येह तीन सो मुजाहिदीन की फ़ौज अठ्ठारह दिनों तक शिकम सैर हो कर खाती रही और इस की चरबी को अपने जिस्मों पर मलती रही यहां तक कि सब लोग तन्दुरुस्त और ख़ूब फ़रबा हो गए। फिर चलते वक्त इस मछली का कुछ हिस्सा काट कर अपने साथ ले कर मदीनए मुनव्वरा वापस आए और हुज़ूरे अक्दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमते अक्दस में भी इस मछली का एक टुकड़ा पेश किया। जिस को आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने तनावुल फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि इस मछली को **अब्बाह** तअ़ाला ने तुम्हारा रिज़क़ बना कर भेज

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص १०८ ملخصاً

والریاض النظرة فی مناقب العشرة، الباب العاشر فی مناقب ابی عبیده بن الجراح،

الفصل الاول فی نسبه، ج ۲، ص ۳۴۵ والفصل الرابع فی اسلامه، ج ۲، ص ۳۴۶



दिया। येह मछली कितनी बड़ी थी लोगों को इस का अन्दाज़ा बताने के लिये अमीरे लश्कर हज़रते अबू उबैदा बिन अल ज़र्राह رضي الله تعالى عنه ने हुक्म दिया कि इस मछली की दो पस्लियों को ज़मीन में गाड़ दें। चुनान्चे, दोनों पस्लियां ज़मीन पर गाड़ दी गईं तो इतनी बड़ी मेहराब बन गई कि इस के नीचे से कजावा बन्धा हुआ ऊंट गुज़र गया। <sup>(1)</sup> (بخاری شریف، ج ۲، ص ۲۲۶، باب غزوة سيف البحر)

## तबशेश

ऐसे वक़्त में जब कि लश्कर में ख़ूराक का सारा सामान ख़त्म हो चुका था और लश्कर के सिपाहियों के लिये भुकमरी के सिवा कोई चारा ही नहीं था बिल्कुल ही नागहां बिगैर किसी मेहनत मशक्कत के इस मछली का खुश्की में मिल जाना इस को करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है। फिर इतनी बड़ी मछली कि तीन सो भूके सिपाहियों ने इस मछली को काट काट कर अठ्ठारह दिनों तक ख़ूब ख़ूब शिकम सैर हो कर खाया। येह एक दूसरी करामत है क्यूंकि इतनी बड़ी मछली बहुत ही नादिरुल वुजूद है कि इतना बड़ा लश्कर इस को इतने दिनों तक खाता रहे और फिर इस के टुकड़ों को काट काट कर ऊंटों पर लाद कर मदीनए मुनव्वरा तक ले जाए मगर फिर भी मछली ख़त्म नहीं हुई बल्कि इस का कुछ हिस्सा लोग छोड़ कर चले गए। इतनी बड़ी मछली का वुजूद दुनिया में बहुत ही कमयाब है। फिर मछली एक ऐसी चीज़ है कि मरने के बा'द दो चार दिनों में सड़ गल कर और पानी बन कर बह जाती है मगर आदते जारिय्या के ख़िलाफ़ महीनों तक येह मरी हुई मछली ज़मीन पर धूप में पड़ी रही फिर भी बिल्कुल ताज़ा रही न इस में बदबू पैदा हुई न इस का मज़ा तब्दील हुआ येह तीसरी करामत है।

①.....صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة سيف البحر...الخ، الحديث: ۴۳۶۰،

गरज इस अजीबो गरीब मछली का मिल जाना इस एक करामत के ज़िम्न में चन्द करामतें ज़ाहिर हुई जो बिला शुबा अमीरे लश्कर हज़रते अबू उबैदा बिन अल जराह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जन्नती सहाबी की बहुत ही अजीम और नादिरुल वुजूद करामतें हैं। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ

### ﴿11﴾ हज़रते हम्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ येह हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चचा हैं और चूँकि इन्हों ने भी हज़रते षुवैबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का दूध पिया था इस लिये दूध के रिश्ते से येह हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के रिज़ाई भाई भी हैं। सिर्फ़ चार साल हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से उम्र में बड़े थे और बा'ज का कौल है कि सिर्फ़ दो ही साल का फ़र्क़ था। येह हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से इन्तिहाई वालिहाना महब्बत रखते थे। येही वजह है कि जब अबू जहल ने हरमे का'बा में हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को बहुत ज़ियादा बुरा भला कहा तो येह बा वुजूद येह कि अभी मुसलमान नहीं हुवे थे लेकिन जोशे ग़ज़ब में आपे से बाहर हो गए और हरमे का'बा में जा कर अबू जहल के सर पर इस ज़ोर के साथ अपनी कमान से ज़र्ब लगाई कि उस का सर फट गया और एक हंगामा मच गया। आप ने अबू जहल का सर फाड़ कर बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा और कुरैश के सामने ज़ोर ज़ोर से ए'लान करने लगे कि मैं भी मुसलमान हो चुका हूँ ! अब किसी की मजाल नहीं है कि मेरे भतीजे को आज से कोई बुरा भला कह सके।

इस में इख़्तिलाफ़ है कि ए'लाने नबुव्वत के दूसरे साल आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मुसलमान हुवे या छठे साल, बहर हाल आप के मुसलमान हो जाने से बहुत ज़ियादा इस्लाम और मुसलमानों की तक्वियत का सामान हो गया क्यूँकि आप की बहादुरी और जंगी कारनामों का सिक्का तमाम बहादुराने कुरैश के ऊपर बैठा हुवा था।

दरबारे नबुवत से इन को “असदुल्लाह व असदुरसूल” (अब्बाह व रसूल का शेर) का मुअज़्ज़ज़ ख़िताब मिला। सि. 3 हि. जंगे उहुद के मा'रिके में लड़ते हुवे शहादत से सरफ़राज़ हो गए और सय्यिदुश्शुहदा के काबिले एहतिराम लक़ब के साथ मशहूर हुवे।<sup>(1)</sup>

(अकाल, स. ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

## फ़िरिश्तों ने गुस्ल दिया

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का कौल है कि हज़रते हम्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को इन की शहादत के बा'द फ़िरिश्तों ने गुस्ल दिया। चुनान्वे, हुजूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भी इस की तस्दीक़ फ़रमाई कि बेशक मेरे चचा को शहादत के बा'द फ़िरिश्तों ने गुस्ल दिया।<sup>(2)</sup> (حجة الله على العالمين، ص १२३، ج २، بحواله ابن سعد)

## तबसेरा

मस्अला येह है कि शहीद को गुस्ल नहीं दिया जाएगा चुनान्वे, हुजूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते हम्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को न तो खुद गुस्ल दिया न सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को इस का हुक्म फ़रमाया लिहाज़ा जाहिर येही है कि चूंकि तमाम शुहदाए उहुद में आप सय्यिदुश्शुहदा के मुअज़्ज़ज़ ख़िताब से सरफ़राज़ हुवे इस लिये फ़िरिश्तों ने ए'जाज़ी तौर पर आप के ए'जाज़ व इकराम का इज़हार करने के लिये आप को गुस्ल दिया या मुमकिन है कि

①..... شرح الزرقاني على المواهب اللدنية، اسلام حمزة، ج १، ص ४७७

والاكمال في اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل في الصحابة، ص ९०

ومدارج النبوت، قسم دوم، باب سوم بدء الوحي وثبوت نبوت... الخ، ج २، ص ४४

②..... حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة... الخ، ص ११४

हज़रते हज़ल्ला ग़सीलुल मलाइका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की तरह इन को भी गुस्ल की हाज़त हो और फ़िरिश्तों ने इस बिना पर गुस्ल दिया। बहर हाल इस में शक नहीं कि एक सहाबी को गुस्ल देने के लिये आस्मान से फ़िरिश्तों का नुजुल होना और अपने नूरानी हाथों से गुस्ल देना येह सय्यिदुश्शुहदा हज़रते हम्ज़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की एक बहुत ही अज़ीमुश्शान करामत है। (وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ)

### क़ब्र के अन्दर से सलाम का जवाब

हज़रते फ़ातिमा ख़ज़ाइय्या **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** का बयान है कि मैं एक दिन हज़रते सय्यिदुश्शुहदा जनाबे हम्ज़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के मज़ारे अक़दस की ज़ियारत के लिये गई और मैं ने क़ब्रे मुनव्वर के सामने खड़े हो कर **السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عَمَّ رَسُولِ اللَّهِ** कहा तो आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने ब आवाज़े बुन्दल क़ब्र के अन्दर से मेरे सलाम का जवाब दिया जिस को मैं ने अपने कानों से सुना। <sup>(1)</sup> (हिज्जे अल्लह, ज २, पृ ८१३, ख़ोअल-नबी)

इसी तरह शैख़ महमूद कुर्दी शैख़ानी नज़ीले मदीनए मुनव्वरा ने आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की क़ब्रे अन्वर पर हाज़िर हो कर सलाम अज़्र किया तो आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने क़ब्रे मुनव्वर के अन्दर से ब आवाज़े बुलन्द इन के सलाम का जवाब दिया और इरशाद फ़रमाया कि ऐ शैख़ महमूद ! तुम अपने लड़के का नाम मेरे नाम पर “हम्ज़ा” रखना। चुनान्चे, जब खुदावन्दे करीम ने इन को फ़रज़न्द अता फ़रमाया तो इन्होंने ने उस का नाम “हम्ज़ा” रखा। <sup>(2)</sup>

(हिज्जे अल्लह एल-ग़ामिन, ज २, पृ ८१३, ख़ोअल-क़ाबिअत-सलहात)

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ११६

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ११६

## तबशेश

इस रिवायत से हज़रते हम्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की चन्द करामतें मा'लूम हुई :

﴿1﴾ येह कि आप ने क़ब्र के अन्दर से शैख़ महमूद के सलाम को सुन लिया और देख भी लिया कि सलाम करने वाले शैख़ महमूद हैं। फिर आप ने सलाम का जवाब शैख़ महमूद को सुना भी दिया हालांकि दूसरे क़ब्र वाले सलाम करने वालों के सलाम को सुन तो लेते हैं और पहचान भी लेते हैं मगर सलाम का जवाब सलाम करने वालों को सुना नहीं सकते।

﴿2﴾ सय्यिदुश्शुहदा हज़रते हम्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपनी क़ब्र शरीफ़ के अन्दर रहते हुवे येह मा'लूम था कि अभी शैख़ महमूद के कोई बेटा नहीं है मगर आइन्दा इन को खुदावन्दे करीम फ़रज़न्द अता फ़रमाएगा। जभी तो आप ने हुक्म दिया कि ऐ शैख़ महमूद ! तुम अपने लड़के का नाम मेरे नाम पर हम्ज़ा रखना।

﴿3﴾ आप ने जवाबे सलाम और बेटे का नाम रखने के बारे में जो कुछ इरशाद फ़रमाया वोह इस क़दर बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि शैख़ महमूद और दूसरे हाज़िरीन ने सब कुछ अपने कानों से सुन लिया।

मज़कूरए बाला करामतों से इस मस्अले पर रोशनी पड़ती है कि शुहदाए किराम अपनी अपनी क़ब्रों में पूरे लवाज़िमे हयात के साथ ज़िन्दा हैं और उन के इल्म की वुस्अत का येह हाल है कि वोह यहां तक जान और पहचान लेते हैं कि आदमी की पुश्त में जो नुतफ़ा है इस से पैदा होने वाला बच्चा लड़का है या लड़की। येही तो वजह है कि हज़रते हम्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि ऐ शैख़ महमूद ! तुम अपने लड़के का नाम मेरे नाम पर रखना अगर इन को बिल यकीन येह मा'लूम न होता कि लड़का ही पैदा होगा तो आप किस तरह लड़के का नाम अपने नाम पर रखने का हुक्म देते ? وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ

## क़ब्र में से खून निकला

जब हज़रते अमीरे मुआविय्या رضي الله تعالى عنه ने अपनी हुकूमत के दौरान मदीनए मुनव्वरा के अन्दर नहरें खोदने का हुक्म दिया तो एक नहर हज़रते हम्ज़ा رضي الله تعالى عنه के मज़ारे अक़दस के पहलू में निकल रही थी। ला इल्मी में अचानक नहरे खोदने वालों का फावड़ा आप के क़दम मुबारक पर पड़ गया और आप का पाउं कट गया तो उस में से ताज़ा खून बह निकला हालांकि आप को दफ़न हुवे छियालीस साल गुज़र चुके थे। <sup>(1)</sup> (حجة الله، ج ۲، ص ۸۶۳، بحواله ابن سعد)

## तबसेरा

वफ़ात के बा'द ताज़ा खून का बह निकलना येह दलील है कि शुहदाए किराम अपनी क़ब्रों में पूरे लवाज़िमे ह्यात के साथ ज़िन्दा हैं जैसा कि इस से क़ब्ल भी हम इस मस्अले पर इसी किताब में क़दरे रोशनी डाल चुके हैं।

## ﴿12﴾ हज़रते अब्बास رضي الله تعالى عنه

येह हुज़ूर नबिय्ये करीम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के दूसरे चचा हैं इन की उम्र आप से दो साल ज़ाइद थी। येह इब्तिदाए इस्लाम में कुफ़ारे मक्का के साथ थे यहां तक कि आप जंगे बद्र में कुफ़ार की तरफ़ से जंग में शरीक हुवे और मुसलमानों के हाथों में गिरिफ़्तार हुवे मगर मुहक्किनीन का कौल येह है कि येह जंगे बद्र से पहले मुसलमान हो गए थे और अपने इस्लाम को छुपाए हुवे थे और कुफ़ारे मक्का इन को क़ौमिय्यत का दबाव डाल कर ज़बरदस्ती जंगे बद्र में लाए थे। चुनान्चे, जंगे बद्र में लड़ाई से पहले हुज़ूरे

①.....الطبقات الكبرى لابن سعد، طبقات البدرين من المهاجرين، ذكر الطبقة الاولى... الخ،



अकरम ﷺ ने फ़रमा दिया था कि तुम लोग हज़रते अब्बास رضي الله تعالى عنه को क़त्ल मत करना क्योंकि वोह मुसलमान हो गए हैं लेकिन कुफ़ारे मक्का उन पर दबाव डाल कर उन्हें जंग में लाए हैं ।

येह बहुत ही मुअज़्ज़ज़ और मालदार थे और ज़मानए जाहिलिय्यत में भी हुज्जाज़ को ज़मज़म शरीफ़ पिलाने और ख़ानए का'बा की ता'मीरात का ए'ज़ाज़ आप को हासिल था । फ़त्हे मक्का के दिन इन्हीं की तरगीब पर हज़रते अबू सुफ़यान رضي الله تعالى عنه ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया और दूसरे सरदाराने कुरैश भी इन्हीं के मश्वरों से मुतअष्षिर हो कर इस्लाम के दामन में आए । इन के फ़ज़ाइल में चन्द हदीषें भी मरवी हैं और हुज़ूर ﷺ ने इन को बहुत सी बिशारतें और बहुत ज़ियादा दुआएं दी हैं जिन का तज़क़िरा सिहाह सत्ता और हदीष की दूसरी किताबों में तफ़सील के साथ मौजूद है । सि. 32 हि. में अठ्ठासी बरस की उम्र पा कर मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ में सिपुर्दे खाक किये गए ।<sup>(1)</sup>

### कशमल

### इन के तूफ़ैल बारिश हुई

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رضي الله تعالى عنه के दौर ख़िलाफ़त में जब शदीद क़हूत पड़ गया और खुश्क साली की मुसीबत से दुन्याए अरब बद हाली में मुब्तला हो गई तो अमीरुल

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ۶۰۶ مختصراً

واسد الغابة، عباس بن عبدالمطلب، ج ۳، ص ۱۶۳

والسيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدر الكبرى، ذکر رؤيا عاتكة بنت عبدالمطلب،

نهى النبي اصحابه عن قتل...الخ، ص ۲۵۹ ملخصاً

मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़े इस्तिस्का के लिये मदीनए मुनव्वरा से बाहर मैदान में तशरीफ़ ले गए और इस मौक़अ पर हज़ारों सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ का इजतिमाअ हुवा। इस भरे मजमअ में दुआ के वक़्त हज़रते अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बाजू थाम कर उन्हें उठाया और उन को अपने आगे खड़ा कर के इस तरह दुआ मांगी :

“या **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ पहले जब हम लोग क़हूत में मुब्तला होते थे तो तेरे नबी को वसीला बना कर बारिश की दुआएं मांगते थे और तू हम को बारिश अता फ़रमाता था मगर आज हम तेरे नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा को वसीला बना कर दुआ मांगते हैं लिहाज़ा तू हमें बारिश अता फ़रमा दे।”

फिर जब हज़रते अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने भी बारिश के लिये दुआ मांगी तो नागहां उसी वक़्त इस क़दर बारिश हुई कि लोग घुटनों घुटनों तक पानी में चलते हुवे अपने घरों में वापस आए और लोग जोशे मसरत और ज़बए अक़ीदत से आप की चादर मुबारक को चूमने लगे और कुछ लोग आप के जिस्मे मुबारक पर अपना हाथ फेरने लगे चुनान्चे, हज़रते हस्सान बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जो दरबारे नबुव्वत के शाइर थे इस वाक़िए को अपने अशआर में ज़िक्र करते हुवे फ़रमाया है

سَلَّ الْإِمَامُ وَقَدْ تَتَابَعَ جَدُّنَا  
فَسَقَى الْغَمَامُ بِغُرَّةِ الْعَبَّاسِ  
أَحْيَى الْإِلَهِ بِهِ الْبِلَادُ فَأَصْبَحَتْ  
مُخَضَّرَةً الْأَجْنَابِ بَعْدَ الْيَاسِ

(या'नी अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस हालत में दुआ मांगी कि लगातार कई साल से क़हूत पड़ा हुवा था तो बदली ने

हज़रते अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की रोशन पेशानी के तुफैल में सब को सैराब कर दिया। मा'बूदे बर हक़ ने इस बारिश से तमाम शहरों को ज़िन्दगी अता फ़रमाई और ना उम्मीदी के बा'द तमाम शहरों के अतराफ़ हरे भरे हो गए। (1) (بخاری، ج ۱ ص ۵۳۹ و صحیحہ اللہ، ج ۲ ص ۸۶۵ و دلائل النبوة، ج ۳ ص ۲۰۶)

### ﴿13﴾ हज़रते जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते जा'फ़र बिन अबी तालिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के भाई हैं। यह क़दीमुल इस्लाम हैं। इकत्तीस आदमियों के मुसलमान होने के बा'द येह दामने इस्लाम में आए और कुफ़ारे मक्का की ईजा रसानियों से तंग आ कर रहमते आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इजाज़त से पहले हबशा की तरफ़ हिजरत की फिर हबशा से कशितयों पर सुवार हो कर मदीनए तय्यिबा की तरफ़ हिजरत की और खैबर में हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमते आलिया में उस वक़्त पहुंचे जब कि खैबर फ़तह हो चुका था और हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ माले ग़नीमत को मुजाहिदीन के दरमियान तक्सीम फ़रमा रहे थे। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने जोशे महबबत में उन से मुआनका फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि मैं इस बात का फैसला नहीं कर सकता कि जंगे खैबर की फ़तह से मुझे ज़ियादा खुशी हासिल हुई या ऐ जा'फ़र बिन अबू तालिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तुम मुहाजिरीने हबशा की आमद से ज़ियादा खुशी हासिल हुई।

येह बहुत ही जांबाज़ और बहादुर थे और निहायत ही ख़ूब सूरत और वजीहा भी। सि. 8 हि. की जंगे मौता में अमीरे लश्कर

①..... صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب ذکر العباس

بن عبدالمطلب، الحديث: ۳۷۱۰، ج ۲، ص ۵۳۷

وحجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثالث

في ذكر حملة جميلة... الخ، ص ۶۱۵

होने की हालत में इक्तालीस बरस की उम्र में शहादत से सरफ़राज़ हुवे। इस जंग में सिपह सालार होने की वजह से लश्करे इस्लाम का झन्डा इन के हाथ में था। कुफ़्फ़ार ने तल्वार की मार से इन के दाएं हाथ को शहीद कर दिया तो इन्होंने ने झपट कर झन्डे को बाएं हाथ से पकड़ लिया जब बायां हाथ भी कट कर गिर पड़ा तो इन्होंने ने झन्डे को दोनों कटे हुवे बाजूओं से थाम लिया।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : जब हम ने इन की लाश मुबारक को उठाया तो इन के जिस्मे अतहर पर नव्वे ज़ख़्म थे मगर कोई ज़ख़्म भी इन के बदन के पिछले हिस्से पर नहीं लगा था बल्कि तमाम ज़ख़्म इन के बदन के अगले ही हिस्से पर थे। <sup>(1)</sup> (अक़ाल صف़्हा ५८९ व हव़ाशी بخاری وغیره)

## करामत

### जुल जनाहैन

इन का एक लक़ब “जुल जनाहैन” (दो बाजूओं वाला) है। दूसरा लक़ब तय्यार (उड़ने वाला) है। हुज़ूरे अक़दस سَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन की येह करामत बयान फ़रमाई है कि इन के कटे हुवे बाजूओं के बदले में **अब्बाह** तअ़ाला ने इन को दो पर अ़ता फ़रमाए हैं और येह जन्नत के बाग़ों में जहां चाहते हैं उड़ कर चले जाते हैं। <sup>(2)</sup>

### तबशेश

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की इसी करामत को बयान करते हुवे अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अली मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़ख़्रिया अन्दाज़ में येह शे’र इरशाद फ़रमाया है :

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الحیم، فصل فی الصحابة، ص ۵۸۹ ملخصاً

والاستیعاب فی معرفة الاصحاب، جعفرین ابی طالب، ج ۱، ص ۳۱۳ ملخصاً

②.....الاستیعاب فی معرفة الاصحاب، جعفرین ابی طالب، ج ۱، ص ۳۱۳

وَجَعَفَرُ الَّذِي يُمَسِّي وَيُضْحِي  
يَطِيرُ مَعَ الْمَلَائِكَةِ ابْنُ أُمِّ

(या'नी जा'फ़र बिन अबी तालिब رضي الله تعالى عنه जो सुब्हो शाम फ़िरिश्तों के झुरमट में नूरानी बाजूओं से परवाज़ फ़रमाते रहते हैं वोह मेरे हकीकी भाई हैं।) <sup>(1)</sup>

आप رضي الله تعالى عنه की येह करामत नादिरुल वुजूद है क्यूंकि और किसी दूसरे सहाबी के बारे में येह करामत हमारी नज़र से नहीं गुज़री।

#### ﴿14﴾ हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رضي الله تعالى عنه

येह ख़ानदाने कुरैश के बहुत ही नामवर अशराफ़ में से हैं। इन की वालिदा हज़रते बीबी लुबाबए सुग़री رضي الله تعالى عنها उम्मुल मोअमिनीन हज़रते बीबी मैमूना رضي الله تعالى عنها की बहन थीं। येह बहादुरी और फ़न्ने सिपहगिरी व तदाबीरे जंग के ए'तिबार से तमाम सहाबए किराम رضي الله تعالى عنهم में एक खुसूसी इम्तियाज़ रखते हैं। इस्लाम क़बूल करने से पहले इन की और इन के बाप वलीद की इस्लाम दुश्मनी मशहूर थी। जंगे बद्र और जंगे उहुद की लड़ाइयों में येह कुफ़़ार के साथ रहे और इन से मुसलमानों को बहुत ज़ियादा जानी नुक़सान पहुंचा मगर नागहां इन के दिल में इस्लाम की सदाक़त का ऐसा आफ़ताब तूलुअ़ हो गया कि सि. 7 हि. में येह खुद ब खुद मक्का से मदीना जा कर दरबारे रिसालत में हाज़िर हो गए और दामने इस्लाम में आ गए और येह अहद कर लिया कि अब ज़िन्दगी भर मेरी तल्वार कुफ़़ार से लड़ने के लिये बे नियाम रहेगी चुनान्वे, इस के बा'द हर जंग में इन्तिहाई मुजाहिदाना जाहो जलाल के साथ कुफ़़ार के मुकाबले में शमशीर बक़ रहे यहां तक कि सि. 8 हि. में जंगे मौता में जब हज़रते ज़ैद बिन हारिषा व हज़रते जा'फ़र बिन

①.....البداية و النهاية، فصل في ذكر شىء من سيرته العادلة... الخ، ج ٦، ص ٤٨٧

अबी तालिब व हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तीनों सिपह सालारों ने यके बा'द दीगरे जामे शहादत नौश कर लिया तो इस्लामी फ़ौज ने इन को अपना सिपह सालार मुन्तख़ब किया और इन्हों ने ऐसी जांबाज़ी के साथ जंग की, कि मुसलमानों की फ़त्हे मुबीन हो गई। और इसी मौक़अ पर जब कि येह जंग में मसरूफ़ थे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मदीनए मुनव्वरा में सहाबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की एक जमाअत के सामने इन को “सैफुल्लाह” (**अब्बाह** की तल्वार) के ख़िताब से सरफ़राज़ फ़रमाया। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में जब फ़ितनए इर्तिदाद ने सर उठाया तो इन्हों ने इन मा'रिकों में भी खुसूसन जंगे यमामा में मुसलमान फ़ौजों की सिपह सालारी की ज़िम्मेदारी क़बूल की और हर महाज़ पर फ़त्हे मुबीन हासिल की। फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िलाफ़त के दौरान रूमियों की जंगों में भी इन्हों ने इस्लामी फ़ौजों की कमान संभाली और बहुत ज़ियादा फ़तूहात हासिल हुई, सि. 21 हि. में चन्द दिन बीमार रह कर वफ़ात पाई।<sup>(1)</sup> (अकाल, ५९३ व. क़त्ल العمال جلد ۱ و تاريخ الخلفاء)

## कशमात

### जहूर ने अषर नहीं किया

रिवायत है कि जब हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मक़ामे “हीरा” में अपने लश्कर के साथ पड़ाव किया तो लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरे लश्कर ! आप अज़मियों के ज़हर से

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف النخاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۲ مختصراً

و کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة خالدين الوليد، الحديث: ۳۷۰۲۰،

ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۶۱

و تاريخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، ابو بكر الصديق، فصل فيما وقع في خلافته، ص ۵۸

و اسد الغابة، خالد بن الوليد بن المغيرة، ج ۲، ص ۱۳۵-۱۳۸ ملقطاً



बचते रहें। हम लोगों को अन्देशा है कि कहीं येह लोग आप को ज़हर न दे दें। आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि लाओ मैं देख लूं कि अजमियों का ज़हर कैसा होता है? लोगों ने आप को दिया तो आप **بِسْمِ اللَّهِ** पढ़ कर खा गए और आप को बाल बराबर भी ज़रर नहीं पहुंचा और “कल्बी” की रिवायत में येह है कि एक ईसाई पादरी जिस का नाम अब्दुल मसीह था एक ऐसा ज़हर ले कर आया कि इस के खा लेने से एक घन्टे के बा’द मौत यक़ीनी होती है। आप ने उस से वोह ज़हर मांग कर उस के सामने ही

**بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ** पढ़ा और येह ज़हर खा गए। येह मन्ज़र देख कर अब्दुल मसीह ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! येह इतना ख़तरनाक ज़हर खा कर भी ज़िन्दा हैं येह बहुत ही हैरत की बात है। अब बेहतर येही है कि इन से सुल्ह कर लो वरना इन की फ़तह यक़ीनी है। चुनान्वे, उन ईसाइयों ने एक गिरां क़दर जिज़या दे कर सुल्ह कर ली। येह वाकिआ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के दौरे ख़िलाफ़त में हुवा। <sup>(1)</sup>

## तबसेरा

हम इसी किताब की इब्तिदा में “तहक़ीके करामात” के उन्वान के तहत में येह तहरीर कर चुके हैं कि करामत की पच्चीस क़िस्मों में से मोहलिकात का अषर न करना येह भी करामत की एक बहुत ही शानदार क़िस्म है चुनान्वे, मज़कूरए बाला रिवायत इस की बेहतरीन मिषाल है।

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ٦١٧

والكامل في التاريخ، سنة اثنتى عشرة، ذكر وقعة يوم...الخ، ج ٢، ص ٢٤٤ ملقطاً  
وحياة الحيوان الكبرى، باب الحاء المهمة، الحية، فائدة، ج ١، ص ٣٩٠ - ٣٩١ ملخصاً



रिवायात करामत की इसी किस्म की मिषालें हैं कि औलियाउल्लाह जब भी चाहते हैं अपनी रूहानी ताक़त या अपनी मुस्तजाब दुआओं की बदौलत एक चीज़ की हकीकत को बदल कर उस को दूसरी चीज़ बना देते हैं। औलियाउल्लाह की करामतों के तज़क़िरो में इस की हज़ारों मिषालें मिलेंगी।

### ﴿15﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर बिन अल ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं। इन की वालिदा का नाम ज़ैनब बन्ते मुज़ऊन है। येह बचपन ही में अपने वालिदे माजिद के साथ मुशरफ़ ब इस्लाम हुवे। येह इल्मो फ़ज़ल के साथ बहुत ही इबादत गुज़ार और मुत्तकी व परहेज़गार थे। मैमून बिन मेहरान ताबेई का फ़रमान है कि मैं ने अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से बढ़ कर किसी को मुत्तकी व परहेज़गार नहीं देखा। हज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाया करते थे कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मुसलमानों के इमाम हैं। येह हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की वफ़ाते अफ़दस के बा'द साठ बरस तक हज़ के मजमूओं और दूसरे मवाकेअ पर मुसलमानों को इस्लामी अहक़ाम के बारे में फ़तवा देते रहे। मिज़ाज में बहुत ज़ियादा सख़ावत का ग़लबा था और बहुत ज़ियादा सदका व ख़ैरात की आदत थी। अपनी जो चीज़ पसन्द आ जाती थी फ़ौरन ही उस को राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़ैरात कर देते थे। आप ने अपनी ज़िन्दगी में एक हज़ार गुलामों को ख़रीद ख़रीद कर आज़ाद फ़रमाया। जंगे ख़न्दक और इस के बा'द की इस्लामी लड़ाइयों में बराबर कुफ़ार से जंग करते रहे। हां अलबत्ता हज़रते अली और हज़रते मुआविय्या (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) के दरमियान जो लड़ाइयां हुई आप उन लड़ाइयों में ग़ैर जानिबदार रहे।

अब्दुल मलिक बिन मरवान की हुकूमत के दौरान हज्जाज बिन यूसुफ़ षकफ़ी अमीरुल हज बन कर आया। आप ने खुतबे के दरमियान उस को टोक दिया। हज्जाज ज़ालिम ने जल भुन कर अपने एक सिपाही को हुक्म दे दिया कि वोह ज़हर में बुझाया हुवा नेज़ा हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पाउं में मार दे। चुनान्वे, उस मर्दूद ने आप के पाउं में नेज़ा मार दिया। ज़हर के अषर से आप का पाउं बहुत ज़ियादा फूल गया और आप अलील हो कर साहिबे फ़िराश हो गए। मक्कार हज्जाज बिन यूसुफ़ आप की इयादत के लिये आया और कहने लगा कि हज़रत ! काश ! मुझे मा'लूम हो जाता कि किस ने आप को नेज़ा मारा है ? आप ने फ़रमाया : इस को जान कर फिर तुम क्या करोगे ? हज्जाज ने कहा कि अगर मैं उस को क़त्ल न करूं तो खुदा मुझे मार डाले। हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि तुम कभी हरगिज़ हरगिज़ उस को क़त्ल नहीं करोगे उस ने तो तुम्हारे हुक्म ही से ऐसा किया है। येह सुन कर हज्जाज बिन यूसुफ़ कहने लगा कि नहीं नहीं, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! आप हरगिज़ हरगिज़ येह ख़याल न करें और जल्दी से उठ कर चल दिया। इसी मरज़ में सि. 73 हि. में हज़रते अब्दुल्लाह बिन ज़ैबर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की शहादत के तीन माह बा'द हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ चोरासी या छियासी बरस की उम्र पा कर वफ़ात पा गए और मक्काए मुअज़्ज़िमा में मक़ामे “मुह़स्सब” या मक़ामे “ज़ी तुवा” में मदफून् हुवे।<sup>(1)</sup>

(اسد الغابة، ج ۳، ص ۲۲۹، اکمال، ص ۶۰۵ و تذکرة الحفاظ، ج ۱، ص ۳۵)

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ۶۰۴-۶۰۵

واسد الغابة، عبد الله بن عمر بن الخطاب، ج ۳، ص ۳۴۷-۳۵۱ ملخصاً

## कशमात

### शेर दुम हिलाता हुवा भावा

अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने तबक़ात में तहरीर फ़रमाया है कि एक शेर रास्ते में बैठा हुवा था और काफ़िले वालों का रास्ता रोके हुवे था। हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस के करीब जा कर फ़रमाया कि रास्ते से अलग हट कर खड़ा हो जा। आप की येह डांट सुन कर शेर दुम हिलाता हुवा रास्ते से दूर भाग निकला।<sup>(1)</sup>

### एक फ़िरिशते से मुलाक़ात

हज़रते अता बिन अबी रबाह का बयान है कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दोपहर के वक़्त देखा कि एक बहुत ही ख़ूब सूरत सांप ने सात चक्कर लगा कर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया। फिर मक़ामे इब्राहीम पर दो रक़अत नमाज़ पढ़ी। आप ने उस सांप से फ़रमाया : अब आप जब कि तवाफ़ से फ़ारिग़ हो चुके हैं यहां पर आप का ठहरना मुनासिब नहीं है क्योंकि मुझे येह ख़तरा है कि मेरे शहर के नादान लोग आप को कुछ ईज़ा पहुंचा देंगे। सांप ने बग़ौर आप के कलाम को सुना फिर अपनी दुम के बल खड़ा हो गया और फ़ौरन ही उड़ कर आस्मान पर चला गया। इस तरह लोगों को मा'लूम हो गया कि येह कोई फ़िरिशता था जो सांप की शक़ल में तवाफ़े का'बा के लिये आया था।<sup>(2)</sup>

### ज़ियाद कैसे हलाक़ हुवा ?

ज़ियाद सल्तनते बनू उमय्या का बहुत ही ज़ालिम व जाबिर गवर्नर था। हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को येह ख़बर

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ११६

②.....دلائل النبوة لابی نعيم، اجابة الدعوة، اذا بصر بحية...الخ، ج २، ص १२२

मिली कि वोह हिजाज का गवर्नर बन कर आ रहा है। आप को येह हरिगज हरगिज गवारा न था कि मक्काए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा पर ऐसा ज़ालिम हुक्मत करे। चुनान्चे, आप ने येह दुआ मांगी कि या **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इब्ने सुमय्या (ज़ियाद) की इस तरह मौत हो जाए कि इस के किसान में कोई मुसलमान क़त्ल न किया जाए। आप की येह दुआ मक्बूल हो गई कि अचानक ज़ियाद के अंगूठे में त़ाऊन की गलटी निकल पड़ी और वोह एक हफ़्ते के अन्दर ही एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर गया।<sup>(1)</sup> (अइन एसा क्रुअल मुत़ाब, ज ५, स २३१)

### तबशेश

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** की पहली करामत से येह मा'लूम हुवा कि अल्लाह वालों की हुक्मत का सिक्का न सिर्फ़ इन्सानों ही के दिलों पर होता है बल्कि इन के हाकिमाना तसरूफ़ात का परचम दरिन्दों, चरिन्दों, परन्दों के दिलों पर भी लहराता रहता है और सब के सब **اَللّٰهُ** वालों के फ़रमां बरदार हो जाते हैं। येही वोह मज़मून है जिस की तरफ़ इशारा करते हुवे हज़रते शैख़ सा'दी **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया है

تو ہم گردن از حکم داور میچ

کہ گردن نہ پیچد ز حکم تو میچ

(या'नी तुम खुदावन्दे तअ़ाला के हुक्म से गर्दन न मोड़ो ताकि कोई मख़्लूक़ तुम्हारे हुक्म से गर्दन न मोड़े)

मतलब येह है कि अगर तुम खुदा के फ़रमां बरदार बने रहोगे तो खुदा की तमाम मख़्लूक़ात तुम्हारी फ़रमां बरदार बनी रहेगी।

दूसरी करामत से येह सबक़ मिलता है कि जब का'बए मुअज़्ज़मा के त़वाफ़ के लिये फ़िरिश्ते सांप की शक्ल में आते हैं तो

①.....الكامل فى التاريخ، سنة ثلاث و خمسين، ذكر وفاة زیاد، ج ٣، ص ٣٤١



फिर ज़ाहिर है कि फिरिश्ते इन्सानों की शक्ल में भी ज़रूर ही आते होंगे। लिहाज़ा हर हाजी को येह ध्यान रखना चाहिये कि हरमे का'बा में हरगिज़ हरगिज़ किसी से उलझना नहीं चाहिये। खुदा न ख़्वास्ता तुम किसी इन्सान से झगड़ा तकरार करो और वोह हकीकत में कोई फिरिश्ता हो जो इन्सान के रूप में तकरार कर रहा हो तो फिर येह समझ लो कि किसी फिरिश्ते से लड़ने झगड़ने का अन्जाम अपनी हलाकत के सिवा और क्या हो सकता है ?

तीसरी करामत से ज़ाहिर है कि अल्लाह वालों की दुआएं उस तीर की तरह होती हैं जो कमान से निकल कर निशाने से बाल बराबर ख़ता नहीं करतीं। इस लिये हमेशा इस का ख़याल रखना चाहिये कि कभी भी किसी बद दुआ की ज़द और फिटकार में न पड़ें और मगरिब ज़दा मुल्हिदों और बे दीनों की तरह हरगिज़ हरगिज़ येह न कहा करें कि “मियां ! किसी की दुआ या बद दुआ से कुछ नहीं होता, येह मुल्ला लोग ख़्वाह म ख़्वाह लोगों को बद दुआ की धूस दिया करते हैं” बल्कि येह ईमान रखें कि बुजुर्गों की दुआओं और बद दुआओं में बहुत ज़ियादा ताषीर है।

### ﴿16﴾ हज़रते सा'द बिन मुआज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते सा'द बिन मुआज़ बिन अल नो'मान अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ येह मदीनए मुनव्वरा के रहने वाले बहुत ही जलीलुल कद्र सहाबी हैं। हुजुरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले जाने से पहले ही हज़रते मुसअब बिन उमैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को मदीनए मुनव्वरा भेज दिया कि वोह मुसलमानों को इस्लाम की ता'लीम दें और ग़ैर मुस्लिमों में इस्लाम की तब्लीग़ करते रहें। चुनान्चे, हज़रते मुसअब बिन उमैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तब्लीग़ से हज़रते सा'द बिन मुआज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ दामने इस्लाम में आ गए और खुद इस्लाम क़बूल करते ही येह ए'लान फ़रमा दिया कि मेरे क़बीलए बनू अब्दुल अशहल का जो मर्द या औरत इस्लाम से मुंह

मोड़ेगा मेरे लिये हराम है कि मैं उस से कलाम करूं। आप का येह ए'लान सुनते ही कबीलए बनू अब्दुल अशहल का एक एक बच्चा दौलते इस्लाम से माला माल हो गया। इस तरह आप का मुसलमान हो जाना मदीनए मुनव्वरा में इशाअते इस्लाम के लिये बहुत ही बाबरकत पाबित हुवा।<sup>(1)</sup>

आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** बहुत ही बहादुर और इन्तिहाई निशाने बाज तीर अन्दाज भी थे। जंगे बद्र और जंगे उहुद में खूब खूब दादे शुजाअत दी, मगर जंगे खन्दक में ज़ख्मी हो गए और इसी ज़ख्म में शहादत से सरफराज हो गए। इन की शहादत का वाकिआ येह है कि आप एक छोटी सी ज़िरह पहने हुवे नेजा ले कर जोशे जिहाद में लड़ने के लिये मैदाने जंग में जा रहे थे कि इब्नुल अरका नामी काफ़िर ने ऐसा निशाना बान्ध कर तीर मारा कि जिस से आप की एक रग जिस का नाम “अकहल” है कट गई। हुजुरे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इन के लिये मस्जिदे नबवी **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** में एक खैमा गाड़ा और इन का इलाज शुरूअ किया। खुद अपने दस्ते मुबारक से दो मरतबा इन के ज़ख्म को दागा और इन का ज़ख्म भरने लग गया था लेकिन इन्होंने शौके शहादत में खुदावन्दे तआला से येह दुआ मांगी :

“या **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** तू जानता है कि किसी कौम से मुझे जंग करने की इतनी तमन्ना नहीं है जितनी कुफ़ारे कुरैश से लड़ने की तमन्ना है जिन्होंने तेरे रसूल को झुटलाया और इन को इन के वतन से निकाला, ऐ **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** मेरा तो येही खयाल है कि अब तू ने हमारे और कुफ़ारे कुरैश के दरमियान जंग का खातिमा कर दिया है लेकिन अगर अभी कुफ़ारे कुरैश से कोई जंग बाकी रह गई हो जब तो मुझे ज़िन्दा रखना ताकि मैं तेरी राह में उन काफ़िरों से जंग करूं और अगर अब उन लोगों से कोई जंग बाकी न रह गई हो तो तू मेरे इस ज़ख्म को फाड़ दे और इसी ज़ख्म में तू मुझे शहादत अता फ़रमा दे।”

खुदा की शान कि आप की येह दुआ खत्म होते ही बिल्कुल अचानक आप का ज़ख़्म फट गया और खून बह कर मस्जिदे नबवी में बनी गि़फ़ार के ख़ैमे के अन्दर पहुंच गया। उन लोगों ने चोंक कर कहा कि ऐ ख़ैमे वालो ! येह कैसा खून है जो तुम्हारी तरफ़ से बह कर हमारी तरफ़ आ रहा है ? जब लोगों ने देखा तो हज़रते सा'द बिन मुआज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़ख़्म से खून जारी था और इसी ज़ख़्म में इन की शहादत हो गई।<sup>(1)</sup> (بخاری، ج ۲، ص ۵۹۱، باب مرجع النبی من الاحزاب)

ऐन वफ़ात के वक़्त इन के सिरहाने हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ फ़रमा हैं। जां कनी के आलम में इन्हों ने आख़िरी बार जमाले नबुव्वत का दीदार किया और कहा : السلام عليك يا رسول الله : फिर बुलन्द आवाज़ से कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं गवाही देता हूं कि आप عَزَّ وَجَلَّ के रसूल हैं और आप ने तब्लीगे रिसालत का हक़ अदा कर दिया।<sup>(2)</sup> (مدارج النبوة، ج ۲، ص ۱۸۱)

आप का साले विसाल 5 हिजरी है। ब वक़्ते विसाल आप की उम्र शरीफ़ 37 बरस की थी। जन्तुल बकीअ में मदफून हैं। जब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इन को दफ़ना कर वापस आ रहे थे तो शिद्दते ग़म से आप के आंसूओं के क़तरात आप की रीश मुबारक पर गिर रहे थे।<sup>(3)</sup> (اکمال، ص ۵۹۶، واسد الغابة، ج ۲، ص ۲۹۸)

①.....صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرجع النبی صلی الله علیه وسلم من احزاب...الخ، الحدیث: ۴۱۲۲، ج ۳، ص ۵۷

②.....مدارج النبوت، قسم سوم، باب پنجم، ج ۲، ص ۱۸۱

③.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۶

واسد الغابة، سعد بن معاذ رضی الله عنه، ج ۲، ص ۴۴۳

## कशमात

### जनाजे में सत्तर हजार फिरिश्ते

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रावी हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि सा'द बिन मुआज़ की मौत से अंशे इलाही हिल गया और सत्तर हजार फिरिश्ते इन के जनाजे में शरीक हुवे।<sup>(1)</sup> (ज़रक़ानि, ج २, ص २३३ و حجة الله ج २, ص २१८)

### मिट्टी मुश्क बन गई

मुहम्मद बिन शुरहबील बिन हसना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का बयान है कि एक शख्स ने हज़रते सा'द बिन मुआज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की क़ब्र की मिट्टी हाथ में ली तो उस में से मुश्क की खुशबू आने लगी और एक रिवायत में येह भी है कि जब उन की क़ब्र खोदी गई तो उस में से खुशबू आने लगी जब हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से इस का ज़िक्र किया गया तो आप ने **سُبْحَنَ اللَّهُ ! سُبْحَنَ اللَّهُ !** फ़रमाया और मसरत के आषार आप के रुख़सारे अन्वर पर नुमूदार हो गए।<sup>(2)</sup>

(ज़रक़ानि, ج २, ص २३३ و حجة الله ج २, ص २१८ بحواله ابن سعد)

### फिरिश्तों से खैमा भर गया

हज़रते सलमा बिन अस्लम बिन हरीश رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कहते हैं कि जब हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते सा'द बिन मुआज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के खैमे में दाख़िल हुवे तो वहां कोई भी आदमी मौजूद न था मगर फिर भी हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लम्बे लम्बे

①..... شرح الزرقاني على المواهب اللدنية، غزوة بني قريظة، ج ३، ص ९२  
وحجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة... الخ، ص ६१७

②..... شرح الزرقاني على المواهب اللدنية، غزوة بني قريظة، ج ३، ص ९८-९९

क़दम रख कर फ़लांगते हुवे ख़ैमे में तशरीफ़ ले गए और उन की लाश के पास थोड़ी देर ठहर कर बाहर तशरीफ़ लाए । मैं ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने आप को देखा कि आप ख़ैमे में लम्बे लम्बे क़दम के साथ फ़लांगते हुवे दाख़िल हुवे हालांकि ख़ैमे में कोई शख्स भी मौजूद न था । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ख़ैमे में इस क़दर फ़िरिश्तों का हुजूम था कि वहां क़दम रखने की जगह न थी इस लिये मैं ने फ़िरिश्तों के बाजूओं को बचा बचा कर क़दम रखा । <sup>(1)</sup> (حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۶۸ بحواله ابن سعد)

## तबसेरा

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के नेक और महबूब बन्दों की निस्वत से जब उन की क़ब्र की मिट्टी में मुश्क की खुशबू पैदा हो जाती है तो उन मुक़द्दस क़ब्रों के पास हाज़िर होने वाले ज़ाइरों की अगर बीमारियां ज़ाइल हो कर इन्हें तन्दुरुस्ती मिल जाए या इन की नुहूसत व शकावत दूर हो कर इन्हें बरकत व सआदत हासिल हो जाए तो इस में कौन सा तअज्जुब है ? जिन की ताषीर से मिट्टी मुश्क बन सकती है क्या उन की ताषीर से बीमारी तन्दुरुस्ती और बद नसीबी खुश नसीबी नहीं बन सकती ?

काश ! वोह लोग जो औलियाउल्लाह की क़ब्रों को मिट्टी का ढेर कह कर क़ब्रों की ज़ियारत करने वालों का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं और इन मुक़द्दस क़ब्रों की ताषीरों का इन्कार करते रहते हैं इस रिवायत से हिदायत की रोशनी हासिल करते और मक़ाबिरे औलियाउल्लाह का अदब व एह्तिराम करते ।

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۷

### ﴿17﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हिराम رضي الله تعالى عنه

येह मदीनए मुनव्वरा के रहने वाले अन्सारी हैं और मशहूर सहाबी हज़रते जाबिर رضي الله تعالى عنه के वालिदे माजिद हैं। कबीलए अन्सार में येह अपने खानदान बनी सलमा के सरदार और रहमते आलम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के बहुत ही जां निषार सहाबी हैं। जंगे बद्र में बड़ी बहादुरी और जांबाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़े और सि. 3 हि. में जंगे उहुद के दिन सब से पहले जामे शहादत से सैराब हुवे।<sup>(1)</sup>

बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरा की रिवायत है कि इन्हों ने रात में अपने फ़रज़न्द हज़रते जाबिर رضي الله تعالى عنه को बुला कर येह फ़रमाया : मेरे प्यारे बेटे ! कल सुब्ह जंगे उहुद में सब से पहले मैं ही शहादत से सरफ़राज़ होऊंगा और बेटा सुन लो ! रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के बा'द तुम से ज़ियादा मेरा कोई प्यारा नहीं है लिहाज़ा तुम मेरा कर्ज़ अदा कर देना और अपनी बहनों के साथ अच्छा सुलूक करना येह मेरी आख़िरी वसियत है।

हज़रते जाबिर رضي الله تعالى عنه का बयान है कि वाकेई सुब्ह को मैदाने जंग में सब से पहले मेरे वालिद हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हिराम رضي الله تعالى عنه ही शहीद हुवे।<sup>(2)</sup>

(بخاری، ج ۱، ص ۱۸۰ و اسد الغابة، ج ۳، ص ۲۳۲)

## कशमाब

### फ़िरिशतों ने साया किय़ा

हज़रते जाबिर رضي الله تعالى عنه कहते हैं कि जंगे उहुद के दिन जब मेरे वालिद हज़रते अब्दुल्लाह अन्सारी رضي الله تعالى عنه की मुक़द्दस

①..... اسد الغابة، عبد الله بن عمرو بن حرام، ج ۳، ص ۳۵۳

②..... صحيح البخاری، کتاب الجنائز، باب هل يخرج الميت من القبر... الخ، الحديث:



लाश को उठा कर बारगाहे रिसालत में लाए तो उन का येह हाल था कि काफ़िरों ने उन के कान और नाक को काट कर उन की सूरत बिगाड़ दी थी। मैं ने चाहा कि उन का चेहरा खोल कर देखूं तो मेरी बरादरी और कुम्बा कबीले वालों ने मुझे इस खयाल से मन्अ कर दिया कि लड़का अपने बाप का येह हाल देख कर रन्जो ग़म से निढाल हो जाएगा। इतने में मेरी फूफी रोती हुई उन की लाश के पास आई तो सय्यिदे आलम हुजुरे अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया कि तुम इन पर रोओ या न रोओ फ़िरिश्तों की फ़ौज बराबर लगातार इन की लाश पर अपने बाजूओं से साया करती रही है।<sup>(1)</sup> (بخاری، ج ۱، ص ۳۹۵)

### कफ़न सलामत, बदन तरो ताज़ा

हज़रते जाबिर **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** का बयान है कि जंगे उहुद के दिन मैं ने अपने वालिद हज़रते अब्दुल्लाह **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** को एक दूसरे शहीद (हज़रते अम्र बिन जमूह **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ**) के साथ एक ही क़ब्र में दफ़न कर दिया था। फिर मुझे येह अच्छा नहीं लगा कि मेरे बाप एक दूसरे शहीद की क़ब्र में दफ़न हैं इस लिये मैं ने इस खयाल से कि उन को एक अलग क़ब्र में दफ़न करूं। छे माह के बा'द मैं ने उन की क़ब्र को खोद कर लाश मुबारक को निकाला तो वोह बिल्कुल उसी हालत में थे जिस हालत में उन को मैं ने दफ़न किया था बजुज़ इस के कि उन के कान पर कुछ तग़य्युर हुवा था।<sup>(2)</sup> (بخاری، ج ۱، ص ۸۰ او حاشیه بخاری)

और इब्ने सा'द की रिवायत में है कि हज़रते अब्दुल्लाह **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** के चेहरे पर ज़ख़्म लगा था और इन का हाथ इन के

①..... صحیح البخاری، کتاب الجهاد والسير، باب ظل المثلثة علی الشہید، الحدیث:

۲۵۸، ج ۲، ص ۲۸۱۶

②..... صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب هل ینخرج المیت من القبر... الخ، الحدیث:

۴۵۴، ج ۱، ص ۱۳۵۱

जख़्म पर था जब इन का हाथ इन के जख़्म से हटाया गया तो जख़्म से खून बहने लगा। फिर जब इन का हाथ इन के जख़्म पर रख दिया गया तो खून बन्द हो गया और इन का कफ़न जो एक चादर थी जिस से चेहरा छुपा दिया गया था और इन के पैरों पर घास डाल दी गई थी, चादर और घास दोनों को हम ने इसी तरह पर पड़ा हुआ पाया।<sup>(1)</sup> (ابن سعد، ج ۳، ص ۵۲۲)

फिर इस के बा'द मदीनए मुनव्वरा में नहरों की खुदाई के वक्त जब हज़रते अमीरे मुआविया رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने यह ए'लान कराया कि सब लोग मैदाने उहुद से अपने अपने मुर्दों को उन की कब्रों से निकाल कर ले जाएं तो हज़रते जाबिर رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं कि मैं ने दोबारा छियालीस बरस के बा'द अपने वालिदे माजिद हज़रते अब्दुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ की कब्र खोद कर उन की मुक़द्दस लाश को निकाला तो मैं ने उन को इस हाल में पाया कि अपने जख़्म पर हाथ रखे हुवे थे। जब उन का हाथ उठाया गया तो जख़्म से खून बहने लगा फिर जब हाथ जख़्म पर रख दिया गया तो खून बन्द हो गया और उन का कफ़न जो एक चादर का था ब दस्तूर सहीह व सालिम था।<sup>(2)</sup> (حجة اللہ علی العالمین، ج ۲، ص ۸۶۴ بحوالہ بیہقی)

## कब्र में तिलावत

हज़रते तल्हा बिन उबैदुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं कि मैं अपनी ज़मीन की देख भाल के लिये “गाबा” जा रहा था तो रास्ते में रात हो गई। इस लिये मैं हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हिराम رضی اللہ تعالیٰ عنہ की कब्र के पास ठहर गया। जब कुछ रात गुज़र गई तो

1.....الطبقات الكبرى لابن سعد، عبد الله بن عمرو بن حرام، ج ۳، ص ۴۲۴

2.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۷

मैं ने उन की क़ब्र में से तिलावत की इतनी बेहतरीन आवाज़ सुनी कि इस से पहले इतनी अच्छी क़िराअत मैं ने कभी भी नहीं सुनी थी !

जब मैं मदीनए मुनव्वरा को लौट कर आया और मैं ने हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से इस का तज़क़िरा किया तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि क्या ऐ तल्हा ! तुम को येह मा'मूल नहीं कि खुदा ने उन शहीदों की अरवाह को क़ब्ज़ कर के ज़बरजद और याकूत की क़िन्दीलों में रखा है और उन क़िन्दीलों को जन्नत के बाग़ों में आवेज़ां फ़रमा दिया है जब रात होती है तो येह रूहें क़िन्दीलों से निकाल कर उन के जिस्मों में डाल दी जाती हैं फिर सुब्ह को वोह अपनी जगहों पर वापस लाई जाती हैं।<sup>(1)</sup> (حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۷۱ بحواله ابن مندہ)

### तबशेश

येह मुस्तनद रिवायात इस बात का षुबूत हैं कि हज़रते शुहदाए किराम अपनी अपनी क़ब्रों में पूरे लवाज़िमे हयात के साथ ज़िन्दा हैं और वोह अपने जिस्मों के साथ जहां चाहें जा सकते हैं तिलावत कर सकते हैं और दूसरे क़िस्म क़िस्म के तसरुफ़ात भी कर सकते और करते हैं।

### ﴿18﴾ हज़रते मुझाज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन की कुन्यत अबू अब्दुल्लाह है। येह क़बीलए ख़ज़रज के अन्सारी और मदीनए मुनव्वरा के बाशिन्दे हैं। येह उन सत्तर खुश नसीब अन्सार में से एक हैं जिन लोगों ने हिजरत से बहुत पहले मैदाने अरफ़ात की घाटी में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बैअते इस्लाम की थी। येह जंगे बद्र और इस के बा'द तमाम जिहादों में मुजाहिदाना शान से शरीके जंग रहे। हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۲۰

ने इन को यमन का काज़ी और मुअल्लिम बना कर भेजा था और हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उमर फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में इन को मुल्के शाम का गवर्नर भी मुक़र्रर कर दिया था जहां इन्होंने सि. 18 हि. में ताऊने अमवास में अलील हो कर अड़त्तीस साल की उम्र में वफ़ात पाई। आप बहुत ही बुलन्द पाया आलिम, हाफ़िज़, क़ारी, मुअल्लिम और निहायत ही मुत्तकी व परहेज़गार और आला दरजे के इबादत गुज़ार थे। बनी सलमा के तमाम बुतों को इन्होंने ही तोड़ फोड़ कर फेंक दिया था। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया की क़ियामत में इन का लक़ब “इमामुल उ-लमा” है।<sup>(1)</sup> (अकाल, ज ११, १११ वासदुल ग़ाबे, ज २, ३८८)

### कशमात

#### मुंह से नूर निकलता था

हज़रते अबू बहरिय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को “हम्स” की मस्जिद में देखा कि वोह घने और घूँघरियाले बाल वाले बहुत ख़ूब सूरत थे जब वोह गुफ़्तगू फ़रमाते तो इस के साथ साथ उन के मुंह से एक नूर निकलता जिस की रोशनी और चमक साफ़ नज़र आती।<sup>(2)</sup>

(तذक़रे अल्हाफ़, ज १, २०)

#### ﴿19﴾ हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अन्सार के कबीलए औस की शाख़ बनी अब्दुल अशहल से ख़ानदानी तअल्लुक़ रखते हैं। मदीनए मुनव्वरा में हज़रते मुसअब बिन उमैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की

1.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف المیم، فصل فی الصحابة، ص ۶۱۶

و اسد الغابة، معاذ بن جبل رضى الله عنه، ج ۵، ص ۲۰۶ ملقطاً

2.....تذکرة الحفاظ، الطبقة الاولى، معاذ بن جبل بن عمرو بن اوس...الخ، ج ۱، الجزء ۱، ص ۲۰

तब्लीग़ से येह इस्लाम में दाख़िल हुवे । अपने कबीले बनी अब्दुल अशहल के सरदार और मदीनए मुनव्वरा में अपनी खूबियों की वजह से बहुत ही बा वक़ार थे । येह कुरआने मजीद बड़ी ही खुश इल्हानी के साथ पढ़ते थे । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भी इन का बहुत ज़ियादा ए'जाज़ व इकराम करते थे और बारगाहे नबुव्वत में मुक़र्रब और हाज़िर बाश थे ।

जंगे बद्र, जंगे उहुद, जंगे ख़न्दक़ वगैरा तमाम ग़ज़वात में सर बक़फ़ और कफ़न बरदोश कुफ़फ़ार से जंग करते रहे । ज़मानए ख़िलाफ़त के जिहादों में भी शिर्कत फ़रमाते रहे यहां तक कि फ़त्हे बैतुल मुक़द्दस में अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ रहे । सि. 20 हि. में हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िलाफ़त के दौरान मदीनए मुनव्वरा के अन्दर विसाल फ़रमाया और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न हुवे ।<sup>(1)</sup>

(अकाल, म० ५८५, वासदुल ग़ाबि, ज० १२, म० १२)

### कशमात

### फ़िरिशते घर के ऊपर उतर पड़े

रिवायत में है कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने नमाज़ तहज्जुद में सूरए बक़रह की तिलावत शुरू की । उसी घर में आप का घोड़ा भी बन्धा हुवा था और घोड़े के करीब ही में इन का बच्चा यह्या भी सो रहा था । येह इन्तिहाई खुश इल्हानी के साथ क़िराअत कर रहे थे । अचानक इन का घोड़ा बिदकने लगा यहां तक कि इन को ख़तरा महसूस होने लगा कि घोड़ा इन के बच्चे को कुचल देगा । चुनान्चे, नमाज़ ख़त्म कर के जब इन्होंने ने सहन में आ कर ऊपर देखा तो येह नज़र आया कि बादल के टुकड़े के मानिन्द जिस में बहुत से चराग़ रोशन हैं कोई चीज़ इन के मकान के ऊपर उतर रही है । आप ने इस

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل فی الصحابة، ص ५८५

واسد الغابة، اسيد بن حضير، ج ١، ص ١٤٢-١٤٤ ملخصاً وملتقطاً

मन्ज़र से घबरा कर क़िराअत मौकूफ़ कर दी और सुब्ह को जब बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर येह वाक़िआ बयान किया तो रहमते आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया कि येह फ़िरिश्तों की मुक़द्दस जमाअत थी जो तेरी क़िराअत की वजह से आस्मान से तेरे मकान की तरफ़ उतर पड़ी थी अगर तू सुब्ह तक तिलावत करता रहता तो येह फ़िरिश्ते ज़मीन से इस क़दर क़रीब हो जाते कि तमाम इन्सानों को इन का दीदार हो जाता। <sup>(1)</sup>

(दलाल النبوة، ج ۳، ص ۲۰۵ و مشکوٰۃ شریف، ص ۱۸۴، فضائل قرآن)

## तबसेरा

इस रिवायत से साबित होता है कि खुदा के नेक बन्दों की तिलावत सुनने के लिये आस्मान से फ़िरिश्तों की जमाअत ज़मीन की तरफ़ उतरती है। येह और बात है कि आ़म लोग फ़िरिश्तों को देख नहीं सकते मगर अल्लाह वालों में से कुछ ख़ास ख़ास लोगों को फ़िरिश्तों का दीदार भी नसीब हो जाता है बल्कि वोह फ़िरिश्तों से गुफ़्तगू भी कर लेते हैं।

﴿20﴾ **हज़रते अब्दुल्लाह बिन हिश्शाम** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**

हज़रते अब्दुल्लाह बिन हिश्शाम बिन उषमान बिन अम्र कुरैशी, येह कबीलए कुरैश में ख़ानदाने बनी तीम से तअल्लुक़ रखते हैं सि. 4 हि. में पैदा हुवे। येह मशहूर मुहदिष हज़रते जोहरा बिन मो'बद के दादा हैं। अहले हिजाज़ के मुहदिषीन में इन का शुमार होता है और इन के शागिर्दों में इन के पोते जोहरा बिन मो'बद बहुत मशहूर हैं। हज़रते अब्दुल्लाह बिन हिश्शाम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को बचपन ही में इन की वालिदा हज़रते ज़ैनब बिनते हुमैद हुजूरे अक़दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमते अक़दस में ले गई और अर्ज़ किया :

1.....مشكاة المصابيح، كتاب فضائل القرآن، الفصل الاول، الحديث: ۲۱۱۶، ج ۱، ص ۳۹۸



या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप मेरे इस बच्चे से बैअत ले लीजिये । हुजुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि येह तो बहुत ही छोटा है । फिर अपना मुक़द्दस हाथ उन के सर पर फेरा और उन के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमा दी ।<sup>(1)</sup>

(असदुलगायब, ज ३, पृ २८०, अकाल, पृ ५९५)

## कशमात

### तिजारात में बरकत

इसी दुआए नबवी की बदौलत इन को येह करामत हासिल हुई कि इन को तिजारात में नफ़अ के सिवा किसी सौदे में कभी भी नुक़सान हुवा ही नहीं । रिवायत है कि येह अपने पोते ज़ोहरा बिन मो'बद को साथ ले कर बाज़ार में जाते और ग़ुल्ला ख़रीदते तो हज़रते अब्दुल्लाह बिन जुबैर और हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) उन से मुलाकात करते और कहते कि हम को भी आप अपनी इस तिजारात में शरीक कर लीजिये इस लिये कि हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने आप के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमाई है । फिर येह सब लोग इस तिजारात में शरीक हो जाते तो बसा अवकात ऊंट के बोझ बराबर नफ़अ कमा लेते और उस को अपने घर भेज देते ।<sup>(2)</sup>

(بخاری، ج ۱، پ ۳۴۰، باب الشّرکة فی الطّعام)

### तबसेरा

नेक और सालेह लोगों को अपने कारोबार और धन्दे रोज़गार में इस निय्यत से शरीक कर लेना कि उन की बरकत से हम फ़ैज़याब

①.....असदुलगायब، عبد الله بن هشام، ج ۳، ص ۴۲۱

والاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ۶۰۵

②.....صحیح البخاری، کتاب الشّرکة، باب الشّرکة فی الطّعام وغیره، الحدیث: ۲۵۰۱،

होंगे। यह सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** का मुक़द्दस तरीका है। चुनान्चे, पुराने ज़माने के खुश अक़ीदा और नेक ताजिरों का येही तरीका था कि वोह जब कोई तिजारत करते थे तो किसी अल्लिमे दीन या पीरे तरीक़त का कुछ हिस्सा इस तिजारत में मुक़र्रर कर के उन बुजुर्गों को अपना शरीक़े तिजारत बना लेते थे ताकि इन अल्लाह वालों की वजह से तिजारत में ख़ैरो बरक़त हो। इसी लिये आज कल भी बा'ज़ खुश अक़ीदा और नेक बख़्त मोमिन खुसूसन मैमन अपनी तिजारत में हज़रते ग़ौषे आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को हिस्सेदार बना लेते हैं और नफ़अ में जितनी रक़म हुज़ूरे ग़ौषे आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के नाम की निकलती है। उस को येह लोग “नियाज़ खाता” कहते हैं और इसी रक़म से येह लोग ग्यारहवीं शरीफ़ की फ़ातिहा भी दिलाते हैं और अल्लिमों और सय्यिदों को इसी रक़म से नज़राना भी दिया करते हैं। यकीनन येह बहुत ही अच्छा तरीका है। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ ।

### ﴿21﴾ हज़रते ख़ुबैब बिन अ़ब्दी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

येह मदीनए मुनव्वरा के अन्सारी हैं और क़बीलए अन्सार में ख़ानदाने औस के बहुत ही नामी गिरामी फ़रज़न्द हैं। बहुत ही पुर जोश और जांबाज़ सहाबी हैं और हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से इन को बे पनाह वालिहाना इश्क़ था। जंगे बद्र में दिल खोल कर इन्तिहाई बहादुरी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़े। जंगे उहुद में भी आप मुजाहिदाना कारनामे शुजाअत के शाहकार की हैषियत रखते हैं लेकिन सि. 4 हि. में इस्फ़ान व मक्कए मुक़र्रमा के दरमियान मक़ाम “रजीअ” में येह कुफ़्फ़ार के हाथों गिरिफ़्तार हो गए। चूँकि इन्हों ने जंगे बद्र में कुफ़्फ़ारे मक्का के एक मशहूर सरदार “हारिष बिन अ़मिर” को क़त्ल कर दिया था इस लिये उन के बेटों ने इन को ख़रीद लिया और लोहे की ज़न्जीरों में जकड़ कर इन को अपने घर की एक कोठड़ी में कैद कर दिया। फिर मक्कए मुक़र्रमा से बाहर

मक़ामे “तनईम” में ले जा कर एक बहुत बड़े मजमअ के सामने इन को सूली पर चढ़ा कर शहीद कर दिया। इस्लाम में येह पहले खुश नसीब सहाबी हैं जिन को कुफ़्फ़ार ने सूली पर चढ़ा कर शहीद किया। सूली पर चढ़ने से पहले इन्होंने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया कि ऐ गुरौहे कुफ़्फ़ार सुन लो ! मेरा दिल तो येही चाहता था कि देर तक नमाज़ पढ़ता रहूं क्योंकि येह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है मगर मुझ को येह ख़याल आ गया कि कहीं तुम लोग येह न समझ लो कि मैं शहादत से डर रहा हूं। इस लिये मैं ने बहुत ही मुख़्तसर नमाज़ पढ़ी। कुफ़्फ़ार ने आप को जब सूली पर चढ़ा दिया तो आप ने चन्द वज्द आफ़रीं और ईमान अफ़रोज़ अश़आर पढ़े फिर हारिष बिन अमिर के बेटे “अबू सरूआ” ने आप के मुक़द्दस सीने में नेज़ा मार कर आप को शहीद कर दिया।<sup>(1)</sup> आप की शहादत का मुफ़स्सल हाल आप हमारी किताब “ईमानी तक़रीरें” और “सीरतुल मुस्तफ़” में पढ़िये। इन की मुन्दरिजए ज़ैल करामात काबिल ज़िक्र हैं।

## करामात

### बे मौशिम का फल

जिन दिनों येह हारिष बिन अमिर के बेटों की कैद में थे ज़ालिमों ने दाना पानी बन्द कर दिया था और इन को ज़न्जीरों में इस तरह जकड़ दिया था कि इन के हाथ पाउं दोनों बन्धे हुवे थे। हारिष बिन अमिर की बेटो का बयान है कि खुदा की क़सम ! मैं ने खुबैब (रज़ी الله تعالى عنه) से अच्छा कोई कैदी नहीं देखा, मैं ने बारहा येह देखा कि वोह कैद की कोठड़ी के अन्दर ज़न्जीरों में बन्धे हुवे बेहतरीन अंगूरों का खोशा हाथ में लिये खा रहे हैं हालांकि खुदा की क़सम ! उन दिनों

1.....صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الرجیع...، السخ، الحديث: ٤٠٨٦،

मक्काए मुअज्जमा के अन्दर कोई फ़ल भी नहीं मिलता था और अंगूर का तो मौसिम भी नहीं था।<sup>(1)</sup> (حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۶۹ و بخاری شریف)

## मक्का की आवाज़ मदीने पहुंची

जब हज़रते ख़ुबैब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** सूली पर चढ़ाए गए तो इन्होंने बड़ी हसरत के साथ कहा कि या **عَزَّوَجَلَّ** मैं यहां किसी को नहीं पाता जिस के ज़रीए मैं आखिरी सलाम तेरे प्यारे रसूल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** तक पहुंचा सकूं लिहाज़ा तू मेरा सलाम हबीब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** तक पहुंचा दे। सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** मदीनाए मुनव्वरा के अन्दर अपने अस्हाब की मजलिस में रोनाक अप्रोउ थे कि बिल्कुल ही नागहां आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने बुलन्द आवाज़ से **وَعَلَيْكَ السَّلَام** फ़रमाया : सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इस वक़्त आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने किस के सलाम का जवाब दिया है। आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रामाया कि तुम्हारा दीनी भाई ख़ुबैब अभी अभी मक्काए मुकर्रमा में सूली पर चढ़ा दिया गया है और उस ने सूली पर चढ़ कर मेरे पास अपना सलाम भेजा है और मैं ने उस के सलाम का जवाब दिया है।<sup>(2)</sup> (حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۶۹)

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۸

و صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب ۱۰، الحديث: ۳۹۸۹، ج ۳، ص ۱۵

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۹

وفتح الباری شرح صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة الرجيع...الخ، تحت

الحديث: ۴۰۸۶، ج ۷، ص ۳۲۷

## एक साल में तमाम कातिल हलाक

रिवायत है कि सूली पर चढ़ाए जाने के वक़्त हज़रते ख़ुबैब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कातिलों के मजमए की तरफ़ देख कर यह दुआ मांगी : (يا'नी ऐ **اللَّهُمَّ احْصِهِمْ عَدَدًا وَاقْتُلْهُمْ بَدَدًا وَلَا تَبْقِ مِنْهُمْ أَحَدًا** : **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** तू मेरे इन तमाम कातिलों को गिन कर शुमार कर ले और इन सब को हलाक फ़रमा दे और इन में से किसी एक को भी बाकी न रख ।) एक काफ़िर का बयान है कि मैं ने जब (ख़ुबैब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) को बद दुआ करते हुवे सुना तो मैं ज़मीन पर लैट गया ताकि ख़ुबैब की नज़र मुझ पर न पड़े । चुनान्चे, इस का अषर यह हुवा कि एक साल पूरा होते होते तमाम वोह लोग जो आप के क़त्ल में शरीक व राज़ी थे सब के सब हलाक व बरबाद हो गए । फ़क़त तन्हा मैं बच गया हूं ।<sup>(1)</sup> (حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۶۹ و بخاری)

## लाश को ज़मीन निगल गई

हुज़ुरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबाए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ से इरशाद फ़रमाया कि मक़ामे तनईम में हज़रते ख़ुबैब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की लाश सूली पर लटकी हुई है जो मुसलमान उन की लाश को सूली से उतार कर लाएगा मैं उस के लिये जन्नत का वा'दा करता हूं । येह खुश ख़बरी सुन कर हज़रते जुबैर बिन अल अ़वाम और हज़रते मिक्दाद बिन अल अस्वद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا तेज़ रफ़्तार घोड़ों पर सुवार हो कर रातों को सफ़र करते और दिन में छुपते हुवे मक़ामे तनईम में गए । चालीस कुफ़ार सूली के पहरादार बन कर सो रहे थे ।

①..... حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثالث

في ذكر حملة جميلة... الخ، ص ۶۱۸

وصحيح البخاری، كتاب المغازی، باب ۱۰، الحديث: ۳۹۸۹، ج ۳، ص ۱۵

وفتح الباری شرح صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب غزوة الرجیع... الخ، تحت

الحديث: ۴۰۸۶، ج ۷، ص ۳۲۷

इन दोनों हज़रात ने लाश को सूली से उतारा और चालीस दिन गुज़र जाने के बावजूद लाश बिल्कुल तरोताज़ा थी और ज़ख्मों से ताज़ा खून टपक रहा था। घोड़े पर लाश को रख कर मदीनाए मुनव्वरा का रुख किया मगर सत्तर काफ़िरों ने इन लोगों का पीछा किया। जब इन दोनों हज़रात ने देखा कि अब हम गिरिफ़्तार हो जाएंगे तो इन दोनों ने मुक़द्दस लाश को ज़मीन पर रख दिया। खुदा की शान देखिये कि एक दम ज़मीन फट गई और मुक़द्दस लाश को ज़मीन निगल गई और फिर ज़मीन इस तरह बराबर हो गई कि फटने का नामो निशान भी बाक़ी न रहा। येही वजह है कि हज़रते खुबैब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का लक़ब “बलीज़ल अर्ज़” (जिन को ज़मीन निगल गई) है। फिर इन दोनों हज़रात ने फ़रमाया कि ऐ कुफ़फ़ारे मक्का ! हम तो दो शेर हैं जो अपने जंगल में जा रहे थे अगर तुम लोगों से हो सके तो हमारा रास्ता रोक कर देख लो वरना अपना रास्ता लो जब कुफ़फ़ारे मक्का ने देख लिया कि इन दोनों हज़रात के पास लाश नहीं है तो वोह लोग मक्का वापस चले गए। <sup>(1)</sup> (मदارج النبوة، ج २، ص १८१)

## तबशेश

शहीदे इस्लाम हज़रते खुबैब अन्सारी सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की इन चारों करामतों को पढ़ कर इब्रत हासिल कीजिये कि खुदावन्दे करीम शुहदाए किराम बिल खुसूस अपने हबीब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के अस्थाबे किराम को कैसी कैसी अज़ीमुश़्शान करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाता है और येह नसीहत हासिल कीजिये कि सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ने दीने इस्लाम की खातिर कैसी कैसी कुरबानियां पेश की हैं और फिर सोचिये कि हम आज कल के मुसलमान इस्लाम के लिये क्या कर रहे हैं ? और हमें क्या करना चाहिये और फिर खुदा का नाम ले कर उठिये और इस्लाम के लिये कुछ कर डालिये।



## ﴿22﴾ हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह मदीनए मुनव्वरा के वोही खुश नसीब अन्सारी हैं जिन के मकान को शहनशाहे कौनैन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेहमान बन कर शरफे नुज़ूल बख़्शा और येह शहनशाहे दो आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मेज़बानी से सात माह तक सरफ़राज़ होते रहे और दिन रात सुब्हो शाम हर वक़्त व हर आन अपने हर कौल व फ़े'ल से ऐसी वालिहाना अक़ीदत और आशिक़ाने जांनिषारी का मुज़ाहरा करते रहे कि मुश्किल ही से इस की मिषाल मिल सकेगी ।

हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुलाक़ातियों की आसानी के लिये नीचे की मन्ज़िल में क़ियाम पसन्द फ़रमाया । मजबूरन हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ऊपर की मन्ज़िल में रहे । एक मरतबा इत्तिफ़ाक़न पानी का घड़ा टूट गया तो इस अन्देशे से कि कहीं पानी बह कर नीचे वाली मन्ज़िल में न चला जाए और हुज़ूर रहमतें आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को कुछ तक्लीफ़ न पहुंच जाए । हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ घबरा गए और सारा पानी अपने लिहाफ़ में ज़ब्ब कर लिया । घर में बस येही एक रज़ाई थी जो गीली हो गई । रात भर मियां बीवी ने सर्दी खाई मगर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को ज़र्रा भर भी तक्लीफ़ पहुंच जाए येह गवारा नहीं किया । गरज़ बे पनाह अदबो एहतिराम और महब्बतो अक़ीदत के साथ सुल्ताने दारैन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की मेहमान नवाज़ी व मेज़बानी के फ़राइज़ अदा करते रहे ।

हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सखावत के साथ साथ शुजाअत और बहादुरी में भी बे हद ताक़ थे । तमाम इस्लामी लड़ाइयों में मुजाहिदाना शान के साथ मा'रिका आजमाई फ़रमाते रहे यहां तक कि हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़माने में जब मुजाहिदीने इस्लाम का लश्कर जिहादे कुस्तुनतुनिया के लिये

रवाना हुवा तो अपनी जईफ़ी के बा वुजूद आप भी मुजाहिदीन के उस लश्कर के साथ जिहाद के लिये तशरीफ़ ले गए और बराबर मुजाहिदीन की सफ़ों में खड़े हो कर जिहाद करते रहे ।

जब सख़्त बीमार हो गए और खड़े होने की ताक़त नहीं रही तो आप ने मुजाहिदीने इस्लाम से फ़रमाया कि जब तुम लोग जंगबन्दी करो तो मुझे भी सफ़ में अपने क़दमों के पास लिटाए रखो और जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो तुम लोग मेरी लाश को कुस्तुनतुनिया के क़ल्ए की दीवार के पास दफ़न करना । चुनान्वे, सि. 51 हि. में इसी जिहाद के दौरान आप की वफ़ात हुई और इस्लामी लश्कर ने इन की वसियत के मुताबिक़ इन को कुस्तुनतुनिया के क़ल्ए की दीवार के पास दफ़न कर दिया ।

येह अन्देशा था कि शायद ईसाई लोग आप की क़ब्र मुबारक को खोद डालें मगर ईसाइयों पर ऐसी हैबत सुवार हो गई कि वोह आप की मुक़द्दस क़ब्र को हाथ न लगा सके और आज तक आप की क़ब्र शरीफ़ उसी जगह मौजूद है और ज़ियारत गाहे ख़लाइके ख़ासो अम है जहां हर क़ौम व मिल्लत के लोग हमा वक़्त हाज़िरी देते हैं ।

### कशमल

### क़ब्र मुबारक शिफ़ा ख़ाना बन गई

येह आप की करामत का एक रूहानी और नूरानी जल्वा है कि बहुत ही दूर दूर से किस्म किस्म के मायूसुल इलाज मरीज़ आप की क़ब्र शरीफ़ पर शिफ़ा के लिये हाज़िरी देते हैं और खुदा के फ़ज़्लो करम से शिफ़ायाब हो जाते हैं ।<sup>(1)</sup>

(अक़ाल फ़ी अस्मा' الرجال، ص ५८६ و حاشية كثر العمال، ج १، ص २२५ مطبوعه حيدرآباد)

①..... الاكمال في اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل في الصحابة، ص ५८६

واسد الغابة، خالد بن زيد بن كليب، ج २، ص ११६ ملتقطاً

## ﴿22﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन बसर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह अब्दुल्लाह बिन बसर माज़िनी हैं। इन की कुन्यत अबू बसर या अबू सफ़वान है। इन के वालिद ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दा'वत की और शहनशाहे दो आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने माहज़र तनावुल फ़रमाया फिर खजूरें लाई गई, आप ने खजूरें भी खाई और हज़रते अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सर पर अपना दस्ते मुबारक रख कर दुआ फ़रमाई। येह आखिरी उम्र में मुल्के शाम में चले गए।

अल्लामा इब्ने अषीर का बयान है कि येह आखिरी सहाबी हैं जिन का मुल्के शाम में विसाल शरीफ़ हुवा। इन की उम्र में इख़्तालफ़ है। असाबा में है कि 94 बरस की उम्र में वफ़ात पाई और अल्लामा अबू नोएम का कौल है कि एक सो बरस की उम्र में इन का विसाल हुवा। बिगैर किसी बीमारी के शहरे हम्स में वुजू करते हुवे बिल्कुल ही अचानक वफ़ात पा गए।<sup>(1)</sup>

(अकाल, ज १०३, वासद الغابة, ج ३, ص १२५, क़त्ज़ अलعمال, ج १५, ص १०३)

### कशमात

## रिज़क में कभी तंगी पैदा नहीं हुई

दुआए नबवी की बरकत से उम्र भर कभी इन की रोज़ी में तंगी नहीं हुई। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन के घर में तआम से फ़ारिग़ हो कर घर वालों के लिये तीन दुआएं मांगी थीं :

﴿1﴾ या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इन लोगों की मग़फ़िरत फ़रमा।

﴿2﴾ या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इन लोगों पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

①..... الاكمال في اسماء الرجال، حرف العين، فصل في الصحابة، ص १०३

वासद الغابة، عبدالله بن بسر المازنی، ج ३، ص १८६

والاصابة في تمييز الصحابة، حرف العين المهمة، عبدالله بن بسر، ج ६، ص २०

(1) या **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इन लोगों की रोज़ी में बरकत फ़रमा। (क़त्तल العمال، ج १، ص १०२ مطبوعه حیدرآباد)

﴿24﴾ **هَاجِرَتِ اُمِّ بِنِ اَلِ هَمَكٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ**

सुल्हे हुदैबिया के बा'द येह अपने कबीलए बनी खज़ाआ से हज़रत कर के मदीनए मुनव्वरा आए और दरबारे नबुव्वत में हज़िर रह कर हदीषें याद करते रहे। फिर कूफ़ा चले गए और वहां से मिस्र जा कर मुक़ीम हो गए। कुछ दिनों शाम में भी रहे। इन के शागिर्दों में जुबैर बिन नुफ़ैर और रफ़ाआ बिन शदाद वग़ैरा बहुत मशहूर मुहद्दिषीन हैं। येह हज़रते अली **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** के तरफ़दार थे और जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन व नहरवान में हज़रते अली **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** के साथ रहे। जब हज़रते इमामे हसन **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** ने ख़िलाफ़त हज़रते अमीरे मुआविया **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** को सोंप दी तो उस वक़्त हज़रते अमीरे मुआविया **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** के गवरर्नर “ज़ियाद” के ख़ौफ़ से येह इराक़ से भाग कर “मौसिल” के एक ग़ार में रू पोश हो गए और इसी ग़ार में इन को सांप ने काट लिया जिस से इन की वहीं वफ़ात हो गए। अल्लामा इब्ने अषीर साहिबे उसदुल गा़बा का बयान है कि इन की क़ब्र शरीफ़ मौसिल में बहुत ही मशहूर ज़ियारत गाह है। क़ब्र पर बहुद बड़ा गुम्बद और लम्बी चोड़ी दरगाह है। सि. 50 हि. में आप की शहादत हुई। (2) (اسد الغابة، ج २، ص १००)

**कशमल**

**अरशी बरस की उम्र में भी सब बाल काले !**

इन्हों ने हुज़ूरे अक़दस **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की ख़िदमत में दूध का हदिया पेश किया, हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने

1..... क़त्तल العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: 37274، ج 7، الجزء 13، ص 210

2..... اسد الغابة، عمرو بن الحمق الخزاعي، ج 4، ص 230

दूध नोश फ़रमा कर इन की जवानी की बका के लिये दुआ फ़रमा दी। इस दुआए नबवी की बदौलत इन को येह करामत मिल गई कि अस्सी बरस की उम्र हो जाने के बा वुजूद इन का एक बाल भी सफ़ेद नहीं हुवा था।<sup>(1)</sup> (کنز العمال، ج ۱۶، ص ۱۱۲ و اسد الغابة، ج ۴، ص ۱۰۰)

### ﴿25﴾ हज़रते अ़सिम बिन षाबित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते अ़सिम बिन षाबित बिन अबिल अफ़लह अन्सारी येह अन्सार में कबीलए औस के माया नाज़ सपूत हैं। बहुत ही जांबाज़ और बहादुर सहाबी हैं। इन्हों ने जंगे बद्र में बे मिषाल जुरअत व बहादुरी का मुज़ाहरा किया और कुफ़ारे कुरैश के बड़े बड़े नामवर सरदारों को क़त्ल कर दिया। येह हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के फ़रज़न्द हज़रते अ़सिम बिन उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के नाना हैं। सि. 4 हि. में ग़ज़तुर्रजीअ में येह कुफ़ारे से दस्त ब दस्त लड़ते हुवे अपने छे साथियों के साथ शहीद हो गए।<sup>(2)</sup> (اسد الغابة، ج ۴، ص ۷۳)

इन की मुन्दरिजए ज़ैल दो करामतें बहुत ही मशहूर हैं जो निहायत ही मुस्तनद हैं।

### कशमात

### शहद की मरिख़ियों का पहरा

चूँकि आप ने जंगे बद्र के दिन कुफ़ारे मक्का के बड़े बड़े नामी गिरामी सूरमाओं और नामवर सरदारों को मौत के घाट उतार दिया था इस लिये जब कुफ़ारे मक्का को इन की शहादत की ख़बर मिली तो इन काफ़िरों ने चन्द आदमियों को इस लिये मक़ामे रजीअ में भेज दिया ताकि इन के बदन का कोई ऐसा हिस्सा (सर वगैरा) काट कर लाएं जिस से येह शनाख़्त हो जाए कि वाक़ेई हज़रते

①..... اسد الغابة، عمرو بن الحمق الخزاعی، ج ۴، ص ۲۳۱

و کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ۳۷۲۸۵، ج ۷، الجزء ۱۳،

②..... اسد الغابة، عاصم بن ثابت، ج ۳، ص ۱۰۶

आसिम क़त्ल हो गए। चुनान्चे, चन्द कुफ़्फ़ार इन की लाश की तलाश में मक़ामे रजीअ तक पहुंच तो गए मगर वहां जा कर उन काफ़िरों ने इस शहीद मर्द की येह करामत देखी कि लाखों की ता'दाद में शहद की मख़िब्रयों के झुंड ने इन की लाश के इर्द गिर्द इस तरह घेरा डाल रखा है जिस से वहां तक किसी का पहुंचना ही नामुमकिन हो गया है इस लिये कुफ़्फ़ारे मक्का नाकाम व नामुराद हो कर मक्का वापस चले गए।<sup>(1)</sup> (بخاری، ج ۲، ص ۴۳)

### समन्दर में क़ब्र

एक रिवायत में येह भी है कि मक्का की एक काफ़िरा औरत सलाफ़ा बन्ते सा'द के दो बेटों को हज़रते आसिम बिन षाबित **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** ने जंगे उहुद में क़त्ल कर डाला था, इस लिये उस औरत ने जोशे इन्तिक़ाम में येह क़सम खा रखी थी कि अगर मुझ को आसिम बिन षाबित का सर मिल गया तो मैं इन की खोपड़ी में शराब पियूंगी। चुनान्चे, उस ने कुछ लोगों को भेजा था कि तुम उन का सर काट कर लाओ, मैं उस को बहुत बड़ी क़ीमत दे कर ख़रीद लूंगी। इस लालच में चन्द कुफ़्फ़ार मक़ामे रजीअ तक तो पहुंचे मगर जब इन्हों ने शहद की मख़िब्रयों का घेरा देखा तो हवास बाख़्ता हो गए मगर येह चन्द लालची लोग इस इन्तिज़ार में वहां ठहर गए कि जब कभी भी येह शहद की मख़िब्रयां उड़ जाएंगी तो हम इन का सर काट कर ले जाएंगे। खुदा की शान कि निहायत ही ज़ोरदार बारिश हुई और पहाड़ों से बरसाती नाला बहता हुवा इस मैदान में पहुंचा और इस ज़ोर का रेला आया कि कुफ़्फ़ार जान बचाने के लिये भाग खड़े हुवे और आप की मुक़द्दस लाश पानी के बहाव के साथ बहती हुई समन्दर में पहुंच गई।

①.....صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ۱۰، الحدیث: ۳۹۸۹، ج ۳، ص ۱۵-۱۶

وحجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

فی ذکر حمله جمیلة...الخ، ص ۶۱۸



रिवायत है कि जिस दिन आसिम बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस्लाम क़बूल किया था उसी दिन खुदा से येह अ़हद किया था कि मैं न तो किसी काफ़िर के बदन को हाथ लगाऊंगा न किसी काफ़िर को मौक़अ दूंगा कि वोह मेरे बदन को छू सके। **अल्लाहु अक़बर !** खुदा की शान कि ज़िन्दगी भर तो इन का येह अ़हद पूरा होता ही रहा मगर शहादत के बा'द भी खुदावन्दे कुदूस ने उन के इस अ़हद को पूरा फ़रमा दिया कि कुफ़ार उन के मुक़द्दस बदन को हाथ न लगा सके। पहले शहद की मख़िबयों का पहरा लगा दिया फिर बरसाती नालों ने इन के बदन मुबारक को इन के मदफ़न तक पहुंचा दिया। <sup>(1)</sup> (حجة الله، ج २، ص ८१९ بحواله البيهقي وكنز العمال، ج १६، ص १८८)

### तबसेरा

हज़रते आसिम बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की इन दोनों करामतों को पढ़ कर ग़ौर फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआला का शुहदाए किराम पर कितना फ़ज़ले अज़ीम होता है और राहे खुदा में जान फ़िदा करने वालों को रब्बुल इज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهُ के दरबारे अलिय्या से कैसी कैसी अज़ीमुश्शान करामतों के निशान अता किये जाते हैं। वफ़ात के बा'द भी इन के तसरूफ़ात ब सूरते करामात जारी रहते हैं। लिहाज़ा शहीदों से अकीदत व महब्बत और इन का अदबो एहतिराम वाजिबुल अमल और लाज़िमुल ईमान होता है।

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ६१८

ودلائل النبوة للبيهقي، باب غزوة الرجيع وما ظهر...الخ، ج ३، ص ३२८

وكنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ३७६६०، ج ७،

الجزء १३، ص २६०

## ﴿26﴾ हज़रते उबैदा बिन अल हारिष رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन का वतन मक्काए मुकर्रमा है और येह खानदाने कुरैश के बहुत ही मुमताज़ और नामवर शख्स हैं। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए थे। फिर हिजरत भी की। निहायत ही वजीह बहुत ही बहादुर और जांबाज़ सहाबी हैं। सि. 2 हि. में साठ या अस्सी मुहाजिरीन के साथ हुजुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन को “राबिग़” की तरफ़ जिहाद के लिये रवाना फ़रमाया। चुनान्वे, तारीख़े इस्लाम में मुजाहिदीन का येह लश्कर सरिय्यए उबैदा बिन अल हारिष के नाम से मशहूर है।

सि. 2 हि. जंगे बद्र में इन्हों ने शैबा बिन रबीआ से जंग की जो लश्करे कुफ़्फ़ार के सिपह सालार उतबा बिन रबीआ का भाई था। येह बड़ी जांबाज़ी के साथ लड़ते रहे मगर इस क़दर ज़ख़मी हो गए कि इन की पिंडली टूट कर चूर चूर हो गई और नली का गुदा बहने लगा। येह देख कर हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आगे बढ़ कर शैबा को क़त्ल कर दिया और हज़रते उबैदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को अपने कान्धे पर उठा कर बारगाहे रिसालत में लाए। इस हालत में हज़रते उबैदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या मैं शहादत से महरूम रहा? इरशाद फ़रमाया: हरगिज़ नहीं बल्कि तुम शहादत से सरफ़राज़ हो गए! येह सुन कर उन्हों ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अगर आज अबू तालिब जिन्दा होते तो वोह मान लेते कि उन के इस शे'र का मिस्दाक़ मैं ही हूँ:

وَنُسْلِمُهُ حَتَّى نُصْرَعَ حَوْلَهُ

وَنَذْهَلُ عَنْ أَبْنَائِنَا وَالْحَلَائِلِ

(या'नी हम हुजुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को उस वक़्त दुश्मनों के हवाले करेंगे जब हम इन के गिर्दा गिर्द लड़ते लड़ते

खून में लत पत हो जाएंगे और हम अपने बेटों और बीवियों को भूल जाएंगे।) इसी ज़ख़्म में आप मन्ज़िले सुफ़रा में पहुंच कर शरफ़े शहादत से सरफ़राज़ हो गए।<sup>(1)</sup> (अबु दाउद, ज २, स २११ और रज़ाज़ी, ज १, स ११८)

## कशमल

### क़ब्र की खुशबू दूर तक

इश्के रसूल में बे पनाह जां निषारियों और फ़िदा कारियों की बदौलत इन को येह शानदार करामत नसीब हुई कि इन की क़ब्रे अतहर से इस क़दर मुश्क की तेज़ खुशबू आती कि पूरा मैदान हर वक़्त महकता रहता। चुनान्चे, मन्कूल है कि एक मुहत्त के बा'द हुज़ूरे अक़दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का सहाबाए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के साथ मन्ज़िले सुफ़रा में क़ियाम हुवा तो सहाबाए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** ने हैरान हो कर बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इस सह्रा में मुश्क की इस क़दर खुशबू कहां से और क्यूं आ रही है? आप ने इरशाद फ़रमाया कि इस मैदान में अबू मुअविया (हज़रते उबैदा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**) की क़ब्र मौजूद होते हुवे तुम्हें तअज्जुब क्यूं हो रहा है कि यहां मुश्क की खुशबू महक रही है!<sup>(2)</sup>

(क़ताब मुदसाबा, स ३१२ मरतबे शाह मरदा मारोवी)

### अल्लाहु अक़बर ! येह सच है

कमालाते वली मिट्टी में भी यूं जगमगाते हैं

कि जैसे नूर जुल्मत में कभी पिन्हां नहीं होता

①.....شرح الزرقانی علی المواهب اللدنیة، باب غزوة بدر الکبری، ج २، ص २७६

و سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی المبارزة، الحدیث: २६६०، ج ३، ص ७२

و اسد الغابة، عبیده بن الحارث بن المطلب، ج ३، ص ५७२- ५७४ ملقطاً

②.....الاستعاب فی معرفة الاصحاب، باب حرف العین، باب عبیده، عبیده بن الحرث

المطلبی، ج ३، ص १६१

## ﴿27﴾ हज़रते सा'द बिन अरबीअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते सा'द बिन अरबीअ बिन अम्र अन्सारी खज़रजी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बैअतुल उक़बा ऊला और बैअतुल उक़बा षानिय्या दोनों बैअतों में शरीक रहे और येह अन्सार में से ख़ानदाने बनी अल हारिष के सरदार भी थे। ज़मानए जाहिलिय्यत में जब कि अरब में लिखने पढ़ने का बहुत ही कम रवाज था उस वक़्त येह कातिब थे। येह हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इन्तिहाई शैदाई और बे हद जानिषार सहाबी हैं।

हज़रते सा'द बिन अरबीअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की साहिबज़ादी का बयान है कि मैं अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरबार में हाज़िर हुई तो इन्हों ने अपने बदन की चादर उतार कर मेरे लिये बिछा दी और मुझे इस पर बिठाया। इतने में हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ आ गए और पूछा : येह लड़की कौन है ? अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि येह उस शख़्स की बेटी है जिस ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़माने ही में जन्नत के अन्दर अपना ठिकाना बना लिया और मैं और तुम यूँ ही रह गए ! येह सुन कर हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हैरत के साथ दरयाफ़्त किया कि ऐ ख़लीफ़ए रसूल ! वोह कौन शख़्स हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि “सा'द बिन अरबीअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ” तो हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस की तस्दीक की।

जंगे बद्र में निहायत शुजाअत के साथ कुफ़्फ़ार से मा'रिका आराई की। जंगे उहुद में बारह काफ़िरो को एक एक नेज़ा मारा और जिस को एक नेज़ा मारा वोह मर कर ठन्डा हो गया। फिर घुमसान की जंग में ज़ख़्मी हो कर इसी जंगे उहुद में सि. 3 हि. में शहीद हो

गए और हज़रते ख़ारिजा बिन ज़ैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ एक क़ब्र में दफ़न हो गए।<sup>(१)</sup> (अक़ाल, ज ५९१, हाशिये तज़र्रعمال, ज १२, स ३२१, अस्द الغابة, ज २, स २८८)

## कशामात

### दुनिया में जन्नत की खुशबू

हज़रते ज़ैद बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि जंगे उहुद के दिन हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझ को हज़रते सा'द बिन अरबीअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की लाश की तलाश में भेजा और फ़रमाया कि अगर वोह ज़िन्दा मिलें तो तुम उन से मेरा सलाम कह देना। चूनाच्चे, जब तलाश करते करते मैं उन के पास पहुंचा तो उन को इस हाल में पाया कि अभी कुछ कुछ जान बाकी थी, मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का सलाम पहुंचाया तो उन्होंने ने जवाब दिया और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मेरा सलाम कह देना और सलाम के बा'द येह भी अर्ज़ कर देना कि या रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ मैं जन्नत की खुशबू मैदाने जंग में सूंघ चुका और मेरी क़ौम अन्सार से मेरा येह आखिरी पैग़ाम कह देना कि अगर तुम में एक आदमी भी ज़िन्दा रहा और कुफ़्फ़ार का हम्ला रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तक पहुंच गया तो खुदा तअला के दरबार में तुम्हारा कोई उज़्र क़बूल नहीं हो सकता और तुम्हारा वोह अहद टूट जाएगा जो तुम लोगों ने बैअतुल उक़बा में किया था, इतना कहते कहते उन की रूह परवाज़ कर गई। (हिज्जे अल्लह, ज २, स ८८०, अख़ाले हाक़म वतैय़ी)

①.....अस्द الغابة, سعد بن الربيع, ج २, ص ४१४

والاكمال في اسماء الرجال, حرف السين, فصل في الصحابة, ص ०९६

والاصابة في تمييز الصحابة, سعد بن الربيع, ج ३, ص ४९

बा'ज़ रिवायात से पता चलता है कि जिस शख्स को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सा'द बिन अरबीअ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की लाश का पता लगाने के लिये भेजा था वोह हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ थे चुनान्चे, हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का येही कौल है । <sup>(1)</sup> وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ (اسد الغابة، ج ۲، ص ۲۷۷)

## तबसेरा

**अब्बाहु अक्बर !** गौर फ़रमाइये कि हज़रते सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से कितनी वालिहाना महबूबत और किस क़दर अशिक़ाना लगाव था कि जांकनी का आलम है, ज़ख़्मों से निढाल हैं मगर इस वक़्त में भी हुज़ूर रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ख़याल दिलो दिमाग़ के गोशे गोशे में छाया हुवा है । अपने घर वालों के लिये, अपनी बच्चियों के लिये कोई वसिय्यत नहीं फ़रमाते मगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये अपनी सारी कौम को कितना अहम आख़िरी पैग़ाम देते हैं ! सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की येही वोह नेकियां हैं जो क़ियामत तक किसी को नसीब नहीं हो सकतीं और इसी लिये सहाबए किराम رَضُواْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِيْنَ का सारी उम्मत में वोही दरजा है जो आस्मान पर सितारों की बरात में चांद का दरजा है ।

हज़रते सा'द बिन अरबीअ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के कोई बेटा नहीं था फ़क़त दो साहिबज़ादियां थीं जिन को हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन की मीराष में से दो षलष अंता फ़रमाया । وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۶۱۹

واسد الغابة، سعد بن الربيع، ج ۲، ص ۴۱۴



## ﴿28﴾ हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नसब नामा येह है : अनस बिन मालिक बिन अन्नज़र बिन ज़मज़म बिन ज़ैद बिन हिराम अन्सारी । आप कबीलए अन्सार में खज़रज की एक शाख़ बनी नज्जार में से हैं । इन की वालिदा का नाम उम्मे सुलैम बिनते मलहान है । इन की कुन्यत हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अबू हम्ज़ा रखी और इन का मशहूर लक़ब “खादिमुन्नबी” है और इस लक़ब पर हज़रते अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बेहद फ़ख़्र था । दस बरस की उम्र में येह ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुवे और दस बरस तक सफ़र व वतन, जंग व सुल्ह हर जगह हर हाल में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत करते रहे और हरदम ख़िदमते अक्दस में हाज़िर बाश रहते । हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तबरूकात में से इन के पास छोटी सी लाठी थी । आप ने वसिय्यत की थी कि इस को ब वक्ते दफ़न मेरे कफ़न में रख दें । चुनान्चे, येह लाठी आप के कफ़न में रख दी गई । हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इन के लिये खास तौर पर माल और अवलाद में तरक्की और बरकत की दुआएं फ़रमाई थीं, चुनान्चे, इन के माल और अवलाद में बेहद बरकत व तरक्की हुई । मुख़्तलिफ़ बीवियों और बांदियों से आप के अस्सी लड़के और दो बेटियां पैदा हुई और जिस दिन आप का विसाल हुवा उस दिन आप के बेटों और पोतों वगैरा की ता’दाद एक सो बीस थी । बहुत ज़ियादा हदीषें आप से मरवी हैं । आप के शागिर्दों की ता’दाद भी बहुत ज़ियादा है, हिना का ख़िज़ाब सर और दाढ़ी में लगाते थे और खुशबू भी ब कषरत इस्ति’माल करते । आप ने वसिय्यत फ़रमाई कि मेरे कफ़न में वोही खुशबू लगाई जाए जिस में हुज़ूर रहमते आ़लम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पसीना मिला हुवा है । इन की वालिदा हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के पसीने को जम्अ कर के खुशबू में मिलाया करती थीं ।

हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में लोगों को ता'लीम देने के लिये आप मदीनए मुनव्वरा से बसरा चले गए। आप के साले विसाल और आप की उम्र शरीफ़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है। मशहूर येह है कि सि. 91 हि. को आप का विसाल हुवा। बा'जों ने सि. 92 हि. बा'ज ने सि. 93 हि. बा'ज ने सि. 90 हि. को आप के विसाल का साल तहरीर किया है। ब वक्ते विसाल आप की उम्र शरीफ़ एक सो तीन बरस की थी। बा'ज ने एक सो दस बा'ज ने एक सो सात और बा'ज ने निनानवे बरस लिखा है। बसरा में वफ़ात पाने वाले सहाबियों में से सब से आख़िर में आप का विसाल हुवा। आप के बा'द शहर बसरा में कोई सहाबी बाकी नहीं रहा। बसरा से दो कोस के फ़ासिले पर आप की क़ब्र शरीफ़ बनी जो ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है। आप बहुत ही ह़क़ गो, ह़क़ पसन्द, इबादत गुज़ार सहाबी हैं और आप की चन्द करामतें भी मन्कूल हैं।<sup>(1)</sup>

(अक़ाल, ज ५८५, वासद الغाबیه, ج १, ص १२८)

## कशमात

### साल में दो मरतबा फल देने वाला बाग़

इन की करामतों में से एक करामत येह है कि दुन्या भर में खजूरों का बाग़ साल में एक ही मरतबा फ़लता है मगर आप का बाग़ साल में दो मरतबा फ़लता था।<sup>(2)</sup>

(मक़लूः शरीफ, ज २, ص ५३५)

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل فی الصحابة، ص ۵۸۵

واسد الغابة، انس بن مالک بن النضر، ج ۱، ص ۱۹۲-۱۹۵ ملنقطاً

②.....مشکاة المصابیح، کتاب الفضائل و الشّمائل، باب الکرامات، الحدیث: ۵۹۵۲،

ج ۲، ص ۴۰۱

## खजूरों में मुश्क की खुश्बू

इसी तरह येह भी आप की बहुत ही बे मिषाल करामत है कि आप के बाग़ की खजूरों में मुश्क की खुश्बू आती थी जिस की मिषाल कहीं दुनिया भर में नहीं मिल सकती है।<sup>(1)</sup> (مشکوّة شریف، ج ۲، ص ۵۴۵)

## हुआ से बारिश

आप का बाग़बान आया और शदीद कहूँ और खुश्क साली की शिकायत करने लगा। आप ने वुजू फ़रमाया और नमाज़ पढ़ी फिर फ़रमाया कि ऐ बाग़बान ! आस्मान की तरफ़ देख ! क्या तुझे कुछ नज़र आ रहा है। बाग़बान ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं तो आस्मान में कुछ भी नहीं देख रहा हूँ। फिर आपने नमाज़ पढ़ कर येह ही सुवाल फ़रमाया : और बाग़बान ने येही जवाब दिया। फिर तीसरी बार या चौथी बार नमाज़ पढ़ कर आप ने बाग़बान से पूछा कि क्या आस्मान में कुछ नज़र आ रहा है ? अब की मरतबा बाग़बान ने जवाब दिया कि जी हां ! एक परन्द के पर के बराबर बदली का टुकड़ा नज़र आ रहा है। फिर आप बराबर नमाज़ और हुआ में मशगूल रहे यहां तक कि आस्मान में हर तरफ़ अब्र छा गया और निहायत ही जोरदार बारिश हुई। फिर हज़रते अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बाग़बान को हुक्म दिया कि तुम घोड़े पर सुवार हो कर देखो कि येह बारिश कहां तक पहुंची है ? उस ने चारों तरफ़ घोड़ा दौड़ा कर देखा और आ कर कहा कि येह बारिश “मसीरीन” और “ग़ज़बान” के महल्लों से आगे नहीं बढ़ी।<sup>(2)</sup> (طبقات ابن سعد، ج ۷، ص ۲۱)

①.....مشكاة المصابيح، كتاب الفضائل والشمائل، باب الكرامات، الحديث: ۵۹۵۲،

②.....الطبقات الكبرى لابن سعد، انس بن مالك بن النضر، ج ۷، ص ۱۵

## तबसेश

बारिश कहा तक हुई है ? इस को देखने और मा'लूम करने की वजह यह थी कि उस शहर में जहां आप थे क़हूत पड़ गया था और पानी की सख़्त ज़रूरत थी बाकी दूसरे अ़लाकों में काफ़ी बारिश हो चुकी थी । उन अ़लाकों में क़तअन मज़ीद बारिश की ज़रूरत नहीं थी बल्कि वहां ज़ियादा बारिश से नुक़सान होने का अन्देशा था इसी लिये आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि बारिश कहा तक हुई है ? जब आप को मा'लूम हो गया कि बारिश उसी शहर में हुई है जहां बारिश की ज़रूरत थी तो फिर आप को इतमीनान हो गया कि **الحمد لله** इस बारिश से कहीं भी कोई नुक़सान नहीं पहुंचा ।

**अब्बाहु अक्बर !** बारगाहे इलाही के मक़बूल बन्दों की शान और दरबारे खुदावन्दी में इन की मक़बूलिय्यत का क्या कहना ? जब खुदा से अर्ज़ किया बारिश हो गई और जहां तक बारिश बरसाना चाही वहीं तक बरसी ।

**लिल्लाह !** ग़ौर फ़रमाइये कि क्या औलियाउल्लाह का हाल और इन की शान आम इन्सानों जैसी है ? तौबा **نعوذ بالله** कहां येह **अब्बाहु** तअ़ाला के पाक बन्दे और कहां मन्हूस और दिलों के गन्दे लोग ! **چه نسبت خاک را با عالم پاک**

हज़रते मौलाना रूम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं :

کار پاکان را قیاس از خود مکبر  
گرچه ماند در نوشتن شیر و شیر

(या'नी पाक लोगों के मुआमलात को अपने ऊपर मत क़ियास कर, अगर्चे लिखने में शेर (श़ीर) और शीर (श़ीर) बिल्कुल हमशक्ल और मुशबेह हैं लेकिन एक शेर (श़ीर) वोह है कि इन्सान को फाड़ कर खा जाता है और एक शीर (श़ीर) या'नी दूध है कि इसे इन्सान खाता और पीता है । <sup>(1)</sup> **فَاعْتَبِرُوا يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا** )

1 .....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो इब्रत लो ऐ निगाह वालो । (प २८, الحشر: २)।

## ﴿29﴾ हज़रते अनस बिन नज़र رضي الله تعالى عنه

येह हज़रते अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه के चचा हैं । येह बहुत ही बहादुर और जां बाज़ सहाबी हैं । हज़रते अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه का बयान है कि मेरे चचा हज़रते अनस बिन नज़र رضي الله تعالى عنه जंगे उहुद के दिन अकेले ही कुफ़्फ़ार से लड़ते हुवे आगे बढ़ते ही चले गए । जब आप ने देखा कि कुछ मुसलमान सुस्त पड़ गए हैं और आगे नहीं बढ़ रहे तो आप ने बुलन्द आवाज़ से ललकार कर फ़रमाया وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ الْحَنَّةِ دُونَ أَحَدٍ وَأَنَّهَا لَرِيحُ الْحَنَّةِ (या'नी मैं उस जात की क़सम खा कर कहता हूँ कि जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है कि मैं उहुद पहाड़ के पास जन्नत की खुशबू पा रहा हूँ और यकीनन बिलाशुबा येह जन्नत ही की खुशबू है ।)

आप ने येह फ़रमाया और अकेले ही कुफ़्फ़ार के नर्गे में लड़ते लड़ते ज़ख्मों से चूर हो कर गिर पड़े और शहादत के शरफ़ से सरफ़राज़ हुवे ।

इन के बदन पर तीरों, तल्वारों और नेजों के अस्सी से ज़ियादा ज़ख्म गिने गए थे और कुफ़्फ़ार ने इन की आंखों को फोड़ कर और नाक, कान, होंट को काट कर इन की सूरत इस क़दर बिगाड़ दी थी कि कोई शख्स इन की लाश को पहचान न सका मगर जब इन की बहन हज़रते रुब्बीअ رضي الله تعالى عنها आई तो उन्होंने ने इन की उंगलियों के पौरों को देख कर पहचाना कि येह मेरे भाई अनस बिन नज़र رضي الله تعالى عنه की लाश है ।

हज़रते अनस बिन नज़र رضي الله تعالى عنه जंगे बद्र में शरीक नहीं हो सके थे इस का इन्हें शदीद रन्जो क़लक़ था कि अफ़सोस ! मैं इस्लाम के पहले ग़ज़वे में ग़ैर हाज़िर रहा । फिर वोह अकषर कहा करते थे कि अगर आइन्दा कभी **अल्लाह** तआला ने येह दिन दिखाया कि कुफ़्फ़ार से जंग का मौक़ा मिला तो **अल्लाह** तआला देख लेगा कि मैं जंग क्या करता हूँ और क्या कर दिखाता हूँ ।

चुनान्चे, सि. 3 हि. में जब जंगे उहुद हुई तो इन्हों ने खुदा तअला से जो वा'दा किया था वोह पूरा कर के दिखा दिया कि अपने बदन पर अस्सी से ज़ाइद ज़ख़्म खा कर शहीद हो गए। चुनान्चे, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि इन की शान में कुरआने करीम की येह आयत नाज़िल हुई।

مِنْ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا  
 عَاهَدُوا اللّٰهُ عَلَيْهِ (1)  
 मोअमिनीन में से कुछ मर्द ऐसे हैं  
 जिन्हों ने खुदा से किये हुवे अपने  
 अहद को पूरा कर दिया। (2)

(अकाल, व. ५८५, अस्द الغाबे, ज. १, व. १२२, हिजे अल्लज २, व. ८८, अख़ारी शरीफ)

## कशमल

इन की करामतों में से येह एक करामत बहुत ज़ियादा मशहूर और मुस्तनद है।

## खुदा ने कशम पूरी फ़रमा दी

हज़रते अनस बिन अन्नज़र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बहन रुब्बीअ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने झगड़ा व तकरार करते हुवे एक अन्सारी की लड़की के दो अगले दांत तोड़ डाले। लड़की वालों ने किसास का मुतालबा किया और शहनशाहे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुरआने मजीद के हुक्म के मुताबिक़ येह फैसला फ़रमा दिया कि रुब्बीअ बित्ते अन्नज़र के दांत किसास में तोड़ दिये जाएं।

①....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अहद **अब्लाह** से किया था। (अ. २१, अ. २३)

②.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل فی الصحابة، ص ५८५

واسد الغابة، انس بن النضر، ج १، ص १९८ وحجة الله على العالمين، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء... الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملة جميلة... الخ، ص ११९



जब हज़रते अनस बिन अन्नज़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को पता चला तो वोह बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और येह कहा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खुदा तअ़ाला की क़सम ! मेरी बहन का दांत नहीं तोड़ा जाएगा । हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि ऐ अनस बिन अन्नज़र ! तुम क्या कह रहे हो ? क़िसास तो **अल्लाह** तअ़ाला की किताब का फ़ैसला है । येह गुफ़्तूगू अभी हो रही थी कि लड़की वाले दरबारे नबुव्वत में हाज़िर हुवे और कहने लगे कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क़िसास में रुब्बीअ का दांत तोड़ने के बदले में हम लोगों को दैत (माली मुआवज़ा) दिला दिया जाए । इस तरह अनस बिन अन्नज़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की क़सम भी पूरी हो गई और इन की बहन हज़रते रुब्बीअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का दांत तोड़े जाने से भी बच गया ।

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस मौक़अ पर येह इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तअ़ाला के बन्दों में से कुछ ऐसे लोग भी हैं कि अगर वोह किसी मुआमले में **अल्लाह** तअ़ाला की क़सम खा लें तो **अल्लाह** तअ़ाला उन की क़सम पूरी फ़रमा देता है ।<sup>(1)</sup>

(بخاری شریف، ج ۲، ص ۶۶۴، باب قوله والجروح قصاص)

## तबसेरा

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इरशादे गिरामी का येह मतलब है कि **अल्लाह** तअ़ाला के बन्दों में से कुछ ऐसे मक्बूलाने बारगाहे इलाही हैं कि अगर किसी ऐसी चीज़ के बारे में जो बज़ाहिर होने वाली न हो, **अल्लाह** तअ़ाला के येह बन्दे अगर क़सम खा लें कि हो जाएगी तो **अल्लाह** तअ़ाला उन मुक़द्दस बन्दों की क़समों को टूटने नहीं देता बल्कि उस न होने वाली चीज़ को मौजूद फ़रमा देता है ताकि इन मुक़द्दस बन्दों की क़सम पूरी हो जाए ।

①.....صحيح البخاری، کتاب التفسیر، باب والجروح قصاص، الحديث: ۶۱۱، ج ۳، ص ۲۱۵

देख लीजिये कि हज़रते रुबीअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के लिये दरबारे नबुव्वत से किसास का फैसला हो चुका था और मुद्ई ने किसास ही का मुतालबा किया था लेकिन जब हज़रते अनस बिन अन्नज़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कसम खा गए कि खुदा की कसम ! मेरी बहन का दांत नहीं तोड़ा जाएगा तो खुदा तआला ने ऐसा ही सबब पैदा कर दिया। तो ज़ाहिर है कि अगर फैसले के मुताबिक दांत तोड़ दिया जाता तो इन की कसम टूट जाती मगर खुदा तआला का फज़्लो करम हो गया कि मुद्ई का दिल बदल गया और उस ने बजाए किसास के दैत का मुतालबा कर दिया इस तरह दांत टूटने से बच गया और इन की कसम पूरी हो गई।

इस की बहुत सी मिषालें और षुबूत हासिल होंगे कि **अब्बाह** वाले जिस बात की कसम खा गए **अब्बाह** तआला ने उस चीज़ को मौजूद फ़रमा दिया अगर्चे वोह चीज़ ऐसी थी कि बज़ाहिर इस के होने की कोई भी सूत नहीं थी।

﴿30﴾ **हज़रते हज़ज़ला बिन अबी अमिर** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह मदीनए मुनव्वरा के बाशिन्दे हैं और अन्सार के कबीलए औस से इन का खानदानी तअल्लुक है। इन का बाप अबू अमिर अपने कबीले का सरदार था और ज़मानए जाहिलिय्यत में उस की इबादत की कषरत को देख कर अम तौर पर लोग इस को अबू अमिर राहिब कहा करते थे। जब हुज़ुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हिजरत फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए और पूरा मदीना और अतराफ़ हुज़ुर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कदमों पर कुरबान होने लगा तो मदीने के दो शख्सों पर हसद का भूत सुवार हो गया। एक अब्दुल्लाह बिन उबय्य, दूसरा अबू अमिर राहिब। लेकिन अब्दुल्लाह बिन उबय्य ने तो अपनी दुश्मनी को छुपाए रखा और मुनाफ़िक बन कर मदीने ही में रहा लेकिन अबू अमिर राहिब हसद की आग में जल भुन कर मदीने से मक्का चला गया और कुप्फ़ार को भड़का कर मदीनए मुनव्वरा पर हमले के लिये तय्यार किया चुनान्चे,

सि. 3 हि. में जब जंगे उहुद हुई तो अबू अमिर कुफ़ार के लश्कर में शामिल था और कुफ़ार की तरफ़ से लड़ रहा था मगर उस के बेटे हज़रते हन्ज़ला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ परचमे इस्लाम के नीचे निहायत ही जवां मर्दी और जोश व ख़रोश के साथ कुफ़ार से लड़ रहे थे। अबू अमिर राहिब जब तल्वार घुमाता हुआ मैदान में निकला तो हज़रते हन्ज़ला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं अपनी तल्वार से अपने बाप अबू अमिर का सर काट कर लाऊं मगर हुज़ूर रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रहमत ने येह गवारा नहीं किया कि बेटे की तल्वार बाप का सर काटे इस लिये आप ने इजाज़त नहीं दी मगर हज़रते हन्ज़ला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जोशे जिहाद में इस क़दर आपे से बाहर हो गए थे कि सर हथेली पर रख कर इन्तिहाई जांबाज़ी के साथ लड़ते हुवे क़ल्बे लश्कर तक पहुंच गए और कुफ़ार के सिपह सालार अबू सुफ़्यान पर हम्ला कर दिया और करीब था कि हज़रते हन्ज़ला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तल्वार अबू सुफ़्यान का फैसला कर दे मगर अचानक पीछे से शद्दाद बिन अल अस्वद ने झपट कर वार को रोका और हज़रते हन्ज़ला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को शहीद कर दिया।<sup>(1)</sup> (असदुलगायब, ज २, स २८८, مدارज النبوة, स १२३)

### कशमल

### ग़शीलुल मलाइका

हज़रते हन्ज़ला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के बारे में हुज़ूर अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि फ़िरिश्तों ने उन्हें गुस्ल दिया है। जब उन की बीवी से उन का हाल दरयाफ़्त किया गया तो उन्होंने येह बताया कि वोह जंगे उहुद की रात में अपनी बीवी के साथ सोए थे और गुस्ल की हाज़त

①.....असदुलगायब, حنظلة بن ابی عامر، ج ۲، ص ۸۴-۸۵

والاصابة فی تمییز الصحابة، حنظلة بن ابی عامر، ج ۲، ص ۱۱۹

हो गई थी मगर वोह रात के आखिरी हिस्से में दा'वते जंग की पुकार सुन कर इस खयाल से बिला गुस्ल मैदाने जंग की तरफ दौड़ पड़े कि शायद गुस्ल करने में **अब्बाह** के रसूल की पुकार पर दौड़ने में देर लग जाए। हुजुरे अक्दस **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया कि येही वजह है कि फ़िरिश्तों ने शहादत के बा'द उन को गुस्ल दिया, वरना शहीद को गुस्ल देने की ज़रूरत ही नहीं है। इसी वाकिए की बिना पर हज़रते हन्ज़ला **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** को ग़सीलुल मलाइका (फ़िरिश्तों के नहलाए हुवे) कहा जाता है।<sup>(1)</sup> (مدارج النبوة، ج ۲ مشکوٰۃ شریف وغیره)

## तबसेरा

फ़िरिश्तों ने हज़रते हन्ज़ला **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** को शहादत के बा'द गुस्ल दिया। येह आप की बहुत बड़ी करामत और निहायत ही अज़ीमुशान फ़ज़ीलत है। चुनान्वे, आप के क़बीले वालों को इस पर बहुत बड़ा फ़ख़्र और नाज़ था कि हज़रते हन्ज़ला **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** हमारे क़बीले के एक अदीमुल मिषाल फ़र्द हैं कि जिन को फ़िरिश्तों ने नहलाया। इस तफ़ाखुर के सिलसिल में मन्कूल है कि क़बीलए औस के लोगों ने क़बीलए ख़ज़रज वालों से कहा कि देख लो हज़रते हन्ज़ला **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** ग़सीलुल मलाइका हमारे क़बीलए औस के हैं और हज़रते अ़सिम **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** शहद की मख़िख़यों ने जिन की लाश पर पहरा दिया था वोह भी हमारे क़बीलए औस के हैं और हज़रते सा'द बिन मुअज़ **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** जिन की वफ़ात पर अर्शे इलाही हिल गया वोह भी हमारे क़बीलए औस के हैं और हज़रते खुज़ैमा बिन षाबित **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** जिन की अकेले की गवाही दो गवाहों के बराबर है वोह भी हमारे क़बीलए औस ही के हैं। येह सुन कर क़बीलए ख़ज़रज के लोगों ने कहा कि हमारे क़बीलए ख़ज़रज

वालों को भी येह फ़ख़्र हासिल है कि हुज़ूरे अक्दस عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मौजूदगी में हमारे कबीले के चार आदमी हाफ़िज़े कुरआन व क़ारी हुवे और तुम्हारे कबीले में इस वक़्त तक कोई भी पूरा हाफ़िज़े कुरआन नहीं हुवा । देख लो हज़रते ज़ैद बिन षाबित, हज़रते अबू ज़ैद व हज़रते उबय्य बिन का'ब व हज़रते मुआज़ बिन जबल (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ) येह चारों हुप्फ़ज़ हमारे कबीलाए ख़ज़रज के सपूत हैं।<sup>(1)</sup> (असदुलगायब, ज २, पृ १८)

### ﴿31﴾ हज़रते अमिर बिन फुहैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह हज़रते अबू बक्र सिदीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं । येह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे फिर कुप्फ़ारे मक्का ने इन को बहुत ज़ियादा सताया तो हज़रते अबू बक्र सिदीक रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया । वाक़िअए हिजरत के वक़्त जब कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने यारे ग़ार सिदीके जां निषार रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ ग़ारे घौर में तशरीफ़ फ़रमा हुवे तो येही हज़रते अमिर बिन फुहैरा रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ दिन भर बकरियों को चरा कर ग़ार के पास रात को लाते और इन बकरियों का दूध दोह कर दोनों अलम के ताजदार और उन के यारे ग़ार को पिलाते । जब ग़ारे घौर से हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मदीनए मुनव्वरा के लिये रवाना हुवे तो एक ऊंटनी पर शहनशाहे दो अलम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ और एक ऊंटनी पर हज़रते अबू बक्र सिदीक और हज़रते अमिर बिन फुहैरा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) बैठे ।

सफ़रुल मुज़प्फ़र सि. 4 हि. वाक़िअए “बीरे मऊना” में आप को शहादत की सआदत हासिल हुई।<sup>(2)</sup> (असदुलगायब, ज ३, पृ ११)

(पूरी तफ़्सील के लिये पढ़िये हमारी किताब “सीरतुल मुस्तफ़ा صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ”)

①.....असदुलगायब, حنظلة بن ابی عامر رضی اللہ عنہ، ج ۲، ص ۸۵

②.....असदुलगायब, عامر بن فهيرة رضی اللہ عنہ، ج ۳، ص ۱۳۳

## कशमात

### लाश आस्मान तक बुलन्द हुई

जंगे बीरे मरुना में सत्तर सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ में से सिर्फ़ अम्र बिन उमय्या ज़मिरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जिन्दा बचे बाकी सब जामे शहादत से सैराब हो गए। इन ही शुहदाए किराम में से हज़रते अमिर बिन फुहैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ भी हैं। कुफ़्फ़ार के सरदार अमिर बिन तुफ़ैल का बयान है कि हज़रते अमिर बिन फुहैरा जब शहीद हो गए तो एक दम उन की लाश ज़मीन से बुलन्द हो कर आस्मान तक पहुंची फिर थोड़ी देर के बा'द आहिस्ता आहिस्ता वोह ज़मीन पर उतर आई और इस के बा'द उन की लाश तलाश करने पर नहीं मिली क्योंकि फ़िरिश्तों ने उन्हें दफ़न कर दिया। <sup>(1)</sup> (بخاری، ۲۷، ص ۵۸۷)

### तबसेरा

जिस तरह हज़रते हन्ज़ला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को फ़िरिश्तों ने गुस्ल दिया तो इन का लक़ब “ग़सीलुल मलाइका” हुवा। इसी तरह चूँकि इन को फ़िरिश्तों ने क़ब्र में दफ़न किया था इस लिये येह “दफ़ीनुल मलाइका” (फ़िरिश्तों के दफ़न कर्दा) हैं। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ

### ﴿32﴾ हज़रते ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैषी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह बिन मिसअर बिन जा'फ़र बिन कल्ब लैषी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इन का वतन मक्काए मुअज़्ज़मा है और येह फ़त्हे मक्का से पहले ही मुसलमान हो गए थे। फ़त्हे मक्का में येह हुजूरे अक़दस शहनशाहे कौनैन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हम

①.....صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الرجیع ورعل...الخ، الحدیث: ۴۰۹۳،



रिकाब थे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन को मक्काए मुकर्रमा के रास्तों की दुरुस्ती और कुफ़्फ़ार के हालात की जासूसी के काम पर मामूर फ़रमाया। फिर फ़ह्ने मक्का के बा'द साठ सुवारों का अफ़्सर बना कर आप ने इन को मक़ामे कदीद में बनी अल मलूह से जंग के लिये भेज दिया।

इब्नुल कल्बी का बयान है कि जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन को बनी मुरा से लड़ने के लिये “फ़दक” भेजा, वहीं येह शहादत से सरफ़राज़ हो गए। <sup>(1)</sup> وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم  
(اسد الغابة، ج ۴، ص ۱۶۸)

एक रिवायत से येह भी मा'लूम होता है कि हज़रते फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में भी येह जिहादों में शरीक होते रहे हैं। ख़ास तौर पर जंगे क़ादिसिय्या में ख़ूब ख़ूब कुफ़्फ़ार से लड़े। मशहूर है कि हरमज़ इन्ही के हाथ से मारा गया। हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की हुकूमत के दौरान ज़ियाद ने इन को खुरासान का हाकिम बना दिया। <sup>(2)</sup> (اصابة، ج ۵، ص ۱۸८)

इन की येह एक करामत बहुत मशहूर और निहायत ही मुस्तनद है।

## कशमात

### ख़ुश्क नाले में नागहां सैलाब

हज़रते जुन्दब बिन मकीष जुहन्नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि रसूले खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते ग़ाबिल बिन अब्दुल्लाह लैषी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को एक छोटे से लश्कर का अमीर

①..... اسد الغابة، غالب بن عبد الله الكنانى الليثى، ج ۴، ص ۳۵۷ ملقطاً

②..... الاصابة فى تمييز الصحابة، حرف الغين المعجمة، ج ۵، ص ۲۴۳

बना कर जिहाद के लिये भेजा। मैं भी इस लश्कर में शामिल था। हम लोगों ने मक़ामे “कुदैद” में क़बीलए बनी अल मलूह पर हम्ला किया और उन के ऊंटों को माले ग़नीमत बना कर वापस आने लगे, अभी हम लोग कुछ दूर ही चले थे कि बनू अल मलूह के तमाम क़बाइल का एक बहुत बड़ा लश्कर जम्अ हो कर हमारे तअाकुब में आ गया, हम लोग एक नाले के पार आ गए जो बिल्कुल ही खुश्क था और हम लोगों को बिल्कुल ही यकीन हो गया कि अब हम लोग इन काफ़ि़रों के हाथों में गिरिफ़्तार हो जाएंगे मगर कुफ़्फ़ार जब नाले के पास आए तो बा वुजूद येह कि न बारिश हुई न बदली किसी तरफ़ नज़र आई अचानक नाला पानी से भर गया और इस जोरो शोर से पानी का बहाव था कि इस को पार करना इन्तिहाई दुश्वार था चुनान्चे, कुफ़्फ़ार का लश्कर नाले के पास ठहर गया और एक काफ़िर भी नाले को पार न कर सका और हम लोग निहायत ही इतमीनान और सलामती के साथ मदीनए मुनव्वरा पहुंच गए।<sup>(1)</sup> (हिजेतुल्लाह, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

## तबसेश

हम करामत की क़िस्मों के बयान में लिख चुके हैं कि बिल्कुल नागहां और अचानक ग़ैब से किसी चीज़ का बतौर इमदाद के ज़ाहिर हो जाना येह भी करामत की एक क़िस्म है। खुश्क नाले में अचानक पानी भर जाना येह हज़रते ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैषी **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की इसी क़िस्म की करामत है, इन की इसी करामत की बदौलत तमाम सहाबियों **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** की जान बच गई।

## ﴿33﴾ हज़रते अबू मूसा अश़अरी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**

हज़रते अबू मूसा अश़अरी **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** यमन के बाशिन्दे थे। मक्कए मुकर्रमा में आ कर इस्लाम क़बूल किया। पहले हिजरत कर के हबशा चले गए फिर हबशा से कश्तियों पर सुवार हो कर

1.....الطبقات الكبرى لابن سعد، سرية غالب بن عبد الله الليثي... الخ، ج ٢، ص ٩٥

तमाम मुहाजिरीने हबशा के साथ आप भी तशरीफ़ लाए और ख़ैबर में हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में हाज़िर हुवे । हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने सि. 20 हि. में इन को बसरा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया और हज़रते उषमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की शहादत तक येह बसरा के गवर्नर रहे जब हज़रते अली और हज़रते अमीरे मुआविय्या **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** की जंग शुरूअ हुई तो पहले आप हज़रते अली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के तरफ़दार थे मगर इस झगड़े से मुन्कबिज़ हो कर मक्कए मुक़र्रमा चले गए यहां तक कि सि. 52 हि. में आप की वफ़ात हो गई ।<sup>(1)</sup> (अकाल, ज ११८)

### करामात

#### गैबी आवाज़ सुनते थे

आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की येह एक ख़ास करामत थी कि गैबी आवाज़ें आप के कान में आया करती थीं । चुनान्चे, हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** का बयान है कि एक मरतबा हज़रते अबू मूसा अश्शरी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** समन्दरी जिहाद में अमीरे लश्कर बन कर गए । रात में सब मुजाहिदीन कशितयों पर सुवार हो कर सफ़र कर रहे थे कि बिल्कुल नागहां ऊपर से एक पुकारने वाले की आवाज़ आई :

“क्या मैं तुम लोगों को खुदा तआला के उस फैसले की ख़बर दे दूं जिस का वोह अपनी ज़ात पर फैसला फ़रमा चुका है ? येह वोह है कि जो **अब्बाह** तआला के लिये गर्मी के दिनों में प्यासा रहेगा । **अब्बाह** तआला पर हक़ है कि प्यास के दिन (क़ियामत में) ज़रूर ज़रूर उस को सैराब फ़रमा देगा ।”<sup>(2)</sup> (हिज्जेतुल्लाह, ज २, स ८८२, ख़ोल्हाक़म)

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف المیم، فصل فی الصحابة، ص ११८

②.....المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفة الصحابة علیهم الرضوان ، باب جزء من

يعطش لله فی يوم صائف، الحديث: ٦٠٢٢، ج ٤، ص ٥٨٦

## लहने दावूदी

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की आवाज़ और लहजे में इतनी ज़बरदस्त कशिश थी कि इस को करामत के सिवा और कुछ भी नहीं कहा जा सकता। हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जब हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को देखते तो फ़रमाते :  
 ذَكَّرْنَا رَبَّنَا يَا أَبَا مُوسَى (ऐ अबू मूसा ! हम को अपने रब की याद दिलाओ)  
 येह सुन कर हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कुरआन शरीफ़ पढ़ने लगते, इन की क़िराअत सुन कर हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के क़ल्ब में ऐसी नूरी तजल्ली पैदा हो जाती कि इन्हें दुनिया से दूरी और अपने रब की हुज़ूरी नसीब हो जाती थी।<sup>(1)</sup>

हज़रते बुरैदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अबू मूसा अश्अरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की क़िराअत सुनी तो इरशाद फ़रमाया कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सी खुश इल्हानी इस शख्स को खुदा तआला की तरफ़ से अता की गई है।<sup>(2)</sup>

### ﴿34﴾ हज़रते तमीम दारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते तमीम बिन औस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पहले नस्रानी थे फिर सि. 9 हि. में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। बहुत ही इबादत गुज़ार थे। एक ही रकअत में कुरआने मजीद पढ़ा करते थे और कभी कभी एक ही आयत को रात भर सुब्ह तक नमाज़ में बार बार पढ़ते रहते। हज़रते मुहम्मद बिन अल मुन्कदिर का बयान है कि एक रात सोते रह गए और नमाज़े तहज्जुद के लिये नहीं उठ सके तो इन्होंने अपनी इस कोताही का कफ़ारा इस तरह अदा किया कि मुकम्मल एक साल तक रात भर नहीं सोए। पहले मदीनए मुनव्वरा में रहते थे फिर

①..... क़त्तल अल-अमाल, क़त्तल अल-अमाल, فضائل الصحابة، الحديث: ٣٧٥٤٧، ج ٧، الجزء ١٣، ص ٢٦٠

②..... क़त्तल अल-अमाल, क़त्तल अल-अमाल, فضائل الصحابة، الحديث: ٣٧٥٥٠، ج ٧، الجزء ١٣، ص ٢٦٠

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़षमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की शहादत के बा'द मुल्के शाम में चले गए और अखीर उ़म्र तक मुल्के शाम ही में रहे। मस्जिदे नबवी **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** में सब से पहले इन्हों ने किन्दील जलाई और हुज़ूरे अक्दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने दज्जाल के जसासा का वाकिअ़ा इन से सुन कर सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** को सुनाया। <sup>(1)</sup> (अकाल, ज १, प ५८८) (असदुल ग़ाबि, ज १, प २१५)

### करामत

### चादर दिखा कर आग बुझा दी

आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की करामतों में से एक मशहूर और मुस्तनद करामत यह है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के दौरे ख़िलाफ़त में जब पहाड़ के एक ग़ार से एक कुदरती आग नुमूदार हुई तो अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इन को अपनी चादर अ़ता फ़रमाई, येह चादर ले कर जब आग के क़रीब पहुंचे तो आग बुझती हुई पीछे को हटती चली गई यहां तक कि आग ग़ार के अन्दर दाख़िल हो गई और येह खुद भी आग को चादर से दफ़अ करते हुवे ग़ार में घुसते चले गए जब येह आग को बुझा कर हज़रते अमीरुल मोअमिनीन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िदमत में हाज़िर हुवे तो आप ने फ़रमाया कि ऐ तमीम दारी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** इसी दिन के लिये हम ने तुम को छुपा रखा था। <sup>(2)</sup> (हज़े अल्लह, ज २, प ८३, अख़ाल अल्लुमि) (इस आग का मुफ़स्सल हाल हम ने अपनी किताब “रूहानी हिक़ायात” हिस्सा. 2 और “सीरतुल मुस्तफ़ा” में तहरीर किया है)

①.....असदुल ग़ाबि, तमिम बिन अउस रउज़ी अल्लु अन्हे, ज १, प ३१९

والاكمال فى اسماء الرجال، حرف التاء، فصل فى الصحابة، ص ५८८

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

فى ذكر جملة جميلة...الخ، ص ६२१

### ﴿35﴾ हज़रते इमरान बिन हसीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन की कुन्यत “अबू नजीद” है और येह कबीलए बनू खज़ाआ” की एक शाख बनू का’ब के खानदान से हैं इस लिये खज़ाई और का’बी कहलाते हैं। सि. 7 हि. में जंगे खैबर के साल मुसलमान हुवे। हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपनी ख़िलाफ़त के दौरान इन को अहले बसरा की ता’लीम के लिये मुक़र्रर फ़रमाया था। मुहम्मद बिन सीरीन मुहद्दिष फ़रमाया करते थे कि बसरा में इमरान बिन हसीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से ज़ियादा पुराना और अफ़ज़ल कोई सहाबी नहीं। इन की पूरी ज़िन्दगी मजहबी रंग में रंगी हुई थी तरह तरह की इबादतों में बहुत ज़ियादा महनते शाक़का फ़रमाते थे।

हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ इन्हें इतनी वालिहाना अक़ीदत थी और आप का इतना एहतिराम रखते थे कि जिस हाथ से इन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दस्ते मुबारक पर बैअत की थी उस हाथ से उम्र भर इन्हों ने पेशाब का मक़ाम नहीं छुवा। तीस बरस तक मुसलसल इस्तिस्का की बीमारी में साहिबे फ़िराश रहे और शिकम का ओपरेशन भी हुवा मगर सब्र व शुक्र का येह हाल था कि हर मिज़ाज पुर्सी करने वाले से येही फ़रमाया करते थे कि मेरे खुदा को जो पसन्द है वोही मुझे भी महबूब है। सि. 52 हि. में ब मक़ामे बसरा आप का विसाल हुवा।<sup>(1)</sup>

(حجة الله، ج ۲، ص ۸۷۳ واکمال واسد الغابة، ج ۴، ص ۱۳۷)

1..... الاكمال فى اسماء الرجال، حرف العين، فصل فى الصحابة، ص ۶۰۷

واسد الغابة، عمران بن حصين رضى الله عنه، ج ۴، ص ۲۹۹  
وحجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثالث

فى ذكر جملة جميلة... الخ، ص ۶۲۱

والطبقات الكبرى لابن سعد، عمران بن حصين رضى الله عنه، ج ۴، ص ۲۱۵



## करामत

## फ़िरिश्तों से सलाम व मुसाफ़हा

आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की मशहूर करामत यह है कि आप फ़िरिश्तों की तस्बीह की आवाज़ सुना करते और फ़िरिशते आप से मुसाफ़हा किया करते थे नीज़ आप बहुत मुस्तजाबुद्दा'वात भी थे। या'नी आप की दुआएं बहुत ज़ियादा मक़बूल हुवा करती थीं।<sup>(1)</sup>

(حجة الله، ج ۲، ص ۸۷۳ واسد الغابة، ج ۲، ص ۱۳۷ وابن سعد، ج ۲، ص ۲۸۸)

﴿36﴾ हज़रते सफ़ीना **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

येह हुजूरे अक्दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं और बा'ज़ का कौल है कि येह हज़रते उम्मुल मोअमिनीन उम्मे सलमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** के गुलाम थे। उन्होंने ने इस शर्त पर इन को आज़ाद किया था कि उम्र भर रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत करते रहेंगे। “सफ़ीना” इन का लक़ब है। इन के नाम में इख़िलाफ़ है किसी ने “रबाह” किसी ने “मेहरान” किसी ने “रौमान” नाम बताया है। “सफ़ीना” अरबी में कश्ती को कहते हैं। इन का लक़ब “सफ़ीना” होने का सबब येह है कि दौराने सफ़र एक शख़्स थक गया तो उस ने अपना सामान इन के कन्धों पर डाल दिया और येह पहले ही बहुत ज़ियादा सामान उठाए हुवे थे। येह देख कर हुजूरे अक्दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने खुश तबई और मुज़ाह के तौर पर येह फ़रमाया कि **أَنْتَ سَفِينَةٌ** (तुम तो कश्ती हो) उस दिन से आप का येह लक़ब इतना मशहूर हो गया कि लोग आप का अस्ली नाम ही

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۲۲۱

والطبقات الكبرى لابن سعد، عمران بن حصين رضى الله عنه، ج ۴، ص ۲۱۶

واسد الغابة، عمران بن حصين رضى الله عنه، ج ۴، ص ۲۹۹

भूल गए, लोग इन का अस्ली नाम पूछते तो येह फ़रमाते थे कि मैं नहीं बताऊंगा। मेरा नाम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने “सफीना” रख दिया है अब मैं इस नाम को कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं बदलूंगा।<sup>(1)</sup>

(अक़ाल, ज २, पृ ५९८, वासद الغाबे, ज २, पृ ३२३)

## करामत

### शेर ने रास्ता बताया

इन की मशहूर और निहायत ही मुस्तनद करामत येह है कि येह रूम की सर ज़मीन में जिहाद के दौरान इस्लामी लश्कर से बिछड़ गए और लश्कर की तलाश में दौड़ते भागते चले जा रहे थे कि बिल्कुल ही अचानक जंगल से एक शेर निकल कर इन के सामने आ गया, इन्होंने ने डांट कर बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि ऐ शेर ! मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का गुलाम हूं और मेरा मुआमला येह है कि मैं लश्करे इस्लाम से अलग पड़ गया हूं और लश्कर की तलाश में हूं। येह सुन कर शेर दुम हिलाता हुवा इन के पहलू में आ कर खड़ा हो गया और बराबर इन को अपने साथ में लिये हुवे चलता रहा यहां तक कि येह लश्करे इस्लाम में पहुंच गए तो शेर वापस चला गया।<sup>(2)</sup> (مشکوّة، ج २, पृ ५५३, باب الکرامات)

### ﴿37﴾ हज़रते अबू उमामा बाहिली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन का नाम सदी बिन इजलान है मगर येह अपनी कुन्यत ही के साथ मशहूर हैं। बनू बाहिला के ख़ानदान से हैं इस लिये बाहिली कहलाते हैं। मुसलमान होने के बा'द सब से पहले सुल्हे हुदैबिया में शरीक हो कर बैअतुरिजवान के शरफ़ से सरफ़राज़ हुवे।

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص ५९७

واسد الغابة، سفينة رضى الله عنه، ج २، ص ४८१

②.....مشكاة المصابيح، کتاب الفضائل والشمائل، باب الکرامات، الحديث: ५९६۹،

दो सो पचास हदीषें इन से मरवी हैं और हदीषों के दर्स व इशाअत में इन को बेहद शग़फ़ था, पहले मिस्र में रहते थे फिर हम्स चले गए और वहीं सि. 86 हि. में इकानवे बरस की उम्र में वफ़ात पाई। बा'ज मुअर्रिख़ीन ने इन का साले वफ़ात सि. 81 हि. तहरीर किया है। येह अपनी दाढ़ी में ज़र्द रंग का ख़िज़ाब करते थे।<sup>(1)</sup>

(अक़ाल, ص 586 واسد الغابة, ج 3, ص 16)

## करामात

### फ़िरिशते ने दूध पिलाया

इन की एक करामत येह है कि जिस को वोह खुद बयान फ़रमाया करते थे कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इन को भेजा कि तुम अपनी क़ौम में जा कर इस्लाम की तब्लीग़ करो चुनान्चे, हुक्मे नबवी की ता'मील करते हुवे येह अपने क़बीले में पहुंचे और इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया मगर इन की क़ौम ने इन के साथ बहुत बुरा सुलूक किया, खाना खिलाना तो बड़ी बात है पानी का एक क़तरा भी नहीं दिया बल्कि इन का मज़ाक़ उड़ाते हुवे और बुरा भला कहते हुवे इन को बस्ती से बाहर निकाल दिया। येह भूक प्यास से इन्तिहाई बे ताब और निढाल हो चुके थे लाचार हो कर खुले मैदान ही में एक जगह सो गए तो ख़्वाब में देखा कि एक आने वाला (फ़िरिश्ता) आया और इन को दूध से भरा हुवा एक बरतन दिया। येह इस दूध को पी कर ख़ूब जी भर कर सैराब हो गए। खुदा की शान देखिये कि जब नींद से बेदार हुवे तो न भूक थी न प्यास।

①..... اسد الغابة، صدى بن عجلان، ج 3، ص 16-17

والاكمال فى اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل فى الصحابة، ص 586

والاعلام للزركلى، صدى بن عجلان، ج 3، ص 203

इस के बा'द गाउं के कुछ खैर पसन्द और सुलझे हुवे लोगों ने गाउं वालों को मलामत की, कि अपने ही कबीले का एक मुअज़्ज़ा आदमी गाउं में आया और तुम लोगों ने उस के साथ शर्मनाक किस्म की बद सुलूकी कर डाली जो हमारे कबीले वालों की पेशानी पर हमेशा के लिये कलंक का टीका बन जाएगी। येह सुन कर गाउं वालों को नदामत हुई और वोह लोग खाना पानी वगैरा ले कर मैदान में इन के पास पहुंचे तो इन्होंने ने फ़रमाया कि मुझे तुम्हारे खाने पानी की अब कोई ज़रूरत नहीं है मुझ को तो मेरे रब ने खिला पिला कर सैराब कर दिया है और फिर अपने ख़्वाब का किस्सा बयान किया। गाउं वालों ने जब येह देख लिया कि वाक़ेई येह खा पी कर सैराब हो चुके हैं और इन के चेहरे पर भूक व प्यास का कोई अषर व निशान तक नहीं हालांकि इस सुनसान जंगल और बियाबान में खाना पानी कहीं से मिलने का कोई सुवाल ही पैदा नहीं होता तो गाउं वाले आप की इस करामत से बेहद मुतअ़्षि़र हुवे यहां तक कि पूरी बस्ती के लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।<sup>(1)</sup>

(حجة الله، ج ۲، ص ۸۷-۸۸ بحواله تقي و كنز العمال، ج ۱۶، ص ۲۲۲ و مستدرک حاکم، ج ۳، ص ۶۴۲)

## इमदादे ग़ैबी की अशरफ़ियां

हज़रते अबू उमामा बाहिली **رضي الله تعالى عنه** की बांदी का बयान है कि येह बहुत ही सखी और फ़य्याज़ आदमी थे। किसी साइल को भी अपने दरवाज़े से ना मुराद नहीं लौटाते थे। एक दिन इन के पास सिर्फ़ तीन ही अशरफ़ियां थीं और येह उस दिन रोज़े से थे इत्तिफ़ाक़ से उस दिन तीन साइल दरवाज़े पर आए और आप ने

①.....دلائل النبوة للبيهقي، باب ما جاء في ما ظهر على أبي امامة...الخ، ج ۶، ص ۱۲۶

و كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ۳۷۵۶۲، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۲۶۲

तीनों को एक एक अशरफ़ी दे दी। फिर सो रहे। बांदी कहती हैं कि मैं ने नमाज़ के लिये उन्हें बेदार किया और वोह वुजू कर के मस्जिद में चले गए। मुझे उन के हाल पर बड़ा तरस आया कि घर में न एक पैसा है न अनाज का एक दाना, भला येह रोज़ा किस चीज़ से इफ़्तार करेंगे ? मैं ने एक शख्स से कर्ज़ ले कर रात का खाना तय्यार किया और चराग़ जलाया। फिर मैं जब उन के बिस्तर को दुरुस्त करने के लिये गई तो क्या देखती हूं तीन सो अशरफ़ियां बिस्तर पर पड़ी हुई हैं। मैं ने उन को गिन कर रख दिया वोह नमाज़े इशा के बा'द जब घर आए और चराग़ जलता हुवा और बिछा हुवा दस्तरख़्वान देखा तो मुस्कुराए और फ़रमाया कि आज तो مَا شَاءَ اللَّهُ मेरे घर में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ से ख़ैर ही ख़ैर है ! फिर मैं ने उन्हें खाना खिलाया और अर्ज़ किया कि **अल्लाह** तआला आप पर रहम फ़रमाए आप इन अशरफ़ियों को यूंही ला परवाही के साथ बिस्तर पर छोड़ कर चले गए और मुझ से कह कर भी नहीं गए कि मैं इन को उठा लेती, आप ने हैरान हो कर पूछा कि कैसी अशरफ़ियां ? मैं तो घर में एक पैसा भी छोड़ कर नहीं गया था ! येह सुन कर मैं ने उन का बिस्तर उठा कर जब उन्हें दिखाया कि येह देख लीजिये अशरफ़ियां पड़ी हुई हैं तो वोह बहुत खुश हुवे लेकिन उन्हें भी इस पर बड़ा तअज्जुब हुवा। फिर सोच कर कहने लगे कि येह **अल्लाह** तआला की तरफ़ से मेरी इमदादे ग़ैबी है ! मैं इस के बारे में इस के सिवा क्या कह सकता हूं ? <sup>(1)</sup>

**﴿38﴾ हज़रते दहि़य्या बिन ख़लीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**

येह बहुत ही बुलन्द मर्तबा सहाबी हैं। जंगे उहुद और इस के बा'द के तमाम इस्लामी मा'रिकों में कुफ़र से लड़ते रहे।  
सि. 6 हि. हुजुरे अक़दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इन को रूम के

1.....शुआद النبوة، ركن سادس در بيان شواهد ودلائلی...الخ، ابو امامه باهلی...الخ، ص 284

बादशाह कैसर के दरबार में अपना मुबारक ख़त दे कर भेजा और कैसरे रूम हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का नामए मुबारक पढ़ कर ईमान ले आया मगर उस की सल्तनत के अरकान ने इस्लाम क़बूल करने से इन्कार कर दिया ।

इन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में चमड़े का मोज़ा बतौरे नज़राना पेश किया और हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस को क़बूल फ़रमाया । येह मदीनए मुनव्वरा से शाम में आ कर मुक़ीम हो गए थे और हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़माने तक ज़िन्दा रहे ।<sup>(1)</sup> (अक़ाल, व ५९२)

### कशमल

### हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام इन की सूरत में

इन की मशहूर करामत येह है कि हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام इन की सूरत में ज़मीन पर नाज़िल हुवा करते थे ।<sup>(2)</sup>

(अक़ाल, व ५९२, वासद الغाबे, ज २, व १३०)

### ﴿39﴾ हज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन की कुन्यत अबू यज़ीद है, बनू कन्दा में से थे । हिजरत के दूसरे साल पैदा हुवे और हुज्जतुल वदाअ में अपने वालिद के साथ हज़ किया । इमाम ज़ोहरी इन के शागिर्दों में बहुत ही मशहूर हैं । सि. 80 हि. में इन की वफ़ात हुई ।<sup>(3)</sup> (अक़ाल, व ५९८)

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الدال، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۳

वासد الغابة، دحیة بن خلیفة، ج ۲، ص ۱۹۰

②.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الدال، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۳

वासد الغابة، دحیة بن خلیفة، ج ۲، ص ۱۹۰

③.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۸



## कशमल

## चौरानवे बरस का जवान

हुजुरे अक़दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा था। जुऐद बिन अब्दुर्रहमान का बयान है कि हज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ चौरानवे बरस तक निहायत ही तन्दुरुस्त और क़वी हैकल रहे और कान, आंख, दांत किसी चीज़ में भी कमजोरी के आधार नहीं पैदा हुवे थे। (کنز العمال، ج ۱۶، ص ۵۱)

हज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के गुलाम अता कहते हैं कि हज़रते साइब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के सर के अगले हिस्से के बाल बिल्कुल सियाह थे और सर के पिछले हिस्से के सब बाल और दाढ़ी बिल्कुल सफ़ेद थी। मैं ने हैरान हो कर पूछा : ऐ मेरे आका ! येह क्या मुआमला है ? मुझे इस पर तअज्जुब हो रहा है ! तो उन्होंने ने फ़रमाया कि मैं बचपन में बच्चों के साथ खेल रहा था तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे और मुझ से मेरा नाम पूछा, मैं ने अपना नाम साइब बिन यज़ीद बताया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर अपना हाथ मुबारक फेरा जहां तक हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक पहुंचा है वोह बाल सफ़ेद नहीं हुवे और आइन्दा भी कभी सफ़ेद नहीं होंगे !<sup>(1)</sup>

﴿40﴾ हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ

इन की कुन्यत अबू अब्दुल्लाह है और येह हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं। येह फ़ारस के शहर “रामहर मज़” के बाशिन्दे थे। मजूसी मज़हब के पाबन्द थे और

①..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، السائب بن یزید، الحدیث: ۳۷۱۳۷،

इन के बाप मजूसियों के इबादत गाह आतश खाने के मुन्तजिम थे ।  
 येह बहुत से राहिबों और ईसाई साधूओं की सोहबत उठा कर मजूसी  
 मजहब से बेज़ार हो गए और अपने वतन से मजूसी दीन छोड़ कर  
 दीने हक़ की तलाश में घर से निकल पड़े और ईसाइयों की सोहबत में  
 रह कर ईसाई हो गए । फिर डाकूओं ने गिरफ़्तार कर लिया और अपना  
 गुलाम बना कर बेच डाला और यके बा'द दीगरे येह दस आदमियों  
 से ज़ियादा अशखास के गुलाम रहे । जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त येह एक यहूदी के  
 गुलाम थे जब इन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो जनाबे रसूलुल्लाह  
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन को ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा दिया ।

जंगे ख़न्दक़ में मदीनए मुनव्वरा शहर के गिर्द ख़न्दक़  
 खोदने का मश्वरा इन्हों ने ही दिया था । येह बहुत ही ताक़तवर थे  
 और अन्सार व मुहाजिरीन दोनों ही इन से महबूबत करते थे ।  
 चुनान्वे, अन्सारियों ने कहना शुरूअ किया **सलमानु मिन्ना** या'नी  
 सलमान हम में से हैं और मुहाजिरीन ने भी येही कहा कि **सलमानु**  
**मिन्ना** या'नी सलमान हम में से हैं । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 का चूँकि इन पर बहुत बड़ा करमे अज़ीम था, जब अन्सार व  
 मुहाजिरीन का ना'रा सुना तो इरशाद फ़रमाया : **सलमानु मिन्ना**  
**अहलुल बैति** (या'नी सलमान हम में से हैं) येह फ़रमा कर इन को  
 अपने अहले बैत में शामिल फ़रमा लिया । अक़दे मुवाख़ात में हुज़ूरे  
 अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इन को अबुदरदा सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ  
 का भाई बना दिया था, अकाबिर सहाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ में इन का शुमार  
 है । बहुत अ़ाबिदो ज़ाहिद और मुत्तकी व परहेज़गार थे ।

हज़रते अ़इशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का बयान है कि येह  
 रात में बिल्कुल ही अकेले सोहबते नबी से सरफ़राज़ हुवा करते  
 थे । हज़रते अ़ली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि सलमान

फ़ारसी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने इल्मे अव्वल भी सीखा और इल्मे आख़िर भी सीखा और वोह हम अहले बैत में से हैं। अहादीष में इन के फ़ज़ाइल व मनाकिब बहुत मज़कूर हैं। अबू नोऐम ने फ़रमाया कि इन की उम्र बहुत ज़ियादा हुई। बा'ज का कौल है तीन सो पचास बरस की उम्र हुई और दो सो पचास बरस की उम्र पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है। सि. 35 हि. में आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वफ़ात हुई।

येह मरजुल मौत में थे तो हज़रते सा'द और हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इन की बीमार पुर्सी के लिये गए तो हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रोने लगे। इन हज़रात ने रोने का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम लोगों को वसिय्यत की थी कि तुम लोग दुन्या में इतना ही सामान रखना जितना कि एक सुवार मुसाफ़िर अपने साथ रखता है लेकिन अफ़सोस कि मैं इस मुक़द्दस वसिय्यत पर अमल नहीं कर सका क्यूंकि मेरे पास इस से कुछ ज़ाइद सामान है !

बा'ज मुअर्रिख़ीन ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वफ़ात का साल 10 रजब सि. 33 हि. या सि. 36 हि. तहरीर किया है। मज़ारे मुबारक मदाइन में है जो ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है।<sup>(1)</sup>

(ترمذی مناقب سلمان فارسی واکمال، ص ۵۹۷ و حاشیہ کنز العمال، ج ۱۲، ص ۳۶ و اسد الغابہ، ج ۲، ص ۳۲۸)

①..... اسد الغابہ، سلمان الفارسی، ج ۲، ص ۴۸۷-۴۹۲ ملقطاً

والاکمال فی اسماء الرجال، حرف السین، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۷

وکنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، سلمان الفارسی، الحديث: ۳۷۱۲۶،

ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۸۴

و تهذيب التهذيب، حرف السین، سلمان الخیر الفارسی، ج ۳، ص ۴۲۴ ملقطاً

## कशमात

### मलकुल मौत ने सलाम किया

जब आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के विसाल का वक्त करीब आया तो आप ने अपनी बीवी साहिबा से फ़रमाया कि तुम ने जो थोड़ा सा मुश्क रखा है उस को पानी में घोल कर मेरे सर में लगा दो क्योंकि इस वक्त मेरे पास कुछ ऐसी हस्तियां तशरीफ़ लाने वाली हैं जो न इन्सान हैं और न जिन्न। इन की बीवी साहिबा का बयान है कि मैं ने मुश्क को पानी में घोल कर इन के सर में लगा दिया और मैं जैसे ही मकान से बाहर निकली घर के अन्दर से आवाज़ आई :

مैं يَا وَلِيَّ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُولِ اللَّهِ मैं येह आवाज़ सुन कर मकान के अन्दर गई तो हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की रूहे मुतहहरा परवाज़ कर चुकी थी और वोह इस तरह लैटे हुवे थे कि गोया गहरी नींद सो रहे हैं। <sup>(1)</sup> (शुआहद नबुवे, २२१)

### ख़्वाब में अपने अन्जाम की ख़बर देना

हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि मुझ से हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि आइये हम और आप येह अहद करें कि हम दोनों में से जो भी पहले विसाल करे वोह ख़्वाब में आ कर अपना हाल दूसरे को बता दे। मैं ने कहा कि क्या ऐसा हो सकता है? तो उन्होंने ने फ़रमाया कि हां मोमिन की रूह आज़ाद रहती है। रूह ज़मीन में जहां चाहे जा सकती है। इस के बा'द हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का विसाल हो गया।

फिर मैं एक दिन कैलूला कर रहा था तो बिल्कुल ही अचानक हज़रते सलमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मेरे सामने आ गए और

①.....शुआहद नबुवे, रکن سادس دریان شواهد ودلایلی...الخ، سلمان فارسی...الخ، ص ۲۸۷

बुलन्द आवाज़ से इन्हों ने कहा : **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ** मैं ने जवाब में : **وَعَلَيْكُمْ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ** कहा और इन से दरयाफ़्त किया कि कहिये विसाल के बा'द आप पर क्या गुज़री ? और आप किस मर्तबे पर हैं ? तो इन्हों ने फ़रमाया कि मैं बहुत ही अच्छे हाल में हूं और मैं आप को येह नसीहत करता हूं कि आप हमेशा खुदा पर तवक्कुल करते रहें क्यूंकि तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है, तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है, तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है, इस जुम्ले को इन्हों ने तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया । <sup>(1)</sup> (शुआहद النبوة، ص २२१)

## तबशेश

इस रिवायत से येह मा'लूम हुवा कि खुदा के नेक बन्दों की रूहें अपने घर वालों या अह़बाब के मकानों पर जाया करती हैं और अपने मुतअल्लिकीन को ज़रूरी हिदायात भी देती रहती हैं और येह रूहें कभी ख़्वाब में और कभी आलमे अमषाल में अपने मिषाली जिस्मों के साथ बेदारी में भी अपने मुतअल्लिकीन से मुलाक़ात कर के इन को हिदायात देती और नसीहत फ़रमाती रहती हैं । चुनान्वे, बहुत से बुजुर्गों से येह मन्कूल है कि उन्हों ने वफ़ात के बा'द अपने जिस्मों के साथ अपनी क़ब्रों से निकल कर अपने मुतअल्लिकीन से मुलाक़ात की नीज़ अपने और दूसरों के हालात के बारे में बात भी की ।

चुनान्वे, मशहूर रिवायत है कि हज़रते ख़्वाजा अबुल हसन ख़िरक़ानी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** रोज़ाना हज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्तामी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िरी दिया करते थे । एक दिन हज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्तामी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** क़ब्रे अन्वर

.....<sup>(1)</sup>.....शुआहद النبوة، ركن سادس در بيان شواهد ودلايلي...الخ، سلمان فارسي...الخ، ص २८७

से बाहर तशरीफ़ लाए और हज़रते ख़्वाजा अबुल हसन ख़िरक़ानी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** को अपनी निस्बत तरीक़त से सरफ़राज़ फ़रमा कर ख़िलाफ़त अता फ़रमाई ।

चुनान्चे, शजरए नक़्शबन्दिय्या पढ़ने वाले येह अच्छी तरह जानते हैं कि हज़रते ख़्वाजा अबुल हसन ख़िरक़ानी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** हज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्तामी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के ख़लीफ़ा हैं हालांकि तारीख़ों से षाबित है कि हज़रते ख़्वाजा बा यज़ीद बिस्तामी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की वफ़ात के तक़रीबन उन्तालीस बरस बा'द हज़रते ख़्वाजा अबुल हसन ख़िरक़ानी **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ख़िरक़ान में पैदा हुवे ।

### चरिन्दो परन्द् ताबेए फ़रमान

इन की मशहूर करामत येह है कि जंगल में दौड़ते हुवे हिरन को बुलाया तो वोह आप के पास फ़ौरन ही हाज़िर हो गया । इसी तरह एक मरतबा उड़ती हुई चिड़या को आप ने आवाज़ दी तो वोह आप की आवाज़ सुन कर ज़मीन पर उतर पड़ी । (तज़क़िए महमूद)

### फ़िरिशते से गुफ़्तगू

सलम बिन अतिय्या असदी का बयान है कि हज़रते सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** एक मुसलमान के पास उस की इयादत के लिये तशरीफ़ ले गए, वोह जांकनी के आलम में था तो आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि ऐ फ़िरिशते ! तू इस के साथ नर्मी कर ! रावी कहते हैं कि उस मुसलमान ने कहा कि ऐ सलमान फ़ारसी ! **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** येह फ़िरिशता आप के जवाब में कहता है कि मैं तो हर मोमिन के साथ नर्मी ही इख़्तियार करता हूं ।<sup>(1)</sup> (حلیۃ الاولیاء، ج ۱، ص ۲۰۴)

①.....حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابة من المهاجرين، سلمان الفارسی، الحدیث: ۶۴۹، ج ۱، ص ۲۶۲



### ﴿41﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के भाई हज़रते जा'फ़र बिन अबी तालिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हैं। इन की वालिदा का नाम अस्मा बिन्ते उमैस (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) है। इन के वालिदैन् जब हिजरत कर के हबशा चले गए तो येह हबशा ही में पैदा हुवे फिर अपने वालिदैन् के साथ हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा आए। येह बहुत ही दानिशमन्द व हलीम, निहायत ही इल्म व फ़ज़ल वाले और बहुत ही पाकबाज़ व परहेज़गार थे और सखावत में तो इस क़दर बुलन्द मरतबा थे कि इन को بَحْرُ الْجُودِ (सखावत का दरया) और أَسْحَى الْمُسْلِمِينَ (मुसलमानों में सब से ज़ियादा सखी) कहते थे। नव्वे बरस की उम्र पा कर सि. 80 हि. में मदीनए मुनव्वरा के अन्दर वफ़ात पाई। <sup>(1)</sup> (अकाल फ़ी अस्मा'र रज़ाल, ज १०३)

इन के विसाल के वक़्त अब्दुल मलिक बिन मरवान उमवी ख़लीफ़ा की तरफ़ से मदीनए मुनव्वरा के हाकिम हज़रते अब्बान बिन उषमान (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) थे उन को हज़रते अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वफ़ात की ख़बर पहुंची तो वोह आए और खुद अपने हाथों से इन को गुस्ल दे कर कफ़न पहनाया और इन का जनाज़ा उठा कर जन्नतुल बक़ीअ के क़ब्रिस्तान ले गए।

हज़रते अब्बान बिन उषमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के आंसू उन के रुख़्सार पर बह रहे थे और वोह जोर जोर से येह कह रहे थे कि ऐ अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ आप बहुत ही बेहतरीन आदमी थे, आप में कभी कोई शर था ही नहीं, आप शरीफ़ थे, लोगों के साथ नेक बरताव करने वाले नेकूकार थे। फिर हज़रते अब्बान बिन

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص 604

واسد الغابة، عبد الله بن جعفر رضى الله عنه، ج 3، ص 199

उषमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के जनाजे की नमाज़ पढ़ाई। आप की उम्र शरीफ़ के बारे में इख़िलाफ़ है। बा'ज ने कहा कि आप की उम्र नव्वे बरस की थी और बा'ज का कौल है कि बानवे बरस की उम्र में आप ने विसाल फ़रमाया। इसी तरह आप के विसाल के साल में भी इख़िलाफ़ है। सि. 80 हि. या सि. 82 हि. या सि. 85 हि. यूं तीन अक्वाल हैं।<sup>(1)</sup> (اسد الغابة، ج 3، ص 133 تا 135)

### कशमात

#### सजदागाह से चश्मा उबल पड़ा

हज़रते अब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि मैं ने हज़रते अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से कहा कि मेरे बाप के ज़िम्मे तुम्हारा कुछ कर्ज़ बाकी है। आप ने फ़रमाया कि मैं ने उस को मुआफ़ कर दिया। मैं ने उन से कहा कि मैं इस कर्ज़ को मुआफ़ करना हरगिज़ हरगिज़ पसन्द नहीं करूंगा हां येह और बात है कि मेरे पास नक़द रक़म नहीं है लेकिन मेरे पास ज़मीनें हैं। आप मेरी फुलां ज़मीन अपने इस कर्ज़ में ले लीजिये मगर उस ज़मीन में कुंवां नहीं है और आबपाशी के लिये दूसरा कोई ज़रीआ भी नहीं है। आप ने फ़रमाया कि बहुत अच्छा, बहर हाल मैं ने आप की वोह ज़मीन ले ली। फिर आप उस ज़मीन में तशरीफ़ ले गए और वहां पहुंच कर अपने गुलाम को मुसल्ला बिछाने का हुक्म दिया और आप ने उस जगह दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और बड़ी देर तक सजदे में पड़े रहे। फिर मुसल्ला उठा कर आप ने गुलाम से फ़रमाया कि इस जगह ज़मीन खोदो। गुलाम ने ज़मीन खोदी तो नागहां वहां से पानी का एक ऐसा ज़ख़्ख़ार चश्मा उबलने लगा जिस से न सिर्फ़ उस ज़मीन बल्कि आस पास की तमाम ज़मीनों की आबपाशी व सैराबी का इन्तिज़ाम हो गया। (اسد الغابة، ج 3، ص 135)

1..... اسد الغابة، عبد الله بن جعفر رضي الله عنه، ج 3، ص 201

وتهذيب التهذيب، حرف العين، عبد الله بن جعفر... الخ، ج 4، ص 207

## क़ब्र पर अश्आर

आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की क़ब्रे मुनव्वर पर मुन्दरिजए जैल दो अश्आर लिखे हुवे देखे गए मगर येह नहीं मा'लूम हो सका कि येह किस के अश्आर हैं और किस ने लिखे हैं ? इस लिये हम इस को आप की एक **करामत** शुमार करते हैं । अश्आर येह हैं :

مُفِئِمٌ إِلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ خَلْقَهُ

لِقَاؤِكَ لَا يُرْجَىٰ وَأَنْتَ قَرِيبٌ

(आप उस वक्त तक यहां मुक़ीम रहेंगे जब कि **अब्बाह** तआला अपनी मख़्लूक को क़ब्रों से उठाएगा । आप की मुलाक़ात की कोई उम्मीद ही नहीं की जा सकती हालांकि आप बहुत ही क़रीब हैं ।)

تَزِيدُ بَلَىٰ فِي كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ

وَتُنَسِّي كَمَا تَبَلَىٰ وَأَنْتَ حَيِّبٌ

(आप हर दिन और हर रात पुराने होते जाएंगे और जैसे जैसे आप पुराने होते जाएंगे लोग आप को भूलते जाएंगे हालांकि आप हर शख्स के महबूब हैं ।) <sup>(1)</sup> (असदुलगायि, ज ३, स १३५)

## तबसेरा

हज़रते अब्बान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के फ़रज़न्दे अरजुमन्द और ख़ानदाने बनू उमय्या के एक मुमताज़ फ़र्द हैं और हज़रते अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ख़ानदाने बनू हाशिम के चश्मो चराग़ हैं और बा वुजूद येह कि दोनों ख़ानदानों में ख़ानदानी अंसबियत की बिना पर खुसूसन हज़रते उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की शहादत के बा'द

1..... असदुलगायि, عبد الله بن جعفر رضي الله عنه، ج ३، ص २००-२०१ ملخصاً

कुशैदगी रहा करती थी मगर हज़रते अब्बान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बा वुजूद येह कि उषमानी थे खानदाने बनू उमय्या के एक नामवर फ़रज़न्द थे फिर उमवी ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान की तरफ़ से हाकिम थे लेकिन इन सब वुजूहात के बा वुजूद उन्होंने ने हाकिमे मदीनए मुनव्वरा होते हुवे हज़रते अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को गुस्ल दिया, कफ़न पहनाया और जन्नतुल बक़ीअ के क़ब्रिस्तान तक रोते हुवे जनाज़ा उठाया । इस से पता चलता है कि हज़रते अब्बान बिन उषमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बहुत ही नेक नफ़्स और ख़ानदानी असबिय्यत से बिल्कुल ही पाक साफ़ थे और हज़रते अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस क़दर मक़बूले ख़लाइक़ थे कि ख़ानदाने बनू हाशिम व ख़ानदाने बनू उमय्या दोनों की निगाहों में इन्तिहाई मोहतरम व मुअज़्ज़म थे । وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ

### ﴿42﴾ हज़रते जुऐब बिन कलीब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते जुऐब बिन कलीब बिन रबीआ ख़ौलानी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने यमन की सर ज़मीन में सब से पहले इस्लाम क़बूल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन का नाम अब्दुल्लाह रखा । (1)

### कशमात

### आग नहीं जला सकी

इन की इन्तिहाई हैरतनाक क़रामत येह है कि अस्वद उनसी ने जब यमन के शहर सनआ में नबुव्वत का दा'वा किया और लोगों को अपना कलिमा पढ़ने पर मजबूर करने लगा तो हज़रते जुऐब बिन कलीब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बड़ी सख़्ती के साथ उस की झूटी नबुव्वत का इन्कार करते हुवे लोगों को उस की इताअत से रोकना शुरूअ कर दिया । इस से जल भुन कर अस्वद उनसी ज़ालिम ने

आप को गिरफ्तार कर के जलती हुई आग के शो'लों में डाल दिया मगर आग से बदन तो क्या उन के जिस्म के कपड़े भी नहीं जले यहां तक कि पूरी आग जल कर बुझ गई और येह ज़िन्दा व सलामत रहे । जब येह ख़बर मदीनए मुनव्वरा पहुंची तो हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इस नादिरुल वुजूद क़रामत का तज़क़िरा फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि येह शख्स मेरी उम्मत में हज़रते ख़लील (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) की तरह आग के शो'लों में जलने से महफूज़ रहा और एक रिवायत में है कि हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की ज़बाने मुबारक से येह ख़बर सुन कर हज़रते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने ब आवाज़े बुलन्द येह कहा कि **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** कि हमारे रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की उम्मत में **اَبُوَالْح** तअल्ला ने एक ऐसे शख्स को भी पैदा फ़रमाया जो हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की तरह आग के शो'लों में जलने से महफूज़ रहा । (1)

(حجة الله، ج ۲، ص ۸۷۲ واسد الغابة، ج ۲، ص ۱۲۸)

## तबशेश

हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की मौजूदगी में दो कज़़ाबों ने नबुव्वत का दा'वा किया । एक “मुसैलिमतुल कज़़ाब” दूसरा “अस्वद उनसी” हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** की मौजूदगी ही में हज़रते फ़ीरोज़ दैलमी और हज़रते कैस बिन अब्दुल यगूष **(رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا)** ने अस्वद उनसी को इस तरह क़त्ल किया कि हज़रते फ़ीरोज़ दैलमी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** उस को पछाड़ कर उस के सीने पर चढ़ गए और हज़रते कैस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस का सर काट लिया

①.....اسد الغابة، ذؤيب بن كليب رضى الله عنه، ج ۲، ص ۲۱۹

وحجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

فى ذكر جملة جميلة...الخ، ص ۲۲۲

मगर मुसैलमतुल कज़ाब को हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की फ़ौजों ने क़त्ल किया और येह दोनों झूटे मुद्दियाने नबुव्वत दुन्या से फ़ना हो गए।<sup>(1)</sup> (अकाल, ज़ ५८५, ५८६)

﴿43﴾ हज़रते हम्ज़ा बिन अम्र अश्लमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन के वालिद का नाम अम्र था जो इब्ने उवैमर बिन हारिष आ'रिज के नाम से मशहूर हैं। अहले हिज्जाज़ ने इन की हदीषों को बयान किया है। सि. 61 हि. में 71 या 80 बरस की उम्र में वफ़ात पाई।<sup>(2)</sup> (अकाल, ज़ ५२०, ५२१, ५२२, ५२३)

### कशमल

#### उंगलियां रोशन हो गईं

इन की एक बहुत नादिरुल वुजूद क़रामत येह है कि येह लोग हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ जिहाद में गए थे इत्तिफ़ाक़ से हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का साथ छूट गया और येह चन्द आदमी सख़्त अन्धेरी रात में इधर उधर बिखर गए न किसी को रास्ता मिलता था न एक दूसरे की ख़बर थी। इस परेशानी व हैरानी के आलम में एक दम अचानक इन की पांचों उंगलियां इस क़दर रोशन हो गईं कि इन की रोशनी में सब को रास्ता नज़र आ गया और सब बिखरे हुवे लोग इकठ्ठा हो गए और हलाकत व बरबादी से बच गए।<sup>(3)</sup> (दाल़ल नबुव्वे, ज़ ३, २०५)

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل فی الصحابة، ص ५८५

و تاریخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، ابو بکر الصديق رضی اللہ عنہ، فصل فيما... الخ، ص ५८

②.....اسد الغابة، حمزة بن عمرو، ج ۲، ص ۷۱، ۷۲

والاکمال فی اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۰

③.....دلائل النبوة للبيهقي، باب ماجاء فی اضائة عصی الرجلین... الخ، ج ۶، ص ۷۹



### ﴿44﴾ हज़रते या'ला बिन मुर्रा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह कबीला बनू षकीफ़ में से हैं। बहुत ही बहादुर और जांबाज़ सहाबी थे। बहुत सी इस्लामी लड़ाइयों में शरीके जिहाद रहे और मुहद्दिषीन की बहुत बड़ी जमाअत ने इन से हदीषों का दर्स लिया और कूफ़ा के मुहद्दिषीन में इन का शुमार है।<sup>(1)</sup> (अकाल, पृ. १२३)

### कशमाब

### अज़ाबे क़ब्र की आवाज़ सुन ली

इन का बयान है कि हम लोग रसूले खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ साथ क़ब्रिस्तान में गुज़रे तो मैं ने एक क़ब्र में धमाका सुना। घबरा कर मैं ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं ने एक क़ब्र में धमाके की आवाज़ सुनी है। आप ने इरशाद फ़रमाया कि तू ने भी इस धमाके की आवाज़ सुन ली ? मैं ने अर्ज़ किया कि जी हां ! इरशाद फ़रमाया कि ठीक है इस क़ब्र वाले को इस की क़ब्र में अज़ाब दिया जा रहा है येह इसी अज़ाब की आवाज़ का धमाका था जो तू ने सुना। मैं ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस क़ब्र वाले को किस गुनाह के सबब अज़ाब दिया जा रहा है ? आप ने फ़रमाया कि येह शख्स चुगल खोरी किया करता था और अपने बदन और कपड़ों को पेशाब से नहीं बचाता था।<sup>(2)</sup> (हिजेतुल्लाह, ज. २, पृ. ८८, ८९, ९०, ९१)

### ﴿45﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चचा हज़रते अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के फ़रजन्द हैं। हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इन के लिये

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الیاء، فصل فی الصحابة، ص ۶۲۳

②.....حجة الله على العالمين، الخاتمة فی اثبات کرامات الاولیاء...الخ، المطلب الثالث

فی ذکر جملة جميلة...الخ، ص ۶۲۲

हिक्मत और फ़िक़ह व तफ़्सीर के इलूम के हासिल होने के लिये दुआ मांगी। इन का इल्म बहुत ही वसीअ़ था इसी लिये कुछ लोग इन को बहूर (दरया) कहते थे और हबेरुल उम्माह (उम्मत का बहुत बड़ा आलिम) येह तो आप का बहुत ही मशहूर लक़ब है। येह बहुत ही ख़ूब सूत और गोरे रंग के निहायत ही हसीनो ज़मील शख़्स थे। हज़रते उमर رضي الله تعالى عنه को कम उम्री के बा वुजूद उमूरे ख़िलाफ़त के अहम तरीन मश्वरों में शरीक करते रहे।

लैष बिन अबी सुलैम का बयान है कि मैं ने ताऊस मुहद्विष से कहा कि तुम इस नौ उम्र शख़्स (अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله تعالى عنهم) की दर्सगाह से चिमटे हुवे हो और अकाबिर सहाबा رضي الله تعالى عنهم की दर्सागाहों में नहीं जा रहे हो।

ताऊस मुहद्विष ने फ़रमाया कि मैं ने येह देखा है कि सत्तर सहाबए किराम رضي الله تعالى عنهم के माबैन जब किसी मस्अले में इख़्तिलाफ़ होता था तो वोह सब हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله تعالى عنهم के कौल पर अमल करते थे इस लिये मुझे इन के इल्म की वुस्अत पर ए'तिमाद है इस लिये मैं इन की दर्सगाह छोड़ कर कहीं नहीं जा सकता। आप رضي الله تعالى عنه पर खौफ़े खुदा का बहुत ज़ियादा ग़लबा रहता। आप इस क़दर ज़ियादा रोते कि आप के दोनों रुख़्सारों पर आंसूओं की धार बहने का निशान पड़ गया था। सि. 68 हि. में ब मुक़ामे ताइफ़ 71 बरस की उम्र में विसाल हुवा।<sup>(1)</sup>

(अकाल, म० १०२, वासदुल ग़ाबि, ज० ३, म० १९२)

## करामात

इन की करामतों में से तीन करामतें बहुत ज़ियादा मशहूर हैं जो दर्जे जैल हैं :

1..... अस्दुल ग़ाबि, अब्दुल्लाह बिन عباس, ज० ३, म० २९०-२९९, म० २९९

## कफ़न में परन्द

मैमून बिन मेहरान ताबेई मुहदिष का बयान है कि मैं ताइफ़ में हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के जनाजे में हाज़िर था। जब लोग नमाज़े जनाज़ा के लिये खड़े हुवे तो बिल्कुल ही अचानक निहायत तेज़ी के साथ एक सफ़ेद परन्द आया और इन के कफ़न के अन्दर दाख़िल हो गया। नमाज़ के बा'द हम लोगों ने टटोल टटोल कर बहुत तलाश किया मगर उस परन्दे का कुछ भी पता नहीं चला कि वोह कहाँ गया और क्या हुआ? <sup>(1)</sup> (मستطرف, ज २, प २८१)

## गैबी आवाज़

जब लोग हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को दफ़न कर चुके और कब्र पर मिट्टी बराबर की जा चुकी तो तमाम हाज़िरीन ने एक गैबी आवाज़ सुनी कि कोई शख़्स बुलन्द आवाज़ से येह तिलावत कर रहा है

يَا أَيُّهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ  
ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً  
مَرْضِيَّةً (2)

ऐ इत्मीनान पाने वाली जान ! तू  
अपने रब के दरबार में इस तरह  
हाज़िर हो जा कि तू खुदा से खुश है  
और खुदा तुझ से खुश है। (3)

(मستطرف, ज २, प २८१ और कन्ज़ العمال, ज १२, हाशिये कन्ज़ العمال, प ८३)

①.....المستطرف في كل فن مستظرف، الباب الحادى والثمانون في ذكر الموت...الخ،

ج २، ص ४७६

②.....प ३०، الفجر: २७-२८

③.....وكنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عبد الله بن عباس، الحديث: ३७१८६،

ج ७، الجزء १३، ص १९७ والمستظرف في كل فن مستظرف، الباب الحادى والثمانون

في ذكر الموت...الخ، ج २، ص ४७६

## हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام का दीदार

येह भी हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) की एक करामत है कि इन्हों ने दो मरतबा हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को अपनी आंखों से देखा। <sup>(1)</sup> (अकाल, १०३)

## ﴿46﴾ हज़रते साबित बिन कैश رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह मदीनए मुनव्वरा के अन्सारी हैं और खानदाने बनी खज़रज से इन का नसबी तअल्लुक है। अकाबिर सहाबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की फ़ेहरिस्त में इन का नामे नामी बहुत ही मशहूर है। येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ख़तीब थे और इन को हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बेहतरीन ज़िन्दगी फ़िर शहादत फ़िर जन्नत की बिशारत दी थी। सि. 12 हि. में जंगे यमामा के दिन मुसैलिमतुल कज़ाब की फ़ौजों से जंग करते हुवे शहादत से सर बुलन्द हो गए। <sup>(2)</sup> (अकाल, ५८८ और ५८९)

## करामत

### मौत के बा'द वशिyyत

इन की येह एक करामत ऐसी बे मिष्ल करामत है कि इस की दूसरी कोई मिषाल नहीं मिल सकती। शहीद हो जाने के बा'द आप ने एक सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से ख़्बाब में येह फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! तुम अमीरे लश्कर हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मेरा येह पैग़ाम कह दो कि मैं जिस वक़्त शहीद हुवा मेरे जिस्म पर लोहे की एक ज़िरह थी जिस को एक मुसलमान सिपाही ने मेरे बदन से उतार लिया और अपने घोड़े बांधने की जगह पर उस को रख कर उस पर एक हांडी औंधी कर के उस को छुपा रखा है लिहाज़ा अमीरे लश्कर मेरी इस ज़िरह को बरआमद कर के

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ۶۰۴

②.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف التاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۸۸

واسد الغابة، ثابت بن قیس، ج ۱، ص ۳۴۰

अपने कब्जे में ले लें और तुम मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मेरा पैगाम कह देना कि जो मुझ पर कर्ज है वोह उस को अदा कर दें और मेरा फुलां गुलाम आजाद है। ख़्वाब देखने वाले सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपना ख़्वाब हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से बयान किया तो उन्होंने ने फौरन ही तलाशी ली और वाकेई ठीक उसी जगह से ज़िरह बर आमद हुई जिस जगह का ख़्वाब में आप ने निशान बताया था और जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को येह ख़्वाब सुनाया गया तो आप ने हज़रते षाबित बिन कैस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वसियत को नाफ़िज़ करते हुवे उन का कर्ज अदा फ़रमा दिया और उन के गुलाम को आजाद करार दे दिया।

मशहूर सहाबी हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि येह हज़रते षाबित बिन कैस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वोह खुसूसियत है जो किसी को भी नसीब नहीं हुई क्यूंकि ऐसा कोई शख्स भी मेरे इल्म में नहीं है कि उस के मर जाने के बा'द ख़्वाब में की हुई उस की वसियत को नाफ़िज़ किया गया हो।<sup>(1)</sup>

(तफ़ीर सादी, ज २, पृ १०८)

### ﴿47﴾ हज़रते अ़ला बिन अ़ल हज़मि رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन का अस्ली नाम अब्दुल्लाह और इन का अस्ली वतन “हज़्रमौत” है। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुलमान हो गए थे। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन को बहरैन का हाकिम बना दिया। सि. 14 हि. में ब हालते जिहाद आप की वफ़ात हुई।<sup>(2)</sup> (अकाल, पृ २०८)

①..... حاشية الصاوي على تفسير الجلالين، سورة الحجرات، تحت الآية: ٣، ج ٥، ص ١٩٨٨

واسد الغابة، ثابت بن قيس، ج ١، ص ٣٤٠

②..... الاكمال في اسماء الرجال، حرف العين، فصل في الصحابة، ص ٦٠٧

والطبقات الكبرى لابن سعد، العلاء بن الحضرمي، ج ٤، ص ٢٦٦، ٢٦٨

## कशमात

हज़रते अबू हुऱैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बह्रैन के मुर्तदीन से जिहाद करने के लिये हज़रते अ़ला बिन अल हज़्रमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को भेजा तो हम लोगों ने उन की तीन करामतें ऐसी देखी हैं कि मैं यह नही कह सकता कि इन तीन में से कौन सी ज़ियादा तअज्जुब खैज़ और हैरत अंगेज़ है।

### पियादा और सुवार दश्या के पार

“दारैन” पर हम्ला करने के लिये कशितयों और जहाज़ों की ज़रूरत थी मगर कशितयों के इन्तिज़ाम में बहुत लम्बी मुद्दत दरकार थी इस लिये हज़रते अ़ला बिन अल हज़्रमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने लश्कर को ललकार कर पुकारा कि ऐ मुजाहिदीने इस्लाम ! तुम लोग खुश्क मैदानों में तो खुदावन्दे कुहूस की इमदाद व नुस्त का नज़ारा बार बार देख चुके हो। अब अगर समन्दर में भी उस की ताईदे गैबी का जल्वा देखना हो तो तुम सब लोग समन्दर में दाखिल हो जाओ। आप ने येह कहा और मअ अपने लश्कर के येह दुआ पढ़ते हुवे समन्दर में दाखिल हो गए।

يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ يَا كَرِيمُ يَا حَلِيمُ يَا أَحَدُ يَا صَمَدُ يَا حَيُّ يَا مُحْيِ الْمَوْتَى يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ

कोई ऊंट पर सुवार था, कोई घोड़े पर, कोई गधे पर सुवार था, कोई खच्चर पर और बहुत से पैदल चल रहे थे मगर समन्दर में कदम रखते ही समन्दर का पानी खुश्क हो कर इस क़दर रह गया कि जानवरों के सिर्फ़ पाउं तर हुवे थे। पूरा इस्लामी लश्कर इस तरह आराम व राहत के साथ समन्दर में चल रहा था गोया भीगे हुवे रैत पर चल रहा है जिस पर चलना निहायत ही सहल और आसान होता



है। चुनान्वे इस को देख कर एक मुसलमान मुजाहिद ने जिन का नाम अफ़ीफ़ बिन अल मुन्जर था बरजस्ता अपने इन दो शे'रों में इस की ऐसी मन्ज़र कशी की है जो बिला शुबा वज्द आफ़रीं है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ ذَلَّلَ بَحْرَهُ

وَأَنْزَلَ بِالْكَفَّارِ أَحْدَى الْجَلَائِلِ

(क्या तुम ने नहीं देखा कि **अल्लाह** तआला ने इन मुजाहिदों के लिये अपने समन्दर को फ़रमां बरदार बना दिया और कुफ़ार पर एक बहुत बड़ी मुसीबत नाज़िल फ़रमा दी।)

دَعَوْنَا إِلَى شِقِّ الْبَحَارِ فَجَاءَنَا

بِأَعَجَبٍ مِنْ فَلَقِ الْبَحَارِ الْأَوَائِلِ

(हम लोगों ने समन्दर के फट जाने की दुआ मांगी तो खुदा ने इस से कहीं ज़ियादा अजीब वाकिआ हमारे लिये पेश फ़रमा दिया जो दरया फाड़ने के सिलसिले में पहले लोगों के लिये हुवा था।)<sup>(1)</sup>

(البدایة والنہایة، ج ۷، ص ۳۲۹ و دلائل النبوة، ج ۳، ص ۲۰۸)

## चमकती रैत से पानी नुमूद्दार हो गया

दूसरी करामत येह है कि हम लोग चटयल मैदान में जहां पानी बिल्कुल ही नायाब था प्यास की शिद्दत से बे ताब हो गए और बहुत से मुजाहिदीन को तो अपनी हलाकत का यकीन भी हो गया। अपने लश्कर का येह हाल देख हज़रते अला बिन अल हज़्रमी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने नमाज़ पढ़ कर दुआ मांगी तो एक दम नागहां लोगों को बिल्कुल ही करीब सूखी रैत पर पानी चमकता हुवा नज़र आ गया।

①.....البدایة والنہایة، کتاب تاریخ الاسلام.....الخ، ذکر ردة اهل البحرین...الخ، ج ۵، ص ۳۵

ودلائل النبوة لابی نعیم، ذکر خبر، الفصل التاسع والعشرون...الخ، ج ۲، ص ۱۳۰

والکامل فی التاریخ، سنة احدى عشرة، ذکر ردة اهل البحرین، ج ۲، ص ۲۲۷

और एक रिवायत में येह है कि अचानक एक बदली नुमूदार हुई और इस क़दर पानी बरसा कि जल थल हो गया और सारा लश्कर जानवरों समेत पानी से सैराब हो गया और लश्कर वालों ने अपने तमाम बरतनों को भी पानी से भर लिया।<sup>(1)</sup>

(طبری، ج ۳، ص ۲۵۷ ودلائل النبوة، ج ۳، ص ۲۰۸)

### लाश क़ब्र से गाइब

तीसरी करामत येह है कि जब हज़रते अ़ला बिन अल हज़्रमी رضی اللہ تعالیٰ عنہ का विसाल हुवा तो हम लोगों ने इन को रैतिली ज़मीन में दफ़न कर दिया। फिर हम लोगों को ख़याल आया कि कोई जंगली जानवर आसानी के साथ इन की लाश को निकाल कर खा डालेगा लिहाज़ा इन को किसी आबादी के क़रीब सख़्त ज़मीन में दफ़न करना चाहिये। चुनान्चे, हम लोगों ने फ़ौरन ही पलट कर इन की क़ब्र को खोदा तो इन की मुक़द्दस लाश क़ब्र से गाइब हो चुकी थी और तलाश के बा वुजूद हम लोगों को नहीं मिली।<sup>(2)</sup>

(دلائل النبوة، ج ۳، ص ۲۰۸)

### ﴿48﴾ हज़रते बिलाल رضی اللہ تعالیٰ عنہ

आप बहुत ही मशहूर सहाबी हैं। आप के वालिद का नाम रबाह है। येह हबशा के रहने वाले थे और मक्कए मुकर्रमा में एक काफ़िर उमय्या बिन ख़लफ़ के गुलाम थे। इसी हाल में मुसलमान हो गए। उमय्या बिन ख़लफ़ ने इन को बहुत सताया और इन पर बड़े बड़े जुल्मो सितम..... के पहाड़ तोड़े मगर येह पहाड़ की तरह

①.....جامع کرامات الاولیاء، اسماء الصحابة رضی اللہ تعالیٰ عنہم، العلاء بن الحضرمی،

ج ۱، ص ۱۵۲

ودلائل النبوة لابی نعیم، ذکر خبر، الفصل التاسع والعشرون... الخ، ج ۲، ص ۱۳۰

②...ممكن है कि वोह जन्नतुल बक़ीअ में फ़िरिश्तों ने मुन्तक़िल कर दी हो (ताबिशे मौरिस) 12 मिन्ह

دلائل النبوة لابی نعیم، ذکر خبر، الفصل التاسع والعشرون... الخ، ج ۲، ص ۱۳۰

इस्लाम पर डटे रहे। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक कपीर रक़म और एक गुलाम दे कर इन को उमय्या बिन ख़लफ़ से ख़रीद लिया और **अबूबक्र** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिज़ाजोई के लिये इन को आज़ाद कर दिया। इसी लिये हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि अबू बक्र हमारे सरदार हैं और इन्हों ने हमारे सरदार (बिलाल) को आज़ाद किया।

खुदा की शान कि जंगे बद्र में उमय्या बिन ख़लफ़ को हज़रते बिलाल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ही ने चन्द अन्सारियों की मदद से क़त्ल किया। तमाम इस्लामी जिहादों में मुजाहिदाना शान के साथ जिहाद फ़रमाते रहे और मस्जिदे नबवी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के मुअज़्ज़िन भी रहे। विसाले नबवी के बा'द मदीनए तय्यिबा में रहना और हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जगह को ख़ाली देखना इन के लिये नाक़ाबिले बरदाश्त हो गया। फ़िराके रसूल में हर वक़्त रोते रहते। इस लिये मदीनए मुनव्वरा को ख़ैरबाद कह दिया और मुल्के शाम में सुकूनत इख़्तियार कर ली। फिर सि. 20 हि. में 63 बरस की उम्र पा कर शहर दिमश्क में विसाल फ़रमाया और बाबुस्सगीर में मदफून हुवे और बा'ज् मुअर्रिख़ीन का कौल है कि आप का विसाल शहर हल्ब में हुवा और बाबुल अरबईन में आप की क़ब्रे मुबारक बनाई गई।<sup>(1)</sup> (अक़ाल फ़ी अस्मा' الرجال، ص ५०८) وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَم

### कशमाब

**ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार**

एक मरतबा ख़्वाब में सरवरे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत से सरफ़राज़ हुवे तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الباء، فصل فی الصحابة، ص ५८७

واسد الغابة، بلال بن رباح رضی اللہ عنہ، ج ۱، ص ۳۰۵-۳۰۹ ملقطاً

ने प्यार भरे लहजे में इरशाद फ़रमाया : ऐ बिलाल ! येह क्या अन्दाज़ है कि तुम हमारे पास कभी नहीं आते ? ख़्वाब से बेदार हुवे तो इस क़दर बे क़रार हो गए कि फ़ौरन ही ऊंट पर सुवार हो कर अज़िमे सफ़र हो गए। जब मदीनए मुनव्वरा में रौज़ए अन्वर के पास पहुंचे तो शिद्दते ग़म से ग़श खा कर गिर पड़े और ज़मीन पर लौटने लगे जब कुछ सुकून हुवा तो हज़रते इमामे हसन व इमामे हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने अज़ान की फ़रमाइश की। प्यारे रसूल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लाडलों की फ़रमाइश पर इन्कार की गुन्जाइश ही नहीं थी। आप ने मस्जिदे नबवी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में अज़ान दी और ज़मानए नबुव्वत की बिलाली अज़ान जब अहले मदीना के कान में पड़ी तो एक कोहराम मच गया यहां तक कि पर्दा नशीन औरतें जोशे बे क़रारी में घरों से बाहर निकलीं और हर छोटा बड़ा दौरे नबुव्वत की याद से बे क़रार हो कर ज़ार ज़ार रोने लगा। चन्द दिनों मदीनए मुनव्वरा में रह कर फिर आप मुल्के शाम चले गए।<sup>(1)</sup> (असदुलगाबि, ज १, २०१-२०२)

### ﴿49﴾ हज़रते हज़ज़ल बिन हुज़ैम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह हुज़ुरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सहाबी हैं। एक मरतबा अपने बाप के साथ दरबारे नबुव्वत में हाज़िर हुवे और इन के बाप ने इन के लिये दुआ की दरख़्वास्त की तो हुज़ूर रहमते अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अज़ राहे करम अपना दस्ते अक्दस इन के सर पर फेरा जिस की बदौलत इन को मुन्दरिजए ज़ैल करामत मिली।<sup>(2)</sup>

(असदुलगाबि, ज २, १५)

## कशमल

### सर लगते ही मरज़ गाइब

जिस किस्म का भी कोई मरीज़ इन्सान या जानवर जब इन के पास लाया जाता तो येह अपना सर उस मरीज़ के बदन पर लगा

①.....असदुलगाबि, बलाल بن رباح رضى الله عنه، ج १، ص ३०७

②.....असदुलगाबि، حنظلة بن حذيم، ج २، ص ८२

देते थे तो फ़िलफ़ौर शिफ़ा हासिल हो जाती थी और एक रिवायत में येह है कि येह अपने हाथ में अपना लुआबे दहन लगा कर अपने सर पर रखते और येह दुआ पढ़ते :

بِسْمِ اللَّهِ عَلَىٰ أَثَرِ يَدِ رَسُولِ اللَّهِ

फिर अपना हाथ मरीज़ के वरम पर फेर देते तो फ़ौरन मरीज़ शिफ़ायाब हो जाता । (1) (کنز العمال، ج ۱۵، ص ۳۲۷ مطبوعه حیدرآباد)

### ﴿50﴾ हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन का इस्मे गिरामी जुन्दब बिन जुनादा है मगर अपनी कुन्यत के साथ ज़ियादा मशहूर हैं । बहुत ही बुलन्द पाया सहाबी हैं और येह अपने ज़ोहद व क़नाअत और तक्वा व इबादत के ए'तिबार से तमाम सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ में एक खुसूसी इम्तियाज़ रखते हैं । इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे यहां तक कि बा'ज़ मुअर्रिख़न का कौल है कि इस्लाम लाने में इन का पांचवां नम्बर है । इन्हों ने मक्कए मुकर्रमा में इस्लाम क़बूल किया फिर अपने वतन क़बीलए बनी ग़िफ़ार में चले गए फिर जंगे ख़न्दक के बा'द हिज़रत कर के मदीनए मुनव्वरा पहुंचे और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बा'द कुछ दिनों के लिये मुल्के शाम चले गए फिर वहां से लौट कर मदीनए मुनव्वरा आए और मदीनए मुनव्वरा से चन्द मील दूर मक़ामे “रब्ज़ा” में सुकूनत इख़्तियार कर ली । (अक़ाल، ص ५९२)

बहुत से सहाबा और ताबेईन इल्मे हदीष में आप के शागिर्द हैं । हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िलाफ़त में ब मक़ामे रब्ज़ा सि. 32 हि. में आप ने वफ़ात पाई । (2) (अक़ाल، ص ५९२)

①..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، حظلة بن حذیم... الخ، الحديث: ۳۶۹۹۴،

ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۵۵

②..... الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الذال، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۴

واسد الغابة، جندب بن جنادة، ج ۱، ص ۴۴۰، ۴۴۱ ملقطاً

इन के बारे में हुजुरे अक्दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का इरशादे गिरामी है कि जिस शख्स को हज़रते ईसा **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की ज़ियारत का शौक हो वोह अबू ज़र का दीदार कर ले।<sup>(1)</sup> (کنز العمال، ج ۱۲، ص ۲۵۵)

## कशमाल

### जंगल में कफ़न

रिवायत में है कि हज़रते अबू ज़र **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के विसाल का वक़्त करीब आया तो इन की बीवी साहिबा रोने लगीं। आप ने पूछा : बीवी तुम रोती क्यों हो ? बीवी ने जवाब दिया : मैं क्यों न रोऊं जंगल में आप विसाल फ़रमा रहे हैं और हमारे पास न कफ़न है न कोई आदमी, मुझे येह फ़िक्र है कि इस जंगल में आप की तजहीज़ व तक्फ़ीन का मैं कहां से और कैसे इन्तिज़ाम करूंगी ? आप ने फ़रमाया : तुम मत रोओ और न कोई फ़िक्र करो। रसूले अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया है कि मेरे सहाबा में से एक शख्स जंगल में विसाल फ़रमाएगा और उस के जनाजे में मुसलमानों की एक जमाअत हाज़िर हो जाएगी। मुझे यकीन है कि वोह जंगल में विसाल करने वाला सहाबी मैं ही हूँ इस लिये तुम फ़िक्र न करो और इन्तिज़ार करो मुमकिन है कोई जमाअत आ रही हो। येह कह कर हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** विसाल फ़रमा गए।

उन की बीवी का बयान है कि विसाल के थोड़ी ही देर के बा'द बिल्कुल अचानक चन्द सुवार आ गए और एक नौजवान ने अपनी गठड़ी में से एक नया कफ़न निकाला और आप उसी कफ़न में मदफून हुवे और सुवारों की इस जमाअत ने निहायत ही एहतिमाम

①.....کنز العمال، کتاب الفضائل، ذکر الصحابة وفضلهم... الخ، الحديث: ۳۳۲۲۷،



के साथ तजहीज़ व तक्फ़ीन और नमाज़े जनाज़ा व दफ़न का इन्तिज़ाम किया। (1) (الكلام المبين وكتر العمال، ج ۱۵، ص ۲۸۴، مطبوعه حیدرآباد)

## फक्कत ज़म ज़म पर जिन्दगी

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि जब हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मुसलमान हुवे तो रोज़ाना मस्जिदे हराम में जा कर अपने इस्लाम का ए'लान करते रहते और कुफ़फ़ारे मक्का इन को इस क़दर मारते थे कि येह मरने के क़रीब हो जाते थे और हज़रते अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इन को लोगों से येह कह कर बचाया करते थे कि येह क़बीलए ग़िफ़ार के आदमी हैं जो तुम कुरैशियों की शामी तिजारत की शाहराह पर वाक़ेअ है। लिहाज़ा इन को ईज़ा मत दो वरना तुम्हारी शामी तिजारत का रास्ता बन्द हो जाएगा। हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पन्दरह दिन और पन्दरह रात इसी हरमे का'बा में रोज़ाना अपने इस्लाम का ए'लान करते और कुफ़फ़ार से मार खाते रहे और इन पन्दरह दिनों और रातों में ज़मज़म शरीफ़ के पानी के सिवा इन को गेहूँ या चावल का एक दाना या ज़रा बराबर कोई दूसरी ग़िज़ा मयस्सर नहीं हुई मगर येह सिर्फ़ ज़मज़म शरीफ़ पी कर ज़िन्दा रहे और पहले से ज़ियादा तन्दुरुस्त और फ़रबा भी हो गए। (2)

(بخاری، ج ۱۵، ص ۲۹۹، باب قصه زم زم وحاشیه بخاری، ص ۳۹۹، فتح الباری)

①..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، جندب بن جنادة، الحديث: ۳۶۸۸۹،

ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۳۶ ملخصاً

واسد الغابة، جندب بن جنادة، ج ۱، ص ۴۴۱-۴۴۲ ملخصاً

②..... صحيح البخاری، کتاب المناقب، باب قصة زم زم، الحديث: ۳۵۲۲، ج ۲، ص ۴۸۰

وفتح الباری شرح صحيح البخاری، کتاب المناقب، باب قصة زم زم، تحت الحديث:

۳۵۲۲، ج ۶، ص ۵۰۹

### ﴿51﴾ हज़रते इमामे हसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली इब्ने अबी तालिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के फ़रज़न्दे अकबर हैं। इन की कुन्यत अबू मुहम्मद और लक़ब “सिब्ते पयम्बर” व “रैहानतुरसूल” है। 15 रमज़ान सि. 3 हि. में आप की विलादत हुई। आप जवानाने अहले जन्नत के सरदार हैं और आप के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में बहुत ज़ियादा हदीषें वारिद हुई हैं। आप ने तीन मरतबा अपना आधा माल खुदा तआला की राह में ख़ैरात कर दिया।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की शहादत के बा'द कूफ़ा में चालीस हज़ार मुसलमानों ने आप के दस्ते मुबारक पर मौत की बैअत कर के आप को अमीरुल मोअमिनीन मुन्तख़ब किया लेकिन आप ने तक्रीबन छे माह के बा'द जुमादिल उला सि. 41 हि. में हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हाथ पर बैअत फ़रमा कर ख़िलाफ़त उन के सिपुर्द फ़रमा दी और खुद इबादतो रियाज़त में मशगूल हो गए।

इस तरह हुजूर अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जो ग़ैब की ख़बर दी थी वोह ज़ाहिर हो गई कि मेरा येह बेटा “सय्यिद” है और इस की वजह से **अव्वल** तआला मुसलमानों की दो बड़ी जमाअतों में सुल्ह करा देगा। चुनान्वे, हज़रते इमामे हसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अगर ख़िलाफ़त हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को सिपुर्द न फ़रमा देते तो ज़ाहिर है कि हज़रते इमामे हसन और हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की दोनों फ़ौजों के दरमियान बड़ी ही खूँ रैज़ जंग होती जिस से हज़ारों औरतें बेवा और लाखों बच्चे यतीम हो जाते और सल्तनते इस्लाम का शीराज़ा बिखर जाता मगर हज़रते इमामे हसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़ैर पसन्द तबीअत और नेक मिज़ाजी की बदौलत मुसलमानों में खूँ रेज़ी की नौबत नहीं आई। 5 रबीउल अव्वल

सि. 49 हि. में आप ब मक़ामे मदीनए मुनव्वरा ज़हर ख़ूरानी के बाइष शहादत से सरफ़राज़ हुवे ।<sup>(1)</sup> (अकाल, स. ५१०, वासद الغابة, ج २, स. १२८-१२९)

## करामात

### ख़ुशक दरख़्त पर ताज़ा ख़जूरें

आप की बहुत सी करामतों में से येह एक करामत बहुत ज़ियादा मशहूर है कि एक सफ़र में आप का गुज़र ख़जूरों के एक ऐसे बाग़ में हुवा जिस के तमाम दरख़्त ख़ुशक हो गए थे । हज़रते जुबैर बिन अल अवाम رضي الله تعالى عنه के एक फ़रज़न्द भी इस सफ़र में आप के हम रिकाब थे, आप ने उसी बाग़ में पड़ाव किया और खुद्दाम ने आप का बिस्तर एक सूखे दरख़्त की जड़ में बिछा दिया और हज़रते जुबैर رضي الله تعالى عنه के फ़रज़न्द ने अर्ज़ किया कि ऐ इब्ने रसूलुल्लाह ! काश ! इस सूखे दरख़्त पर ताज़ा ख़जूरें होतीं तो हम लोग सैर हो कर खा लेते । येह सुन हज़रते इमामे हसन رضي الله تعالى عنه ने चुपके से कोई दुआ पढ़ी और बिल्कुल ही अचानक मिनटों में वोह सूखा दरख़्त बिल्कुल सर सब्ज़ो शादाब हो गया और उस में ताज़ा पकी हुई ख़जूरें लग गई । येह मन्ज़र देख कर एक शतरबान कहने लगा कि खुदा की क़सम ! येह तो जादू का करिशमा है । येह सुन कर हज़रते जुबैर رضي الله تعالى عنه के फ़रज़न्द ने उस को बहुत जोर से डांटा और फ़रमाया कि तौबा कर, येह जादू नहीं है बल्कि येह शहजादए रसूल की दुआए मक्बूल की करामत है । फिर लोगों ने ख़जूरों को दरख़्त से तोड़ा और सब हमराहियों ने ख़ूब शिकम सैर हो कर खाया ।<sup>(2)</sup> (روضۃ الشهداء، باب ۶، ص ۱۰۹)

①..... الاكمال فى اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فى الصحابة، ص ۵۹۰

वासد الغابة، الحسن بن على، ج ۲، ص ۱۵-۲۲ ملقطاً

وتاريخ الخلفاء، الحسن بن على بن ابى طالب رضى الله تعالى عنه، ص ۱۵۲

②..... روضة الشهداء (مترجم)، باب ششم، ج ۱، ص ۴۰۴

## फ़रज़न्द पैदा होने की बिशारत

आप पैदल हज़ के लिये जा रहे थे, दरमियाने राह में एक मन्ज़िल पर क़ियाम फ़रमाया वहां आप का एक अक़ीदत मन्द हज़िरे ख़िदमत हुवा और अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं आप का गुलाम हूं। मेरी बीवी दर्दे ज़ेह में मुब्तला है आप दुआ फ़रमाएं कि तन्दुरुस्त लड़का पैदा हो। आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि तुम अपने घर जाओ तुम्हें जैसे फ़रज़न्द की तमन्ना है वैसा ही फ़रज़न्द तुम को **अब्बाह** तआला ने अता फ़रमा दिया है और तुम्हारा येह लड़का हमारा अक़ीदत मन्द और जानिषार होगा। वोह शख्स जब अपने मकान पर पहुंचा तो येह देख कर खुशी से बाग़ बाग़ हो गया कि वाक़ेई हज़रते इमामे हसन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने जैसे फ़रज़न्द की बिशारत दी थी वैसा ही लड़का उस के हां पैदा हुवा। <sup>(1)</sup> (شواهد النبوة، ص ۱۷۲)

## तबशैश

खुशक दरख़्त पर ताज़ा खजूरों का दफ़अतन लग जाना और अक़ीदत मन्द के घर में लड़की पैदा हुई है या लड़का ? और फिर इस बात को जान लेना कि येह लड़का बड़ा हो कर हमारा अक़ीदत मन्द व जानिषार होगा। ग़ौर फ़रमाइये कि येह कितनी अज़ीम और किस क़दर शानदार करामतें हैं। **سُبْحَنَ اللَّهُ** क्यूं न हो कि आप इब्ने रसूल और नूरे दीदए हैदर व बतूल हैं और खुदावन्द की बारगाह में बे इन्तिहा मक्बूल हैं। (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**)

## ﴿52﴾ हज़रते इमामे हुसैन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

सय्यिदुशुहदा हज़रते इमामे हुसैन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की विलादते बा सआदत 5 शा'बान सि. 4 हि. को मदीनए मुनव्वरा में हुई। आप की कुन्यत अबू अब्दुल्लाह। और नामे नामी "हुसैन" और लक़ब

1.....شواهد النبوة، ركن سادس...الخ، ذكر امير المؤمنين حسن رضى الله عنه، ص ۲۲۷

“सिबतुरसूल” व “रैहानतुरसूल” है। 10 मुहर्रम सि. 61 हि. जुमुआ के दिन करबला के मैदान में यज़ीदी सितमगारों ने इन्तिहाई बेददी के साथ आप को शहीद कर दिया।<sup>(1)</sup> (अकाल, ५१० पृ.)

### कशमात

#### कुंवे से पानी उबल पड़ा

अबू औन कहते हैं कि हज़रते इमामे हुसैन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का मक्काए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के रास्ते में इब्ने मुतीअ के पास से गुज़र हुवा। उन्होंने ने अर्ज किया कि ऐ इब्ने रसूल ! मेरे इस कुंवे में पानी बहुत कम है, इस में डोल भरता नहीं, मेरी सारी तदबीरें बेकार हो चुकी हैं। काश ! आप हमारे लिये बरकत की दुआ फ़रमाएं। हज़रते इमामे हुसैन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस कुंवे का पानी मंगाया और आप ने डोल से मुंह लगा कर पानी नौश फ़रमाया। फिर उस डोल में कुल्ली फ़रमा दी और हुक्म दिया कि सारा पानी कुंवे में उंडेल दें जब डोल का पानी कुंवे में डाला तो नीचे से पानी उबल पड़ा। कुंवे का पानी बहुत ज़ियादा बढ़ गया और पानी पहले से बहुत ज़ियादा शीरीं और लज़ीज़ भी हो गया।<sup>(2)</sup> (अबू सऊद, ५, १२२ पृ.)

#### बे अदबी करने वाला आग में

मैदाने करबला में एक बे बाक और बे अदब मालिक बिन उर्वा ने जब आप के खैमे के गिर्द ख़न्दक में आग जलती हुई देखी तो उस बद नसीब ने येह कहा कि ऐ हुसैन ! तुम ने आख़िरत की आग से पहले ही यहां दुन्या में आग लगा ली ? हज़रते इमाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि ऐ ज़ालिम ! क्या तेरा गुमान है कि मैं दोज़ख़ में

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الخاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۰

②.....الطبقات الكبرى لابن سعد، الطبقة الاولى من اهل المدينة من التابعين، ومن عبدالله

जाऊंगा ? फिर हज़रते इमाम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अपने मजरूह दिल से येह दुआ मांगी कि “खुदावन्दा ! तू इस बद नसीब को नारे जहन्नम से पहले दुनिया में भी आग के अज़ाब में डाल दे ।” इमामे आली मक़ाम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की दुआ अभी ख़त्म भी नहीं हुई थी कि फ़ौरन ही मालिक बिन उर्वा का घोड़ा फिसल गया और येह शख्स इस तरह घोड़े से गिर पड़ा कि घोड़े की रिकाब में इस का पाउं उलझ गया और घोड़ा इस को घसीटते हुवे ख़न्दक की तरफ़ ले भागा और येह शख्स ख़ैमे के गिर्द ख़न्दक की आग में गिर कर राख का ढेर हो गया ।<sup>(१)</sup>

(روضۃ الشہداء، ص ۱۶۹)

### नेजे पर सरे अक्दस की तिलावत

हज़रते जैद बिन अरक़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का बयान है कि जब यज़ीदियों ने हज़रते इमामे हुसैन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के सरे मुबारक को नेजे पर चढ़ा कर कूफ़ा की गलियों में ग़श्त किया तो मैं अपने मकान के बाला ख़ाने पर था जब सरे मुबारक मेरे सामने से गुज़रा तो मैं ने सुना कि सर मुबारक ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

(२) **أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا** (कहफ़, प १५)

इसी तरह एक दूसरे बुजुर्ग ने फ़रमाया कि जब यज़ीदियों ने सरे मुबारक को नेजे से उतार कर इब्ने ज़ियाद के महल में दाख़िल किया तो आप के मुक़द्दस होंट हिल रहे थे और ज़बाने अक्दस पर इस आयत की तिलावत जारी थी :

(३) **وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ**

(روضۃ الشہداء، ص ۲۳۰)

①..... روضۃ الشہداء (مترجم)، باب نہم، ج ۲، ص ۱۸۶

②..... **تर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : क्या तुम्हें मा'लूम हुआ कि पहाड़ की खोह और जंगल के किनारे वाले हमारी एक अजीब निशानी थे । (१५، कहफ़: ९)

③..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और हरगिज़ **अल्लाह** को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से । (प १३, अर्बे: ४२)

و روضۃ الشہداء (مترجم)، دسواں باب، فصل اول، ج ۲، ص ۳۸۴



## तबशेर

इन ईमान अफ़रोज़ करामतों से येह ईमानी रोशनी मिलती है कि शुहदाए किराम अपनी अपनी क़ब्रों में तमाम लवाज़िमे हयात के साथ ज़िन्दा हैं। खुदा की इबादत भी करते हैं और किसिम किसिम के तसरूफ़ात भी फ़रमाते रहते हैं और इन की दुआएं भी बहुत जल्द मक़बूल होती हैं।

### ﴿53﴾ हज़रते अमीरे मुअ़ाविय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

आप के वालिद का नाम अबू सुफ़यान और वालिदा का नाम हिन्द बिनते उतबा है। सि. 8 हि. में फ़त्हे मक्का के दिन येह खुद और आप के वालिदैन् सब मुसलमान हो गए और हज़रते अमीरे मुअ़ाविय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ चूँकि बहुत ही उम्दा कातिब थे इस लिये दरबारे नबुव्वत में वह्य लिखने वालों की जमाअत में शामिल कर लिये गए। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौरै ख़िलाफ़त में येह शाम के गवर्नर मुक़र्रर हुवे और हज़रते अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का दौरै ख़िलाफ़त ख़त्म होने तक इस ओहदे पर फ़ाइज़ रहे मगर जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ तख़्ते ख़िलाफ़त पर रोन्क अफ़रोज़ हुवे तो आप ने इन को गवर्नरी से मा'जूल कर दिया लेकिन इन्हों ने मा'जूली का परवाना क़बूल नहीं किया और शाम की हुकूमत से दस्त बरदार नहीं हुवे बल्कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमान रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के खून के क़िसास का मुतालबा करते हुवे इन्हों ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बैअत से न सिर्फ़ इन्कार किया बल्कि उन से मक़ामे सिफ़्फ़ीन में जंग भी हुई।

फिर जब सि. 41 हि. में हज़रते इमाम हसने मुजतबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ख़िलाफ़त इन के सिपुर्द फ़रमा दी तो येह पूरे आलमे इस्लाम के बादशाह हो गए। बीस बरस तक ख़िलाफ़ते राशिदा के गवर्नर रहे और बीस बरस तक खुद मुख्तार बादशाह रहे इस तरह चालीस बरस तक शाम के तख़्ते सल्तनत पर बैठ कर हुकूमत करते रहे और खुशकी व समन्दर में जिहादों का इन्तिज़ाम फ़रमाते रहे।

इस्लाम में बहरी लड़ाइयों के मूजिद आप हैं, जंगी बेडियों की ता'मीर का कारख़ाना भी आप ने बनवाया, खुशकी और समन्दरी फ़ौजों की बेहतरीन तन्ज़ीम फ़रमाई और जिहादों की बदौलत इस्लामी हुकूमत की हुदूद को वसीअ से वसीअ तर करते रहे और इशाअते इस्लाम का दाइरा बराबर बढ़ता रहा। जा बजा मसाजिद की ता'मीर और दर्सगाहों का क़ियाम फ़रमाते रहे।

रजब सि. 60 हि. में आप ने लक्वा की बीमारी में मुब्तला हो कर अपने दारुस्सलतनत दिमश्क में विसाल फ़रमाया। ब वक्ते विसाल आप ने वसियत फ़रमाई थी कि मेरे पास हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का एक पैराहन, एक चादर, एक तहबन्द और कुछ मूए मुबारक और नाखुने अक़दस के चन्द तराशे हैं। इन तीनों मुक़द्दस कपड़ों को मेरे कफ़न में शामिल किया जाए और मूए मुबारक और नाखुने अक़दस को मेरी आंखों में रख कर मुझे अरहमर्राहिमीन के सिपुर्द किया जाए। चुनान्वे, लोगों ने आप की इस वसियत पर अमल किया। <sup>(1)</sup> (अक़ाल, १५८ वग़ैरे)

ब वक्ते विसाल अठत्तर या छियासी बरस की उम्र थी। विसाल के वक्ते इन का बेटा यज़ीद दिमश्क में मौजूद नहीं था इस

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف المیم، فصل فی الصحابة، ص ۶۱۷

واسد الغابة، معاوية بن صخر بن ابی سفیان، ج ۵، ص ۲۲۰-۲۲۳ ملقطاً

लिये ज़ह्हाक बिन कैस ने आप के कफ़न व दफ़न का इन्तिज़ाम किया और इसी ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई ।

हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बहुत ही ख़ूब सूरत, गोरे रंग वाले और निहायत ही वजीह और रो'ब वाले थे । चुनान्वे, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि “मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अरब के किस्सा हैं ।”<sup>(1)</sup>

(اسد الغابة، ج ۴، ص ۳۸۵-۳۸۷)

### कशमात

आप की चन्द करामतें बहुत ही मशहूर हैं और आप के फ़ज़ाइल में चन्द अहादीष भी मरवी हैं ।

### जंग में कभी मग़लूब नहीं हुवे

इन की एक मशहूर करामत येह है कि कुश्ती या जंग में कभी भी और कहीं भी और किसी शख़्स से भी मग़लूब नहीं हुवे बल्कि हमेशा ही अपने मद्दे मुक़ाबिल पर ग़ालिब रहे क्यूंकि हुज़ुरे अक़्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन के बारे में इरशाद फ़रमा दिया था :  
إِنَّ مُعَاوِيَةَ لَا يُصَارِعُ أَحَدًا إِلَّا صَرَغَهُ مُعَاوِيَةَ (या'नी मुआविय्या जिस शख़्स से लड़ेगा मुआविय्या ही उस को पछाड़ेगा ।)<sup>(2)</sup>

(کنز العمال، ج ۱۲، ص ۳۱۷ بحواله ولیی عن ابن عباس)

### दुआ मांगते ही बारिश

सुलैम बिन अमिर ख़बाइरी का बयान है कि एक मरतबा मुल्के शाम में बिल्कुल ही बारिश नहीं हुई और शदीद क़हूत का दौर

①..... اسد الغابة، معاوية بن صخر بن ابی سفیان، ج ۵، ص ۲۲۲-۲۲۳ ملقطاً

②..... کنز العمال، کتاب الفضائل، ذکر الصحابة وفضلهم... الخ، معاوية بن ابی سفیان،

الحديث: ۳۳۶۵۱، ج ۶، الجزء ۱، ص ۳۴۲

दौरा हो गया। हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़े इस्तिस्का के लिये मैदान में निकले और मिम्बर पर बैठ कर आप ने हज़रते इब्नुल अस्वद जरशी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बुलाया और उन को मिम्बर के नीचे अपने क़दमों के पास बिठा कर अपने दोनों हाथों को उठाया और इस तरह दुआ मांगी कि या **اَللّٰهُمَّ** हम तेरे हुज़ूर में हज़रते इब्नुल अस्वद जरशी को सिफ़ारिशी बना कर लाए हैं जिन को हम अपने से नेक और अफ़ज़ल समझते हैं।

फिर हज़रते इब्नुल अस्वद जरशी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और तमाम हाज़िरीन भी अपने अपने हाथों को उठा कर बारिश की दुआ मांगने लगे नागहां पश्चिम से एक ज़ोरदार अब्र उठा फिर मुस्लाधार बारिश होने लगी यहां तक कि मुल्के शाम की ज़मीन सैराब हो कर खेती से सर सब्जो शादाब हो गई।<sup>(1)</sup> (طبقات ابن سعد، ج ٤، ص ٢٢٢)

### शैतान ने नमाज़ के लिये जगाया

हज़रते अल्लामा मौलाना जलालुद्दीन मौलाना ए रूम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी मषनवी शरीफ़ में आप की इस करामत को बड़ी धूम से बयान फ़रमाया है कि एक रोज़ आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के महल में दाख़िल हो कर किसी ने आप को नमाज़े फ़त्र के लिये बेदार किया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तू कौन है ? और किस लिये तू ने मुझे जगाया है ? तो उस ने जवाब दिया कि ऐ अमीरे मुआविय्या ! मैं शैतान हूं। आप ने हैरान हो कर पूछा कि ऐ शैतान ! तेरा काम तो इन्सान से गुनाह कराना है और तू ने मुझे नमाज़ के लिये जगा कर मुझे नेक अमल करने का मौक़ा दिया।

1.....الطبقات الكبرى لابن سعد، الطبقة الاولى من اهل الشام... الخ، يزيد بن الاسود

इस की वजह क्या है ? तो शैतान ने जवाब दिया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मैं जानता हूँ कि अगर सोते रहने में आप की नमाज़े फ़ज़्र क़ज़ा हो जाती तो आप ख़ौफ़े इलाही से इस क़दर रोते और इस कषरत से तौबा व इस्तिग़फ़ार करते कि खुदा की रहमत को आप की बे क़रारी व गिर्या व ज़ारी पर प्यार आ जाता और वोह आप की क़ज़ा नमाज़ क़बूल फ़रमा कर अदा नमाज़ से हज़ारों गुना ज़ियादा अज़्रो षवाब अता फ़रमा देता चूँकि मुझे खुदा के नेक बन्दों से बुग़ज़ व हसद है इस लिये मैं ने आप को जगा दिया ताकि आप को कुछ ज़ियादा षवाब न मिल सके।<sup>(1)</sup> (مثنوی مولانا روم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ)

## तबशेश

मषनवी शरीफ़ की इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि शैतान कभी लोगों को सुला कर और नमाज़े क़ज़ा करा कर नेकियों और षवाबों से महरूम कराता है तो कभी कुछ लोगों को नमाज़ों के लिये जगा कर और अदा नमाज़ें पढ़वा कर ज़ियादा नेकियों और षवाबों से महरूम कराता है और इस की सूरत येह है कि जो लोग सुब्ह को बेदार हो कर नमाज़े फ़ज़्र जमाअत से पढ़ते हैं तो शैतान कभी कभी कुछ लोगों के दिलों में येह वस्वसा डाल देता है कि मैं खुदा का बहुत ही नेक बन्दा हूँ क्योंकि मैं ने फ़ज़्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ी है और फुलां फुलां लोगों की नमाज़ें क़ज़ा हो गई यकीनन मैं उन लोगों से बहुत नेक और बहुत अच्छा हूँ। ज़ाहिर है कि अपनी अच्छाई और बुराई का ख़याल आते ही नमाज़ का अज़्रो षवाब तो ग़ारत और अकारत हो ही गया, उलटे तकब्बुर और घमन्ड का गुनाह सर पर सुवार हो गया बहर हाल शैतान के शर से खुदा तआला की पनाह।

### ﴿54﴾ हज़रते हारिषा बिन नो'मान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते हारिषा बिन नो'मान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अफ़ज़िल सहाबा में से हैं। जंगे बद्र और जंगे उहुद वगैरा तमाम इस्लामी जंगों में मुजाहिदाना शान के साथ मा'रिका आराई करते रहे। यह क़बीलए बनू नज्जार में से हैं।<sup>(1)</sup>

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन के बारे में इरशाद फ़रमाया कि मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने वहां क़िराअत की आवाज़ सुनी, जब मैं ने दरयाफ़्त किया कि येह कौन शख़्स हैं? तो फ़िरिश्तों ने कहा कि येह हारिषा बिन नो'मान हैं। येह अपनी वालिदा के साथ बेहतरीन सुलूक करने वाले सहाबी हैं।<sup>(2)</sup>

(مشکوّة، ج ۲، ص ۲۱۹ باب البر والصلة)

### कशमल

### हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को देखा

इन का बयान है कि मैं एक मरतबा हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास से गुज़रा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास बैठे हुवे हैं। मैं ने सलाम किया और वहां से चल दिया जब मैं वापस आया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि ऐ हारिषा! तुम ने उस शख़्स को देखा जो मेरे पास बैठे हुवे थे? मैं ने अर्ज़ किया कि जी हां! तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि वोह हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام थे और उन्होंने ने तुम्हारे सलाम का जवाब भी दिया था।<sup>(3)</sup>

(अक़ाल فی اسماء الرجال، ص ۵۶۱)

①..... اسد الغابة، حارثة بن النعمان، ج ۱، ص ۵۲۵

②..... مشکوّة المصابيح، کتاب الاداب، باب البر والصلة، الحديث: ۴۹۲۶، ج ۲، ص ۲۰۶

③..... الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۱



और एक रिवायत में येह भी है कि हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने हुजूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अर्ज़ किया कि हारिषा बिन नो'मान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अस्सी आदमियों में से एक हैं। तो हुजूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दरयाफ़्त किया कि ऐ जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام इस का क्या मतलब है कि येह अस्सी आदमियों में से एक हैं? तो आप ने जवाब दिया कि जंगे हुनैन के दिन कुछ देर के लिये तमाम सहाबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ शिकस्त खा कर पीछे हट जाएंगे मगर अस्सी आदमी पहाड़ की तरह आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ ऐसी हालत में डटे रहेंगे जब कि कुफ़र की तरफ़ से तीरों की बारिश हो रही होगी उन अस्सी बहादुरों में से एक “हारिषा बिन नो'मान” हैं।<sup>(1)</sup> (असदुलगाबे, ज १, व ३५८)

येह आखिरी उम्र में नाबीना हो गए थे इस लिये हर वक़्त अपने मुसल्ले पर बैठे रहते थे। और अपने मुसल्ले के पास एक टोकरी में खजूर भर कर रखते थे और अपने मुसल्ले से हुजरे के दरवाज़े तक एक धागा बान्धे हुवे थे जब मिसकीन दरवाज़े पर आ कर सलाम करता तो उसी धागे में खजूरे बांध कर धागा खींच लेते और खजूरे मिसकीन के पास पहुंच जाया करती थीं उन के घर वालों ने कहा कि इस तकल्लुफ़ व तकलीफ़ की क्या ज़रूरत है? आप हुक्म दें तो घर वाले खजूरे मिसकीन को दे दिया करेंगे। आप ने फ़रमाया कि मैं ने हुजूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : مُنَاوَلَةُ الْمُسْكِينِ تَقْبِي مِثْلَ السُّوءِ (या'नी मिसकीन को अपने हाथ से देना बुरी मौत से बचाता है।)<sup>(2)</sup> (असदुलगाबे, ज १, व ३५९)

①.....असदुलगाबे, حارثة بن النعمان، ج १، ص २०५

②.....شعب الإيمان للبيهقي، باب الثاني والعشرون...الخ، فصل في الاختيار في صدقة

التطوع، الحديث: ३६६३، ج ३، ص २०३

و असद الغابة، حارثة بن النعمان، ج १، ص २०५

### ﴿55﴾ हज़रते हकीम बिन हिजाम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन की कुन्यत अबू ख़ालिद है और ख़ानदाने कुरैश की शाख़ बनू असद से इन का ख़ानदानी तअल्लुक है। येह उम्मुल मोअमिनीन हज़रते ख़दीजा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के भतीजे हैं। इन की एक खुसूसियत येह है कि ज़मानए जाहिलियत में इन की वालिदा जब कि येह उन के बतन में थे का'बे के अन्दर बुतों पर चढ़ावा चढ़ाने को गई तो वहीं बीच का'बा में हकीम बिन हिजाम पैदा हो गए। ज़मानए जाहिलियत और इस्लाम दोनों ज़मानों में येह अशराफ़े कुरैश में से शुमार किये जाते थे। फ़त्हे मक्का के साल सि. 8 हि. में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। बहुत ही अक्लमन्द, मुआमला फ़हम और साहिबे इल्म व तक्वा शिआर थे। एक सो गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद किया और एक सो ऊंट उन मुसाफ़िरो को दिये जिन के पास सुवारी के जानवर नहीं थे। एक सो बीस बरस उम्र पाई। साठ बरस कुफ़्र की हालत में और साठ बरस इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारी। सि. 54 हि. में ब मक़ामे मदीनए मुनव्वरा इन का विसाल हुवा।<sup>(1)</sup> (अकाल, ५१)

### कशमत

### तिजारत में कभी घाटा नहीं हुवा

इन की मशहूर करामत येह है कि येह ताजिर थे। ज़िन्दगी भर तिजारत करते रहे मगर कभी भी और कहीं भी और किसी सौदे में भी कोई नुक़सान और घाटा नहीं हुवा बल्कि अगर येह मिट्टी भी ख़रीदते तो उस में नफ़अ ही नफ़अ होता क्यूंकि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन के लिये येह दुआ फ़रमाई थी : **اَللّٰهُمَّ بَارِكْ فِىْ صَنْعَتِهِ** (ऐ **अल्लाह** (क़रालमाल, १२७, २१२)<sup>(2)</sup> 1) इन के ब्योपार में बरकत अता फ़रमा **عَزَّوَجَلَّ**

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فی الصحابة، ص ५१

②.....کنز العمال، کتاب الفضائل، ذکر الصحابة وفضلهم رضی الله عنهم اجمعين، حکیم

بن حزام، الحديث: ۳۳۲۷۲، ج ۶، الجزء ۱۱، ص ۳۱۰ بتغییر لفظ

तिर्मिजी व अबू दावूद की रिवायतों में है कि हुजूर अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इन को एक दीनार दे कर मेंढा खरीदने के लिये भेजा तो इन्होंने एक दीनार में मेंढा खरीदा और इसे दो दीनार में बेच डाला फिर वापस बाज़ार आए और एक दीनार में मेंढा खरीद कर आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की खिदमत अक्दस में आ कर मेंढा और एक दीनार पेश कर दिये। हुजूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने दीनार को तो खुदा की राह में ख़ैरात कर दिया और फिर खुश हो कर इन की तिजारत में बरकत के लिये दुआ फ़रमा दी। <sup>(1)</sup>

(مشکوٰۃ ص ۲۵۴، باب الشّرکة والوکالت)

## तबशेरा

तिजारत में नफ़अ व नुक़सान दोनों का होना लाज़िमी अम्र है हर ताजिर को इस का तजरिबा है कि ब्योपार में कभी नफ़अ होता है कभी नुक़सान, मगर ज़िन्दगी भर तिजारत में हमेशा नफ़अ ही नफ़अ होता रहे और कभी भी और कहीं भी और किसी सौदे में भी घाटा न उठाना पड़े बिलाशुबा इस को **करामत** के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता इस लिये हज़रते हकीम बिन हिज़ाम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** यकीनन साहिबे करामत सहाबी और बुलन्द मर्तबा वली थे।

**﴿56﴾ हज़रते अम्मार बिन यासिर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ****

येह क़दीमुल इस्लाम और मुहाजिरीने अब्वलीन में से हैं और येह उन मुसीबत ज़दा सहाबियों में से हैं जिन को कुफ़ारे मक्का ने इस क़दर ईजाएँ दीं कि जिन्हें सोच कर ही बदन के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। ज़ालिमों ने इन को जलती हुई आग पर लिटाया

.....<sup>(1)</sup> مشکاة المصابيح، کتاب البيوع، باب الشّرکة والوکالة، الحديث: ۲۹۳۷، ج ۱، ص ۵۴۲

चुनान्चे, येह दहकती हुई आग के कोइलों पर पीठ के बल लैटे रहते थे और जब हुजुरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के पास से गुज़रते और येह आप को या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कह कर पुकारते तो आप इन के लिये इस तरह आग से फ़रमाया करते थे :

يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ عَمَّارٍ كَمَا كُنْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

(या'नी ऐ आग ! तू अम्मार पर उसी तरह ठन्डी और सलामती वाली बन जा जिस तरह तू हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये ठन्डी और सलामती वाली बन गई थी।)

इन की वालिदए माजिदा हज़रते बीबी सुमय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا को इस्लाम क़बूल करने की वजह से अबू जहल ने बहुत सताया यहां तक कि उन की नाफ़ के नीचे नेज़ा मार दिया जिस से उन की रूह परवाज़ कर गई और अहदे इस्लाम में सब से पहले येह शहादत से सरफ़राज़ हो गई।

हुजुरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते अम्मार رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہ को तय्यिब व मुतय्यिब के लक़ब से पुकारा करते थे। येह सि. 37 हि. में तिरानवे बरस की उम्र पा कर जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रते अली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہ की हिमायत में हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ौजों से जंग करते हुवे शहीद हो गए।<sup>(1)</sup> (अकाल, ज १०८)

## कशमात

### कभी इन की क़सम नहीं टूटी

इन की एक मशहूर क़रामत येह है कि येह जिस बात की क़सम उठा लिया करते थे खुदावन्दे करीम हमेशा इन की क़सम को

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص १०७

و اسد الغابة، عمار بن یاسر، ج ४، ص ۱۴۰-۱۴۶ ملقطاً

و اسد الغابة، سمیة ام عمار، ج ۷، ص ۱۶۷ ملقطاً

पूरी फ़रमा देता क्योंकि हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इन के बारे में येह इरशाद फ़रमाया था :

كَمْ مِنْ ذِي طَمَرَيْنِ لَا يُؤْبَهُ لَهُ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللَّهِ لَا بَرَهُ مِنْهُمْ عَمَارُ بْنُ يَاسِرٍ (1) (کنز العمال، ج ۱۲، ص ۲۹۵)

(कितने ही ऐसे कम्बल पोश हैं कि लोग उन की कोई परवाह नहीं करते लेकिन अगर वोह किसी बात की क़सम खा लें तो **अब्बाह** तअ़ाला ज़रूर उन की क़सम को पूरी फ़रमा देगा और इन्हीं लोगों में अम्मार बिन यासिर हैं।)

### तीन मरतबा शैतान को पछाड़ा

हज़रते अली **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते अम्मार **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को पानी भरने के लिये भेजा। शैतान एक काले गुलाम की सूत में हज़रते अम्मार **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** को पानी भरने से रोकने लगा और लड़ने पर आमादा हो गया। हज़रते अम्मार **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस को पछाड़ दिया तो वोह अज़िजी करने लगा। इसी तरह तीन मरतबा शैतान ने पानी भरने से आप को रोका और लड़ने पर तय्यार हुवा और तीनों मरतबा आप ने उस को पछाड़ दिया जिस वक़्त शैतान से आप की कुशती हो रही थी हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अपनी मजलिस में सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** को बता दिया कि आज अम्मार ने तीन मरतबा शैतान को पछाड़ दिया है जो एक काले गुलाम की सूत में उन से लड़ रहा है।

हज़रते अम्मार जब पानी ले कर आ गए तो मैं ने उन से कहा कि तुम्हारे बारे में हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया है कि तुम ने तीन मरतबा शैतान को पछाड़ा है। येह सुन कर हज़रते अम्मार **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** कहने लगे कि खुदा की क़सम ! मुझे येह मा'लूम नहीं था कि वोह शैतान है वरना मैं उस को मार डालता, हां अलबत्ता तीसरी मरतबा मुझे बड़ा ही गुस्सा आ गया था और मैं ने

①..... کنز العمال، کتاب الفضائل، ذکر الصحابة وفضلهم رضى الله عنهم اجمعين، عمار

بن یا سر رضى الله عنه، الحديث: ۳۳۵۱۹، ج ۶، الجزء ۱۱، ص ۳۳۰

इरादा कर लिया था कि मैं दांत से उस की नाक काट लूं मगर मैं जब उस की नाक के करीब मुंह ले गया तो मुझे बहुत ही गन्दी बदबू महसूस हुई इस लिये मैं पीछे हट गया और उस की नाक बच गई।<sup>(1)</sup>

﴿57﴾ **हज़रते शूरहबील बिन हसना** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह बहुत ही जांबाज़ और बहादुर सहाबी हैं। इन की वालिदा का नाम हसना था और इन के वालिद का नाम अब्दुल्लाह बिन मताअ था। इन के बा'द इन की वालिदा हसना ने एक अन्सारी से जिन का नाम सुफ़्यान बिन मा'मर था निकाह कर लिया और दो बच्चे भी इन से तवल्लुद हुवे जिन का नाम जुनादा और जाबिर था। हज़रते शूरहबील अपने दोनों भाइयों के साथ इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गए थे और हिजरत कर के हबशा भी गए थे और जब हबशा से मदीना आए तो बनी ज़रीफ़ में रहने लगे। फिर जब हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िलाफ़त में इन के दोनों भाइयों का इन्तिक़ाल हो गया तो हज़रते शूरहबील رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बनी ज़हरा के कबीले में रहने लगे और फ़ारूकी दौरै हुकूमत में कई एक जिहादों में अमीरे लश्कर की हैषियत से अफ़वाजे इस्लामिय्या के किसी एक दस्ते की कमान करते रहे। सि. 18 हि. के ताऊने अमवास में सरसठ बरस की उम्र पा कर विसाल फ़रमा गए। अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि येह और हज़रते अबू उबैदा बिन अल ज़र्राह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا दोनों एक ही दिन ताऊन में मुत्तला हुवे।<sup>(2)</sup>

**कशमल**

**क़लआ ज़मीन में धंस गया**

इस्लामी लश्कर शहर असकन्दरिय्या पर हम्ला आवर था। कुफ़फ़ार की फ़ौज एक बहुत ही मज़बूत और ना क़ाबिले तस्ख़ीर

①.....شواهد النبوة، ركن سادس در بيان شواهد...الخ، عمارين يا سررضى الله عنه، ص 283

②.....اسد الغابة، شرح بيل بن حسنة، ج 2، ص 591-592



क़ल्ए में महफूज़ थी और लश्करे इस्लाम क़ल्ए के सामने खुले मैदान में ख़ैमा ज़न था। बहुत दिनों तक जंग होती रही मगर कुफ़्फ़ार क़ल्ए की वजह से मग़लूब नहीं हुवे थे। एक दिन अमीरे लश्कर हज़रते शुरहबील बिन हसना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने काफ़िरों को मुख़ातिब कर के फ़रमाया कि ऐ लश्करे कुफ़्फ़ार के सिपह सालारो ! सुन लो ! हमारी फ़ौजे इस्लाम में इस वक़्त ऐसे ऐसे अल्लाह वाले मौजूद हैं कि अगर वोह इस क़ल्ए की दीवारों को हुक्म दे दें कि तुम फ़ौरन ही ज़मीन में धंस जाओ तो फ़ौरन ही येह क़ल्आ ज़मीन में धंस जाएगा। येह कहा और जोश में आ कर आप ने अपना हाथ क़ल्ए की जानिब बढ़ाया और बुलन्द आवाज़ से ना'ए तक्बीर लगाया तो पूरा क़ल्आ दम ज़दन में ज़मीन के अन्दर धंस गया और कुफ़्फ़ार का लश्कर जो क़ल्ए के अन्दर था आन की आन में खुले मैदान में खड़ा रह गया। येह मन्ज़र देख कर बादशाह असक़न्दरिय्या का दिलो दिमाग़ ज़ेरो ज़बर हो गया और वोह मारे डर के शहर छोड़ कर अपनी फ़ौजों के साथ भाग निकला और पूरा शहर मुसलमानों के कब्जे में आ गया। (तारिख़ वादी वसिरे الصالحين، ص २२)

### तबशेश

سُبْحَنَ اللَّهُ औलियाउल्लाह की रूहानी ताक़तों का क्या कहना ! सच है

कोई अन्दाज़ा कर सकता है इस के ज़ोरे बाज़ू का  
निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक्दीरें

﴿57﴾ हज़रते अब्र बिन जमूह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह मदीनए मुनव्वरा के रहने वाले अन्सारी हैं और हज़रते जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के फूफा हैं। येह अपाहज थे। येह जंगे उहुद के दिन अपने फ़रजन्दों के साथ जिहाद के लिये आए तो हुजूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन को लंगड़ाने की बिना पर मैदाने जंग में

उतरने से रोक दिया। येह बारगाहे रिसालत में गिड़ गिड़ा कर अर्ज करने लगे : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे जंग में लड़ने की इजाजत दे दीजिये। मेरी तमन्ना है कि मैं भी लंगड़ाता हुवा जन्नत में चला जाऊं। इन की बे करारी और गिर्या व ज़ारी को देख कर रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का क़ल्ब इन्तिहाई मुतअष्षिर हो गया और आप ने इन को जंग करने की इजाजत दे दी। येह खुशी से उछल पड़े और काफ़ि़रों के हुजूम में घुस कर दिलेराना जंग करने लगे यहां तक कि शहादत से सरफ़राज़ हो गए।<sup>(1)</sup>

(مدارج النبوة، ج ۲، ص ۱۲۴)

### कशमल

### लाश मैदाने जंग से बाहर नहीं गई

लड़ाई ख़त्म हो जाने के बा'द जब हज़रते अम्र बिन जमूह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बीवी हज़रते हिन्द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا मैदाने जंग में गई तो उन की लाश को ऊंट पर लाद कर दफ़न करने के लिये मदीनए मुनव्वरा लाना चाहा तो हज़ारों कोशिशों के बा वुजूद वोह ऊंट मदीने की तरफ़ नहीं चला बल्कि वोह मैदाने जंग ही की तरफ़ भाग भाग कर जाता रहा। हज़रते हिन्द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जब दरबारे रिसालत में येह माजरा अर्ज किया तो आप ने फ़रमाया कि क्या अम्र बिन जमूह ने घर से निकलते वक़्त कुछ कहा था ? हज़रते हिन्द ने अर्ज किया कि जी हां ! वोह येह कह कर घर से निकले थे : اَللّٰهُمَّ لَا تُرَدِّنِيْ اِلٰى اَهْلِيْ (ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मुझ को मैदाने जंग से अपने अहलो इयाल में वापस आना नसीब मत कर) आप ने इरशाद फ़रमाया कि येही

①.....مدارج النبوة، قسم سوم، کارزارهائے...الخ، ج ۲، ص ۱۲۴

و اسد الغابة، عمرو بن الجموح، ج ۴، ص ۲۱۹-۲۲۱ ملقطاً

वजह है कि ऊंट मदीनए मुनव्वरा की तरफ नहीं चल रहा है लिहाज़ा तुम इन को मदीने ले जाने की कोशिश मत करो।<sup>(1)</sup>

(مدارج النبوة، ج ۲، ص ۱۲۴)

## तबसेरा

**अल्लाहु अकबर !** क्या ठिकाना है इस जज़्बए इश्क़ और जोशे जिहाद का और क्या कहना इस शौके शहादत का। **سُبْحَنَ اللَّهِ**

दो क़दम भी चलने की है नहीं ताक़त मुझ में

इश्क़ खींचे लिये जाता है मैं क्या जाता हूँ

खुदा की शान देखिये कि उन की तमन्ना पूरी हो गई जिहाद भी कर लिया, शहादत से भी सरफ़राज़ हो गए और मैदाने जंग ही में इन का मदफ़न भी बन गया। सच है

जो मांगने का तरीक़ा है इस तरह मांगो

दरे करीम से बन्दे को क्या नहीं मिलता

﴿59﴾ **هَجَرَتِ أَبُو بَالَةَ خُشَانِي** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन का नाम जरहम बिन नाशिब है मगर कुन्यत ही मशहूर है। येह दा'वते इस्लाम के आगाज़ ही में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए थे। सिलसिलए नसब चूँकि “ख़शीन वाइल” से मिलता है इस लिये येह खुशनी कहलाते हैं। सुल्हे हुदैबिय्या में हुज़ूरे अक़दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हमरिकाब थे और बैअतुर्रिज़वान कर के रिज़ाए खुदावन्दी की सनद हासिल की। हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने इन को मुबल्लिग़ बना कर भेजा चुनान्चे, इन की कोशिशों से इन का पूरा क़बीला जल्द ही दामने इस्लाम में आ गया। मुल्के शाम फ़तह होने के बा'द येह शाम में क़ियाम पज़ीर हो गए। हज़रते अली और

हज़रते अमीरे मुअविyya رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की लड़ाइयों में येह बिल्कुल गैर जानिबरदार रहे । रास्त गुफ्तारी और साफ़ गोई में येह अपना जवाब नहीं रखते थे । रात के सन्नाटे में अकषर येह घर से बाहर निकल कर आस्मान पर नज़र डालते और सजदे में गिर कर घन्टों सर ब सुजूद रहते । मुल्के शाम में इक़ामत पज़ीर हो गए थे और वहीं सि. 75 हि. में वफ़ात हुई <sup>(1)</sup> (अक़ाल, ज १, ५८९ वासद الغابة, ५८९, ५८९)

### करामत

### अपनी पसन्द की मौत मिली

येह अकषर कहा करते थे और येह दुआएं भी मांगा करते थे कि या **اَللّٰهُمَّ** मुझ को आम लोगों की तरह एड़िया रगड़ रगड़ कर और दम घुट घुट कर मरना पसन्द नहीं है मुझे ऐसी मौत मिले कि इस में दम घुटने और ऐड़ियां रगड़ने की ज़हमत न उठानी पड़े । चुनान्वे, इन की येह करामत है कि हज़रते अमीरे मुअविyya رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की हुकूमत के दौरान येह आधी रात गुज़रने के बा'द नमाज़ में मशगूल थे कि इन की साहिबज़ादी ने येह ख़्वाब देखा कि इन के वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया । वोह इस परेशान कुन ख़्वाब से घबरा कर उठ बैठीं और आवाज़ दी तो देखा कि आप नमाज़ पढ़ रहे हैं । थोड़ी देर बा'द दूसरी मरतबा आवाज़ दी तो कोई जवाब नहीं मिला पास जा कर देखा तो सर सजदे में था और रूढ़ परवाज़ कर चुकी थी <sup>(2)</sup> (असद الغابة واصابه)

①..... اسد الغابة، جرثوم بن ناشب، ج १، ص ५०५

و الاكمال في اسماء الرجال، حرف الثاء، فصل في الصحابة، ص ५८९

و الاصابة في تمييز الصحابة، باب الكنى، حرف الثاء المثلثة، ج १، ص ५१

②..... الاصابة في تمييز الصحابة، باب الكنى، حرف الثاء المثلثة، ج १، ص ५१

## ﴿60﴾ हज़रते कैस बिन ख़रशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह कबीलए बनी कैस बिन षा'लबा से तअल्लुक़ रखते थे। इन के इस्लाम लाने की तारीख़ मुतअय्यन नहीं की जा सकी लेकिन येह मा'लूम है कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाने के बा'द येह अपने वतन से मदीनए मुनव्वरा आए और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के रू बरू हाज़िर हो कर अर्ज गुज़ार हुवे कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं हर उस चीज़ पर जो खुदा तअला की तरफ़ से आप के पास आई है और उम्र भर हक़ गोई करने पर आप से बैअत करता हूं। आप ने फ़रमाया : ऐ कैस ! तुम क्या कहते हो ? मुमकिन है तुम को ऐसे ज़ालिम हाकिमों से साबिका पड़े जिन के मुकाबले में तुम हक़ गोई से काम न ले सको। अर्ज किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ऐसा कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं हो सकता। खुदा की क़सम ! मैं जिन जिन चीज़ों पर आप से बैअत करता हूं उस को ज़रूर ज़रूर पूरा करूंगा। येह सुन कर सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने पैग़म्बराना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि अगर ऐसा है तो तुम इतमीनान रखो कि तुम को किसी शर से कभी भी नुक़सान नहीं पहुंच सकता। चुनान्चे, आप उम्र भर अपने इस अहद पर अज़म व सख़्ती के साथ काइम रहे।

बनू उमय्या के दौरै हुकूमत में ज़ियाद और उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद जैसे सितम कैशों और ज़ालिम गवर्नरों पर बर मला नुक्ता चीनी करते रहते थे यहां तक कि उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ज़ालिम गवर्नर के मुंह पर खुल्लम खुल्ला येह कह दिया कि तुम लोग **अब्बाह** व रसूल पर इफ़्तिरा परदाजी करने वाले मुफ़्तरी हो।

### कशमल

## जान गई मगर आन नहीं गई

उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद गवर्नर आप का दुश्मन हो गया था उस ने आप को क़त्ल की धमकी दी। आप ने उस को कह दिया कि

तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने तैश में आ कर जल्लादों को बुला लिया और हुक्म दे दिया कि तुम लोग कैस बिन ख़रशा के मकान पर जा कर उन की गर्दन उड़ा दो, जल्लाद आ गए लेकिन जब आप की गर्दन उड़ाने के लिये आप के मकान पर पहुंचे तो येह देख कर हैरान रह गए कि वोह अपने बिस्तर पर लैटे हुवे हैं और इन की मुक़द्दस रूह परवाज़ कर चुकी है। जल्लाद उन के बदन को हाथ भी न लगा सके और ना काम व नामुराद वापस चले गए और इस तरह आप एक ज़ालिम की सज़ा से बच गए।<sup>(1)</sup> (استيعاب، ج ۲، ص ۵۲)

## तबशेश

आप ने उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद से फ़रमाया था कि “तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता !” हालांकि उस ने अपनी गवर्नरी के जो’म में येह चाहा कि जल्लाद से इन को क़त्ल करा कर इन्तिक़ाम ले ले मगर उस का येह मन्सूबा ख़ाक में मिल गया और जल्लाद नाकाम व नामुराद हो कर वापस चले गए।

سُبْحَنَ اللّٰهِ सच है कि

जो जज़्बे के आलम में निकले लबे मोमिन से

वोह बात हक़ीक़त में तक्दीरे इलाही है

﴿61﴾ هُزِئَتْهُ اَبِى بَرْصَةَ بْنِ اَبِى اَسَدٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ

अन्सार में कबीलए ख़ज़रज से इन का ख़ानदानी तअल्लुक है। येह दरबारे नबुव्वत में वहूय के कातिब थे और येह उन छे सहाबियों में से हैं जो अहदे नबवी में पूरे हाफ़िज़े कुरआन हो चुके थे और हुज़ूरे عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मौजूदगी में फ़त्वे भी देने लगे थे। सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ इन को सय्यिदुल कुरा (सब कारियों के सरदार) कहते

1..... الاستيعاب فى معرفة الاصحاب، باب حرف القاف، ج ۳، ص ۳۴۸ ملخصاً



थे । हुजुरे अन्वर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इन की कुन्यत अबुल मुन्जर रखी थी और हजरते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** इन को अबुतुफैल की कुन्यत से पुकारा करते थे । दरबारे नबुव्वत से सय्यिदुल अन्सार (अन्सार के सरदार) का खिताब मिला था और हजरते अमीरुल मोअमिनीन उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इन को सय्यिदुल मुस्लिमीन (मुसलमानों के सरदार) का लक़ब अता फ़रमाया था । इन के शागिर्दों की फ़ेहरिस्त बहुत तवील है ।<sup>(1)</sup>

हुजुरे अक्दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने एक दिन इन से इरशाद फ़रमाया कि ऐ उबय्य बिन का'ब **أَبُو بَالَةَ** तअ़ाला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हारे सामने सूरह **لَمُيْكُنْ** पढ़ कर तुम्हें सुनाऊं तो हजरते उबय्य बिन का'बा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** क्या खुदा ने मेरा नाम ले कर आप से फ़रमाया है ? आप ने फ़रमाया कि हां ! येह सुन कर हजरते उबय्य बिन का'ब **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** रोते हुवे येह कहने लगे **ذُكِرْتُ عِنْدَ رَبِّ الْعَالَمِينَ** (या'नी **أَبُو بَالَةَ** तअ़ाला के दरबार में मेरा ज़िक्र किया गया )<sup>(2)</sup>

(अकाल, व ५८१ व ५८२, ज १५, व २३८, बख़ारी शरीफ)

## करामात

### हजरते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** की आवाज़ सुनी

इन की एक मशहूर करामत येह है कि इन्होंने ने हजरते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** की आवाज़ सुनी, इस का वाकिअ येह है कि हजरते अनस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** रावी हैं कि हजरते उबय्य बिन का'ब **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने कहा कि मैं ज़रूर मस्जिद में दाख़िल हो कर नमाज़ पढ़ूंगा और

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل فی الصحابة، ص ५८६

②.....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، حرف الالف، الحديث: ३६७७९،

۳۶۷۸۰، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۱۶ ملقطاً

**अब्बास** तअला की ऐसी ता'रीफ करूंगा कि किसी ने भी ऐसी नहीं की होगी चुनान्चे, वोह नमाज़ के बा'द जब खुदा की हम्दो षना के लिये बैठे तो उन्होंने ने एक बुलन्द आवाज़ अपने पीछे सुनी कि कोई कहा रहा है :

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهُ وَلَكَ الْمُلْكُ كُلُّهُ وَبِيَدِكَ الْخَيْرُ كُلُّهُ وَالْيَك  
يَرْجِعُ الْاَمْرُ كُلُّهُ عَلَانِيَتِهِ وَسِرُّهُ لَكَ الْحَمْدُ اِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اَغْفِرْ لِي  
مَا مَضَىٰ مِنْ ذُنُوبِي وَاعْصِمْنِي فِيمَا بَقِيَ مِنْ عُمْرِي وَارْزُقْنِي اَعْمَالًا زَاكِيَةً  
تَرْضٰى بِهَا عَنِّي وَتُبْ عَلَيَّ .

(ऐ **अब्बास** **عَزَّوَجَلَّ** तेरे ही लिये ता'रीफ है कुल की कुल और तेरे ही लिये बादशाही है तमाम की तमाम और तेरे ही लिये भलाई है सब की सब और तेरी ही तरफ तमाम मुआमलात लौटते हैं। ज़ाहिरी भी और बातिनी भी। तेरे ही लिये ता'रीफ है, यकीनन तू हर चीज़ पर कुदरत वाला है। मेरे उन गुनाहों को बख़्श दे जो हो चुके और मेरी उम्र के बाकी हिस्से में तू मुझे अच्छे आ'माल की तौफ़ीक़ दे और तू इन आ'माल के ज़रीए मुझ से राज़ी हो जा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले।)

हज़रते उबय्य बिन का'ब **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** मस्जिद से निकल कर रहमते आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के दरबार में हाज़िर हुवे और माजरा सुनाया। आप ने फ़रमाया : तुम्हारे पीछे बुलन्द आवाज़ से दुआ पढ़ने वाले हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** थे। <sup>(1)</sup> (کتاب الذکر لابن ابی الدنیا)

**बदली का रुख़ फेर दिया**

हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** फ़रमाते हैं कि हज़रते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** एक काफ़िले के साथ मक्कए मुकर्रमा जा रहे थे और मैं और हज़रते उबय्य बिन का'ब **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** दोनों इस काफ़िले के पीछे चल रहे थे, नागहां एक बदली उठी तो हज़रते

1..... تفسیر روح المعانی للالوسی، سورة الاحزاب، تحت الاية: ٤٠، الجزء ٢٢، ص ٢٩٧

उबय्य बिन का'ब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि या **اَللّٰهُ** हम को इस बदली की अज़ियत से बचा ले और इस बदली का रुख़ फेर दे। चुनान्चे, बदली का रुख़ फिर गया और हम दोनों पर बारिश की एक बूंद भी नहीं गिरी लेकिन जब हम दोनों काफ़िले में पहुंचे तो हम ने येह देखा कि लोगों की सुवारियां और सब सामान भीगे हुवे हैं। हम को देख कर हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि क्या येह बारिश जो हम पर हुई है तुम लोगों पर नहीं हुई ? मैं ने अर्ज किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन ! हज़रते उबय्य बिन का'ब ने बदली देख कर खुदा से दुआ मांगी कि हम इस बारिश की ईज़ा रसानी से बच जाएं इस लिये हम पर बिल्कुल बारिश नहीं हुई और बदली का रुख़ फिर गया। येह सुन कर हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि तुम दोनों ने हमारे लिये क्यूं दुआ नहीं मांगी ? काश ! तुम हमारे लिये भी दुआ मांगते ताकि हम लोग भी इस बारिश की तक्लीफ़ से महफूज़ रहते। <sup>(1)</sup> (کنز العمال، ج ۱۵، ص ۲۳۲)

## बुख़ार में सदा बहार

एक दिन हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया कि बुख़ार के मरीज़ को **اَللّٰهُ** तआला बहुत ज़ियादा नेकियां अता फ़रमाता है। येह सुन कर हज़रते उबय्य बिन का'ब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने येह दुआ मांगी कि या **اَللّٰهُ** मैं तुझ से ऐसे बुख़ार की दुआ मांगता हूं जो मुझे जिहाद और बैतुल्लाह शरीफ़ के सफ़र और मस्जिद की हाज़िरी से न रोके। आप की दुआ मक्बूल हुई। चुनान्चे, आप के साहिब ज़ादगान का बयान है कि मेरे बाप हज़रते उबय्य बिन का'ब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को हर वक़्त बुख़ार रहता था

①..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، حرف الف، الحديث: ۳۶۷۷۲،

और बदन जलता रहता था मगर इस हालत में भी वोह हज़ व जिहाद के लिये सफ़र करते और मस्जिदों में भी हाज़िरी देते थे और इस क़दर जोशो ख़रोश के साथ इन कामों को करते थे कि कोई महसूस भी नहीं कर सकता था कि येह बुख़ार के मरीज़ हैं।<sup>(1)</sup>

(کنز العمال، ج ۱۵، ص ۲۳۲ مطبوعه حیدرآباد)

### ﴿62﴾ हज़रते अबुद्धरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह कबीलए अन्सार में ख़ानदाने ख़ज़रज से नसबी तअल्लुक़ रखते हैं। इन का नाम उवैमर बिन अमिर अन्सारी है। येह बहुत ही इल्मो फ़ज़्ल वाले फ़कीह और साहिबे हिकमत सहाबी हैं और जोहद व इबादत में भी येह बहुत ही बुलन्द मर्तबा हैं। हुज़ूरे अक्दस صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बा'द इन्हों ने मदीनए मुनव्वरा छोड़ कर शाम में सुकूनत इख़्तियार कर ली और सि. 32 हि. में शहर दिमश्क़ के अन्दर विसाल फ़रमाया।<sup>(2)</sup> (अकाल, ص ५९२ और غیرہ)

### कशमल

### हांडी और पियाले की तस्बीह

एक मरतबा आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी हांडी के नीचे आग़ सुलगा रहे थे और हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भी इन के पास ही बैठे हुवे थे। नागहां हांडी में से तस्बीह पढ़ने की आवाज़ बुलन्द हुई फिर खुद ब खुद वोह हांडी चूल्हे पर से गिर कर औंधी हो गई फिर खुद ब खुद ही चूल्हे पर चली गई लेकिन इस हांडी में से पकवान का कोई हिस्सा भी ज़मीन पर नहीं गिरा। हज़रते अबुद्धरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सलमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से कहा कि

①..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، حرف الف، الحديث: ۳۶۷۶،

ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۱۵

②..... الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الدال، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۴

ऐ सलमान ! येह तअज्जुब खैज और हैरत अंगेज मुआमला देखो । हज़रते सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि ऐ अबुदरदा ! अगर तुम चुप रहते तो **अब्लाह** तआला की निशानियों में से बहुत सी दूसरी बड़ी बड़ी निशानियां भी तुम देख लेते । फिर येह दोनों एक ही पियाले में खाना खाने लगे तो पियाला भी तस्बीह पढ़ने लगा और उस पियाले में जो खाना था उस खाने के दाने दाने से भी तस्बीह पढ़ने की आवाज़ सुनाई देने लगी । (حلیۃ الاولیاء، ج ۱، ص ۲۲۴ و ۲۸۹)

अक़दे मुवाख़ात में हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते अबुदरदा और हज़रते सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** को एक दूसरे का भाई बना दिया था ।<sup>(1)</sup>

### ﴿63﴾ हज़रते अम्र बिन अबशा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

इन की कुन्यत अबू नजीह है और येह कबीलए बनू सुलैम में से थे । इस्लाम के आगाज़ ही में येह दौलते ईमान से माला माल हो गए थे । मुसलमान होने के बा'द हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इन से फ़रमाया कि तुम अपनी क़ौम में जा कर रहो और जब तुम येह सुन लो कि मैं मक्का से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चला गया हूं तो उस वक़्त तुम मेरे पास चले आना । चुनान्वे, येह अपनी क़ौम में मुक़ीम हो गए यहां तक कि जंगे खैबर के बा'द येह मदीनए मुनव्वरा आए और इस मुक़द्दस शहर में क़ियाम पज़ीर हो गए । इन के शागिर्दों में बड़े बड़े बुलन्द पाया मुहद्दिषीन हैं । हज़रते अली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के दौरे ख़िलाफ़त में इन्होंने ने दुन्या से रिहलत फ़रमाई ।<sup>(2)</sup> (अक़ाल, ص १०८)

①.....حلیۃ الاولیاء، ابوالدرداء رضی اللہ عنہ، الحدیث: ۷۵۳، ۷۵۴، ج ۱، ص ۲۸۵

و اسد الغابة، عویمر بن عامر، ج ۴، ص ۳۴۰

②.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ۶۰۷

## करामत

## अब्र ने इन पर साया किया

हज़रते का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के गुलाम का बयान है कि एक रोज़ सफ़र में हज़रते अम्र बिन अबसा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जानवरों को चराने के लिये मैदान में चले गए। मैं दोपहर की धूम और गर्मी में इन्हें देखने के लिये जानवरों की चरागाह में गया तो क्या देखता हूँ कि हज़रते अम्र बिन अबसा एक जगह मैदान में सो रहे हैं और एक बादल का टुकड़ा इन पर साया किये हुवे हैं। मैं ने इन्हें बेदार किया तो इन्होंने ने फ़रमाया कि ख़बरदार ! ख़बरदार ! जो कुछ तुम ने देखा है हरगिज़ हरगिज़ किसी से मत कहना वरना तुम्हारी ख़ैरियत नहीं रहेगी। हज़रते का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के गुलाम कहते थे कि खुदा की क़सम ! जब तक उन की वफ़ात न हो गई मैं ने किसी से उन की करामत का तज़क़िरा नहीं किया।<sup>(1)</sup> (अصاب, ज ३, पृ १)

﴿64﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन क़िर्त رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन का ख़ानदानी तअल्लुक़ बनी अज़्द से है इस लिये अज़दी कहलाते हैं। ज़मानए जाहिलिय्यत में इन का नाम “शैतान” था। मुसलमान हो जाने के बा'द नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन का नाम अब्दुल्लाह रख दिया। येह जंगे यरमूक और फ़त्हे दिमशक़ की लड़ाइयों में बड़ी दिलेरी और जांबाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। हज़रते अबू उबैदा बिन अल ज़र्राह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन को दो मरतबा “हम्स” का हाकिम बना दिया। फिर हज़रते अमीरे मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की हुकूमत में भी येह “हम्स” के हाकिम

1.....الاصابة في تمييز الصحابة، حرف العين المهملة، عمرو بن عبسة رضى الله عنه،



बनाए गए। इन का शुमार मुहद्दिषीन की फ़ेहरिस्त में होता है और मुहद्दिषीन की एक जमाअत ने इन के हल्क़ए दर्स में हदीषों का समाअ किया है। सि. 56 हि. में रूम की ज़मीन में कुफ़फ़ार से लड़ते हुवे शहादत से सरफ़राज़ हो गए।<sup>(1)</sup> (असद الغابة، ج ۳، ص ۲۲۳، والكمال، ص ۶۰۵)

## करामत

### मुस्तजाबुद्दा'वात

इन की एक करामत येह है कि इन की दुआएं बहुत ज़ियादा और बहुद जल्द क़बूल हुवा करती थीं और इन का बयान है कि एक मरतबा मैं ब हालते सफ़र हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رضی اللہ تعالیٰ عنہ के साथ था मगर नागहां मेरा ऊंट इस क़दर थक गया कि चलने के क़ाबिल ही न रहा चुनान्चे, मैं ने इरादा कर लिया कि हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رضی اللہ تعالیٰ عنہ का साथ छोड़ दूं लेकिन फिर मैं ने **अबूबाह** तअ़ाला से दुआ मांगी तो बिल्कुल नागहां मेरा ऊंट चाको चौबन्द हो कर तेज़ी के साथ चलने लगा। (طبرانی)

### ﴿65﴾ हज़रते साइब बिन अक़रअ رضی اللہ تعالیٰ عنہ

येह क़बीलए बनू षक़ीफ़ की होनहार और नामवर शख़्सियत हैं। इस लिये “षक़फ़ी” कहलाते हैं। इन की वालिदा का नाम “मलीका” था। इन की वालिदा इन को बचपन ही में अपने साथ ले कर बारगाहे नबुव्वत में हाज़िर हुई तो नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ने इन के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और इन के लिये दुआ फ़रमाई। येह बड़े मुजाहिद थे। निहावन्द की फ़त्ह में येह हज़रते नो'मान बिन मक़रन رضی اللہ تعالیٰ عنہ के झण्डे के नीचे

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ۶۰۵

واسد الغابة، عبد اللہ بن قرط رضی اللہ عنہ، ج ۳، ص ۳۷۲

खूब जम कर कुफ़ार से लड़े। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رضي الله تعالى عنه ने इन को “मदाइन” का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था। “अस्फ़हान” में इन का इन्तिक़ाल हुवा।<sup>(1)</sup> (असद الغाबیه، ج ۲، ص ۲۳۹)

## कशमल

### तस्वीर ने ख़ज़ाना बताया

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رضي الله تعالى عنه ने इन को “मदाइन” का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया। येह एक दिन “किसरा” के महल में बैठे हुवे थे तो देखा कि महल में एक ऐसी तस्वीर है जो उंगली से एक मक़ाम की तरफ़ इशारा कर रही है। चुनान्वे, आप ने उस मक़ाम को खोदने का हुक्म दिया तो वहां से एक बहुत बड़ा ख़ज़ाना निकला जो वहां मदफ़ून था। आप ने मदीनए मुनव्वरा बारगाहे ख़िलाफ़त में इस की इत्तिलाअ दे कर येह दरयाफ़्त फ़रमाया कि इस ख़ज़ाने को मुसलमानों ने जंग कर के हासिल नहीं किया है बल्कि मैं ने इस को तन्हा बर आमद किया है तो मैं इस रक़म को क्या करूं ? हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उमर رضي الله تعالى عنه ने येह हुक्म सादिर फ़रमाया कि चूंकि तुम मुसलमानों के अमीर हो इस लिये इस रक़म को मुसलमानों पर तक्सीम कर दो।<sup>(2)</sup>

(رواه الخطيب كذا في الكنز، ج ۳، ص ۳۰۵)

### ﴿66﴾ हज़रते अरबाज़ बिन शारियह رضي الله تعالى عنه

इन की कुन्यत अबू नजीह है और इन का ख़ानदानी तअल्लुक बनी सुलैम से है। मुफ़िलस मुहाजिर थे इस लिये मस्जिदे नबवी علي صاحبها الصلوة والسلام में अस्हाबे सुफ़्फ़ा के साथ रहते। आख़िर में मुल्के

①.....اسد الغابة، السائب بن الاقرع رضى الله عنه، ج ۲، ص ۳۷۲

②.....کنز العمال، کتاب الزکاة، من قسم الافعال، الحديث: ۱۶۸۹۳، ج ۳، الجزء ۶، ص ۲۳۳

शाम चले गए और वहीं सुकूनत इख्तियार की। हज़रते अबू उमामा और ताबेईन की एक जमाअत ने इन से हदीषों की रिवायत की है। सि. 75 हि. में शाम में इन का विसाल हुआ।<sup>(1)</sup> (असद الغابة، ج ३، اکمال، ص १०१)

### करामत

### फ़िरिश्ते से मुलाकात और गुफ्तगू

एक दिन येह दिमश्क की जामेअ मस्जिद में इस तरह दुआ मांग रहे थे कि या **اَللّٰهُمَّ** अब मेरी उम्र बहुत ज़ियादा हो गई है और मेरी हड्डियां बहुत ज़ियादा कमज़ोर हो चुकी हैं लिहाज़ा अब तू मुझे वफ़ात दे दे। अचानक इन के पीछे से एक सब्ज़ पोश नौजवान जो बहुत ही ख़ूब सूरत था बोल उठा : ऐ शख्स ! येह कैसी दुआ तू मांग रहा है ? तुम्हें इस तरह दुआ करनी चाहिये कि या **اَللّٰهُمَّ** मेरे अमल को अच्छा कर दे और मुझ को मेरी अजल तक पहुंचा दे। येह नौजवान की डांट सुन कर चोंके और पूछा कि **اَللّٰهُمَّ** तअ़ला आप पर रहूम फ़रमाए, आप कौन हैं ? नौजवान ने कहा : मैं “रीबाईल” फ़िरिश्ता हूं और खुदा तअ़ला की तरफ़ से मेरी येह ज़िम्मेदारी (ड्यूटी) है कि मैं मोअमिनीन के दिलों से रन्जो ग़म को दूर करता हूं।<sup>(2)</sup> (قال المشي، ج १०، ص १८२)

### तबशेश

फ़िरिश्ते का दीदार करना और उस से आमने सामने गुफ्तगू करना बिलाशुबा येह एक नादिरुल वुजूद करामत है। जो शरफ़े सहाबिय्यत के तुफ़ैल में सहाबए किराम **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ** को मिलती रही है। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص १० १

واسد الغابة، عرباض بن سارية السلمی، ج ४، ص २२

②.....مجمع الزوائد، کتاب الادعية، باب ادعية الصحابة رضى الله عنهم، الحديث:

## ﴿68﴾ हज़रते ख़ुब्बाब बिन अल अरत رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन की कुन्यत अबू अब्दुल्लाह है। येह गुलाम थे, इन को क़बीलए बनी तमीम की एक औरत ने ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था इस लिये येह तमीमी कहलाते हैं। इब्तिदा ही में इन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया था और कुफ़फ़ारे मक्का ने हज़रते अम्मार व बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की तरह इन को भी तरह तरह के अज़ाबों में मुब्तला किया यहां तक कि इन को कोइलों के ऊपर लिटाते थे और पानी में इस क़दर ग़ौता दिलाते थे कि इन का दम घुटने लगता और येह बेहोश हो जाते मगर सब्रो इस्तिक्ामत का पहाड़ बन कर येह सारी मुसीबतों और तकलीफ़ों को झेलते रहे और इन के इस्लाम में बाल बराबर भी तज़बजुब या तज़लजुल पैदा नहीं हुवा।

हुजूरे अक्दस صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द अज़ विसाल मदीनए मुनव्वरा से इन का दिल उठ गया और येह कूफ़ा में जा कर मुक़ीम हो गए और वहीं सि. 37 हि. में 73 बरस की उम्र में इन्तिकाल फ़रमा गए।<sup>(1)</sup> (अकाल, ५, ५९२)

## क़शमब

## ख़ुश्क थन दूध से भर गया

इन की एक करामत येह है कि येह एक मरतबा जिहाद के लिये निकले तो एक ऐसे मक़ाम पर पहुंच गए जहां पानी का नामो निशान भी नहीं था। जब येह और इन के साथी प्यास की शिद्दत से माहिये बे आब की तरह तड़पने लगे और बिल्कुल ही निढाल और बे ताब हो गए तो आप ने अपने एक साथी की ऊंटनी को बिठाया और बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर उस के थन को हाथ

1.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الخاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۲

واسد الغابة، خباب بن الارت، ج ۲، ص ۱۴۱ ملقطاً

लगाया तो एक दम उस का सूखा हुआ थन इस क़दर दूध से भर गया कि फूल कर मशक के बराबर हो गया। उस ऊंटनी का दूध दोह कर सब साथियों ने शिकम सैर हो कर पी लिया और सब की जान बच गई।<sup>(1)</sup>

(قال المشي، ج ١، ص ٢١٠)

﴿68﴾ **हज़रते मिक्दाद बिन अल अस्वद कन्दी** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन के वालिद का नाम अम्र बिन षा'लबा था। अस्वद के बेटे इस लिये कहलाने लगे कि अस्वद बिन अब्दे यगूष ज़ोहरी ने इन को अपना मुतबन्नी बना लिया था। इस लिये उस की तरफ़ मन्सूब हो गए और चूँकि कबीलए बनी कन्दा से इन्होंने ने मुहालिफ़ा कर लिया था और उन के हलीफ़ बन गए थे इस लिये इस निस्बत से अपने को कन्दी कहने लगे। इन की कुन्यत “अबू मा'बद” या “अबुल अस्वद” है और येह क़दीमुल इस्लाम हैं। मक्काए मुअज़्ज़मा से हिजरत कर के हबशा चले गए थे। फिर हबशा से मक्काए मुकर्रमा वापस चले आए मगर मदीनए मुनव्वरा को हिजरत नहीं कर सके क्योंकि कुफ़्फ़ार ने हर तरफ़ से नाकाबन्दी कर के मदीनए मुनव्वरा का रास्ता बन्द कर दिया था यहां तक कि जब हज़रते उबैदा बिन अल हारिष رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ एक छोटा सा लश्कर ले कर मदीनए मुनव्वरा से इकरिमा बिन अबू जहल के लश्कर से लड़ने के लिये आए तो येह और हज़रते उतबा बिन ग़वान (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) काफ़िरों के लश्कर में शामिल हो गए और भाग कर मुसलमानों से मिल गए और इस तरह मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर के पहुंच गए। येह वोही हज़रते “मिक्दाद बिन अल अस्वद” हैं कि जब रसूले अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जंगे बद्र के मौक़अ पर सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ से मशवरा फ़रमाया तो इन्होंने ने ब आवाज़े बुलन्द येह कहा कि या रसूलल्लाह (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) हम बनी इस्राईल

1.....مجمع الزوائد، كتاب المغازی والسير، باب فی سرایاه، الحديث: ١٠٣٥٩، ج ١، ص ٣١١

नहीं हैं जिन्होंने ने अपने नबी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से जंग के वक्त यह कहा था कि “आप और आप का खुदा दोनों जा कर जंग करें हम तो अपनी जगह बैठे रहेंगे।” बल्कि हम तो आप के वोह जां निषार हैं कि अगर खुदा की क़सम ! हम को आप “बरकुल गुम्माद” तक ले जाएंगे तो हम आप के साथ चलेंगे और हम आप के आगे, आप के पीछे, आप के दाएं, आप के बाएं से उस वक्त तक लड़ते रहेंगे जब तक कि हमारे बदन में खून का आखिरी क़तरा और ज़िन्दगी की आखिरी सांस बाकी है !

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि मक्काए मुकर्रमा में सात अश्खास ऐसे थे जिन्होंने ने मक्काए मुकर्रमा में कुफ़्फ़ार के सामने सब से पहले अलल ए’लान अपने इस्लाम का ए’लान किया इन में से एक “हज़रते मिक्दाद बिन अल अस्वद” رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ भी हैं। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तअ़ाला ने हर नबी को सात जां निषार रुफ़का दिये हैं लेकिन मुज़ा को हज़रते हक़ جَلِيلٌ ने चौदह रुफ़का की जमाअत अता फ़रमाई है जिन की फ़ेहरिस्त येह है :

- |              |                         |   |
|--------------|-------------------------|---|
| ﴿1﴾ अबू बक्र | ﴿2﴾ उमर                 | ﴿3﴾ अली   |
| ﴿4﴾ हम्ज़ा   | ﴿5﴾ जा’फ़र              | ﴿6﴾ हसन   |
| ﴿7﴾ हुसैन    | ﴿8﴾ अब्दुल्लाह बिन मसऊद |   |
| ﴿9﴾ सलमान    | ﴿10﴾ अम्मार             | ﴿11﴾ हुजैफ़ा  |
| ﴿12﴾ अबू ज़र | ﴿13﴾ मिक्दाद            | ﴿14﴾ बिलाल <sup>(1)</sup> <small>رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ</small> |

अहादीषे पाक में इन के फ़ज़ाइल व मनाकिब बहुत क़पीर हैं। येह तमाम इस्लामी लड़ाइयों में जिहाद करते रहे और फ़त्हे मिस्र की मा’रिका आराई में भी इन्होंने ने डट कर कुफ़्फ़ार से जंग की।

①..... سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد... الخ، الحدیث: ۳۸۱۰،



सि. 33 हि. में अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की खिलाफ़त के दौरान मदीनए मुनव्वरा से तीन मील दूर “मक़ामे जरफ़” में सत्तर बरस की उम्र पा कर विसाल फ़रमाया और लोग फ़र्ते अक़ीदत से अपने कन्धों पर इन के जनाज़ए मुबारका को “जरफ़” से उठा कर मदीनए मुनव्वरा लाए और जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न किया।<sup>(1)</sup> (अक़ाल, ज १२, वासदुल ग़ाबे, ज ३, स ४१०)

### कशमल

### चूहे ने सत्तरह अशरफ़ियां नज़्ज़ कीं

ज़बाआ बित्ते जुबैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا कहती हैं कि येह इस क़दर तंगदस्ती में मुब्तला थे कि दरख़्तों के पत्ते खाया करते थे। एक दिन एक वीरान जगह में रफ़ए हाजत के लिये बैठे तो अचानक एक चूहा अपने बिल में से एक अशरफ़ी मुंह में ले कर निकला और इन के सामने रख कर चला गया फिर वोह इसी तरह बराबर एक एक अशरफ़ी लाता रहा यहां तक कि सत्तरह अशरफ़ियां लाया।

येह सब अशफ़ियों को ले कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और पूरा माजरा अर्ज़ किया तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिये इस माल में कुछु सदक़ा करना ज़रूरी नहीं है। **अल्लाह** तआला तुम्हें इस माल में बरकत अता फ़रमाए। हज़रते ज़बाआ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का बयान है कि इन में से आख़िरी अशरफ़ी अभी ख़त्म नहीं हुई थी कि मैं ने चांदी के ढेर हज़रते मिक्दाद الْبُوَيْعِي فِي الدَّلَائِل, ज २, स ३९१<sup>(2)</sup> के घर में देख लिये। رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الميم، فصل فی الصحابة، ص ११६

वासदुल ग़ाबे, المقدद بن عمرو رضی اللہ عنہ، ج ५، ص २६५-२६७

②.....دلائل النبوة لابی نعیم، دعاؤہ لمقداد بالبركة... الخ، لاصدقة عليك... الخ،

الحديث: ۳۷۶، ج ۱، ص ۴۶۵

## तबसेरा

इस किस्म का वाकिआ दूसरे बुजुर्गों के लिये भी हुवा है। चुनान्चे, हज़रते अबू बक्र बिन अल खाज़िबा मुहद्दिष भी रात में कुछ लिख रहे थे तो चूहे का एक जोड़ा उछलता कूदता इन के सामने आया, इन्होंने एक को प्याले से ढांप दिया। इस के बा'द दूसरे चूहे ने बार बार एक एक अशरफी ला कर इन के सामने रखना शुरू किया यहां तक कि आखिर में एक चमड़े की थेली उठा लाया जिस में एक अशरफी थी। इस से इन्होंने समझ लिया कि चूहे के पास अब कोई अशरफी बाकी नहीं रह गई है फिर इन्होंने ने प्याला उठा लिया और चूहा निकल कर अपने जोड़े के साथ उछलता कूदता भाग निकला और इन अशरफियों की बदौलत हज़रते अबू बक्र बिन अल खाज़िबा की तंगदस्ती का काल कट गया और वोह खुशहाल हो गए।<sup>(1)</sup> (فتح اليمين وغيره)

इस किस्म के वाकिआत को रज़ाके मुतलक के फ़ज़ल और इन बुजुर्गों की करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है ?

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ  
الْمَتِينِ<sup>(2)</sup>

या'नी **अल्लाह** तअला बहुत बड़ा रोज़ी रसां और बहुत बड़ी कुदरत और ताक़त का मालिक है।

①..... نفحة اليمين، الباب الاول في الحكايات، ص ٦

②..... پ ٢٧، الذريت: ٥٨

इन बुजुर्गों ने शरफे सहाबियत से सरफराज हो कर खुदा के महबूब की जिस ज़ब्रए जां निषारी के साथ खिदमत गुज़ारी की और इस के सिले में हक़ جَلّ جَلالَه ने दुन्या ही में इन शम्प् नबुव्वत के परवानों को ऐसी ऐसी करामतें अता फ़रमाई हैं जो यकीनन महिय्यरुल उकूल हैं और अभी आखिरत में वोह रहीमो करीम मौला अपने फज़्लो करम से इन अशिकाने रसूल को जो अज़े अज़ीम अता फ़रमाने वाला है इस को तो कोई सोच भी नहीं सकता कि उस की कमिय्यत व कैफ़िय्यत की अज़मत का क्या आलम होगा ? हदीष शरीफ़ की रोशनी में बस इतना ही कहा जा सकता है

(1) لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَمَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ

(या'नी उन ने'मतों को न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना न किसी आदमी के दिल पर कभी इस का खयाल गुज़रा ।)

﴿69﴾ **हज़रते उर्वह बिन अबिल जा'द बारिकी** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन के मोरिषे आ'ला का नाम “बारिक’ था । इस निस्बत से इन को “बारिकी” कहते हैं । इन को अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में कूफ़ा का काज़ी मुक़र्रर फ़रमा दिया था । येह बरसों कूफ़ा ही में रहे । इस लिये कूफ़ा के मुहद्विषीन में शुमार होते हैं और इन के शागिर्दों में ज़ियादा तर कूफ़ा ही के लोग हैं । हज़रते इमाम शा'बी इन के शागिर्दों में बहुत ही मशहूर व मुम्ताज़ और निहायत बुलन्द पाया और नामवर मुहद्विष हैं । (2)

(अकाल, स २०६ और २०७)

①.....مشكاة المصابيح، كتاب احوال القيامة... الخ، باب صفة الجنة واهلها، الحديث: ٥٦١٢،

ج २، ص ३२९

②.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العين، فصل فی الصحابة، ص ६०६

واسد الغابة، عروة بن الجعد، ج ४، ص ३०-३१ ملقطاً

## कशमल

## मिट्टी भी खरीदते तो नफ़अ उठाते

इन को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक दीनार दे कर हुक्म फ़रमाया कि वोह एक बकरी खरीद लाएं। इन्होंने बाज़ार जा कर एक दीनार में दो बकरियां खरीदीं। फिर रास्ते में किसी आदमी के हाथ एक बकरी एक दीनार में फ़रोख़्त कर के दरबारे रिसालत में हाज़िर हुवे और एक बकरी और एक दीनार ख़िदमते अक्दस में पेश कर दी और बकरी की खरीदारी का पूरा वाक़िअ भी सुना दिया। हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खुश हो कर इन की खरीदो फ़रोख़्त में बरकत की दुआ फ़रमा दी और इस दुआए नबवी की बरकत का येह अषर हुवा कि :

فَكَانَ لَوْ اشْتَرَى تَرَابًا لَرَبِحَ فِيهِ (या'नी अगर वोह मिट्टी भी खरीदते तो उस में भी उन को नफ़अ ही नफ़अ होता।) येह इन की करामत थी। <sup>(1)</sup>

(مشکوّة، ج ۱ ص ۲۵۴، باب الشركة والوكالة، بحواله بخاری)

﴿70﴾ हज़रते अबू तल्हा अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह कबीलए अन्सार के ख़ानदाने बनू नज्जार में से थे। हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदा हज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने बेवा हो जाने के बा'द इन से निकाह कर लिया था। येह बहुत ही मशहूर तीर अन्दाज़ और निशाना बाज़ थे। इन के बारे में हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया था कि लश्कर में अबू तल्हा की एक ललकार एक हज़ार सुवारों से बढ़ कर रो'बदार है। येह हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के हिजरात फ़रमाने से क़ब्ल ही हज़ के मौक़अ पर मिना की घाटी में अपने

1.....مشكاة المصابيح، كتاب البيوع، باب الشركة والوكالة، الحديث: ۲۹۳۲، ج ۱، ص ۵۴۱

# कशमल

**लाश ख़राब नहीं हुई!**

हज़रते अनस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** रावी हैं कि एक दिन बुढ़ापे में हज़रते अबू तल्हा अन्सारी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** सूरए बराअत की तिलावत कर रहे थे, जब इस आयत पर पहुंचे **(2)** **اِنْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا** तो आप ने फ़रमाया कि ऐ मेरे बच्चो ! मुझे तुम लोग जिहाद का सामान दो क्योंकि मेरा रब जवानी और बुढ़ापे दोनों हालतों में मुझे जिहाद का हुक्म फ़रमाता है। इन के बेटों ने कहा कि आप ने हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** और हज़रते अबू बक्र सिदीक व हज़रते उमर फ़ारूक **(رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا)** के दौर में तमाम जिहादों में शिर्कत की सआदत हासिल कर ली है अब आप बुढ़े हो चुके हैं इस लिये अब जिहाद में न जाइये हम लोग आप की तरफ़ से जिहाद कर रहे हैं और करते भी रहेंगे। मगर येह किसी तरह भी घर बैठने पर राजी नहीं हूवे और जिहाद का सामान

١.....الاكمال فى اسماء الرجال، حرف الطاء، فصل فى الصحابة، ص ٦٠١  
وكنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة وفضلهم رضى الله عنهم، الحديث:

٣٣٣٧٥، ٣٣٣٧٦، ج٦، الجزء ١١، ص ٣١٩

जम्अ कर के जिहाद में जाने वाली एक कश्ती पर सुवार हो कर जिहाद के लिये रवाना हो गए। खुदा की शान कि इस कश्ती ही पर इन की वफ़ात हो गई। इत्तिफ़ाक़ से इन की क़ब्र के लिये समन्दर में कोई जज़ीरा भी नहीं मिला, सात दिनों तक कश्ती में आप की लाश मुबारक रखी रही, सातवें दिन समन्दर में एक जज़ीरा मिला तो आप उस जज़ीरे में मदफून हुवे। सात दिन गुज़रने के बा वुजूद आप के जिस्मे अतहर पर किसी किस्म का कोई तग़य्युर (बदलाव) रूनुमा नहीं हुवा था।<sup>(1)</sup> (استيعاب لابن عبد البر، ج ۱، ص ۵۵۰)

## तबसेरा

**अल्लाहु अकबर !** येह जज़्बए ईमानी और जोशे जिहाद, ऐ आस्मान ! बता ! ऐ सूरज ! बोल ! क्या तुम ने ज़मीन के बेशुमार चक्कर काटने के बा वुजूद ज़मीन पर इस की कोई मिषाल देखी है ? येह हैं मेरे प्यारे रसूले अकरम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के प्यारे सहाबी के लाषानी शाहकार।

## ﴿71﴾ हज़रते अब्दुल्लाह बिन जहश **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**

कुरैश के एक ख़ानदान “बनू असद” से इन का नसबी तअल्लुक है। येह हज़रते उम्मुल मोअमिनीन ज़ैनब बिन्ते जहश **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** के भाई हैं। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में ईमान की दौलत से मालामाल हो गए थे और पहले हबशा फिर मदीनए मुनव्वरा की दोनों हिजरतों के शरफ़ से सरफ़राज़ हो कर “साहिबुल हिजरतैन” का लक़ब पाया। जंगे बद्र के मा'रिके में इन्तिहाई जांबाज़ी और सरफ़रोशी के जज़्बे से जंग की और सि. 3 हि. को जंगे उहुद में कुफ़ार से लड़ते हुवे जामे शहादत नौश फ़रमाया।

1..... الاستيعاب في معرفة الاصحاب، حرف الزاى، زيد بن سهل رضى الله عنه، ج ۲، ص ۱۲۳



इन की एक करामत येह भी है कि येह बहुत ही “मुस्तजाबुद्दा’वात” थे। या’नी इन की दुआए बहुत ज़ियादा और बहुत ही जल्द मक्बूल हुवा करती थीं।<sup>(1)</sup> (अकाल, ص १०३ و اسد الغابة، ج ۱ ص ۱۳۱)

## करामत

### अनोखी शहादत

आप ने जंगे उहुद के एक दिन क़ब्ल येह दुआ मांगी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे तेरी क़सम कि जब कुफ़ारे मक्का से लड़ने के लिये कल मैदाने जंग में निकलूं तो मेरे मुक़ाबले में ऐसा काफ़िर आए जो सख़्त हम्ला आवर और इन्तिहाई जंगजू हो और मैं उस से लड़ते हुवे बराबर ज़ख़्म खाता रहूं यहां तक कि वोह मुझे क़त्ल कर दे और कुफ़ार मेरा शिकम फाड़ डालें और मेरी नाक कान को काट कर मेरी सूरत बिगाड़ दें और मैं जब इसी हालत में क़ियामत के दिन तेरे हुज़ूर खड़ा किया जाऊं तो उस वक़्त तू मुझ से येह दरयाफ़्त फ़रमाए कि ऐ अब्दुल्लाह ! किस वजह से और किस ने तेरी नाक और कान को काट डाला है ? तो मैं येह जवाब अर्ज़ करूं कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे और तेरे रसूल के दुश्मनों ने तेरे और तेरे रसूल के बारे में मुझे क़त्ल कर के मेरी नाक और कान को काट कर मेरी शक्लो सूरत बिगाड़ दी है। मेरा येह जवाब सुन कर फिर ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू सिर्फ़ इतना फ़रमा दे कि ऐ अब्दुल्लाह ! तू सच कहता है।

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابة، ص ۶۰۳

و اسد الغابة، عبد الله بن جحش، ج ۳، ص ۱۹۵

आप की येह दुआ हर्फ ब हर्फ कबूल हुई चुनान्चे, हजरते सा'द बिन अबी वक्कास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का बयान है कि मैं ने ही इन की दुआ पर आमीन कही थी और मैं ने अपनी आंखों से देखा कि जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार ने इन को शहीद कर के इन के शिकम को फाड़ डाला और इन की नाक, कान और दूसरे आ'जा को काट कर एक धागे में पिरो दिया था और इसी हालत में आप हजरते हम्ज़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के साथ एक ही कब्र में दफ़न किये गए ।<sup>(1)</sup>

(کنز العمال، ج ۱۶، ص ۹۸ و اسد الغابہ، ج ۳، ص ۱۳۱ وغیرہ)

## तबसेरा

**अल्लाहु अक्बर !** किस क़दर इन शम्सु नबुव्वत के परवानों को शौके शहादत था ? इस ज़माने में इसे कोई सोच भी नहीं सकता क्यूंकि ईमानी हज़रत की बेहद कमी हो गई है वरना हकीकत येह है :

**शहादत है मतलूब व मक्सूदे मोमिन**

**न माले ग़नीमत न किशवर कुशाई**

﴿72﴾ **हज़रते बरा बिन मालिक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ****

येह बहुत ही नामवर सहाबी और हुजूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के खादिमे खास हज़रते अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के भाई हैं । बहुत ही बहादुर और निहायत ही जंगजू और सरफ़रोश मुजाहिद हैं । मुसैलिमतुल कज़़ाब से जंग के वक़्त जिस बाग़ में येह झूटा मुद्दइये नबुव्वत छुप कर अपनी फ़ौजों की कमान कर रहा था, इस बाग़ का फाटक किसी तरह फ़ट्हा नहीं होता था और वहां घमसान की जंग हो रही थी तो आप ने मुसलमान मुजाहिदीन से फ़रमाया कि तुम लोग मुझे उठा कर बाग़ की दीवार के उस पार फैंक दो मैं अन्दर जा कर फाटक खोल दूंगा । चुनान्चे, मुसलमान मुजाहिदों ने इन को उठा कर

1..... اسد الغابة، عبد الله بن جحش، ج ۳، ص ۱۹۵-۱۹۶ ملقطاً

दीवार के उस पार डाल दिया और इन्होंने ने बिल्कुल तन्हा दुश्मनों से लड़ते हुवे बाग़ का फाटक खोल दिया और इस्लामी फ़ौज बाग़ में दाखिल हो गई। यह वाकिआ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رضي الله تعالى عنه की खिलाफ़त के दौरान हुवा मगर बाग़ का फाटक खोलने की ज़बरदस्त लड़ाई में हज़रते बरा बिन मालिक رضي الله تعالى عنه के जिस्म पर तीर व तल्वार और नेजों के ज़ख़्म जब गिने गए तो अस्सी से कुछ ज़ाइद ज़ख़्म थे। चुनान्वे, इन के इलाज के लिये अमीरे लश्कर हज़रते ख़ालिद बिन अल वलीद رضي الله تعالى عنه को इस जगह एक माह तक रुकना पड़ा।

इन की ऐसी दीलेराना जां बाज़ियों की बिना पर हज़रते उमर رضي الله تعالى عنه अपनी खिलाफ़त के ज़माने में फ़ौजों को सख़्त ताकीद फ़रमाते रहते थे कि “ख़बरदार ! बरा बिन मालिक رضي الله تعالى عنه को कभी फ़ौज का सिपह सालार न बनाया जाए वरना वोह सारी कौम को हलाकत में डाल देंगे क्यूंकि वोह अन्जाम से बेपरवाह हो कर दुश्मनों की सफ़ों में घुस जाते हैं।” इन के बारे में हुजुरे अकरम صلی الله تعالى علیه و آله وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि “बहुत से ऐसे लोग हैं जिन के बाल परागन्दा और वोह गर्दों गुबार में अटे हुवे मैले कुचेले रहते हैं और लोग उन की परवा भी नहीं करते मगर येह लोग **अल्लाह** तअ़ाला के दरबार में इस क़दर महबूब व मक़बूल होते हैं कि अगर येह लोग किसी बात की क़सम खा लें तो **अल्लाह** तअ़ाला इन की क़सम को पूरी फ़रमा देगा और बरा बिन मालिक इन्हीं लोगों में से हैं।” येह बहुत ही खुश आवाज़ भी थे और बेहतरीन हुदीख़्वाह थे जिन के गीतों के नग़मों पर ऊंट मस्त हो कर चला करते थे और शुतर सुवार भी कैफ़ो निशात में रहा करते थे। इन की दिलेरी और जवांमर्दी के सिलसिले में येह रिवायत बहुत ही मशहूर है कि इराक़ की लड़ाइयों में येह अपने भाई हज़रते अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه के साथ दुश्मनों के एक क़ल्ए का मुहासरा

किये हुवे थे जो मौजए “हरीक” में था। कुफ़ार गर्म गर्म जन्जीरों में लोहे के आंकड़े लगा कर क़ल्ए की दीवार से मुसलमानों पर डालते थे और इन को आंकड़ों में फंसा कर अपनी तरफ़ खींच लेते थे। उन काफ़ि़रों ने हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को भी आंकड़ों में फंसा लिया और ऊपर खींचने लगे जब हज़रते बरा बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह मन्ज़र देखा तो तड़प कर उछले और क़ल्ए की दीवार पर चढ़ कर जलती हुई जन्जीर को पकड़ा और फिर उस रस्सी को काट दिया जिस में जन्जीर बन्धी हुई थी इस तरह हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की जान बच गई मगर हज़रते बरा बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने गर्म जन्जीर को जो हाथ से पकड़ा तो इन की हथेलियों का पूरा गोश्त जल गया और सफ़ेद सफ़ेद हड्डियां नज़र आ रही थी। सि. 20 हि. जंगे तस्तर में एक सो काफ़ि़रों को अपनी तल्वार से क़त्ल कर के खुद भी उरूसे शहादत से हमकिनार हो गए।<sup>(1)</sup> (اسد الغابة، ج ۱، ص ۷۳-۷۴ و اصابع، ج ۱، ص ۱۴۳)

### कशमल

#### फ़तह व शहादत एक साथ

इन की एक खास करामत दुआओं की मक्बूलियत है। मन्कूल है कि “जंगे तस्तर” में जब तवील जंग के बा वुजूद मुसलमानों को फ़तह नसीब नहीं हुई तो मुजाहिदीने इस्लाम ने जम्अ हो कर इन से गुज़ारिश की, कि आप अपने रब की क़सम दे कर फ़तह की दुआ मांगिये। उस वक़्त आप ने इस तरह दुआ मांगी कि या **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** मैं तुझ को तेरी ही क़सम दे कर दुआ करता हूं कि तू कुफ़ार के बाजू हम लोगों के हाथों में दे दे और मुझे अपने

①..... سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب البراء بن مالک، الحديث: ۳۸۸۰،

ج ۵، ص ۴۵۹ و اسد الغابة، البراء بن مالک، ج ۱، ص ۲۵۹-۲۶۰

و الاصابة في تمييز الصحابة، حرف الباء، البراء بن مالک بن النضر الانصاری، ج ۱،

नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास पहुंचा दे। फौरन ही आप की दुआ मक्बूल हो गई और इस्लामी लश्कर फ़तहयाब हो गया और कुफ़रार मुसलमानों के हाथों में गिरिफ़्तार हो गए और आप इसी लड़ाई में शहादत से सरफ़राज़ हो कर हुज़ूर रहमते आलम (اصابه، ج ۱، ص ۱۳۶) के दरबार में बारयाब हो गए।<sup>(1)</sup>

### ﴿73﴾ हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

यमन के कबीले दौस से इन का खानदानी तअल्लुक है। ज़मानए जाहिलिय्यत में इन का नाम “अब्दुश्शम्स” था मगर जब येह सि. 7 हि. में जंगे खैबर के बा’द दामने इस्लाम में आ गए तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन का नाम अब्दुल्लाह या अब्दुर्रहमान रख दिया। एक दिन हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इन की आस्तीन में एक बिल्ली देखी तो आप ने इन को या अबा हुरैरा (ऐ बिल्ली के बाप!) कह कर पुकारा। उसी दिन से इन का येह लक़ब इस क़दर मशहूर हो गया कि लोग इन का अस्ली नाम ही भूल गए। येह बहुत ही इबादत गुज़ार, इन्तिहाई मुत्तकी और परहेज़गार सहाबी हैं।

हज़रते अबुद्दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि येह रोज़ाना एक हज़ार रकअत नमाज़ नफ़ल पढ़ा करते थे। आठ सो सहाबा और ताबेईन आप के शागिर्द हैं। आप ने पांच हज़ार तीन सो चोहत्तर हदीषें रिवायत की हैं जिन में से चार सो छियालीस बुख़ारी शरीफ़ में हैं। सि. 59 हि. में अठत्तर साल की उम्र पा कर मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ में मदफून हुवे।<sup>(2)</sup>

(अकाल, ज २, २२२ व २२३, ज १, २१२ व २१३)

1.....الاصابة في تمييز الصحابة، حرف الباء، البراء بن مالك، ج 1، ص 414

2.....الاکمال في اسماء الرجال، حرف الهاء، فصل في الصحابة، ص 222

واسد الغابة، ابوهريرة، ج 6، ص 336-337

وارشاد الساری لشرح صحيح البخاری، کتاب الایمان، باب امور الایمان، تحت

الحديث: 9، ج 1، ص 105

## कशमल

## कशमत वाली थेली

इन को हुजुरे अकरम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने चन्द छूहारे अता फरमाए और हुक्म दिया कि “इन को अपनी थेली में रख लो और जब जी चाहे तुम इस में से हाथ डाल कर निकालो और खुद खाओ, दूसरों को खिलाओ मगर ख़बरदार ! इस थेली को कभी ख़ाली कर के मत झाड़ना येह छूहारे कभी ख़त्म न होंगे ।”

سُبْحَنَ اللّٰهُ येह थेली ऐसी बा बरकत हो गई कि तीस बरस तक हज़रते अबू हरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इस थेली में से छूहारे निकाल निकाल कर खाते रहे और लोगों को खिलाते रहे बल्कि कई मन इस में से ख़ैरात भी कर चुके मगर छूहारे ख़त्म नहीं हुवे यहां तक कि हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की शहादत के दिन हंगामों की भीड़ भाड़ में वोह थेली कमर से कट कर कहीं गिर पड़ी जिस का उम्र भर हज़रते अबू हरैरा रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को बे इन्तिहा सदमा और रन्जो मलाल रहा । रास्तों में रोते हुवे और निहायत रिक्कत अंगेज़ और दर्द भरे लहजे में येह शे'र पढ़ते हुवे घूमते फिरते थे :

لِلنَّاسِ هَمٌّ وَلِيَّ فِي الْيَوْمِ هَمَّانٌ  
فَقَدْ الْحِرَابِ وَقَتْلُ الشَّيْخِ عُثْمَانَ

(या'नी सब को आज एक ही तो ग़म है मगर मुझे दो ग़म हैं । एक ग़म है थेली के गुम होने का दूसरा ग़म हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उषमाने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की शहादत का ।)<sup>(1)</sup> (الكلام السمين)

1.....مرقاة المفاتيح شرح مشكاة المصابيح، تحت الحديث: ٥٩٣٣، ج ١٠، ص ٢٦٩



### ﴿74﴾ हज़रते उब्बाद बिन बिशर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह मदीनए मुनव्वरा के बाशिन्दे (अन्सारी) हैं। जो खानदाने “बनी अब्दुल अशहल” के एक बहुत ही नामवर शख्स हैं। हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की हिजरत से कब्ल ही हज़रते मुस्अब बिन उमैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के हाथ पर इस्लाम कबूल किया। बहुत ही दिले़र और जांबाज़ सहाबी हैं। जंगे बद्र और जंगे उहुद वगैरा के तमाम मा’रिकों में बड़ी जुरअत व शुजाअत के साथ कुफ़्फ़ार से जंग आज़मा हुवे।

“का’ब बिन अशरफ़” यहूदी जो हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का बदतरनीन दुश्मन था, आप हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा व अबू अबस बिन ज़बर और अबू नाइला वगैरा चन्द अन्सारियों को अपने साथ ले कर उस के मकान पर गए और उस को क़त्ल कर डाला। अफ़ाज़िल सहाबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ में आप का शुमार है।

हज़रते आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का बयान है कि हुजूर अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते उब्बाद बिन बिशर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की आवाज़ सुनी तो फ़रमाया कि **अब्बाह** तआला हज़रते उब्बाद बिन बिशर पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए। सि. 12 हि. की जंगे यमामा में शहीद हो गए जब कि आप की उम्र शरीफ़ सिर्फ़ पैंतालीस साल की थी। <sup>(1)</sup> (अकाल, व १०५ वासदर الغाबیه, ج ३, व १००)

### कशमात

### लाठी रोशन हो गई

एक मरतबा येह और हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا दोनों दरबारे रिसालत से काफ़ी रात गुज़रने के बा’द अपने घरों को रवाना हुवे। अन्धेरी रात में जब रास्ता नज़र नहीं आया तो अचानक इन की लाठी टॉर्च की तरह रोशन हो गई और येह दोनों इस की

1..... اسد الغابة، عباد بن بشر بن وقش، ج ३، ص १४८، १४९

रोशनी में चलते रहे। जब दोनों का रास्ता अलग अलग हो गया तो हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की लाठी भी रोशन हो गई और दोनों रोशनी में अपने अपने घर पहुंच गए।<sup>(1)</sup> (اسد الغابة، ج ۳، ص ۱۰۱)

### कशमत वाला ख़्वाब

जंगे यमामा में जब कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिदीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का लश्कर मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब की फ़ौजों के साथ मसरूफ़े जंग था और मुर्तदीन बहुत ही कषीर ता'दाद में जम्अ हो कर बहुत सख़्त जंग कर रहे थे। हज़रते उब्बाद बिन बिशर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि मैं ने रात में एक ख़्वाब देखा है कि मेरे लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये गए और जब मैं आस्मान में दाख़िल हो गया तो दरवाज़े बन्द कर दिये गए। मेरे इस ख़्वाब की ता'बीर येही है कि إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى मुझे शहादत नसीब होगी। चुनान्वे, हज़रते अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि जंगे यमामा के दिन हज़रते उब्बाद बिन बिशर जोर जोर से येह ए'लान कर रहे थे कि मुख़्लिस मोअमिनीन मेरे पास आ जाएं। इस आवाज़ पर चार सो अन्सारी इन के पास जम्अ हो गए।

फिर आप हज़रते अबू दजाना और हज़रते बरा बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को साथ ले कर उस बाग़ के दरवाज़े पर हम्ला आवर हुवे जहां से मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब अपनी फ़ौजों की कमान कर रहा था इस हम्ले में इन्तिहाई सख़्त लड़ाई हुई यहां तक कि हज़रते उब्बाद बिन बिशर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ शहीद हो गए। इन के चेहरे पर तल्वारों के ज़ख़्म इस क़दर ज़ियादा लगे थे कि कोई इन को पहचान न सका। इन के बदन पर मुबारक पर एक ख़ास निशान

1..... اسد الغابة، عباد بن بشر بن وقش، ج ۳، ص ۱۴۹

था जिस को देख कर लोगों ने पहचाना कि यह हज़रते उ़बाद बिन बिशर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की लाश है। (1) (अबू सऊद, ज ३, व ३३१)

## तबसेरा

**अब्बाहु अक्बर !** जिहाद में येह जोशे ईमानी और येह जज़्बए सरफ़रोशी मुश्किल ही से इस की मिषाल मिलेगी। इस क़िस्म की जांनिषारियां सिर्फ़ सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ और अहले ईमान मुजाहिदीने इस्लाम ही का तुर्रए इम्तियाज़ है। सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की इन्ही कुरबानियों का सदका है कि आज तमाम दुन्या में इस्लाम की रोशनी फैली हुई है। काश ! **दुश्मनाने सहाबा** (रवाफ़िज़ व ख़वारिज) इन चमकती हुई हिदायत आफ़रीं रिवायतों से ईमान का नूर हासिल करते।

﴿75﴾ **हज़रते उसैद बिन अबी अयास अदवी** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

हज़रते सारियह बिन ज़नीम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जिन को हज़रते उ़मर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मदीनए मुनव्वरा में मस्जिदे नबवी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के मिम्बर से पुकारा था और वोह निहावन्द में थे येह उन्ही के भतीजे हैं येह शाइर थे और हुज़ूर नबिये करीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की हिजू में अशआर कहा करते थे। फ़त्हे मक्का के दिन भाग कर ताइफ़ चले गए थे। येह उन इश्तिहारी मुजरिमों में से थे जिन के बारे में येह फ़रमाने नबवी था कि येह जहां और जिस हाल में मिलें क़त्ल कर दिये जाएं। इत्तिफ़ाक़ से हज़रते सारियह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का ताइफ़ में गुज़र हुवा। जब मुलाक़ात हुई तो आप ने उसैद बिन अबी अयास को बताया कि अगर तुम बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लो तो तुम्हारी जान बच जाएगी।

1.....الطبقات الكبرى لابن سعد، طبقات البدريين من الانصار...الخ، عباد بن بشر،

उसैद येह सुन कर ताइफ़ से अपने मकान पर आए और कुरता पहन कर और इमाम बांध कर खिदमते अक्दस में हाज़िर हो गए और अर्ज़ किया कि क्या आप ने उसैद बिन अबी अयास का खून मुबाह फ़रमा दिया है ? आप ने फ़रमाया कि हां ! इन्होंने ने अर्ज़ किया कि अगर वोह मुसलमान हो कर आप की खिदमते अक्दस में हाज़िर हो जाए तो क्या आप उस का कुसूर मुआफ़ फ़रमा देंगे ? इरशाद हुवा कि हां ! येह सुन कर इन्होंने ने अपना हाथ हुजूरे अकरम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के दस्ते अक्दस में दे कर कलिमा पढ़ा और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उसैद बिन अबी अयास मैं ही हूं। हुजूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़ौरन ही एक आदमी को भेज कर ए'लान करा दिया कि उसैद बिन अबी अयास मुसलमान हो गए हैं और सरकारे रिसालत ने इन को अम्म का परवाना अता फ़रमा दिया है। फिर इन्होंने ने हुजूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मदह में एक कसीदा पढ़ा।<sup>(1)</sup> (اسد الغابة، ج ۱، ص ۸۹)

## कशमात

### चेहरे से घर रोशन

जब येह मुसलमान हो गए तो हुजूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खुश हो कर अज़ राहे करम इन के चेहरे और सीने पर अपना मुनव्वर हाथ फेरा जिस से इन को येह करामत नसीब हो गई कि येह जब किसी अन्धेरे घर में क़दम मुबारक रखते थे तो उस घर में इन के नूरानी चेहरे की रोशनी से उजाला हो जाया करता था।<sup>(2)</sup>

(کنز العمال، ج ۱۵، ص ۲۵۳)

①..... اسد الغابة، اسيد بن ابی اناس، ج ۱، ص ۳۸ ملخصاً

و کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ۳۶۸۱۹، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۲۳

②..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ۳۶۸۱۹، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۲۳

## तबशेश

ﷺ! سُبْحَنَ اللَّهِ जब तक सरकार, रहमते मदार  
 इन से नाराज़ रहे इन का खून मुबाह था और कहीं इन का ठिकाना  
 नहीं था। भागते फिरते थे और जान की अमान नहीं मिलती थी और  
 जब रहमतुल्लिल अलमीन ﷺ इन से खुश हो गए  
 तो इन को दुनिया में करामत और आखिरत में जन्नत यूं दोनों जहान  
 की दौलत मिल गई। येह सच है

जिस से तुम रूठो वोह सरगुश्तए दुन्या हो जाए

जिस को तुम चाहो वोह क़तरा हो तो दरया हो जाए

﴿76﴾ هَاجِرَتِ بِيْشَارُ بِنْ مُؤَاوِيَةَ بَكَاءٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह अपनी क़ौम के वफ़द में अपने वालिद मुआविय्या  
 बिन षौर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे।  
 इन के वालिद ने इन से फ़रमा दिया था कि तुम बारगाहे रिसालत  
 में तीन बातों के सिवा कुछ भी न कहना :

﴿1﴾ اَلْسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ

﴿2﴾ या रसूलल्लाह ﷺ हम इस लिये हाज़िर हुवे  
 हैं ताकि हम इस्लाम क़बूल कर के आप के फ़रमां बरदार बन जाएं।

﴿3﴾ आप हमारे लिये दुआ फ़रमाएं। इन की इन तीन बातों को  
 सुन कर हुजूर रहमते अलम ﷺ ने खुश हो कर  
 जोशे महब्बत में इन के चेहरे और सर पर हाथ मुबारक फेरा और  
 इन के लिये दुआ फ़रमाई। (1) (اسد الغابة، ج 1، ص 190)

## करामत

### हाथ हर मरज़ की दवा

हुजूर अक्दस ﷺ ने जैसे ही अपना दस्ते  
 मुबारक फेरा इन को दो करामतें मिल गई। एक तो येह कि हमेशा

के लिये इन का चेहरा रोशन हो गया और दूसरी करामत येह मिली कि येह जिस बीमार पर अपना हाथ फेर देते फौरन ही वोह शिफायाब हो जाया करता था।<sup>(1)</sup> (کنز العمال، ج ۱۵، ص ۲۶۷؛ مطبوعه حیدرآباد)

हज़रते बिशर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के साहिबज़ादे “मुहम्मद बिन बिशर” फख्र के तौर पर इस बारे में अशआर पढ़ा करते थे जिस का पहला शे’र येह है

وَأَبَى الذِّئْبُ مَسَحَ النَّبِيُّ بِرَأْسِهِ

وَدَعَا لَهُ بِالْخَيْرِ وَالْبَرَكَاتِ

(या’नी मेरे बाप वोह हैं जिन के सर पर हुजूर नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हाथ फेर कर खैरो बरकत की दुआ फरमाई है।)<sup>(2)</sup>

(اسد الغابة، ج ۱، ص ۱۹۰)

﴿77﴾ **हज़रते उशामा बिन जैद** **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

येह हुजूरे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के आज़ाद कर्दा गुलाम मुतबन्नी “हज़रते जैद बिन हारिषा” **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के फ़रज़न्द हैं। इन की मां की कुन्यत “उम्मे ऐमन” नाम “बरका” था और हज़रते उसामा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का लक़ब “महबूबे रसूल” है। वफ़ाते अक़दस के वक़्त इन की उम्र सिर्फ़ बीस साल की थी मगर हुजूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इन को उस लश्कर का सिपह सालार बनाया था जो रूमियों से जंग के लिये जा रहा था और जिस लश्कर में तमाम बड़े बड़े सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** मौजूद थे लेकिन हुजूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की वफ़ाते अक़दस की वजह से येह लश्कर वापस आ गया मगर फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने दोबारा इस लश्कर को भेजा जो **फ़तहयाब** हो कर आया। चूँकि येह “महबूबे रसूल” थे इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

1.....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ۳۶۸۵، ج ۷، الجزء ۳، ص ۱۲۳

2.....اسد الغابة، بشر بن معاوية، ج ۱، ص ۲۸۳



इन का बे हृद इकराम व एहतिराम फ़रमाते थे । जब आप ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में मुजाहिदीन की तनख़्वाहें मुक़र्रर फ़रमाई तो इन की तनख़्वाह साढ़े तीन हज़ार दिरहम मुक़र्रर फ़रमाई और अपने बेटे हज़रते अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की तनख़्वाह सिर्फ़ तीन हज़ार दिरहम मुक़र्रर फ़रमाई । साहिबज़ादे ने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप ने हज़रते उसामा की तनख़्वाह मुझ से ज़ियादा क्यूं मुक़र्रर फ़रमाई जब कि वोह किसी जिहाद में भी मुझ से आगे नहीं रहे ? इस के जवाब में अमीरल मोअमिनीन ने फ़रमाया : इस लिये कि उसामा के बाप “जैद” तुम्हारे बाप “उमर” से ज़ियादा रसूले खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के महबूब थे और “उसामा” तुम से ज़ियादा हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के महबूब हैं ।<sup>(1)</sup>

(کنز العمال، ج ۱۵، ص ۲۴۱ واکمال، ص ۵۰۵)

## बे अदबी करने वाले काफ़िर हो गए

हुज़ूरे अकरम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने हुज्जतुल वदाअ में तवाफ़े ज़ियारत को इस लिये कुछ मुअख़्ख़र कर दिया कि हज़रते उसामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ किसी हाजत की वजह से कहीं चले गए थे थोड़ी देर के बा'द हज़रते उसामा वापस आए तो लोगों ने देखा कि चपटी नाक और काले रंग का एक लड़का है तो यमन के कुछ लोगों ने हक़ारत के अन्दाज़ में येह कहा कि क्या इसी चपटी नाक वाले काले लड़के की वजह से आज हम लोगों को हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने तवाफ़े ज़ियारत से रोक रखा था ? इस तरह इन यमन वालों ने हज़रते उसामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बे अदबी की ! हज़रते उर्वा बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि हज़रते उसामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की

①..... الاكمال في اسماء الرجال، حرف الهمزة، فصل في الصحابة، ص ۵۸۵

کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ۳۶۷۸۹، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۱۸

واسد الغابة، اسامة بن زيد، ج ۱، ص ۱۰۴

इस बे अदबी करने ही का वबाल था कि हुजुरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वफ़ात के बा'द यमन के येह बे अदबी करने वाले लोग काफ़िर व मुर्तद हो गए और हज़रते अबू बक्र सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की फ़ौजों ने इन लोगों से जिहाद किया तो कुछ इन में से तौबा कर के फिर मुसलमान हो गए और कुछ क़त्ल हो गए।<sup>(1)</sup> (کنز العمال، ج ۱۵، ص ۲۳۳)

### ﴿78﴾ हज़रते नाबगा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

“नाबगा” इन का लक़ब है। इन के नाम में इख़िलाफ़ है। बा'ज ने इन का नाम “कैस बिन अब्दुल्लाह” और बा'ज ने “हब्बान बिन कैस” बताया है। येह ज़मानए जाहिलिय्यत में बहुत अच्छे शाइर थे मगर तीस बरस के बा'द शे'र गोई बिल्कुल छोड़ दी। इस के बा'द जब दोबारा शे'र कहना शुरू किया तो इस क़दर बुलन्द मर्तबा और बा कमाल शाइर हो गए कि इन के हम अ़स्सों ने इन को “नाबगा” (बहुत ही माहिर) का लक़ब दे दिया। एक सो अस्सी बरस की उम्र पाई।<sup>(2)</sup> (حاشیه کنز العمال، ج ۱۶، ص ۲۱۱، مطبوعه حیدرآباد)

### करामत

#### सो बरस तक दांत सलामत

इन्हों ने हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को चन्द अशआर सुनाए जो आप को बहुत ही ज़ियादा पसन्द आए। आप ने खुश हो कर इन को येह दुआ दी : “**اَبْلَاهُ** तअ़ला तेरे मुंह को न तोड़े” इस दुआए नबवी की बदौलत इन को येह करामत मिली कि तमाम उम्र इन के दांत सलामत रहे और औले की तरह साफ़ और चमकदार ही रहे। हज़रते अबू या'ला رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कहते हैं कि मैं

1..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الحديث: ۳۶۷۹۵، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۱۱۹

2..... الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف النون، النابغة الجعدي، ج ۶، ص ۳۰۸-۳۰۹

ने हज़रते नाबगा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को उस वक्त देखा जब कि वोह सो बरस के हो गए थे मगर उन के तमाम दांत सलामत थे ।<sup>(1)</sup>

(तैज़ी वासाब, ज ३, स ५३९)

### ﴿79﴾ हज़रते अम्र बिन तुफैल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह अपने बाप हज़रते तुफैल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ मदीनए मुनव्वरा में आ कर इस्लाम से मुशरफ़ हुवे और तमाम उम्र मदीनए मुनव्वरा ही में रहे । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िलाफ़त में जब कि मुर्तदीन से जिहाद के लिये मुसलमानों का लश्कर मदीनए मुनव्वरा से ख़ाना हुवा तो येह दोनों बाप बेटे भी इस लश्कर में शामिल हो कर जिहाद के लिये चल पड़े । चुनान्चे, हज़रते तुफैल रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जंगे यमामा में शहीद हो गए और हज़रते अम्र बिन तुफैल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का एक हाथ कट गया और शदीद तौर पर ज़ख्मी हो गए लेकिन सिह्हत याब हो गए ।

फिर जब हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौर ख़िलाफ़त में जंगे यरमूक का मा'रिका दर पेश हुवा तो हज़रते अम्र बिन तुफैल रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस जिहाद में मुजाहिदाना शान के साथ गए और कुफ़फ़ार से लड़ते हुवे जामे शहादत से सैराब हुवे ।<sup>(2)</sup> (असदुलगाब, ज ४, स ११५)

## कशमात

### नूशानी कोड़ा

हुजुरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन के घोड़ा हांकने के कोड़े के बारे में दुआ फ़रमा दी तो इन का कोड़ा रात की तारीकी में इस तरह रोशन हो जाया करता था कि येह उसी की रोशनी में रातों

①.....الاصابة في تمييز الصحابة، حرف النون، النابغة الجعدي، ج ६، ص ३११

ودلائل النبوة للبيهقي، باب ماجاء في دعائه لنا بغة...الخ، ج ६، ص २३२، २३३

②.....اسد الغابة، عمرو بن الطفيل، ج ४، ص २५८ وطفيل بن عمرو، ج ३، ص ७८

को चलते फिरते थे।<sup>(1)</sup> (کنز العمال، ج ۱۶، ص ۱۶۰، مطبوعہ حیدرآباد)

﴿۸۰﴾ **हज़रते अब्र बिन मुरा जुहन्नी** رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह ज़मानए जाहिलियत में हज़ करने गए तो मक्काए मुकर्रमा में एक ख़्वाब देखा और एक ग़ैबी आवाज़ सुनी जिस में इन को नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने की तरगीब दिलाई गई। येह इस ख़्वाब से बेहद मुतअष्विर हुवे और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद के मुन्तज़िर रहे। चुनान्चे, हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी नबुव्वत का ए'लान फ़रमाया तो इन्हों ने बारगाहे नबुव्वत में हाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया और फिर अपनी क़ौम में आ कर इस्लाम की तब्लीग़ करने लगे और इन की क़ौम के बहुत से लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। फिर इन मुसलमानों को साथ ले कर बारगाहे नबुव्वत में दोबारा हाज़िर हुवे। बहुत ही बहादुर मुजाहिद भी थे और अकषर इस्लामी जिहादों में शमशीर बकफ़ हो कर कुफ़्फ़ार से जंग भी की। आख़िर में मदीनए मुनव्वरा से मुल्के शाम में जा कर सुकूनत इख़्तियार कर ली और हज़रते अमीरे मुअविyya رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौरे हुकूमत में वफ़ात पाई।<sup>(2)</sup> (अकाल, स १०८, १०९, ११०, १११)

**करामत**

**दुश्मन बलाओं में गिरिफ़्तार**

इन की एक करामत येह है कि मुस्तजाबुद्दा'वात थे या'नी

①.....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عمرو بن الطفیل رضی اللہ عنہ،

الحديث: ۳۷۴۳۷، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۲۳۸

②.....کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عمرو بن مرة الجهني، الحديث:

۳۷۲۸۹، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۲۱۴

والاکمال فی اسماء الرجال، حرف العين، فصل فی الصحابة، ص ۶۰۷

इन की दुआएं बहुत ज़ियादा और बहुत जल्द मक्बूल हुवा करती थीं। चुनान्चे, मन्कूल है कि जब अपनी कौम को इस्लाम की दा'वत देने के लिये तशरीफ़ ले गए तो एक शख्स ने इन की बहुत ज़ियादा हिज्र और मजम्मत की और इन की शान में तौहीन आमेज़ अल्फ़ाज़ बकने लगा और आप को झूटा कहने लगा। उस वक़्त आप ने मजरूह क़ल्ब के साथ इस तरह दुआ मांगी : या **اَللّٰهُمَّ** इस की ज़िन्दगी को तल्ख़ बना दे और इस की ज़बान को गूंगी और इस की आंखों को अन्धी कर दे। आप की दुआ का येह अषर हुवा कि येह शख्स गूंगा और अन्धा हो गया और इस क़दर बुढ़ा हो गया कि इस के दांत टूट गए और ज़बान के शल हो जाने से इस को किसी चीज़ का मज़ा महसूस नहीं होता था।<sup>(1)</sup>

﴿81﴾ **हज़रते जैद बिन ख़ारिजा अन्सारी** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ**

येह अन्सारी हैं और इन का वतन मदीनए मुनव्वरा है। इन्हों ने कबीलए बनी हारिष बिन ख़ज़रज में अपना घर बना लिया था। येह बहुत ही परहेज़गार और इबादत गुज़ार सहाबी हैं। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िलाफ़त के दरमियान आप ने दुन्या से रिहलत फ़रमाई।<sup>(2)</sup> (तैफ़ी, اسد الغابة, ج ۲, ص ۲۲۷)

**कशमल**

**मौत के बा'द शुफ़्तू**

हज़रते नो'मान बिन बशीर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का बयान है कि हज़रते जैद बिन ख़ारिजा सहाबी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** मदीनए मुनव्वरा के बा'ज रास्तों में ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान चले जा रहे थे कि नागहां

①..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عمرو بن مرة الجهني، الحديث: ۳۷۲۸۹،

ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۲۱۵

②..... اسد الغابة، زيد بن حارجه، ج ۲، ص ۳۳۹

ودلائل النبوة للبيهقي، باب ماجاء في شهادة... الخ، ج ۶، ص ۵۵-۵۶ ملقطاً

गिर पड़े और अचानक इन की वफ़ात हो गई। लोग इन्हें उठा कर मदीनए मुनव्वरा लाए और इन को लिटा कर कम्बल ओढ़ा दिया।

जब मग़रिब व इशा के दरमियान कुछ औरतों ने रोना शुरू किया तो कम्बल के अन्दर से आवाज़ आई : “ऐ रोने वालियो ! ख़ामोश रहो।”

येह आवाज़ सुन कर लोगों ने उन के चेहरे से कम्बल हटाया तो वोह बे हृद दर्द मन्दी से निहायत ही बुलन्द आवाज़ से कहने लगे : “हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नबिय्ये उम्मी ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं और येह बात **अल्लाह** तआला की किताब में है।” इतना कह कर कुछ देर तक बिल्कुल ही ख़ामोश रहे फिर बुलन्द आवाज़ से येह फ़रमाया : “सच कहा, सच कहा अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने जो नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ख़लीफ़ा हैं, क़वी हैं, अमीन हैं, गो बदन में कमज़ोर थे लेकिन **अल्लाह** तआला के काम में क़वी थे। येह बात **अल्लाह** तआला की पहली किताबों में है।” इतना फ़रमाने के बा’द फिर इन की ज़बान बन्द हो गई और थोड़ी देर तक बिल्कुल ख़ामोश रहे फिर इन की ज़बान पर येह कलिमात जारी हो गए और वोह ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे : “सच कहा, सच कहा दरमियान के ख़लीफ़ा **अल्लाह** तआला के बन्दे अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर बिन ख़त्ताब (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने जो **अल्लाह** तआला के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत को ख़ातिर में नहीं लाते थे न इस की कोई परवाह करते थे और वोह लोगों को इस बात से रोकते थे कि कोई क़वी किसी कमज़ोर को खा जाए और येह बात **अल्लाह** तआला की पहली किताबों में लिखी हुई है।”

इस के बा’द फिर वोह थोड़ी देर तक ख़ामोश रहे फिर इन की ज़बान पर येह कलिमात जारी हो गए और ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे : “सच कहा, सच कहा हज़रते उषमाने ग़नी (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने जो अमीरुल मोअमिनीन हैं और मोमिनों पर रहम फ़रमाने वाले हैं।



दो बातें गुज़र गई और चार बाकी हैं जो येह हैं : ﴿1﴾ लोगों में इख़्तिलाफ़ हो जाएगा और इन के लिये कोई निज़ाम न रह जाएगा ।  
 ﴿2﴾ सब औरतें रोने लगेंगी और इन की पर्दादरी हो जाएगी ।  
 ﴿3﴾ क़ियामत करीब हो जाएगी । ﴿4﴾ बा'ज आदमी बा'ज को खा जाएगा ।" इस के बा'द इन की ज़बान बिल्कुल बन्द हो गई ।<sup>(1)</sup>

(طبرانی والبدایة والنہایة، ج ۶، ص ۱۵۶ واسد الغابة، ج ۲، ص ۲۲۷)

### ﴿82﴾ हज़रते राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رضی اللہ تعالیٰ عنہ

इन की कुन्यत अबू अब्दुल्लाह है और शजरए नसब येह है :  
 राफ़ेअ़ बिन ख़दीज बिन अदी बिन ज़ैद बिन जशम बिन हारिष बिन  
 अल खज़रज बिन अम्र बिन मालिक बिन अल औस । येह अन्सारी  
 हैं और इन का वतन मदीनए मुनव्वरा है । येह जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार  
 से लड़ने के लिये आए तो इन को कम उम्री की वजह से हुज़ूरे  
 अक्दस ﷺ ने लश्कर में शामिल करने से इन्कार  
 कर दिया लेकिन जंगे उहुद में इस्लामी फ़ौज में शामिल कर लिये  
 गए और ख़ूब जम कर कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे । फिर जंगे खन्दक  
 वगैरा अकषर लड़ाइयों में येह मसरूफ़े जिहाद रहे । उम्र भर मदीनए  
 मुनव्वरा ही में रहे और इस्लामी लड़ाइयों में सर बक़फ़ और कफ़न  
 बरदोश हो कर काफ़िरों से लड़ते रहे और अपनी क़ौम के सरदार और  
 मुखया भी रहे । सि. 73 हि. या सि. 74 हि. में छियासी बरस की उम्र  
 पा कर मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात पाई ।<sup>(2)</sup>

(अक़ाल، ص ५९२ وکنز العمال، ج ۱۲، ص ۵५ واسد الغابة، ج ۲، ص ۱۵۱)

①..... اسد الغابة، زيد بن خارجه، ج ۲، ص ۳۳۹

ودلائل النبوة للبيهقي، باب ماجاء في شهادة... الخ، ج ۶، ص ۵۵-۵۸ ملقطاً

②..... اسد الغابة، رافع بن خديج، ج ۲، ص ۲۲۳-۲۲۵ ملقطاً

والاكمال في اسماء الرجال، حرف الراء، فصل في الصحابة، ص ۵۹۴

**बरसों हलक़ में तीर चुभा रहा !**

﴿83﴾ हज़रत मुहम्मद बिन साबित बिन कैस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

1..... كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، رافع بن خديج رضي الله عنه، الحديث:

٤٥٠٣٧، ج٧، الجزء ١٣، ص ١٧٠

و اسد الغابة، رافع بن خديج، ج ٢، ص ٢٢٤-٢٢٥ ملتقطاً

वालिदा ने गुस्से में इन की पैदाइश के बा'द येह क़सम खा ली कि मैं इस बच्चे को हरगिज़ हरगिज़ दूध नहीं पिलाऊंगी इस का बाप इस को दूध पिलाने का इन्तिज़ाम करे। हज़रते षाबित बिन कैस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** इस बच्चे को एक कपड़े में लपेट कर दरबारे नबुव्वत में लाए और पूरा वाकिआ अर्ज किया। हुज़ूर रहमते अ़लम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इस बच्चे को अपनी आगोशे रहमत में ले कर पहले अपना मुक़द्दस लुआबे दहन इस बच्चे के मुंह में डाला फिर अज़वा खज़ूर चबा कर इस बच्चे के मुंह में डाली और “मुहम्मद” नाम रखा और इरशाद फ़रमाया कि इस को घर ले जाओ **اَبْلَاهُ** तआला इस बच्चे को रिज़्क देने वाला है।<sup>(1)</sup>

### कशमल

### बच्चे को दूध कैसे मिला !

हज़रते षाबित बिन कैस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** बच्चे को गोद में लिये हुवे किसी दूध पिलाने वाली औरत की तलाश में सरगर्दा थे मगर कोई दूध पिलाने वाली औरत नहीं मिली। येह इसी फ़ि़क़्र में हैरान व परेशान फिर रहे थे कि नागहां एक अरबी औरत इन से मिली और पूछा कि षाबित बिन कैस कौन शख़्स हैं ? और इन से कहां मुलाकात होगी ? इन्होंने ने पूछा : तुम को षाबित बिन कैस से क्या काम है ? औरत ने कहा : मैं ने गुज़श्ता रात येह ख़्वाब देखा कि मैं षाबित बिन कैस के बच्चे को दूध पिला रही हूं येह सुन कर हज़रते षाबित बिन कैस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि षाबित बिन

①.....اسد الغابة، محمد بن ثابت، ج ٥، ص ٨٥

وکنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، محمد بن ثابت، الحديث: ٣٧٥١١،

ج ٧، الجزء ١٣، ص ٢٥٣

कैस मैं ही हूं और मेरा लड़का “मुहम्मद” येही है जो मेरी गोद में है। औरत ने फौरन बच्चे को गोद में ले लिया और दूध पिलाने लगी। मुहम्मद बिन षाबित बिन कैस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** सि. 63 हि. में जंगे हुरा के दिन मदीनए मुनव्वरा में यज़ीद बिन मुअविyya की मन्हूस फौजों के हाथ से शहीद हो गए। (1)

(کنز العمال وحاشیہ کنز العمال، ج ۱۶، ص ۱۹۹ و اسد الغابہ، ج ۴، ص ۳۱۳)

﴿84﴾ **हज़रते क़तादा बिन मलहान** **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

**करामत**

**चेहरा आईना बन गया**

हय्यान बिन उमैर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का बयान है कि हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते क़तादा बिन मलहान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के चेहरे पर एक मरतबा अपना दस्ते मुबारक फेरा। इस के बा'द इन को येह करामत मिल गई कि येह बहुत ही बुढ़े हो चुके थे और इन के बदन के हर हिस्से पर जईफी के आधार नुमूदार थे लेकिन इन के चेहरे पर ब दस्तूर जवानी का जमाल बाक़ी था और इन का चेहरा इस क़दर चमकता था कि मैं इन की वफ़ात के वक़्त इन की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो उस वक़्त एक औरत इन के सामने से गुज़री उस वक़्त मैं ने उस औरत का अक्स इन के चेहरे में इस तरह देख लिया गोया मैं आईने में उस का चेहरा देख रहा हूं। (2)

(اصابة، ج ۳، ص ۲۲۵)

1..... اسد الغابة، محمد بن ثابت، ج ۵، ص ۸۵

و کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، محمد بن ثابت، الحديث: ۳۷۵۱۱،

ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۲۵۳

والکامل فی التاريخ، سنة ثلاث وستين، ذکر وقعة الحرة، ج ۳، ص ۴۵۹

2..... الاصابة فی تمييز الصحابة، حرف القاف، قتادة بن ملحان، ج ۵، ص ۳۱۷

### ﴿85﴾ हज़रते मुआविय्या बिन मुक़र्रिन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन के वालिद के नाम में इख़िलाफ़ है। बा'ज लोगों ने इन के वालिद का नाम “मुआविय्या” और बा'ज ने “मुक़र्रिन” लिखा है। इसी तरह इन के कबीले के नाम में भी इख़िलाफ़ है कि येह “मुज़नी” या “लैषी” हैं। हज़रते अबू उमर ने इस कौल को दुरुस्त करार दिया है कि येह “मुआविय्या बिन मुक़र्रिन मुज़नी” हैं। हुज़ूरे अक़दस عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ जिस वक़्त ग़ज़वए तबूक में तशरीफ़ फ़रमा थे इन का विसाल हो गया।

### करामत

### दो हज़ार फ़िरिशते नमाज़े जनाज़ा में

इन की येह मशहूर करामत है कि जब मदीनए मुनव्वरा में इन की वफ़ात हुई तो हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने मक़ामे तबूक में उतर कर दरबारे रिसालत में अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुआविय्या मुज़नी का मदीनए मुनव्वरा में इन्तिक़ाल हो गया है और हमारे लिये मुनासिब है कि हम लोग इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ें। हुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि हां बेशक ज़रूर हम लोग नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे। फिर हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने इस क़दर जोर से अपना बाजू ज़मीन पर मारा कि तमाम शजर व हज़र, टीले और पहाड़ियां हिलने लगीं और तमाम हिजाबात इस तरह उठ गए कि इन का जनाज़ा हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की निगाहों के सामने आ गया और जब हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई तो सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के तीस हज़ार मजमअ के इलावा फ़िरिशतों की भी दो सफ़ें थीं और हर सफ़ में एक एक हज़ार फ़िरिशते थे। एक रिवायत में है कि हर सफ़ में साठ हज़ार फ़िरिशते थे। नमाज़ के बा'द हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से

दरयाफ़्त फ़रमाया कि **अल्लाह** तअ़ला ने मेरे इस सहाबी को इतना अज़ीम रुत्बा कौन से अमल की वजह से अता फ़रमाया ? तो हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** येह शख़्स सूरह **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** से बेहद महबूबत रखता था और हर वक़्त उठते बैठते इस सूरह की तिलावत किया करता था । <sup>(1)</sup> (اسد الغابة، ج ۴، ص ۳۸۹)

## तबसेश

**अल्लाह अवबर !** सूरए इख़्लास (**قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ**) की तिलावत करने वालों की फ़ज़ीलत और इन के अज़्रो षवाब और फ़ज़्लो करामत का क्या कहना ? खुदावन्दे करीम صلی وعل हम मुसलमानों को ज़ियादा से ज़ियादा इस मुक़द्दस सूरह की तिलावत का शरफ़ अता फ़रमाए । (आमीन)

### ﴿86﴾ हज़रते अहबान बिन सैफ़ी ग़िफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन की कुन्यत अबू मुस्लिम है । इन की साहिब ज़ादी हज़रते अदीसा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا कहती हैं कि जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते अमीरे मुअविyya رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दरमियान जंग की नौबत आन पड़ी तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मेरे वालिद के मकान पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि तुम इस जंग में मेरा साथ दो और अब तक तुम को कौन सी चीज़ मेरी हिमायत से रोके हुवे है ? तो मेरे वालिद हज़रते अहबान बिन सैफ़ी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा कि ऐ अमीरल मोअमिनीन ! बस सिर्फ़ येही एक रुकावट है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे येह वसिय्यत फ़रमाई थी कि ऐ अहबान ! जब मुसलमान आपस में एक दूसरे से जंग करने लगें तो तुम उस वक़्त लकड़ी की तल्वार बना लेना । चुनान्चे, मैं ने इरशादे नबवी के मुताबिक़ लकड़ी की



तल्वार बना ली है। आप देखिये वोह लटक रही है। अब लकड़ी की तल्वार से भला मैं किस तरह जंग कर सकता हूँ? यह कह कर वोह बिल्कुल ही इस लड़ाई में ग़ैर जानिबदार बन गए।

### करामत

#### कब्र से कफ़न वापस

येह साहिबे करामत सहाबी थे। चुनान्वे, इन की एक मशहूर करामत येह है कि इन्हों ने वसियत फ़रमाई थी कि मेरे कफ़न में फ़क़त दो ही कपड़े दिये जाए मगर लोगों ने इन की वसियत पर अमल नहीं किया और इन के कफ़न में तीन कपड़े शामिल कर के इन को दफ़न कर दिया। घर वाले जब सुब्ह को नींद से बेदार हुवे तो येह देख कर हैरान रह गए कि तीसरा कपड़ा कब्र से वापस हो कर खूटी पर लटक रहा है! <sup>(1)</sup>

(اسد الغابہ، ج ۱، ص ۱۳۸)

﴿87﴾ हज़रते नज़ला बिन मुअविyya अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

### करामत

#### हज़रते ईशा عَلَيْهِ السَّلَام के सहाबी

हज़रते नज़ला बिन मुअविyya رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जंगे क़ादिसिय्या में अमीरे लश्कर हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की मातहूती में जिहाद के लिये तशरीफ़ ले गए। नागहां अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का फ़रमान आया कि हज़रते नज़ला बिन मुअविyya को “हल्वानुल इराक़” में जिहाद के लिये भेज दिया जाए। चुनान्वे, हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन को तीन सो मुजाहिदीन का अफ़सर बना कर भेज दिया और इन्हों ने मुजाहिदाना हम्ला कर के “हल्वानुल इराक़” की बहुत सी बस्तियों को फ़तह कर लिया और बहुत ज़ियादा माले ग़नीमत ले कर वहां से रवाना हुवे।

1..... اسد الغاية، اهبان بن صيفي، ج ۱، ص ۲۰۷

दरमियाने राह में एक पहाड़ के पास नमाज़े मग़रिब का वक़्त हो गया। हज़रते नज़ला बिन मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अज़ान पढ़ी और जैसे ही **अल्लाहु अकबर ! अल्लाहु अकबर !** कहा तो पहाड़ के अन्दर से किसी जवाब देने वाले ने बुलन्द आवाज़ से कहा : **لَقَدْ كَبُرَتْ كَبِيرًا يَا نَضْلَةُ :** इसी तरह आप की पूरी अज़ान के हर हर कलिमे का जवाब पहाड़ के अन्दर से सुनाई देता रहा। आप हैरान रह गए कि आखिर इस पहाड़ के अन्दर कौन है जो मेरा नाम ले कर अज़ान का जवाब दे रहा है। फिर आप ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! खुदा तुझ पर रहम फ़रमाए तू कौन है ? तू फ़िरिश्ता है या ज़िन्न या रिजालुल ग़ैब में से है ? जब तू ने अपनी आवाज़ हम को सुना दी है तो फिर अपनी सूरत भी हम को दिखा दे क्योंकि हम लोग रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के नुमाइन्दे हैं। आप के येह फ़रमाते ही पहाड़ फट गया और इस के अन्दर से एक निहायत ही बुढ़े और बुजुर्ग आदमी निकल पड़े और उन्होंने ने सलाम किया। आप ने सलाम का जवाब दे कर पूछा : आप कौन हैं ? तो उन्होंने ने जवाब दिया : मैं हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का सहाबी और उन का वसी हूं। मेरे नबी हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने मेरे लिये दराज़िये उम्र की दुआ फ़रमा दी है और मुझे येह हुक्म दिया है कि तुम मेरे आस्मान से उतरने के वक़्त तक इसी पहाड़ में मुक़ीम रहना। चुनान्वे, मैं अपने नबी हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की आमद के इन्तिज़ार में यहां ठहरा हुवा हूं। आप मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर हज़रते उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से मेरा सलाम कह दें और मेरा येह पैग़ाम भी पहुंचा दें कि ऐ उमर ! सिराते मुस्तक़ीम पर काइम रहो और खुदा का कुर्ब ढूंडते रहो। फिर चन्द दूसरी नसीहतें फ़रमा कर वोह बुजुर्ग एक दम उसी पहाड़ में गाइब हो गए।

हज़रते नज़ला बिन मुआविय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह सारा वाकिआ हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास

लिख कर भेजा और उन्होंने ने इस की इत्तिलाअ दरबारे ख़िलाफ़त में भेज दी तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के नाम यह फ़रमान भेजा कि तुम अपने पूरे लश्कर के साथ “हल्वानुल इराक़” में उस पहाड़ के पास जाओ अगर तुम्हारी उन बुजुर्ग से मुलाक़ात हो जाए तो उन से मेरा सलाम कह देना। चुनान्चे, हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने चार हज़ार सिपाहियों के साथ उस मक़ाम पर पहुंचे और चालीस दिन तक मुक़ीम रहे मगर फिर वोह बुजुर्ग न ज़ाहिर हुवे न उन की आवाज़ किसी ने सुनी। <sup>(1)</sup>

(ازالة الخفاء، مقصد ۲، ص ۱۶۷-۱۶۸)

## तबशेश

वोह बुजुर्ग भला क्यूं कर और किस तरह फिर ज़ाहिर होते ? उन से मुलाक़ात और शरफ़े हम कलामी की करामत तो हज़रते नज़ला बिन मुअविyya رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के नसीब में लिखी हुई थी जो इन्हें मिल गई। मषल मशहूर है कि لِكُلِّ رَجُلٍ نَصِيبٌ وَالنَّصِيبُ يُصِيبُ

﴿88﴾ हज़रते उमैर बिन सा'द अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

अन्सार के क़बीले औस से इन का ख़ानदानी तअल्लुक है और इन का अस्ली वतन मदीनए मुनव्वरा है। मुल्के शाम की फुतूहात के सिलसिले में जितनी लड़ाइयां हुई उन सब जंगों में इन्होंने ने बड़े बड़े बहादुराना कारनामे अन्जाम दिये। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में इन को मुल्के शाम में हम्स का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था येह इस क़दर आबिदो ज़ाहिद थे कि इन की इबादत व रियाज़त और इन का ज़ोहद व तक्वा हद्दे करामत को पहुंचा हुवा था यहां तक कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि काश !

1.....ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، مقصد دوم، الفصل الرابع، ج ۴، ص ۹۱-۹۳ ملتقطاً

“उमैर बिन सा’द” जैसे चन्द अशख़ास मुझे मिल जाते जिन को मैं मुसलमानों पर हाकिम बनाता।<sup>(1)</sup> (حاشیہ کنز العمال، ج ۱۶، ص ۱۶۲ بحوالہ ابن سعد)

## करामत

### जाहिदाना जिन्दगी

इन की जाहिदाना व आबिदाना जिन्दगी बिला शुबा एक बहुत बड़ी करामत है जिस का एक नुमूना मुलाहज़ा फ़रमाइये :

मुहम्मद बिन मुज़ाहिम कहते हैं कि जिन दिनों हज़रते उमैर बिन सा’द **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** “हम्स” के गवर्नर थे, नागहां इन के पास अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का एक फ़रमान पहुंचा जिस का मज़मून येह था :

“ऐ उमैर बिन सा’द ! हम ने तुम को एक अहम ओहदा सिपुर्द कर के “हम्स” भेजा था मगर कुछ पता नहीं चला कि तुम ने अपने उस ओहदे को खुश उसलूबी के साथ संभाला है या नहीं लिहाज़ा जिस वक़्त मेरा येह फ़रमान तुम्हारे पास पहुंचे फ़ौरन जिस क़दर माले ग़नीमत तुम्हारे ख़ज़ाने में जम्अ है सब को ऊंटों पर लदवा कर और अपने साथ ले कर मदीनए मुनव्वरा चले आओ और मेरे सामने हाज़िर हो जाओ।”

दरबारे ख़िलाफ़त का येह फ़रमान पढ़ कर फ़ौरन ही आप उठ खड़े हुवे और अपनी लाठी में अपनी छोटी सी मशक और ख़ूराक की थेली और एक बड़ा प्याला लटका कर लाठी कन्धे पर रखी और मुल्के शाम से पैदल चल कर मदीनए मुनव्वरा पहुंचे और दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर हो गए और अमीरुल मोअमिनीन को सलाम किया। अमीरुल मोअमिनीन ने इन को इस ख़स्ता हाली में देखा तो हैरान रह गए और फ़रमाया : क्यूं ऐ उमैर बिन सा’द ! तुम्हारा हाल इतना ख़राब क्यूं है ? क्या तुम बीमार हो गए थे ? या

①.....اسد الغابة، عمير بن سعد، ج ۴، ص ۳۱۱-۳۱۳ ملقطاً

तुम्हारा शहर बद तरीन शहर है ? या तुम ने मुझे धोका देने के लिये येह ढोंग रचाया है ? अमीरुल मोअमिनीन के इन सुवालों को सुन कर इन्होंने निहायत ही मुतानत और सन्जीदगी के साथ अर्ज़ किया : ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! क्या **अल्लाह** तआला ने आप को मुसलमानों के छुपे हुवे हालात की “जासूसी” से मन्अ नहीं फ़रमाया ? आप ने येह क्यूं फ़रमाया कि मेरा ख़राब हाल है ? क्या आप देख नहीं रहे कि मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त व तवाना हूं और अपनी पूरी दुनिया को अपने कन्धों पर उठाए हुवे आप के दरबार में हाज़िर हूं । अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया : ऐ उमैर बिन सा’द ! दुनिया का कौन सा सामान तुम ले कर आए हो ? मैं तो तुम्हारे साथ कुछ भी नहीं देख रहा हूं । आप ने अर्ज़ किया : ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! देखिये येह मेरी ख़ूराक की थेली है, येह मेरी मशक है जिस से मैं वुजू करता हूं और इसी में अपने पीने का पानी रखता हूं और येह मेरा प्याला है और येह मेरी लाठी है जिस से मैं अपने दुश्मनों से ब वक्ते ज़रूरत जंग भी करता हूं और सांप वगैरा ज़हरीले जानवरों को भी मार डालता हूं । येह सारा सामान मेरी दुनिया नहीं है तो और क्या है ? येह सुन कर अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया : ऐ उमैर बिन सा’द ! खुदा तुम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए तुम तो अजीब ही आदमी हो ।

फिर अमीरुल मोअमिनीन ने रिआया का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया और मुसलमानों की इस्लामी ज़िन्दगी और ज़िम्मियों के बारे में पूछगछ फ़रमाई तो उन्होंने जवाब दिया कि मेरी हुकूमत का हर मुसलमान अरकाने इस्लाम का पाबन्द और इस्लामी ज़िन्दगी के रंग में रंगा हुवा है और मैं ज़िम्मियों से जिज़या ले कर उन की पूरी पूरी हिफ़ाज़त करता हूं और मैं अपने ओहदे की ज़िम्मेदारियों को निबाहने की भरपूर कोशिश करता रहा हूं ।

फिर अमीरुल मोअमिनीन ने खज़ाने के बारे में पूछा तो उन्होंने ने कहा कि खज़ाना कैसा ? मैं हमेशा मालदार मुसलमानों से ज़कात व सदकात वसूल कर के फुकरा व मसाकीन में तक्सीम कर दिया करता हूँ अगर मेरे पास फ़ज़िल माल बचता तो मैं ज़रूर उस को आप के पास भेज देता ।

फिर अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया कि ऐ उमैर बिन सा'द ! तुम “हम्स” से मदीनए मुनव्वरा तक पैदल चल कर आए हो । अगर तुम्हारे पास कोई सुवारी नहीं थी तो क्या तुम्हारी सल्तनत की हुदूद में मुसलमानों और ज़िम्मियों में भला आदमी कोई भी नहीं था जो तुम को सुवारी का एक जानवर दे देता ? आप ने अर्ज़ किया : ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! मैं ने रसूले अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से येह भी सुना है कि मेरी उम्मत में कुछ ऐसे हाकिम होंगे कि अगर रिआया ख़ामोश रहेगी तो येह हुक्काम उन को बरबाद करेंगे और अगर रिआया फ़रयाद करेगी तो येह हुक्काम उन की गर्दन उड़ा देंगे और मैं ने रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से येह भी सुना है कि तुम लोग अच्छी बातों का हुक्म देते रहो और बुरी बातों से मन्अ करते रहो वरना **اَللّٰهُمَّ** तअ़ाला तुम पर ऐसे लोगों को मुसल्लत फ़रमा देगा जो बदतरीन इन्सान होंगे । उस वक़्त नेक लोगों की दुआएं मक्बूल नहीं होगी । ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! मैं उन बुरे हाकिमों में से होना पसन्द नहीं करता इस लिये मुझे पैदल चलना तो गवारा है मगर अपनी रिआया से कुछ त़लब करना या इन के अ़तिय्यों को क़बूल करना हरगिज़ हरगिज़ पसन्द नहीं है ।

इस के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया : ऐ उमैर बिन सा'द ! मैं तुम्हारी कारगुज़ारियों से बे ह़द खुश हूँ इस लिये तुम अपनी गवर्नरी के ओहदे पर बहाल हो कर फिर हम्स जाओ और वहां जा कर हुक्मत करो । आप ने निहायत ही लजाजत के साथ गिड़ गिड़ा कर अर्ज़ किया : ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! मैं आप को



खुदा का वासिता दे कर अब इस ओहदे को क़बूल करने से मुआफ़ी का त़लब गार हूं और अब मैं हरगिज़ हरगिज़ कभी भी इस अहम ओहदे को क़बूल नहीं कर सकता लिहाज़ा आप मुझे मुआफ़ फ़रमा दीजिये ।

येह सुन कर अमीरुल मोअमिनीन ने फ़रमाया कि अच्छा अगर तुम इस ओहदे को क़बूल नहीं कर सकते हो तो फिर मेरी तरफ़ से इजाज़त है कि तुम अपने घर वालों में जा कर रहो । चुनान्चे, मदीनए मुनव्वरा से तीन दिन की मसाफ़त की दूरी पर एक बस्ती में जहां इन के अहलो इयाल रहते थे जा कर मुक़ीम हो गए ।

इस वाक़िए के कुछ दिनों के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ने एक सो अशरफ़ियों की एक थेली अपने एक मुसाहिब को जिस का नाम “हबीब” था, येह कह कर दी कि तुम उमैर बिन सा'द के मकान पर जा कर तीन दिन तक मेहमान बन कर रहो फिर तीसरे दिन येह थेली मेरी तरफ़ से उन की ख़िदमत में पेश कर के कह देना कि वोह इन अशरफ़ियों को अपनी ज़रूरिय्यात में ख़र्च करें ।

चुनान्चे, हज़रते हबीब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** अशरफ़ियों की थेली ले कर हज़रते उमैर बिन सा'द **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के मकान पर पहुंचे और अमीरुल मोअमिनीन का सलाम अर्ज किया । आप ने सलाम का जवाब दिया और अमीरुल मोअमिनीन की ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की और उन की हुक्मरानी की कैफ़िय्यत के बारे में इस्तिफ़सार किया । फिर अमीरुल मोअमिनीन के लिये दुआएं कीं ।

हज़रते हबीब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** तीन दिन तक उन के मकान पर मुक़ीम रहे और हर रोज़ खाने में दोनों वक़्त एक एक रोटी और जैतून का तेल इन को मिलता रहा । तीसरे दिन हज़रते उमैर बिन सा'द **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : ऐ हबीब ! अब तुम्हारी मेहमानी की मुहत्त ख़त्म हो गई लिहाज़ा आज अब तुम अपने घर जा सकते हो । हमारे घर में बस इतना ही ख़ूराक का सामान था जो हम ने खुद भूके रह कर तुम को ख़िला दिया । येह सुन कर हज़रते हबीब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

ने अशरफियों की थेली पेश कर दी और कहा कि अमीरुल मोअमिनीन ने आप के खर्च के लिये इन अशरफियों को भेजा है। आप ने थेली हाथ में ले कर येह इरशाद फरमाया : “ऐ हबीब ! मैं रसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सोहबत से सरफराज हुवा लेकिन उस वक्त दुन्या की दौलत से मेरा दामन कभी दागदार नहीं हुवा फिर मैं ने हजरते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की सोहबत उठाई लेकिन उन के दौर में भी दौलते दुन्या की आलूदगियों से मैं महफूज ही रहा लेकिन येह ज़माना मेरे लिये बदतरीन दौर षाबित हुवा कि मैं अमीरुल मोअमिनीन के हुक्म से मजबूर हो कर बा दिले नाख्वास्ता “हम्स” का गवर्नर बना और अब अमीरुल मोअमिनीन ने येह दुन्या की दौलत मेरे घर में भेज दी।”

इतना कहते कहते उन की आवाज भर्रा गई और वोह चीख मार कर ज़ार ज़ार रोने लगे और उन के आंसूओं की धार उन के रुख़सार पर मूस्लाधार बारिश की तरह बहने लगी और उन्होंने ने अशरफियों की थेली वापस कर दी। येह देख कर घर में से उन की बीवी साहिबा ने कहा कि आप इस थेली को वापस न कीजिये क्यूंकि येह जानशीने पैग़म्बर हजरते उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का अतिर्य्या है। इस को रद्द कर देने से हजरते अमीरुल मोअमिनीन की बहुत बड़ी दिल शिकनी होगी और येह आप की शान के लाइक नहीं है कि आप हजरते अमीरुल मोअमिनीन के क़ल्ब को सदमा पहुंचाएं। इस लिये आप इस थेली को ले कर हाजत मन्दों को दे दीजिये। बीवी साहिबा के मुख़िलसाना मश्वरे को क़बूल करते हुवे आप ने थेली अपने पास रख ली और फ़ौरन ही फुकरा व मसाकीन को बुला कर तमाम अशरफियों को तक़सीम कर दिया और इस में से एक पैसा भी अपने पास नहीं रखा।

हजरते हबीब **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** इस मन्ज़र को देख कर हैरान रह गए और मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर जब हजरते अमीरुल

मोअमिनीन से सारा माजरा अर्ज किया तो अमीरुल मोअमिनीन पर भी रिक्कत तारी हो गई और फूट फूट कर रोने लगे और देर तक रोते रहे। फिर जब इन के आंसू थम गए तो फौरन ही उन की तलबी के लिये एक फरमान लिखा और एक कासिद के जरीए येह फरमान उन के घर भेज दिया।

हज़रते उमैर बिन सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फरमान पढ़ कर इरशाद फरमाया कि अमीरुल मोअमिनीन के हुक्म की इताअत मुझ पर वाजिब है। येह कहा और फौरन पैदल मदीनए मुनव्वरा के लिये घर से निकल पड़े और तीन दिन का सफर कर के दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर हो गए।

अमीरुल मोअमिनीन ने फरमाया कि ऐ उमैर बिन सा'द ! जो अशरफ़ियां मैं ने तुम्हारे पास भेजी थीं उन को तुम ने कहां कहां खर्च किया ? अर्ज किया : ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! मैं ने उसी वक़्त उन सब अशरफ़ियों को खुदा की राह में खर्च कर दिया।

अमीरुल मोअमिनीन हैरत व इस्ति'जाब के आलम में उन का मुंह देखते रह गए। फिर अपने फरजन्द हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से फरमाया कि तुम बैतुल माल में से दो कपड़े ला कर उमैर बिन सा'द को पहना दो और एक ऊंट पर खजूरें लाद कर इन को दे दो। आप ने अर्ज किया : ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! कपड़ों को तो मैं क़बूल कर लेता हूं क्योंकि मेरे पास कपड़े नहीं है मगर खजूरें मैं हरगिज़ न लूंगा क्योंकि मैं एक साअ खजूरें अपने मकान पर रख आया हूं जो मेरी वापसी तक मेरे अहलो इयाल के लिये काफ़ी हैं। फिर हज़रते उमैर बिन सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अमीरुल मोअमिनीन से रुख़्सत हो कर अपने मकान पर चले आए और इस के चन्द ही दिनों बा'द इन का विसाल हो गया।

जब अमीरुल मोअमिनीन को आप की रिहलत की ख़बर पहुंची तो आप बे इख़्तियार रो पड़े और हाज़िरीन से फरमाया कि

अब तुम सब लोग अपनी अपनी बड़ी तमन्नाओं को मेरे सामने बयान करो। फौरन ही तमाम हाज़िरीन ने अपनी अपनी बड़ी से बड़ी तमन्नाओं को ज़ाहिर कर दिया। सब की तमन्नाओं का ज़िक्र सुन कर आप ने फ़रमाया : लेकिन मेरी सब से बड़ी तमन्ना यह है कि काश ! उमैर बिन सा'द जैसे साफ़ बात़िन व पाक बाज़ और पैकरे इख़लास चन्द मुसलमान मुझे मिल जाते तो मैं उन से मुसलमानों के कामों में मदद लेता।

इस के बा'द आप ने हज़रते उमैर बिन सा'द **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के लिये दुआए मग़फ़िरत फ़रमाई और यह कहा कि **اَللّٰهُمَّ** तअ़ाला उमैर बिन सा'द (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**) पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए। (1)  
(کنز العمال، ج ۱۶، ص ۱۶۵، ۱۶۶ مختصراً)

### ﴿89﴾ हज़रते अबू करसाफ़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

इन का अस्ली नाम जुन्दरह बिन ख़ैशना है मगर यह अपनी कुन्यत “अबू करसाफ़ा” से ज़ियादा मशहूर हैं। यह कुरैशी नस्ल से हैं। यह इब्तिदाए इस्लाम ही में यतीम बच्चे थे और इन की वालिदा और ख़ाला दोनों ने इन की परवरिश की। यह बचपन में बकरियां चराने जाया करते थे और इन की वालिदा और ख़ाला इन को सख़्त ताकीद किया करती थीं कि ख़बर दार ! तुम मक्का में कभी उन की सोहबत में न बैठना जिन्हों ने नबुव्वत का दा'वा किया है मगर यह बकरियां चरागाह में छोड़ कर हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की ख़िदमत में हर रोज़ चले जाया करते और बकरियों के चराने पर ज़ियादा ध्यान नहीं देते थे। रफ़ता रफ़ता बकरियां लाग़र हो गईं और इन के थन खुशक हो गए।

इन की वालिदा और ख़ाला ने जब इस मुआमले के बारे में इन से सख़्त बाज़पुर्स की तो इन्हों ने हुज़ूरे अकरम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के

① ..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، عمير بن سعد الانصارى، الحديث:

सामने इस का तज़क़िरा किया तो आप ने उन बकरियों के खुश्क थनों पर अपना दस्ते मुबारक लगा दिया तो सब बकरियों के खुश्क थन दूध से भर गए जब इन की वालिदा और ख़ाला ने इस का सबब पूछा तो इन्होंने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक लगा देने का वाक़िआ और हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ता'लीम और मो'जिज़ात का तज़क़िरा कर दिया ।

येह सुन कर इन की वालिदा और ख़ाला ने कहा : ऐ मेरे प्यारे बेटे ! तुम हम को भी उन के दरबार में ले चलो । चुनान्चे, इन की वालिदा और ख़ाला ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हो गई और जमाले नबुव्वत देखते ही कलिमा पढ़ कर इस्लाम की दौलत से माला माल हो गई और अपने घर पहुंच कर इन दोनों ने येह कहा कि हम ने अपनी आंखों से देखा कि जब हुज़ूरे अक़दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कलाम फ़रमाते थे तो उन के दहन मुबारक से एक नूर निकलता था और हम ने हुस्ने अख़्लाक़ और जमाले सूरत व कमाले सीरत के ए'तिबार से किसी इन्सान को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बेहतर और खुशतर नहीं देखा ।

येह आख़िरी उम्र में मुल्के शाम के शहर फ़िलिस्तीन में मुक़ीम हो गए थे और शाही मुहद्दिषीन इन के हल्क़ए दर्स में शामिल हुवा करते थे ।

इमाम त़बरानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ ने इन को निस्बत के ए'तिबार से “लैषी” तहरीर फ़रमाया है और इन को “बनी लैष बिन बक्र” का आज़ाद कर्दा गुलाम लिखा है ।<sup>(1)</sup> (وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ)

(کنز العمال، ج ۱۶، ص ۲۲۹، مطبوعه حیدرآباد واسط الغابیه، ج ۱، ص ۳۷۷)

①..... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الکتی، ابو قرصافة، الحديث: ۳۷۵۷۷،

ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۲۶۵

واسط الغابیه، حندرة بن خيشنة، ج ۱، ص ۴۴۹

ومجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب ابی قرصافة واهل بيته، الرقم ۱۶۰۷۵، ج ۹، ص ۶۵۸

## करामत

## सैंकड़ों मील दूर आवाज़ पहुंचती थी

इन की येह करामत थी कि रूमी कुफ़ार ने इन के एक फ़रज़न्द को गिरफ़्तार कर के जैलख़ाने में बन्द कर दिया था। हज़रते अबू कर साफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जब नमाज़ का वक़्त आता तो अस्क़लान की चार दीवारी पर चढ़ते और बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहते कि ऐ मेरे प्यारे बेटे ! नमाज़ का वक़्त आ गया है और इन की इस पुकार को हमेशा इन के साहिबज़ादे सुन लिया करते थे हालांकि वोह सैंकड़ों मील की दूरी पर रूमियों के कैद ख़ाने में कैद थे। <sup>(1)</sup> (طبرانی)

## तबशेश

येह करामत अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और दूसरे बुजुर्गों से भी मन्कूल है और येह करामत भी इस अम्र की दलील है कि महबूबाने खुदा हवा पर भी हुकूमत फ़रमाया करते हैं क्यूंकि आवाज़ को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना हवाओं के तमूज ही का काम है जिस पर पहले सफ़हात में भी हम रोशनी डाल चुके हैं।

इस किस्म की करामतों से पता चलता है कि खुदावन्दे कुहूस ने अपने औलियाए किराम को आलम में तसरुफ़ात की ऐसी हुक्मरानी व बादशाही बल्कि शहनशाही अता फ़रमाई है कि वोह काइनाते आलम की हर हर चीज़ पर बिइज़निल्लाह हुकूमत करते हैं।

﴿90﴾ हज़रते हश्शान बिन षाबित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह कबीलए अन्सार के ख़ानदान खज़रज के बहुत ही नामी गिरामी शख्स हैं और दरबारे रिसालत के ख़ासुल ख़ास शाइर होने की हैषियत से तमाम सहाबए किराम में एक खुसूसी इम्तियाज़ के



साथ मुमताज़ हैं। आप ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मदह में बहुत से क़साइद लिखे और कुफ़फ़ारे मक्का जो शाने रिसालत में हिजू लिख कर बे अदबियां करते थे आप अपने अशआर में उन का दन्दान शिकन जवाब दिया करते थे। हुज़ूर शहनशाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इन के लिये खास तौर पर मस्जिदे नबवी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَوةُ وَالسَّلَام में मिम्बर रखवाते थे जिस पर खड़े हो कर येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शाने अक़दस में ना'त ख़्वांनी करते थे।

इन की कुन्यत “अबुल वलीद” है और इन के वालिद का नाम “षाबित” और इन के दादा का नाम “मुन्ज़र” और परदादा का नाम “हिराम” है और इन चारों के बारे में एक तारीख़ी लतीफ़ा येह है कि इन चारों की उम्रें एक सो बीस बरस की हुई जो अज़ाइबाते आलम में से एक अजीब नादिरुल वुजूद अज़ूबा है।

हज़रते हस्सान बिन षाबित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की एक सो बीस बरस की उम्र में से साठ बरस जाहिलिय्यत और साठ बरस इस्लाम में गुज़रे। सि. 40 हि. में आप का विसाल हुवा।<sup>(1)</sup>

(अक़ाल, स. ५२०, مشکوّة باب البیان والشعر, स. २१०, وحاشية بخاری, بحواله کرمانی, ج २, स. ५९२)

## करामत

### हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मददगार

इन की एक खास करामत येह है कि जब तक येह ना'त ख़्वांनी फ़रमाते रहते थे हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام इन की इमदाद

①.....مشكاة المصابيح، كتاب الاداب، باب البیان والشعر، الحديث: ४८०: ५، ج २، स. १८८

والاکمال فی اسماء الرجال، حرف الحاء، فصل فی الصحابة، س. ५९०

وحاشية البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث الافک، حاشية: ५، ج २، स. ५९४

व नुस्त के लिये इन के पास मौजूद रहते थे क्यूंकि हुजूर  
अवदस **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इन के बारे में इरशाद फरमाया है :

إِنَّ اللّٰهَ يُؤَيِّدُ حَسَنًا بِرُوحِ الْقُدُسِ مَا نَافَحَ أَوْ فَاخَرَ عَنْ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

(या'नी जब तक हस्सान मेरी तरफ से कुफ़र को मदाफ़ाना जवाब  
देते और मेरे बारे में इज़हारे फ़ख़र करते रहते हैं हज़रते जिब्राईल  
(मक़्तूबा ब़ाब البیان والشرح ص २१०) <sup>(1)</sup> )। इन की मदद फरमाते रहते हैं **عَلَيْهِ السَّلَام**

## कशमत वाली कुव्वते शाम्मा

जबला ग़स्सानी जो ख़ानदाने जफ़ना का एक फ़र्द था उस  
ने हज़रते हस्सान **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** के लिये हदिये के तौर पर कुछ  
सामान हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उमर **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** को दिया तो  
आप **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** ने हज़रते हस्सान **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** को हदिय्या सिपुर्द  
करने के लिये बुलाया । जब हज़रते हस्सान **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** बारगाहे  
ख़िलाफ़त में पहुंचे तो चोखट पर खड़े हो कर सलाम किया और  
अर्ज़ किया कि ऐ अमीरल मोअमिनीन मुझे ख़ानदाने जफ़ना के  
हदिय्यों की खुशबू आ रही है जो आप के पास हैं । आप ने इरशाद  
फरमाया कि हां जबला ग़स्सानी ने तुम्हारे लिये हदिय्या भेजा है जो  
कि मेरे पास है । इसी लिये मैं ने तुम को त़लब किया है ।

इस वाक़िए को नक़ल करने वाले का बयान है कि खुदा की  
क़सम ! हज़रते हस्सान **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** की येह हैरत अंगेज़ व तअज़्जुब  
ख़ैज़ बात मैं कभी भी फ़रामोश नहीं कर सकता कि इन्हें उस हदिय्ये  
की किसी ने पहले से कोई ख़बर नहीं दी थी फिर आख़िर इन्हें  
चोखट पर खड़े होते ही उस हदिये की खुशबू कैसे और क्यूंकर  
महसूस हो गई ? और इन्हों ने उस चीज़ को कैसे सूंघ लिया कि वोह  
हदिया ख़ानदाने जफ़ना से यहां आया है । <sup>(2)</sup> (शुवाहद न्बुّة २३२)

①.....مشكاة المصابيح، كتاب الاداب، باب البيان والشعر، الحديث: ٤٨٠٥، ج ٢، ص ١٨٨

②.....شواهد النبوة، ركن سادس در بيان شواهد ودلائلی...الخ، حسان بن ثابت، ص २९०

## तबशेश

बिला खुशबू वाले सामानों को सूंघ कर जान लेना और फिर येह भी सूंघ लेना कि हदिया देने वाला किस खानदान का आदमी है ? ज़ाहिर है कि येह चीज़ें सूंघने की नहीं हैं फिर भी इन को सूंघ लेना इस को करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है ?

### ﴿91﴾ हज़रते जैद बिन हारिषा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

येह हुजुरे अक़दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के गुलाम थे लेकिन आप ने इन को आज़ाद फ़रमा कर अपना मुतबन्नी बना लिया था और अपनी बांदी हज़रते उम्मे ऐमन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से इन का निकाह फ़रमा दिया था जिन के बतन से इन के साहिब ज़ादे हज़रते उसामा बिन जैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ पैदा हुवे । इन की एक बड़ी ख़ास खुसूसियत येह है कि इन के सिवा कुरआने मजीद में दूसरे किसी सहाबी का नाम मज़कूर नहीं है । येह बहुत ही बहादुर मुजाहिद थे । गुलामों में सब से पहले इन्होंने ही इस्लाम क़बूल किया । “जंगे मोता” की मशहूर लड़ाई में जब आप तमाम इस्लामी अफ़वाज के सिपह सालार थे सि. 8 हि. में कुफ़फ़ार से लड़ते हुवे जामे शहादत नौश फ़रमाया ।<sup>(1)</sup>

(अकाल, जस ५९५ वासदुलगायब, ज २, २२२-२२५)

## करामत

### सातवें आश्मान का फिरिश्ता ज़मीन पर

आप की एक करामत बहुत ज़ियादा मशहूर और मुस्तनद है कि एक मरतबा आप ने सफ़र के लिये ताइफ़ में एक ख़च्चर किराये पर लिया, ख़च्चर वाला डाकू था, वोह आप को सुवार कर के ले चला और एक वीरान व सुन्सान जगह पर ले जा कर

1..... الاكمال فى اسماء الرجال، حرف الزاى، فصل فى الصحابة، ص ५९० ملقطاً

आप को ख़च्चर से उतार दिया और एक ख़न्जर ले कर आप की तरफ़ हमले के इरादे से बढ़ा। आप ने येह देखा कि वहां हर तरफ़ लाशों के ढांचे बिखरे पड़े हुवे हैं, आप ने उस से फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! तू मुझे क़त्ल करना चाहता है तो ठहर ! मुझे इतनी मोहलत दे दे कि मैं दो रकअत नमाज़ पढ़ लूं। उस बद नसीब ने कहा कि अच्छा तू नमाज़ पढ़ ले, तुझ से पहले भी बहुत से मक्तूलों ने नमाज़ें पढ़ीं थीं मगर उन की नमाज़ों ने उन की जान न बचाई।

हज़रते ज़ैद बिन हारिषा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हो गया तो वोह मुझे क़त्ल करने के लिये मेरे करीब आ गया तो मैं ने दुआ मांगी और يَا رَحْمَ الرَّاحِمِينَ कहा। ग़ैब से येह आवाज़ आई कि ऐ शख़्स ! तू इन को क़त्ल मत कर। येह आवाज़ सुन कर वोह डाकू डर गया और इधर उधर देखने लगा जब कोई नज़र नहीं आया तो वोह फिर मेरे क़त्ल के लिये आगे बढ़ा तो मैं ने फिर बुलन्द आवाज़ से يَا رَحْمَ الرَّاحِمِينَ कहा और ग़ैबी आवाज़ आई। फिर तीसरी मरतबा जब मैं ने يَا رَحْمَ الرَّاحِمِينَ कहा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स घोड़े पर सुवार है और उस के हाथ में नेज़ा है और नेज़े की नोक पर आग का एक शो'ला है। उस शख़्स ने आते ही डाकू के सीने में इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि नेज़ा उस के सीने को छेदता हुवा उस की पुश्त के पार निकल गया और डाकू ज़मीन पर गिर कर मर गया।

फिर वोह सुवार मुझ से कहने लगा कि जब तुम ने पहली मरतबा يَا رَحْمَ الرَّاحِمِينَ कहा तो मैं सातवें आस्मान पर था और जब दूसरी मरतबा तुम ने يَا رَحْمَ الرَّاحِمِينَ कहा तो मैं आस्माने दुन्या पर था और जब तीसरी मरतबा तुम ने يَا رَحْمَ الرَّاحِمِينَ कहा तो मैं तुम्हारे पास इमदाद व नुस्त के लिये हाज़िर हो गया **(1)** (528/1, 2, 3)

1..... الاستيعاب في معرفة الاصحاب، حرف الزاى، زيد بن حارثة الكلبي، ج 2، ص 117

## तबशेश

इस से सबक मिलता है कि खुदावन्दे कुहूस के अस्माए हुस्ना और मोअमिनीन की दुआओं से बड़ी बड़ी बलाएं टल जाती हैं और ऐसी ऐसी इमदाद और आस्मानी नुस्तरों का जुहूर हुवा करता है जिन को खुदावन्दे करीम के फज़ले अज़ीम के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता मगर अफ़सोस कि आज कल के मुसलमान मुसीबतों के हुजूम में भी माद्दी वसाइल की तलाश में भागे भागे फिरते हैं और लीडरों, हाकिमों और दौलतमन्दों के मकानों का चक्कर लगाते रहते हैं मगर **أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ** और **أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ** के दरबारे अज़मत में गिड़ गिड़ा कर अपनी दुआओं की अर्ज़ी नहीं पेश करते और ख़ल्लाके आलम **جَلَّ جَلَالُهُ** से इमदाद व नुस्तर की भीक नहीं मांगते हालांकि ईमान येह है कि बिगैर फज़ले रब्बानी के कोई इन्सानी ताक़त किसी की भी कोई इमदाद व नुस्तर नहीं कर सकती ।

अफ़सोस सच कहा है किसी हकीकत शनास ने कि :

उस तरफ़ उठते नहीं हाथ जहां सब कुछ है  
पाउं चलते हैं उधर को कि जहां कुछ भी नहीं

﴿92﴾ **हज़रते उक्बा बिन नाफ़ेअ फ़हरी** **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

हज़रते अमीरे मुआविय्या **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अपने दौरे हुकूमत में इन को अफ़्रीका का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था और इन्हों ने अफ़्रीका के कुछ हिस्सों को फ़तह कर लिया और बरबरी लोग जो उस मुल्क के अस्ली बाशिन्दे थे उन के बहुत से बाशिन्दे दामने इस्लाम में आ गए । इन्हों ने उस मुल्क में इस्लामी फ़ौजों के लिये एक छाऊनी बनाने और एक इस्लामी शहर आबाद करने का इरादा फ़रमाया लेकिन इस मक़सद के लिये माहिरीने हरबिय्यात व

उमरानिय्यात ने जिस जगह का इन्तिखाब किया वहां एक निहायत ही खौफनाक और गुन्जान जंगल था जो जंगली दरिन्दों और हर किस्म के मूजी और जहरीले हशरातुल अर्ज और जानवरों का मस्कन और गढ़ था। इस मौक़अ पर हज़रते उक्बा बिन नाफ़ेअ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की एक अजीब क़रामत का जुहूर हुवा :

### कशमब

### एक पुकार से दरिन्दे फ़रार

मरवी है कि हज़रते उक्बा बिन नाफ़ेअ फ़हरी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के इस लश्कर में अठ्ठारह सहाबी मौजूद थे। आप ने उन सब मुक़द्दस सहाबियों को जम्अ फ़रमाया और उन बुजुर्गों को अपने साथ ले कर उस खौफ़नाक और घने जंगल में तशरीफ़ ले गए और बुलन्द आवाज़ से येह ए'लान फ़रमाया : “ऐ दरिन्दे ! और मूजी जानवरो ! हम रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के सहाबा हैं और हम इस जगह अपनी बस्ती बसा कर आबाद होना चाहते हैं लिहाज़ा तुम सब यहां से निकल जाओ वरना इस के बा'द हम तुम में से जिस को यहां देखेंगे क़त्ल कर देंगे।”

इस ए'लान के बा'द उस आवाज़ में खुदा ही जानता है कि क्या ताषीर थी कि सब दरिन्दों और हशरातुल अर्ज में हल चल मच गई और ग़ोल दर ग़ोल उस जंगल के जानवर निकलने लगे। शेर अपने बच्चों को उठाए हुवे, भेड़िये अपने पिल्लों को लिये हुवे, सांप अपने संपोलियों को कमर से चिमटाए हुवे जंगल से बाहर निकले चले जा रहे थे और येह एक ऐसा अजीब हैबत नाक और दहशत अंगेज़ मन्ज़र था जो न इस से क़ब्ल देखा गया न येह किसी के वहम व गुमान में था। गरज़ पूरा जंगल जानवरों से ख़ाली हो गया और सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** और पूरे लश्कर ने उस जंगल को काट कर सि. 50 हि. में एक शहर आबाद किया जिस का नाम “क़ीरवान” है। येह शहर इसी लिये मुसलमानों में बहुत ज़ियादा क़ाबिले



एहतिराम शुमार किया जाता है कि इस शहर की आबादकारी में सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के मुक़द्दस हाथों का बहुत ज़ियादा हिस्सा है और येही वजह है कि हज़ारों जलीलुल क़द्र उ-लमा व मशाइख़ इस सर ज़मीन की आगोशे खाक से उठे और फिर इसी मुक़द्दस ज़मीन की आगोशे लहद में दफ़न हो कर इस ज़मीन का ख़ज़ाना बन गए।<sup>(1)</sup>

(معجم البلدان تذكره قبروان)

### घोड़े की टाप से चश्मा जारी

हज़रते उक्बा बिन नाफ़ेअ फ़हरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की यह करामत भी बहुत ही हैरत अंगेज़ और इब्रत ख़ैज़ है कि अफ़्रीका के जिहादों में एक मरतबा इन का लश्कर एक ऐसे मक़ाम पर पहुंच गया जहां दूर दूर तक पानी नायाब था जब इस्लामी लश्कर पर प्यास का ग़लबा हुवा और तमाम लोग तिश्नगी से मुज़तरिब हो कर माहिये बे आब की तरह तड़पने लगे तो हज़रते उक्बा बिन नाफ़ेअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दो रक्अत नमाज़ पढ़ कर दुआ मांगी। अभी आप की दुआ ख़त्म नहीं हुई थी कि आप के घोड़े ने अपने खुर से ज़मीन को कुरैदना शुरूअ कर दिया। आप ने उठ कर देखा तो मिट्टी हट चुकी थी और एक पथ्थर नज़र आ रहा था। आप ने जैसे ही उस पथ्थर को हटाया तो एक दम उस के नीचे से पानी का एक चश्मा फूट निकला और इस क़दर पानी बहने लगा कि सारा लश्कर सैराब हो गया और तमाम जानवरों ने भी पेट भर कर पानी पिया और लश्कर के तमाम सिपाहियों ने अपनी अपनी मश्कों को भी भर लिया और उस चश्मे को बहता हुवा छोड़ कर लश्कर आगे रवाना हो गया।<sup>(2)</sup>

①.....معجم البلدان، حرف القاف، القبروان، ج ٤، ص ١٠٦

واسد الغابة، عقبة بن نافع، ج ٤، ص ٦٦-٦٧ ملقطاً

②.....الكامل في التاريخ، سنة اثنتين وستين، ذكر ولاية عقبة بن نافع...الخ، ج ٦، ص ٤٥١

### ﴿93﴾ हज़रते अबू जैद अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

अबू जैद इन की कुन्यत है। इन के नाम में इख़िलाफ़ है। बा'ज का कौल है कि इन का नाम “सईद बिन उमैर” है और बा'ज कहते हैं कि इन का नाम “कैस बिन सकन” है। इन का ख़ानदानी तअल्लुक कबीलए अन्सार से है और इन का वतन मदीनए मुनव्वरा है। येह उन सहाबए किराम में से हैं जो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मौजूदगी में हाफ़िज़े कुरआन हो चुके थे।<sup>(1)</sup>

### करामत

#### सो बरस का जवान

हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपना दस्ते मुबारक एक मरतबा इन के सर पर फेरा और इन को येह दुआ दी कि या **اَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ इस के हुस्नो जमाल को हमेशा काइम रख ! रावी का बयान है कि येह सो बरस से कुछ जाइद उम्र के हो गए थे लेकिन इन के सर और दाढ़ी का एक बाल भी सफ़ेद नहीं हुवा था न इन के चेहरे पर झुरियां पड़ी थीं। वफ़ात के वक़्त तक इन के चेहरे पर जवानी का जमाल बरक़रार रहा जो बिला शुबा इन की एक करामत है।<sup>(2)</sup> (دلائل النبوة لابی نعیم، ص ۱۶۶)

### ﴿94﴾ हज़रते औफ़ बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

इन की कुन्यत के बारे में इख़िलाफ़ है, बा'ज का कौल है कि इन की कुन्यत “अबू अब्दुर्रहमान” है और बा'ज के नज़दीक “अबू हम्माद” और कुछ लोगों ने कहा कि “अबू अम्र” है।

①.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الزای، فصل فی الصحابة، ص ۵۹۵

②.....دلائل النبوة للبيهقي، جماع ابواب دعوات...الخ، باب ماجاء فی شان ابی زید...الخ،

इस्लाम लाने के बा'द सब से पहला जिहाद जिस में इन्होंने ने शिर्कत की वोह जंगे खैबर है। येह बहुत ही जांबाज मुजाहिद सहाबी थे। फ़तहे मक्का के दिन क़बीलए अशजअ का झन्डा इन्हीं के हाथ में था। मुल्के शाम की सुकूनत इख़्तियार कर ली थी और हदीष में कुछ सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** और बहुत से ताबेईन इन के शागिर्द हैं। शहरे दिमश्क में सि. 73 हि. के साल में इन का विसाल शरीफ़ हुवा।<sup>(1)</sup>

(اسد الغابة، ج ۴، ص ۱۵۶)

### कशमल

### पुकार पर मवेशी दौड़ पड़े

हज़रते मुहम्मद बिन इस्हाक़ का बयान है कि हज़रते औफ़ बिन मालिक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को कुफ़्फ़ार ने गिरफ़्तार कर के इन्हें तांतों से बान्ध रखा था। इन के वालिद मालिक अशजई **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** हुजुरे अक्दस **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुवे और माजरा अर्ज किया। आप ने इरशाद फ़रमाया : तुम अपने बेटे औफ़ के पास किसी क़ासिद के ज़रीए येह कहला दो कि वोह बक़रत पढ़ते रहें।

चुनान्चे, हज़रते औफ़ बिन मालिक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** येह वज़ीफ़ा पढ़ने लगे। एक दिन नागहां इन की तमाम तांतें टूट गई और वोह रिहा हो कर कुफ़्फ़ार की कैद से निकल पड़े और एक ऊंटनी पर सुवार हो कर चल पड़े। रास्ते में एक चरागाह के अन्दर कुफ़्फ़ार के सेंकड़ों ऊंट चर रहे थे। आप ने उन ऊंटों को पुकारा तो वोह सब के सब दौड़ते भागते हुवे आप की ऊंटनी के पीछे पीछे चल पड़े। उन्होंने ने मकान पर पहुंच कर अपने वालिद को पुकारा तो वोह सब उन की आवाज़ सुन कर मां बाप और खादिम दौड़ पड़े और येह

1..... اسد الغابة، عوف بن مالك الاشجعي، ج ۴، ص ۳۳۳

देख कर हैरान रह गए कि हज़रते औफ़ बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ऊंटों के ज़बरदस्त रेवड़ के साथ मौजूद हैं सब खुश हो गए।

उन के वालिद हज़रते मालिक अश्जई رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे नबुव्वत में पहुंच कर सारा किस्सा सुनाया और ऊंटों के बारे में भी अर्ज किया तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया कि इन ऊंटों को तुम जो चाहो करो, तुम्हारा बेटा इन ऊंटों का मालिक हो चुका मैं इन ऊंटों में कोई मुदाख़लत नहीं करूंगा। येह **अल्लाह** तअ़ाला की तरफ़ से एक रिज़्क है जो तुम्हें अता किया गया। रिवायत है कि इसी मौक़अ पर येह आयत नाज़िल हुई :

وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۖ  
وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ط  
وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ط  
(सूरे पलाक, प २८)

और जो शख्स **अल्लाह** तअ़ाला से डरता है **अल्लाह** तअ़ाला उस के लिये मुजर्तों से नजात की शक़ल निकाल देता है और उस को ऐसी जगह से रिज़्क पहुंचाता है जहां उस को गुमान भी नहीं होता और जो शख्स **अल्लाह** तअ़ाला पर तवक्कुल करेगा तो **अल्लाह** तअ़ाला उस के लिये काफ़ी है। (1)

(الترغيب والترهيب، ج ३، ص १०५ أو تفسير ابن كثير، ج ४، ص ३८०)

﴿95﴾ **हज़रते फ़ातिमतुज्जहश** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا

येह हुज़ूर शहनशाहे दो अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सब से छोटी और सब से ज़ियादा प्यारी बेटी हैं इन का लक़ब सय्यिदतुन्निसाइल अलमीन (सारे जहान की औरतों की सरदार) है। हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन के बारे में इरशाद फ़रमाया कि फ़ातिमा मेरी बेटी, मेरे बदन का हिस्सा है जिस ने इस का दिल

दुखाया, उस ने मेरा दिल दुखाया और जिस ने मेरा दिल दुखाया उस ने **अब्बाह** तआला को ईजा दी।<sup>(1)</sup>

इन के फ़ज़ाइलो मनाकिब में बहुत सी अहदीष वारिद हुई हैं। रमज़ान सि. 2 हि. में मदीनए मुनव्वरा के अन्दर इन का निकाह हज़रते अली बिन अबी तालिब **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के साथ हुवा और जुल हिज्जा सि. 2 हि. में रुख़्सती हुई। इन के बतन से हज़रते इमामे हसन व इमामे हुसैन व इमामे मोहसिन (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ**) तीन साहिब जादगान और हज़रते जैनब व रुक़य्या व उम्मे कुलषूम (**رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ**) तीन साहिब जादियां तवल्लुद हुई। हुजुरे अक़दस **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के बा'द सिर्फ़ छे माह ज़िन्दा रहीं। 28 बरस की उम्र में आलमे फ़ानी से आलमे जावेदानी की तरफ़ रिहलत फ़रमा हुई। हज़रते अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने नमाजे जनाज़ा पढ़ाई और रात को सिपुर्दे खाक की गई। मज़ारे मुबारक मदीनए मुनव्वरा में है।<sup>(2)</sup> (अकाल, ज. १३, पृ. १३३)

## कशमात

### बरक़्त वाली सीनी

आप की करामतों में से एक करामत येह है कि आप एक दिन एक बोटी और दो रोटियां ले कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुई। रहमते आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अपनी प्यारी साहिबज़ादी के इस तोहफ़े को क़बूल फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया कि ऐ लख्ते जिगर ! तुम इस सीनी को अपने ही घर ले कर चलो, फिर खुद हुजूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** के मकान पर रौनक़ अफ़रोज़ हो कर उस सीनी को खोला तो घर के

①..... صحيح مسلم، كتاب فضائل الصحابة رضى الله تعالى عنهم ، باب فضائل فاطمة

بنت النبي رضى الله عنها، الحديث: ٢٤٤٩، ص ١٣٢٩ ملقطاً

وفيض القدير شرح الجامع الصغير، حرف الميم، تحت الحديث: ٨٢٦٧، ج ٦، ص ٢٤ ملقطاً

②..... الاكمال فى اسماء الرجال، حرف الفاء، فصل فى الصحابييات، ص ٦١٣

तमाम अफ़राद येह देख कर हैरान रह गए कि वोह सीनी रोटियों और बोटियों से भरी हुई थी। हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : **أَتَى لَكَ هَذَا؟** (ऐ बेटी ! येह सब तुम्हारे लिये कहां से आया ?) तो हज़रते फ़ातिम तुज़्ज़हरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** ने अर्ज़ किया : **هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ** (या'नी येह **अल्लाह** तअला की तरफ़ से आया है, वोह जिस को चाहता है बे शुमार रोज़ी देता है।)

फिर हुज़ूरे अक़दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते अली व हज़रते फ़ातिमा व हज़रते इमामे हसन व इमामे हुसैन और दूसरे अहले बैत **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** को जम्अ फ़रमा कर सब के साथ सीनी में से खाना तनावुल फ़रमाया फिर भी उस खाने में इस क़दर हैरत नाक और तअज्जुब खैज़ बरकत ज़ाहिर हुई की सीनी रोटियों और बोटियों से भरी हुई रह गई और इस को हज़रते बीबी फ़ातिमा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** ने अपने पड़ोसियों और दूसरे मिस्कीनों को भी खिलाया।<sup>(1)</sup>

(روح البیان، آل عمران، ص ۳۲۳)

## शाही दा'वत

रिवायत है कि एक रोज़ हज़रते उ़षमाने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने शहनशाहे मदीना हुज़ूर नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की दा'वत की। जब दोनों अ़ालम के मेज़बान, हज़रते उ़षमान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के मकान पर रौनक़ अफ़रोज़ हुवे तो हज़रते उ़षमाने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** आप के पीछे चलते हुवे आप के क़दमों को गिनने लगे और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! मेरी तमन्ना है कि हुज़ूर के एक एक क़दम के इवज़ मैं आप की ता'ज़ीमो तकरीम के लिये एक एक गुलाम आज़ाद करूं। चुनान्वे,



हज़रते उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के मकान तक जिस क़दर हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के क़दम पड़े थे हज़रते उषमाने ग़नी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इतनी ही ता'दाद में गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया ।

हज़रते अली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने इस दा'वत से मुतअष़िर हो कर हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से कहा : ऐ फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** आज मेरे दीनी भाई हज़रते उषमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बड़ी ही शानदार दा'वत की है और हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हर हर क़दम के बदले एक एक गुलाम आज़ाद किया है । मेरी भी तमन्ना है कि काश ! हम भी हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की इसी तरह शानदार दा'वत कर सकते । हज़रते फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** ने अपने शोहरे नामदार हज़रते अली दिलदल के सुवार के इस जोशे तअष़ुर से मुतअष़िर हो कर कहा : बहुत अच्छा, जाइये आप भी हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** को इसी क़िस्म की दा'वत देते आइये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** हमारे घर में भी इसी क़िस्म का सारा इन्तिज़ाम हो जाएगा ।

चुनान्चे, हज़रते अली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर दा'वत दे दी और शहनशाहे दो आ़लम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** अपने सहाबए किराम की एक कषीर जमाअत को साथ ले कर अपनी प्यारी बेटी के घर में तशरीफ़ फ़रमा हो गए । हज़रते सय्यिदा ख़ातूने जन्नत **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** ख़ल्वत में तशरीफ़ ले जा कर खुदावन्दे कुहूस की बारगाह में सर ब सुजूद हो गई और येह दुआ मांगी :

“या **اَللّٰهُمَّ** तेरी बन्दी फ़ातिमा ने तेरे महबूब और महबूब के अस्हाब की दा'वत की है । तेरी बन्दी का सिर्फ़ तुझ ही पर भरोसा है लिहाज़ा ऐ मेरे रब **عَزَّوَجَلَّ** तू आज मेरी लाज रख ले और इस दा'वत के खानों का तू आ़लमे ग़ैब से इन्तिज़ाम फ़रमा ।”

येह दुआ मांग कर हज़रते बीबी फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** ने हांडियों को चूल्हों पर चढ़ा दिया । खुदावन्दे तआ़ला का दरयाए

करम एकदम जोश में आ गया और उस रज़ाके मुतलक ने दम ज़दन में इन हांडियों को जन्नत के खानों से भर दिया ।

हज़रते बीबी फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** ने इन हांडियों में से खाना निकालना शुरू कर दिया और हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** अपने सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के साथ खाना खाने से फ़ारिग़ हो गए लेकिन खुदा की शान कि हांडियों में से खाना कुछ भी कम नहीं हुवा और सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** इन खानों की खुशबू और लज़त से हैरान रह गए । हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** को मुतहय्यिर देख कर फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि येह खाना कहां से आया है ? सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** ने अर्ज किया कि नहीं या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** आप ने इरशाद फ़रमाया कि येह खाना **اَللّٰهُ** तअ़ाला ने हम लोगों के लिये जन्नत से भेज दिया है !

फिर हज़रते फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** गोशए तन्हाई में जा कर सजदा रेज़ हो गई और येह दुआ मांगने लगीं कि या **اَعَزَّوَجَلَّ** हज़रते उषमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने तेरे महबूब के एक एक क़दम के इवज़ एक एक गुलाम आज़ाद किया है लेकिन तेरी बन्दी फ़ातिमा को इतनी इस्तिताअत नहीं है लिहाज़ा ऐ खुदावन्दे आलम **اَعَزَّوَجَلَّ** जहां तू ने मेरी खातिर जन्नत से खाना भेज कर मेरी लाज रख ली है वहां तू मेरी खातिर अपने महबूब के उन क़दमों के बराबर जितने क़दम चल कर मेरे घर तशरीफ़ लाए हैं अपने महबूब की उम्मत के गुनहगार बन्दों को तू जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे ।

हज़रते फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** जूँ ही इस दुआ से फ़ारिग़ हुई एक दम नागहां हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** येह बिशारत ले कर बारगाहे रिसालत में उतर पड़े कि या रसूलल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ! हज़रते फ़ातिमा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** की दुआ बारगाहे इलाही में मक्बूल हो गई ।

**अब्बाह** तअला ने फ़रमाया है कि हम ने आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के हर क़दम के बदले में एक एक हज़ार गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया।<sup>(1)</sup> (جامع المعجزات مصری، ص ۶۵ بحوالہ سچی حکایات)

**﴿96﴾ उम्मुल मोअमिनीन हज़रते अ़ाइशा सिद्दीक़** **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا**

येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ**

की साहिबज़ादी हैं और हुज़ूरे अक़दस **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की अज़वाजे मुतहहरात **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ** में सब से ज़ियादा आप की महबूबा हैं। इन से बहुत ज़ियादा अहादीष मरवी हैं। फ़िक़ही मा'लूमात में भी इन का दरजा बहुत ही बुलन्द है। अकाबिर सहाबा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ** इन से मसाइल दरयाफ़्त फ़रमाया करते थे। सौमो सलात और दूसरी इबादतों व रियाज़तों में भी आप अज़वाजे मुतहहरात **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ** में खुसूसी इमतियाज़ के साथ मुमताज़ थीं।

सि. 57 हि. या सि. 58 हि. में ब मक़ामे मदीनए मुनव्वरा में दुन्याए फ़ानी से अ़ालमे आख़िरत की तरफ़ इन की रिहलत हुई और जन्नतुल बक़ीअ में मदफून् हुई।<sup>(2)</sup> (अक़ाल, व ११२)

### कशमात

**हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام इन को सलाम करते थे**

इन की एक क़रामत येह है कि हज़रते जिब्राईल **عَلَيْهِ السَّلَام** इन को सलाम करते थे चुनान्वे, बुख़ारी शरीफ़ में एक हदीष है कि रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया कि ऐ अ़ाइशा ! येह हज़रते जिब्राईल **عَلَيْهِ السَّلَام** हैं जो तुम को सलाम कहते हैं। तो आप

①.....جامع المعجزات (مترجم)، ص ۲۵۷

②.....الاکمال فی اسماء الرجال، حرف العین، فصل فی الصحابیات، ص ۶۱۲

(بخاری، ج ۱، ص ۵۳۲) (۱) وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ : ने जवाब में अर्ज़ किया :

## इन के लिहाफ़ में वहय उतरी

हुजुरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि आइशा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) के सिवा मेरी किसी दूसरी बीवी के कपड़ों में मुझ पर वहय नहीं उतरी और हज़रते आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं और रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक लिहाफ़ में सोए रहते थे और आप पर खुदा तअ़ाला की वहय नाज़िल हुवा करती थी। (२)

(مشکوّة، ج ۲، ص ۵۷۳ وکنز العمال، ج ۱۶، ص ۲۹۷)

## आप के तवश्शुल से बारिश

एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा में बारिश नहीं हुई और लोग शदीद क़हूत में मुब्तला हो कर बिलबिला उठे। जब लोग क़हूत की शिकायत ले कर हज़रते उम्मुल मोअमिनीन आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की खिदमते अक्दस में पहुंचे तो आप ने फ़रमाया कि मेरे हुजरे में जहां हुजुरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे अन्वर है, उस हुजरए मुबारका की छत में एक सूराख़ कर दो ताकि हुजरए मुनव्वरा से आस्मान नज़र आने लगे। चुनान्चे, जैसे ही लोगों ने छत में एक सूराख़ बनाया फ़ौरन ही बारिश शुरूअ़ हो गई और अतराफ़े मदीनए मुनव्वरा की ज़मीन सर सब्जो शादाब हो गई और उस साल घास

①..... صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب فضل

عائشة رضی اللہ عنہا، الحدیث: ۳۷۶۸، ج ۲، ص ۵۵۱

②..... مشکاة المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب ازواج النبی، الحدیث: ۶۱۸۹،

ج ۲، ص ۴۴۴

وکنز العمال، کتاب الفضائل، فضل ازواجه الطاهرات، ام المؤمنین عائشة رضی

اللہ عنہا، الحدیث: ۳۷۷۷۹، ج ۷، الجزء ۱۳، ص ۲۹۹

और जानवरों का चारा भी इस क़दर ज़ियादा हुवा कि कषरते ख़ूराक से ऊंट फ़रबा हो गए और चरबी की ज़ियादती से इन के बदन फूल गए।<sup>(1)</sup> (مشکوٰۃ، ج ۲، ص ۵۴۵)

### ﴿98﴾ हज़रते उम्मे ऐमन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

इन का नाम “बरकता” है। येह हुज़ूरे अक़दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे माजिद हज़रते अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बांदी थीं जो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आप के वालिदे माजिद की मीराष में से मिली थीं। इन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बचपन में बहुत ज़ियादा ख़िदमत की है। येही आप को खाना खिलाया करती थीं, कपड़े पहनाया करती थीं, कपड़े धोया करती थीं, ए’लाने नबुव्वत के बा’द जल्द ही इन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। फिर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रते ज़ैद बिन हारिषा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से इन का निकाह कर दिया। इन के बतन से हज़रते उसामा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पैदा हुवे जिन से रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस क़दर ज़ियादा महबूबत फ़रमाते थे कि अ़म तौर पर सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ हज़रते उसामा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को “महबूबे रसूल” कहा करते थे।<sup>(2)</sup>

### कशामत

### कभी पियास नहीं लगी

हज़रते उम्मे ऐमन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का बयान है कि जब मैं मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के रवाना हुई तो मेरा खाना पानी

1.....مشکاة المصابیح، کتاب الفضائل والشمائل، باب الکرامات، الحدیث: ۵۹۵۰،

ج ۲، ص ۴۰۰

2.....اسد الغابة، ام ایمن مولاة رسول اللہ، ج ۷، ص ۳۲۵-۳۲۶

रास्ते में सब ख़त्म हो गया और मैं जब “मक़ामे रूहा” में पहुंची तो पियास की शिद्दत से बे क़रार हो कर ज़मीन पर लैट गई। इतने में मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरे सर के ऊपर कुछ आहत हो रही है जब मैं ने सर उठा कर देखा तो येह नज़र आया कि एक पानी से भरा हुआ चमकदार रस्सी में बन्धा हुआ आस्मान से ज़मीन पर एक डोल उतर रहा है मैं ने लपक कर उस डोल को पकड़ लिया और ख़ूब जी भर कर पानी पी लिया। इस के बा’द मेरा येह हाल है कि मुझे कभी पियास नहीं लगी। मैं सख़्त गर्मियों में रोज़ा रखती हूँ और रोज़े की हालत में शदीद चिलचिलाती हुई धूप में का’बए मुअज़्ज़मा का तवाफ़ करती हूँ ताकि मुझे पियास लग जाए लेकिन इस के बा वुजूद मुझे कभी पियास नहीं लगती।<sup>(1)</sup>

(حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۷، بحوالہ بیہقی)

﴿98﴾ **हज़रते उम्मे शरीक दोसिय्या** رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا

येह क़बीलए दौस की एक सहाबिय्या हैं जो अपने वतन से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चली आई थीं।

## कशमात

### गैबी डोल

येह अपने क़बीलए दौस से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा जा रही थीं और रोज़ादार थीं। शाम को एक यहूदी के मकान पर पहुंचीं ताकि पानी पी कर रोज़ा इफ़्तार कर लें। दुश्मने इस्लाम यहूदी को जब इन के मुसलमान और रोज़ादार होने का इल्म हुआ तो उस ज़ालिम ने इन को मकान की एक कोठड़ी में बन्द कर दिया ताकि इन को एक क़तरा भी पानी न मिल सके जिस से येह रोज़ा इफ़्तार

1..... دلائل النبوة للبيهقي، باب ماجاء في مآظهر على ام ايمن... الخ، ج ۶، ص ۱۲۵



कर सकें। हज़रते उम्मे शरीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا बन्द कोठड़ी में लैटी हुई थीं और बेहद मुतफ़क्किर थीं, सूरज गुरुब हो चुका है और कोठड़ी में खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद नहीं है। आखिर मैं किस चीज़ से रोज़ा इफ़्तार करूँ ? इतने में बन्द और अन्धेरी कोठड़ी में अचानक किसी ने इन के सीने पर ठन्डे पानी से भरा हुवा डोल रख दिया और इन्होंने उस पानी को पी कर रोज़ा इफ़्तार कर लिया। (1)

(حجة الله، ج २، ص ८५)

## ख़ाली कुप्पा घी से भर गया

रिवायत है कि हज़रते उम्मे शरीक दोसिय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास चमड़े का एक कुप्पा था जिस को वोह अकषर लोगों को आरिख्यतन दे दिया करती थीं। एक दिन उन्होंने उस कुप्पे में फूंक मार कर उस को धूप में रख दिया तो वोह घी से भर गया। फिर हमेशा उस कुप्पे में से घी निकलता रहा। इस बात का पूरे शहर और दियार व अम्सार में इस क़दर चर्चा हो गया था कि लोग आम तौर पर येह कहा करते थे कि हज़रते उम्मे शरीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का कुप्पा खुदा की निशानियों में से एक बहुत बड़ी निशानी है। (2)

(حجة الله على العالمين، ج २، ص ८५، بحواله ابن سعد)

## ﴿99﴾ हज़रते उम्मे साइब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا

येह एक ज़ईफ़ा नाबीना सहाबिय्या थीं जो अपने वतन से हिजरत कर के मदीना तय्यिबा चली आई थीं।

1..... حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثالث

فى ذكر جملة جميلة... الخ، ام شريك الدوسية، ص २२३

2..... حجة الله على العالمين، الخاتمة فى اثبات كرامات الاولياء... الخ، المطلب الثالث

فى ذكر جملة جميلة... الخ، ام شريك الدوسية، ص २२३

## करामत

## दुआ से मुर्दा जिन्दा हो गया !

हज़रते अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं कि हज़रते उम्मे साइब رضي الله تعالى عنها का बेटा नौउम्री में अचानक इन्तिक़ाल कर गया। हम लोगों ने उस लड़के की आंखों को बन्द कर के उस को एक कपड़ा ओढ़ा दिया और हम लोगों ने उस की मां के पास पहुंच कर लड़के की मौत की ख़बर सुनाई और ता'ज़ियत व तसल्ली के कलिमात कहने लगे। हज़रते उम्मे साइब رضي الله تعالى عنها अपने बेटे की मौत की ख़बर सुन कर चोंक गई और आबदीदा हो गई फिर उन्होंने ने अपने दोनों हाथों को उठा कर इस तरह दुआ मांगी :

“या **अल्लाह** मैं तुझ पर ईमान लाई और मैं ने अपना वतन छोड़ कर तेरे रसूल की तरफ़ हिजरत की है इस लिये ऐ मेरे खुदा عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से दुआ करती हूं कि तू मेरे लड़के की मुसीबत मुझ पर मत डाल।”

येह दुआ ख़त्म होते ही हज़रते उम्मे साइब رضي الله تعالى عنها का मुर्दा लड़का अपने चेहरे से कपड़ा उठा कर उठ बैठा और जिन्दा हो गया !<sup>(1)</sup>

(ابن ابی الدینا و بیہقی و البدایہ و النہایہ، ج ۶، ص ۱۵۴ و ۱۵۹)

## तबशेश

इस किस्म की करामत बहुत से बुजुर्गाने दीन खुसूसन हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رضي الله تعالى عنه वगैरा औलियाए उम्मत से बारहा जुहूर में आ चुकी हैं क्यूंकि **अल्लाह** तअ़ाला अपने महबूब बन्दों की दुआओं और इन की ज़बान से

①.....البداية والنهاية، كتاب السمائل، باب ما يتعلق بالحيوانات.....الخ، قصة اخرى مع

निकले हुवे अल्फ़ाज़ को अपने फ़ज़्लो करम से रह नहीं फ़रमाता  
चुनान्चे, किसी हक़ शनास ने कहा है

जो वज्द के आलम में निकले लबे मोमिन से  
वोह बात हक़ीक़त में तक्दीरे इलाही है

﴿100﴾ हज़रते जुनैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا

कशमल

अन्धी आंखें रोशन हो गई !

येह हज़रते उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के घराने की लौंडी थीं ।  
इस्लाम की हक़ानिय्यत इन के दिल में घर कर गई । हज़रते उमर  
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उस वक़्त मुसलमान नहीं हुवे थे जूँही हज़रते जुनैरा  
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अपने इस्लाम का ए'लान किया तो हज़रते उमर  
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ आपे से बाहर हो गए और उन्होंने ने खुद भी इन को ख़ूब  
ख़ूब मारा और इन के घर के अप्फ़ाद भी बराबर मारते रहे यहां तक  
कि मक्का के कुफ़्फ़ार ने सरे बाज़ार इन को इस क़दर मारा कि  
जर्बात के सदमात से इन की आंखों की रोशनी जाती रही और येह  
नाबीना हो गई !

इस के बा'द कुफ़्फ़ारे मक्का ने ता'ना देना शुरूअ किया कि  
ऐ जुनैरा ! चूँकि तुम हमारे मा'बूदों या'नी लातो उज़्ज़ा को बुरा भला  
कहती थीं इस लिये हमारे इन बुतों ने तुम्हारी आंखों की रोशनी छीन  
ली है । येह ख़ून खोला देने वाला ता'ना सुन कर हज़रते जुनैरा  
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की रगों में इस्लामी ख़ून जोश मारने लगा और इन्हों  
ने कहा : “हरगिज़ हरगिज़ नहीं ! खुदा की क़सम ! तुम्हारे लातो  
उज़्ज़ा में हरगिज़ हरगिज़ येह ताक़त नहीं है कि वोह मेरी आंखों की

रोशनी छीन सकें मेरा **अल्लाह** जो **وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ** है वोह जब चाहेगा मेरी आंखों में रोशनी आ ही जाएगी।” इन अल्फ़ाज़ का इन की ज़बाने मुबारक से निकलना था कि बिल्कुल एक दम ही अचानक इन की आंखों में रोशनी वापस आ गई! <sup>(1)</sup>

(حجة الله على العالمين، ج ۲، ص ۸۷، بحواله تہذیبی و زرقانی علی المواہب، ج ۱، ص ۲۷)

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَيْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ  
وَالّٰهِ وَصْحِهِ اَجْمَعِينَ

غَفَى عَنْهُ **अब्दुल मुस्तफ़ा आ 'ज़मी**  
खादिमुल हदीष दारुल उलूम फैजुरसूल  
बराऊं शरीफ़, ज़िल्अ बस्ती, घोसी, ज़िल्अ आ 'ज़म गढ़ (भारत)

①.....حجة الله على العالمين، الخاتمة في اثبات كرامات الاولياء...الخ، المطلب الثالث

في ذكر جملة جميلة...الخ، الزنيرة رضى الله عنها، ص ۲۳

وشرح الزرقاني على المواهب، اسلام حمزة، ج ۱، ص ۵۰۲

## مآخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف	مطبعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	برکات رضا ہند
ترجمہ قرآن کثر الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان ۱۳۳۰ھ	برکات رضا ہند
تفسیر الکبیر	امام محمد بن عمر فخر الدین رازی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی
تفسیر ابن کثیر	امام عماد الدین اسماعیل بن عمر ۷۷۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
روح البیان فی تفسیر القرآن	امام اسماعیل حقی بن مصطفی الاسلامی ۱۱۲۷ھ	کوئٹہ
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ ۲۴۳ھ	دارالمعرفہ بیروت
سنن أبی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی
المستدرک	امام محمد بن عبد اللہ الحاکم النیشاپوری ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ بیروت
مشکاۃ المصابیح	امام محمد بن عبد اللہ الخطیب التبریزی ۴۲۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
کنز العمال	علی المتقی بن حسام الدین الہندی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ۸۰۷ھ	دارالفکر بیروت
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی
المعجم الصغیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
حلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصبہانی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
ارشاد الساری	امام احمد بن محمد القسطلانی ۹۲۳ھ	دارالفکر بیروت
فتح الباری	امام احمد بن علی بن حجر العسقلانی ۸۵۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
حاشیۃ صحیح البخاری	حافظ احمد علی محدث سہارنپوری ۱۲۹۷ھ	باب المدینہ کراچی
الاکمال	امام محمد بن عبد اللہ الخطیب التبریزی ۴۲۲ھ	باب المدینہ کراچی
حجۃ اللہ علی العالمین	امام یوسف بن اسماعیل البہانی ۱۳۵۰ھ	برکات رضا ہند
بہجۃ الاسرار	امام علی بن یوسف الشطنوی ۱۲۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
مدارج النبوة	امام عبد الحق بن سیف الدین (محدث دہلوی) ۱۰۵۴ھ	برکات رضا ہند

باب المدینہ کراچی	امام جلال الدین عبد الرحمان بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ھ	تاریخ الخلفاء
باب المدینہ کراچی	احمد بن عبد الرحیم الدہلوی (شاہ ولی اللہ) ۱۱۷۲ھ	ازالۃ الخفاء
مکتبۃ الحقیقۃ استنبول	امام عبد الرحمن بن احمد الجامی ۸۹۸ھ	شواہد النبوة
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام احمد بن محمد قسطلانی ۹۲۳ھ	المواہب اللدنیۃ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام محمد بن عبد الباقی زرقانی ۱۱۲۲ھ	شرح الزرقانی
دارالفکر بیروت	امام ابو الفداء اسماعیل بن عمر ابن کثیر ۷۷۴ھ	البدایۃ والنہایۃ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ ۴۳۰ھ	معرفۃ الصحابۃ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام احمد بن عبد اللہ الطبری ۶۹۳ھ	الریاض النضرۃ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللہ ۲۶۳ھ	الاستیعاب
داراحیاء التراث العربی	امام ابو الحسن علی بن محمد الجزری ۶۳۰ھ	اسد الغابۃ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام محمد بن سعد البصری ۲۳۰ھ	الطبقات الکبریٰ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام ابو بکر احمد بن الحسن البیہقی ۴۵۸ھ	دلائل النبوة
دارالمعرفۃ بیروت	امام عبد الملک بن هشام ۲۱۳ھ	السیرۃ النبویۃ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام ابو الحسن علی بن محمد ۶۳۰ھ	الکامل فی التاریخ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	کمال الدین محمد بن موسیٰ الدمیری ۸۰۸ھ	حیۃ الحیوان الکبریٰ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام محمد بن احمد الذهبی ۷۴۸ھ	تذکرۃ الحفاظ
دارالکتب العلمیۃ بیروت	امام احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۴ھ	الاصابۃ
دار العلم للملایین بیروت	خیر الدین بن محمود الزرکلی ۱۳۹۶ھ	الاعلام للزرکلی
دارالفکر بیروت	امام احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۴ھ	تہذیب التہذیب
دارالفکر بیروت	امام محمد بن ابو احمد الابشہی ۸۵۰ھ	المستطرف
چشتی کتب خانہ فیصل آباد	امام حسین بن علی الکاشفی الراعظی ۹۱۰ھ	روضۃ الشہداء
دارالفکر بیروت	امام محمد عبدالعزیز القرہاری ۱۲۳۹ھ	النبراس
مرکز الاولیاء لاہور	محمد بن محمد جلال الدین الرومی ۶۷۲ھ	مثنوی مولانا روم
باب المدینہ کراچی	امام احمد بن محمد الشروانی ۱۲۵۳ھ	نفعۃ الیمن
داراحیاء التراث العربی	امام ابو عبد اللہ یاقوت بن عبد اللہ ۶۲۶ھ	معجم البلدان



**“मजलिसे अल मदीनतुल इब्मिख्या”**  
**की तरफ से पेश कर्दा कबिले मुतालआ कुतुब**  
**﴿शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ﴾**

- (1) करन्सी नोट के शर्ई अहकामात :  
 (अल किफ़लुल फ़कीहिल फ़हिम फ़ी क़िरतासिदराहिम) (कुल सफ़हात : 199)
- (2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख)  
 (अल याकूतितुल वासितह) (कुल सफ़हात : 60)
- (3) ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़हात : 74)
- (4) मआशी तरक्की का राज़  
 (हाशिया व तशरीह तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह) (कुल सफ़हात : 41)
- (5) शरीअत व तरीक़त  
 (मक़ालुल उ-रफ़ाअ बि इ'जाज़ि शर-इ व उ-लमाअ) (कुल सफ़हात : 57)
- (6) शुबूते हिलाल के तरीके (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़हात : 63)
- (7) आ'ला हज़रत से सुवाल जवाब  
 (इज़हारिल हक्किल जली) (कुल सफ़हात : 100)
- (8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?  
 (विशाहुल जीद फ़ी तहलील मुआनि-क़तिल ईद) (कुल सफ़हात : 55)
- (9) ग़हे खुदा में खर्च करने के फ़ज़ा़इल  
 (रहिल क़ह्ती वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल सफ़हात : 40)
- (10) वालिदैन, जौजैन और असातिजा के हुकूक  
 (अल हुकूक लि तर्हिल उकूक) (कुल सफ़हात : 125)
- (11) फ़ज़ाइले दुआ (अहूसनुल विआअ लि आदाबिहुआअ मअ शर्ह ज़ैलुल मुदआ लि अहूसनिल विआअ) (कुल सफ़हात : 326)

## ﴿शाउअ होने वाली अरबी कुतुब﴾

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

- (12) किफ़लुल फ़कीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74)
- (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77)
- (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)
- (15) इका-मतुल कियामह (कुल सफ़हात : 60)
- (16) अल फ़ज़लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)
- (17) अजल्ल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)
- (18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)
- (19,20,21) जदिल मुत्तार अला रदिल मुह्तार  
(अल मुजल्लद अल अब्वल वष्षानी)(कुल सफ़हात : 713,677,570)

## ﴿शो'बए इस्लाही कुतुब﴾

- (22) खौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)
- (23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
- (24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
- (25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
- (26) इमतिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
- (27) नमाज़ में लुक्मा के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
- (28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
- (29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
- (30) निसाबे मदनी काफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
- (31) काम्याब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक्रीबन 63)
- (32) फैज़ाने एह्यूअल इलूम (कुल सफ़हात : 325)
- (33) मुफ़ितये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
- (34) हक़ व बातिल का फ़र्क (कुल सफ़हात : 50)

- (35) तहकीकात (कुल सफ़हात : 142)  
 (36) अर-बईने ह-नफ़िय्यह (कुल सफ़हात : 112)  
 (37) अत्तारी जिन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)  
 (38) तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)  
 (39) तौबा की ख़ियायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 132)  
 (40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)  
 (41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)  
 (42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)  
 (43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)  
 (50) क़ब्रिस्तान की चुडैल (कुल सफ़हात : 24)  
 (51) गौषे पाक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हालात (कुल सफ़हात : 106)  
 (52) तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)  
 (53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)  
 (54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)  
 (55) मदनी कामों की तक्सीम (कुल सफ़हात : 68)  
 (56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)  
 (57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)  
 (58) आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)  
 (59) अहादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)  
 (60) फैज़ाने चहल अहादीष (कुल सफ़हात : 120)  
 (61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)

### ﴿शो'बए तराजिमे कुतुब﴾

- (62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल  
 (अल मुत्जरुरिबिह फ़ी षवाबिल अ-मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात : 743)  
 (63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आरिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)  
 (64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़हात : 74)  
 (65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअल्लिम तरीकुत्तअल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)

- (66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद) (कुल सफ़हात : 64)  
 (67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)  
 (68) आंसूओं का दरिया (बहूरुहुमूअ) (कुल सफ़हात : 300)  
 (69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुरतुल उयून ) (कुल सफ़हात : 136)  
 (70) उयूनुल हिकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़हात : 412)

### «शो'बए दर्सी कुतुब»

- (71) ता'रीफ़ाते नह्विय्यह (कुल सफ़हात : 45)  
 (72) किताबुल अक़ाइद (कुल सफ़हात : 64)  
 (73) नुजहतुन्नज़र शर्हे नख़बतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 175)  
 (74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)  
 (75) निसाबुत्तज्जीद (कुल सफ़हात : 79)  
 (76) गुलदस्तए अक़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)  
 (77) वक़ा-यतिन्नहूव फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नहूव  
 (78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ हाशिया सर्फ़ बनाई

### «शो'बए तख़रीज»

- (79) अज़ाइबुल कुरआन मअ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़हात : 422)  
 (80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)  
 (81) बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 से 6)  
 (82) बहारे शरीअत, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)  
 (83) बहारे शरीअत, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)  
 (84) इस्लामी जिन्दगी (कुल सफ़हात : 170)  
 (85) आईनए कियामत (कुल सफ़हात : 108)  
 (86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)  
 (87) सहाबए किराम का इश्फ़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

### «शो'बए अमीरे अहले सुन्नत»

- (88) सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अतार के नाम (कुल सफ़हात : 49)  
 (89) मुक़द्दस तहरीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)

- (90) इस्लाह का राज (मदनी चैनल की बहारें हिस्साएँ दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)
- (91) 25 क्रिस्चैन कैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)
- (92) दा'वते इस्लामी की जेलखाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
- (93) वुजू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)
- (94) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त सिवुम (सुन्नते निक्क़ह) (कुल सफ़हात : 86)
- (95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
- (96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़हात : 48)
- (97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
- (98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)
- (99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)
- (100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
- (101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
- (102) मैं ने मदनी बुर्क़अ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)
- (103) जिन्नों की दुनिया (कुल सफ़हात : 32)
- (104) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त दुवुम (कुल सफ़हात : 48)
- (105) गाफ़िल दर्जी (कुल सफ़हात : 36)
- (106) मुख़ालिफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)
- (107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
- (108) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त अव्वल (कुल सफ़हात : 49)
- (109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)
- (110) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त चहारूम (कुल सफ़हात : 49)
- (111) चल मदीना की सआदत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)
- (112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)
- (113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिगा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
- (114) बे कुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
- (115) अत्तारी जिन्न का गुस्ते मय्यित (कुल सफ़हात : 24)

- (116) नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
- (117) आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)
- (118) वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़हात : 32)
- (119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
- (120) इग़ावा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
- (121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (124) खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
- (125) नाकाम आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (126) नादान आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
- (129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)
- (130) ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
- (131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (132) सास बहू में सुल्ह का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
- (133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)
- (134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
- (135) हैरत अंगेज़ हादिषा (कुल सफ़हात : 32)
- (136) मोडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
- (138) सलातो सलाम की आशिका (कुल सफ़हात : 33)
- (139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
- (140) चमकती आंखों वाले बुर्जुग (कुल सफ़हात : 32)
- (141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)



## याद द्वाशत

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी।

[illegible]



اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَتَّبَعْتُ فَاغُوْذِلْ بِالَّذِیْنَ الشَّیْطٰنُ الرَّجِیْمُ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

### سुन्नत की बहारे

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ तबलीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सिचासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महेके महेके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा रात इशा की नमाज के वा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निखतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्लिजा है, आशिकाने रमूल के मदनी काफिलों में ब निखते पवाब सुन्नतों की तबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा मूल बना लीजिये, اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी काफिलों" में सफ़र करना है। اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

### -: मक्तबतुल मदीना की शाखें :-

- ✽... अहमदाबाद :- फैज़ाने मदीना, तीकोनी बागीचे के सामने, मिरजापूर, अहमदाबाद-1, फोन : 9327168200
- ✽... मुम्बई :- 19 - 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई, फोन : 022-23454429
- ✽... नाशपूर :- सैफ़ी नगर रोड, गरीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फोन : 9326310099
- ✽... अजमेर :- 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के करीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फोन : (0145) 2629385
- ✽... हुबली :- A.J मुथल कोम्प्लेक्स, A.J मुथल रोड, ऑल्ड हुबली, कर्नाटक - फोन : 08362344860
- ✽... हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुगल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फोन : (040) 2 45 72 786

**MAKTABATUL MADINA**

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : www.dawateislami.net